ध्रुपद-स्वरलिपि

प्रथम भाग

श्रीहरिनारायण मुखोपाध्याय

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९२९
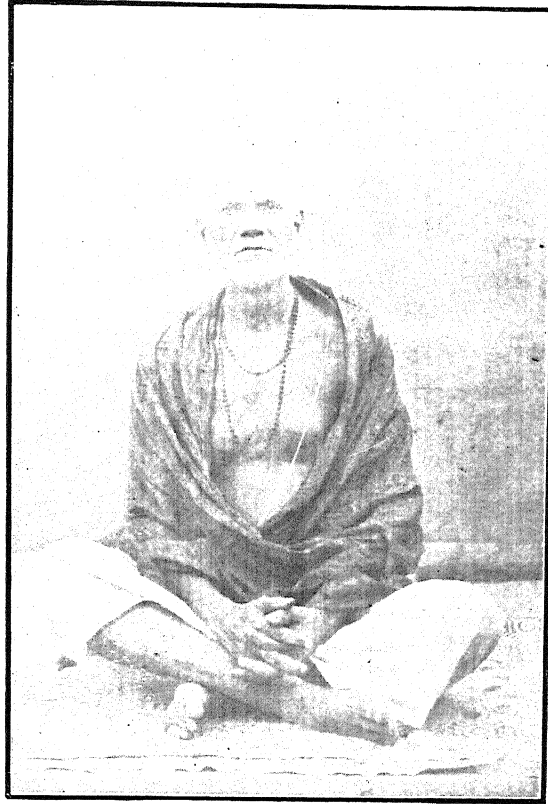
श्रीहरिनारायण मुखोपाध्याय ।

भूमिका

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवमहेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

ध्रुपद-स्वरलिपि का प्रथम भाग निकालना पड़ा। मुझे अभी तक स्वरलिपि-प्रथा में कोई विश्वास नहीं है क्योंकि न मैंने स्वयं इस प्रथा से सीखा था और न किसी को सीखते देखा। गुरु के सन्मुख बैठ कर उनके उपदेशों के अनुसार कठोर परिश्रम करने से तब रागों के स्वरूप दिखाई पड़ते हैं और अपने स्वर व गीत की अशुद्धियाँ ठीक हो सकती हैं। प्रथम शिक्षार्थी के लिये तो स्वरलिपि है ही नहीं। कोई भी राग हो और शिक्षार्थी कितना ही जानता क्यों न हो नये राग को सीखने के लिये उसको गुरु के पास जाना ही पड़ेगा, न कि स्वरलिपि के पास। हाँ, अच्छी तरह सीख लेने के बाद भविष्यत् स्मरण के लिये कोई एक नियम मानकर गीत को लिपिबद्ध कर लेना प्रयोजनीय है और इसके लिए, शास्त्रों में भी नियम दिये हुए हैं। इन्हीं शास्त्रानुमोदित नियमों के अनुसार और अनेक मित्रों के विशेष अनुरोध से कोई १६० ध्रुपदों के स्वरलिपि इस ग्रन्थ में प्रकाशित किये गये हैं।

मेरे पास और भी कुछ ऐसे ध्रुपद हैं जो नये और अप्रचलित हैं। अवसर मिले और साधारण की इच्छा होगी तो उनको एक दूसरे भाग में निकालूँगा।

सूचना में शिक्षार्थी के लिये आवश्यक बातें संक्षेप से दी गई हैं। पाठक कृपया स्मरण रक्खें कि मैं साहित्यिक व लेख-व्यवसायी नहीं हूँ, इसलिए ऐसी पुस्तक में अशुद्धियों का रह जाना कुछ अस्वाभाविक नहीं है। पाठक यदि कृपा करके अशुद्धियों को मेरे गोचर करेंगे तो मैं कृतज्ञ हूँगा।

बड़े यत्न, परिश्रम व अर्थव्यय से इंडियन प्रेस ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया है इसलिए मैं उनको आन्तरिक कृतज्ञता व आशीर्वाद ज्ञापन करता हूँ।

प्रयाग
अप्रेल १६२६

श्रीहरिनारायण मुखोपाध्याय

सूचीपत्र

विषय			पृ०
सूचना—(१) नाद	...	...	-)|||
(२) श्रुति व स्वर	...	...	=)||
(३) मूर्च्छना	...	...	≡)
(४) स्वर-प्रस्तार अथवा तान	...	...	|-)|
(५) मूर्च्छनालंकार व वर्णालंकार	...	...	|=)||
(६) राग	...	...	|≡)||
(७) वादी, विवादी और संवादी स्वर	...	...	||)||
(८) ताल व काल	...	...	||-)||
(९) शिक्षार्थियों के लिये उपदेश	...	...	|||)
(१०) रागों के भेद	...	...	|||-)
स्वरलिपियों के संकेत।	...	...	|||≡)|||
तालों के संकेत।	...	...	१)
स्वरलिपि—(१) भैरव व भैरवांग राग	...	...	१
(२) हिण्डोल व हिण्डोलांग राग	...	...	२९
(३) मालकोष व अंगीभूत राग	...	...	७५
(४) पंचम व अंगीभूत राग	...	...	९९
(५) श्री व अंगीभूत राग	...	...	१२५
(६) मेघ व अंगीभूत राग	...	...	१५१
(७) विविध राग व रागमाला	...	...	१७५
शुद्धिपत्र	...	...	२०७

स्वर्गीय रामदास गोस्वामी ।

सूचना ।

(१) नाद

संगीत का आदि अथवा मूल ग्रन्थ वेद है परन्तु उसके अनुसार आज-कल कोई भी शिक्षा प्राप्त नहीं करता । जिस प्रकार सृष्टि का प्रसार अणु व परमाणु के संयोग से पंचभूतादि से हुआ है उसी प्रकार संगीत भी आदि शब्द के प्रसार से हुआ है यह कोई असंभव विश्वास नहीं है । "आदि नाद प्रणव रूप"—सुरतसेन के इस गान से मालूम होता है कि प्रणवध्वनि सारे जगत् में व्याप्त है और इसी प्रणवध्वनि के प्रसार से छः स्वर उत्पन्न हुए हैं । ईश्वर का कोई रूप नहीं है परन्तु वह सर्व प्रकार के रूप में विराजमान है । इसी लिए मानव-स्वर के उच्चारण के विचार से मान लिया गया है कि ईश्वर के शीर्ष, नेत्र, मुख, कण्ठ, नाभि और गुह्य से क्रमानुसार ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद ये छः स्वर उत्पन्न हुए और हिंडोल, दीपक, भैरव, मालकोष, श्री और मेघ ये छः राग उत्पन्न हुए ।

प्रणव शब्द पहले तीन भाग में विभक्त होकर पुनः तीन और भागों में विभक्त हुआ है । सुरतसेन के ऊपर लिखे हुए गान में जो 'त्रिविध गुणनिधान" उक्ति है उससे विदित होता है कि ओड़व, षाड़व और सम्पूर्ण यही तीन आदि राग हैं । इन्हीं ओड़व, षाड़व और सम्पूर्ण की प्रतिकृति से मालकोष, मेघ और भैरव रागों की सृष्टि हुई और इन तीनों के प्रसार से हिंडोल, दीपक और श्रीरागों की उत्पत्ति हुई । तथा इन्हीं मूल रागों से क्रमशः बहुत से रागों का विस्तार हुआ है ।

ब्रह्मा के मतानुसार महादेवजी के सद्योजात मुख से श्रीराग, वामदेव मुख से वसन्त, अघोर मुख से भैरव, तत्पुरुष मुख से पंचम, ईशान मुख से मेघ, और गिरिजा मुख से नटनारायण रागों की उत्पत्ति हुई और निषाद, गान्धार, मध्यम, धैवत, ऋषभ और पंचम स्वर के द्वारा क्रमशः शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, शरद्, वर्षा और हेमन्त ऋतु के नाट्यारम्भ में गीत आरम्भ हुआ था अर्थात् शिव-पार्वती ने एक साथ नृत्य करते करते इन रागों को गाया था । किसी किसी का मत है कि भैरव राग प्रथम राग है । इसी आशय का एक गीत है—"प्रथम गाइए सद्योजात मुख सों" । राजबहादुर नाम के किसी भक्त ने भैरवी की रागमाला में "पंचवदन पंचराग सर्वप्रथम उक्ति कीन्हि" यह कहा है और यह भी कहा है कि इसी से क्रमशः भैरव, मालकोष, हिंडोल, मेघ और श्रीराग उत्पन्न हुए हैं । इससे मालूम होता है कि सबका यही मत है कि महादेवजी के पंचमुख से पाँच रागों की सृष्टि हुई है । परन्तु किस मुख से किस राग की उत्पत्ति हुई है इस विषय में जो मतभेद देखा जाता है उसकी मीमांसा का कोई उपाय अब नहीं दिखाई देता । भरत का मत यह है कि महादेव और पार्वती के मुख से भैरव, श्री, मेघ, दीपक, हिण्डोल और मालकोष ये छः राग उत्पन्न हुए हैं । वे कहते हैं कि अघोर (दक्षिण) मुख से भैरव, तत्पुरुष (पश्चिम) मुख से श्री, सद्योजात (आकाश) मुख से मेघ, वामदेव (पूर्व) मुख से दीपक,

ईशान (उत्तर) मुख से हिंडोल और पार्वतीजी के मुख से मालकोष राग की सृष्टि हुई है। ये छः राग छः स्वर से अर्थात् मध्यम, निषाद, धैवत, गांधार, ऋषभ और पंचम स्वरों से गाये गये थे। केवल यही नहीं वरन् छः राग छओं ऋतुओं में गाने की विधि है और इसके परिणाम-स्वरूप वर्षा (मेघ का), अग्नि (दीपक का) इत्यादि भिन्न-भिन्न प्राकृतिक क्रियाओं की उत्पत्ति होती है, लोगों का यही विश्वास है।

बैजूबावरे के "प्रथम आदि शिवशक्ति नाद परमेश्वर"—इस गीत से भी मालूम होता है कि महादेव और पार्वतीजी का गीत ही आर्य संगीत का आदि अथवा मूल है।

महादेव जी के पंचमुख से पाँच स्वर और पार्वतीजी के मुख से छठे स्वर के द्वारा जो छः राग गाये गये उनका मूल वा आदि कारण प्रणव ही है और यह प्रणवध्वनि सारे विश्व में व्याप्त है। शिव पार्वती के मुख से निःसृत छओं स्वरों की समष्टि इस विश्वव्याप्त स्वर में मिलकर षड्ज नाम से प्रसिद्ध हुई है। और यही प्रथम अथवा आदि स्वर है। आत्मतत्वदर्शी सुधी इसी को अनाहतोत्पन्न प्रणव-ध्वनि अथवा षड्ज स्वर कहते हैं। इसी षड्ज से ऋषभ आदि स्वरों की सृष्टि हुई है और वे इसी में मिले हैं। इसीलिए इसका नाम षड्ज है। शास्त्र में इसको मयूरध्वनि कहा है। बैजू बावरा ने जो "षड्ज सुर मेह" गीत बनाया है उसमें मेंह शब्द से वृष्टि का शब्द ही समझा जाता है।

नादविन्दु-उपनिषद् में प्रणव को चार मात्राओं में विभक्त करके उसकी हर एक मात्रा का एक एक अधिष्ठाता देवता मान लिया गया है। जैसे अकार का देवता अग्नि, उकार का देवता वायु, मकार का देवता सूर्य और नाद बिन्दु का देवता वरुण। फिर इनमें से हर मात्रा को तीन तीन भागों में विभक्त करके कुल १२ खंड-मात्राओं में विभक्त किया गया है। इसी प्रकार खंड-मात्राओं को लेकर प्रणव १२ भागों में विभक्त हुआ है। यथा—

अ	उ	म	ँ
अग्नि	वायु	सूर्य	वरुण
।	।	।	।
घोषिणी	वायुवेगिनी	वैष्णवी	ध्रुवा
विद्युन्माली	नामधेया	शांकरी	मौनी
पतंगी	ऐन्द्री	महती	ब्राह्मी

जब यह प्रणव शरीरस्थ वाह्याकाश (ether) में आहत होकर अपना रूप गोपन करके ध्वनि का रूप धारण करता है तब वह ध्वनि संगीत का मूल धातु स्वर माना जाता है। प्रत्येक सप्तक में ५ तीव्र ५ कोमल और २ अच्युत स्वर अर्थात् १२ स्वरांश अथवा भाग रहने के कारण उपनिषद में लिखे हुए प्रणव के १२ अंशों के साथ बहुत सुन्दर सामञ्जस्य दिखाई पड़ता है।

प्राचीन ग्रन्थों को देखने से प्रतीत होता है कि सबसे पहले केवल ३ ही राग अर्थात् ओड़व, षाड़व और सम्पूर्ण गाये जाते थे। ओड़व राग में मालकोष (**स गा मा धा ना**) षाड़व राग में मेघ (**स र मा प ध ना**) और सम्पूर्ण राग में भैरव (**स रा ग मा प धा न**) प्रचलित थे। हिंडोल राग मालकोष राग का व्यत्यय मात्र है। अर्थात् हिंडोल राग में जितने स्वर प्रयोग किये जाते हैं वे

तीव्र हैं परन्तु मालकोष में वे सब कोमल हैं। श्री और भैरव राग में मध्यम स्वर का भेद है अर्थात् भैरव में कोमल मध्यम और श्री राग में तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है। दीपक राग प्रचलित नहीं है। परन्तु इसके रूप के सम्बन्ध में हम कुछ अनुमान कर सकते हैं। जिस प्रकार एक ही प्रस्तार के अर्थात् ओड़व प्रस्तार के कोमल और तीव्र से दो राग मालकोष और हिंडोल बने हैं और सम्पूर्ण प्रस्तार में मध्यम के भेद से भैरव और श्री, उसी प्रकार षाड़व प्रस्तार में मेघ और दीपक का होना कुछ असम्भव नहीं है। यदि दीपक राग प्रचलित होता तो यह बात ठीक ठीक समझ में आती। सर्वसाधारण से प्रार्थना है कि इस विषय पर ठीक ठीक विचार करें।

षट् चक्रादि विषय पर विचार करने से देखा जाता है कि प्रथम चक्र के दो अंगुल ऊपर और द्वितीय चक्र के दो अंगुल नीचे एक अंगुल के बराबर अग्निशिखावत् एक चक्र है जिसके ९ अंगुल ऊपर एक वर्गाकार स्थान है जिसकी हर एक भुजा ४ अंगुल है। इसी को नाभिकन्दर*अथवा ब्रह्मग्रन्थि कहते हैं। शेष चक्र मस्तिष्क के नीचे और मुखगह्वर के ऊपर के स्थान में स्थित है। इसको ब्रह्मतालु कहते हैं। बाक़ी चक्र शरीर के विभिन्न स्थानों में स्थित हैं। शरीर में बहुत सी नाड़ियाँ हैं जिनमें इड़ा, सुषुम्ना, और पिंगला प्रधान हैं और इनमें भी सुषुम्ना सर्वप्रधान है, क्योंकि प्राणवायु सुषुम्ना के आश्रय से ब्रह्मग्रन्थि से ब्रह्मतालु तक चढ़ती और उतरती है। जिस प्रकार मकड़ी अपने जाले का विस्तार करके उसके बीच में रहती है, निकल नहीं सकती उसी प्रकार जीव मनुष्यशरीर में जन्ममृत्यु-रूप जाले में फँसकर आता जाता रहता है, बाहर निकल नहीं सकता। इस भव-बन्धन (यम-जाल) से मुक्त होने के लिए नाना प्रकार की उपासना हैं और उनमें नादोपासना एक मुख्य है। अनाहत नादोपासना (प्राणायाम क्रियादि योग) कठिन और नीरस होने के कारण लोगों को पसन्द नहीं होती। आहत नादोपासना (संगीत क्रियादि योग) मनोरंजक और भवभयभंजक और सुखदायक समझी जाती है। नादोपासना करने से ब्रह्मा, विष्णु और महेश की उपासना होती है और इसके द्वारा चारों फल प्राप्त होते हैं। जिस प्रकार सुषुम्ना-प्राण-वायु न रहने से इड़ा-पिंगला का कार्य नहीं हो सकता उसी प्रकार षड्ज न रहने से मध्यम, पंचम आदि स्वरों का व्यवहार नहीं हो सकता। **इसलिए षड्ज का निश्चय करना और उससे छः स्वरों का ज्ञान और अभ्यास करना सबसे अधिक आवश्यक है।** इन्हीं ७ स्वरों के आधार पर मूर्च्छना आदि विषयों की सृष्टि हुई है। रचना-कौशल के द्वारा इसको सजाने से और इसमें पदों की योजना करके कण्ठ से गान और वाद्ययन्त्रों से वादन करने से संगीत होता है। नृत्य भी इसका एक अंग है। शिव-पार्वती ने पहले नृत्य करते करते स्वर और राग की सृष्टि की और संगीत किया यह पहले ही कहा जा चुका है। आज-कल योगनृत्य प्रायः लुप्त हो गया है। इसी को नादोपासना कहते हैं। प्राचीन गीतों से प्रतीत होता है कि इसका प्रयोग आरम्भ में भगवान् की आरा-

---

* महाशक्ति का यही केन्द्रस्थान है। परमः सहजस्तद्वदानन्दो वीरपूर्वकः। योगानन्दश्च तत्र स्यादैशानादि दले फलम्। (संगीतरत्नाकर)

धना में ही और सात्विक भाव से होता था। धीरे धीरे इसका रूप परिवर्त्तित हो गया है और ख्याल, टप्पा, ठुमरी, ग़ज़ल आदि उत्पन्न हुए हैं। वह भी एक प्रकार की नादोपासना कही जा सकती है परन्तु इसमें राजसिक और तामसिक भाव ही अधिक दिखाई पड़ते हैं। मूल अथवा आदि ग्रन्थ आज-कल कोई भी नहीं मिलता और जो कुछ मिलता है वह भी भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न टीकाकारों के बनाये हुए हैं। परन्तु सबके सब नाद ही को आदि मानकर शिवशक्ति के संयोग से संगीत की उत्पत्ति स्वीकार करते हैं।

(२) श्रुति व स्वर

नाद से श्रुति और श्रुति से स्वर की उत्पत्ति हुई है। अणु-परमाणुओं की जिस समष्टि से आकाश बना है उसके कम्पन से नाद की उत्पत्ति हुई है। एकाधिक नाद के प्रकम्पन से अनुरणन होता है और चूँकि एकाधिक अनुरणन सुना जा सकता है इसलिए उसे श्रुति कहते हैं। कई श्रुतियों की समष्टि को स्वर कहते हैं। सब स्वरों को यंत्र अथवा कंठ के द्वारा प्रकाश करना असम्भव है इसलिए उन स्वरों को जिनका व्यवहार सहज है संगीत का आदि अथवा मूल स्वर मानते हैं। ये ७ हैं, यथा—षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। इनकी संज्ञा क्रमशः **स र ग म प ध** और **न** हैं। गाने के समय **र** और **न** को **रि** और **नि** उच्चारण करते हैं। इन सातों स्वरों के किसी दो के बीच में जिन नादों का अनुरणन होता है अर्थात् एक स्वर से द्वितीय स्वर तक उच्चारण करने में जो आंशिक स्वर कंठ अथवा यंत्र में निहित रहते हैं वे भी संगीत-शास्त्र में श्रुति कहलाते हैं। ये आंशिक स्वर (पर्याय) गाने के समय स्पष्टरूप से यद्यपि प्रकाशित नहीं होते परन्तु जिन लोगों को संगीत में विशेष ज्ञान है, उनके कानों में और वाद्य-यंत्रों में (वीणा आदि में) प्रतीत होते हैं।

संगीतरत्नाकर ग्रन्थ में लिखा है—"रंजयति यस्मात् श्रोतृचित्तं तस्मात् सस्वरः इतिनिरुक्तिः।" अपि च "स्वयं हि राजते यस्मात् तस्मात् स्वर इति स्मृतः।" इससे मालूम होता है कि स्वर में स्निग्धत्व गुण न रहने से अनुरणनहीन प्रतीत होता है और उससे रंजकक्रिया नहीं हो सकती। श्रुति अथवा अनुरणनयुक्त स्वर के व्यवहार करने से स्निग्ध अथवा मधुर भाव उत्पन्न होता है। किसी किसी संगीत-ग्रन्थ में लिखा है कि नासिका, कंठ, हृदय, तालु, जिह्वा और दंत इन ६ स्थानों से नाभिस्थ वायु आहत होकर उच्चारित होता है इसलिए इसको षड्ज कहते हैं। नाभि से वायु उत्थित होकर कंठ और शीर्ष में आहत होकर ऋषभ की सी ध्वनि पैदा होती है इसलिए उसे ऋषभ कहते हैं। इसी प्रकार और और स्वरों की उत्पत्ति के विषय में जो बातें इन ग्रन्थों में लिखी हैं उनसे हम लोगों का कोई काम नहीं निकलता। कदाचित् योगियों को इन बातों से अपने साधन में सहायता मिल सकती होगी। स्वरों के नाम के विषय में गुरु के पास हम लोगों की जो शिक्षा प्राप्त हुई है वह यह है—सप्त स्वर के पहले स्वर से बाक़ी छः स्वर क्रमशः निकलते हैं इसीलिए उसको षड्ज कहते हैं। सप्तस्वर के

प्रथमार्द्ध **स र ग म** इन चार स्वरों में द्वितीय स्वर उसी प्रकार बलवान् है जैसे कि गाभीदल में वृषभ। इसी लिए गोपालक आर्य ऋषियों ने उसका नाम ऋषभ रक्खा है। षड्ज स्वर में तृतीय स्वर का स्वरूप स्वयं प्रकाशित अथवा झंकृत होता है इसलिए उसे गांधार (झंकार अथवा गंकार) कहते हैं। सप्त-स्वर के बीच के अर्थात् मध्यम और पंचम स्थान के स्वरों को मध्यम और पंचम कहते हैं। प्रथमार्द्ध में जैसा ऋषभ वैसा ही द्वितीयार्द्ध, **प ध न स**, में धैवत स्वर बलवान् है। षड्ज के अनुवर्त्ती सातों स्वरों के शेष स्वर को निषाद कहते हैं। सप्त स्वरों का अर्थ चाहे कुछ भी हो संगीत-क्रिया में उनका प्रयोग ठीक ठीक होना चाहिए। चाहे जिस विधि से चलें अपना लक्ष्य स्थिर रख के साधना करने से उद्देश्य सिद्ध हो सकता है। यही गुरुमुखी शिक्षा का प्रथम सोपान है। **शिष्यों को चाहिए कि गुरु के समीप बैठ कर स्वर साधना करें।** ऐसा करने से धीरे धीरे स्वर का ठीक ठीक बोध हो जायगा। प्राचीन गुरुओं से सुना है कि एक ही स्वर को एक हज़ार बार साधना करने से उसका स्वरूप मालूम होता है। और इसी प्रकार किसी एक गीत को एक हज़ार बार साधना करने से उस राग की मूर्त्ति अथवा छाया दिखाई देती है। आज-कल इस प्रकार की साधना किसी को रुचती नहीं। हारमोनियम की सहायता से स्वर की शिक्षा और साधना करते हुए आज-कल लोग दिखाई पड़ते हैं। सातों स्वरों के बीच में जितने अनुरणन होते हैं उनको संगीत-शास्त्र में यद्यपि श्रुति कहते हैं परन्तु उनमें जिनको कंठ अथवा यंत्र में स्थापित कर सकते हैं संगीत के आचार्यों ने उनके भिन्न-भिन्न नाम रक्खे हैं। **स** और **प** को अचल अथवा (Standard) कहते हैं और **र ग म ध** और **न** इनमें से हर एक के चार चार पर्याय मान लिये हैं, यथा अति कोमल, कोमल, तीव्र और अतितीव्र। इससे यही मालूम होता है कि हमारे संगीत-शास्त्र में सब मिलाकर २२ श्रुतियों का व्यवहार किया जाता है। कोई कोई कहते हैं कि अति कोमल और अतितीव्र स्वर हो नहीं सकता। परन्तु मैंने मुसलमान तंत्र-कारों से यह स्वर सुना है और कुछ सीखा है। वे कहते हैं कि हमने हनुमन्त-मत के अनुसार इन स्वरों की शिक्षा पाई है। पारिजात ग्रन्थकर्त्ता पंडित अहोबल शास्त्री ने भी अनेक स्थान पर हनुमन्त-मत के अनुसार इन स्वरों को लिपिबद्ध किया है। इस ग्रन्थ में लिखा है कि "पूर्वकोमलतीव्रश्च तथा तीव्रतरेण च। अतितीव्रतमेनैव सर्वे रागा उदीरिता: ।" प्राचीन हिन्दुस्तानी नियम के अनुसार स्वर-स्थापना इसी प्रकार होती है।

बाईसों स्वरों का व्यवहार करना कठिन है इसलिए लोग १२ स्वरों का व्यवहार करते हैं। यथा—षड्ज, (अचल), ऋषभ कोमल और तीव्र, गान्धार कोमल और तीव्र, मध्यम कोमल और तीव्र, पंचम (अचल), धैवत कोमल और तीव्र, निषाद कोमल और तीव्र। परन्तु इन सबका मूल सप्त-स्वर हैं। और इन सातों स्वरों के प्रस्तार से रागरूप अथवा राग-रंग प्रकट करने का कौशल देखा जाता है। संगीत-शास्त्र में ऐसे कौशल अनेक प्रकार के हैं परन्तु उनमें से मूर्च्छना, तान और अलंकार यही तीन प्रधान हैं। ये पृथक् होते हुए भी तुल्यार्थबोधक हैं। मूर्च्छना के माने हैं संक्षेप करना और तान का विस्तार करना। तान और मूर्च्छना से अलंकार बनता है। ये सबके सब स्वर के काम हैं।

शिक्षार्थी को पहले पहल इन्हीं तीन विषयों का साधन करना कर्त्तव्य है। इनमें से चाहे जिसको वे अभ्यास कर सकते हैं परन्तु **सबसे पहले स्वर अर्थात् षड्ज का निश्चय करना उनका कर्त्तव्य है।** उसके बाद साधना के द्वारा और और विषयों की ओर बढ़ना चाहिए।

(३) मूर्च्छना*

पहले षड्ज के निश्चय होने से ऋषभ आदि छओं स्वरों का क्रमोच्चारण (उच्च भाव से) स्वभावत: प्रतीत होता है और इसी को "आरोहण" कहते हैं। इसके विपरीत क्रम को (निम्नभाव से) "अवरोहण" कहते हैं। शिक्षार्थी का कर्त्तव्य है कि इन स्वरों की शिक्षा व अभ्यास किसी तंत्रकार अथवा गायक के समीप करें, न कि अन्य किसी उपाय से। आरोहावरोह-क्रमयुक्त सप्तस्वर को मूर्च्छना कहते हैं। प्राय: संगीत पुस्तकों में **"स र ग म प ध न स—स न ध प म ग र स"** इस क्रम को मूर्च्छना कहा गया है परन्तु वास्तव में यह केवल सप्तस्वरों का आरोहण और सप्तस्वरों का अवरोहण ही है, न कि आरोहावरोह—क्रमयुक्त—सप्तस्वर। सप्तस्वरों का आरोहांश **म प ध न** और अवरोहांश **म ग र स** है। मध्यम स्वर दोनों अंशों में होने के कारण उसको एक ही बार रखने से और दोनों अंशों को एकत्र करने से सप्तस्वर **स र ग म प ध न** होता है और आरोहावरोह-क्रमयुक्त भी होता है। केवल यही नहीं परन्तु इस प्रकार से मूर्च्छना का साधन करने से निम्न और उच्च 'मन्द्रतार' सप्तकों का ठीक ठीक बोध व ज्ञान होता है अर्थात् आरोहणांश (**म प ध न**) में **स र ग** मिला देने से उच्च सप्तक और अवरोहणांश (**म ग र स**) में **नं धं पं** मिला देने से निम्नसप्तक का बोध होता है। इसी प्रकार मूर्च्छना के विचार ही से वीणादि यंत्रों की सृष्टि हुई है। पहले त्रितंत्री का व्यवहार था फिर धीरे-धीरे बहुतंत्रीयुक्त यंत्रों का व्यवहार होने लगा। अब देखते हैं कि संगीत में भी भाव का परिवर्त्तन और यथेच्छाचार आ गया है।†

---

*इसके सम्बन्ध में संगीतरत्नाकर ग्रन्थ की मतंग और भरत की टीकाओंको देखने से यथार्थ ज्ञान होगा। पूनानिवासी पं० अन्नापुरुषोत्तम घारपुरेजी का भी यही मत है।

आरोहावरोहेन क्रमेण स्वरसप्तकम्।
मूर्च्छना शब्दवाच्यं हि विज्ञेयं तद्विचक्षणैः॥

—संगीतपारिजात

†प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न प्रकार के वीणादि यंत्रों की सहायता से संगीत होता था। और ध्रुपद को छोड़कर और किसी प्रकार का गाना रुचिविरुद्ध समझा जाता था। धीरे-धीरे सितार, एसरार इत्यादि का व्यवहार और ख्याल, टप्पा, ठुमरी, गज़ल, इत्यादि गानों का प्रचार हो गया। केवल ध्रुपद को सम्मान दिखाने के लिए ख्याल, टप्पा गाने के पहले थोड़ी-सी आलाप और दो एक ध्रुपद का स्थायी गाते हैं। कोई अच्छे सितारी हों तो सितार ही के आलाप से राग का विस्तार दिखाते हैं। परन्तु उनको वीणाकार नहीं कह सकते। वीणा का काम और ही प्रकार का है और इसी लिए वीणाकारों को तंत्रकार कहते हैं। तंत्रकार आलाप ध्रुपद ख्याल, टप्पा आदि सब प्रकार की शिक्षा दे सकते हैं। परन्तु आज-कल कुछ विपरीत ही नियम दिखलाई देता है अर्थात् जो सितारी हैं

मूर्च्छना के अभ्यास करने से मीड़ का ज्ञान होता है। कंठ में एक स्वर को अव्यक्त रखकर उसके परवर्त्ती अथवा पूर्ववर्त्ती स्वर के उच्चारण को मीड़ कहते हैं। तार के यंत्र में इसको आकर्षणान्तर आघात और आघातान्तर आकर्षण कहते हैं। जैसे **प म ग** अथवा **प ग** के उच्चारण करने के लिए पंचम स्वर कंठ में अव्यक्त रहता है फिर **ग** व्यक्त होता है अथवा तार के यंत्र में गान्धार के स्थान पर आकर्षण करके पंचम स्वर को निकाल कर गान्धार में स्थित और गान्धार स्थान पर आघात करके पंचम स्वर तक आकर्षण करना। इसी को अनुलोम (आघातान्तर आकर्षण) और विलोम (आकर्षणान्तर आघात) कहते हैं।

मूर्च्छना कुल ६३ हैं और उनमें प्रधान ७ हैं। चित्र क देखिए।

चित्र क—मूर्च्छना

१—स र ग म स नं धं पं स र ग स नं धं स र स नं
२—र ग म प र स नं धं र ग म र स नं र ग र स
३—ग म प ध ग र स नं ग म प ग र स ग म ग र
४—म प ध न म ग र स म प ध म ग र म प म ग
५—प ध न स प म ग र प ध न प म ग प ध प म
६—ध न स र ध प म ग ध न स ध प म ध न ध प
७—न स र ग न ध प म न स र न ध प न स न ध
१—स र ग म नं धं पं मं स र ग नं धं पं स र नं धं
२—र ग म प स नं धं पं र ग म स नं धं र ग स नं
३—ग म प ध र स नं धं ग म प र स नं ग म र स
४—म प ध न ग र स नं म प ध ग र स म प ग र
५—प ध न स म ग र स प ध न म ग र प ध म ग
६—ध न स र प म ग र ध न स प म ग ध न प म
७—न स र ग ध प म ग न स र ध प म न स ध प

वे अपने को ध्रुपदी कहते हैं और ध्रुपद की शिक्षा भी देते हैं। सुनने में आता है कि बनारस के स्वर्गीय महेशचन्द्र सरकार महाशय जी की वीणा को सुनकर प्रसिद्ध वीणाकार बन्दे अलीखाँ ने उसको "सितार की तालीम" कहा था। महेश बाबू ने नामी सितारी वाजपेयीजी के पास वीणावादन सीखा था। फिर ख़ाँ साहबों से उपदेश लेकर वीणा का हाथ तैयार किया था। अमीर खुसरो, अदारंग, सदारंग, आदि गुणी ख्याली थे और सितार बजाते थे। इन्होंने ध्रुपद की भी रचना की है परन्तु ये ध्रुपदी नहीं हो सके थे। इनके रचित ध्रुपद में और उनके पहले के ध्रुपद में बहुत भेद दिखाई पड़ता है।

पं धं नं स र ग म—षड्ज मूर्च्छना—मं पं धं नं स र ग म—षड्ज मूर्च्छना

धं नं स र ग म प—ऋषभ मूर्च्छना—पं धं नं स र ग म प—ऋषभ मूर्च्छना

नं स र ग म प ध—गांधार मूर्च्छना—धं नं स र ग म प ध—गांधार मूर्च्छना

स र ग म प ध न—मध्यम मूर्च्छना—नं स र ग म प ध न—मध्यम मूर्च्छना

र ग म प ध न स—पंचम मूर्च्छना—स र ग म प ध न स—पंचम मूर्च्छना

ग म प ध न स र—धैवत मूर्च्छना—र ग म प ध न स र—धैवत मूर्च्छना

म प ध न स र ग—निषाद मूर्च्छना—ग म प ध न स र ग—निषाद मूर्च्छना

इन मूर्च्छनाओं को एक साथ लिखने से पं धं नं स र ग म प ध न स र ग अथवा मं पं धं नं स र ग म प ध न स र ग होता है। इन स्थानों का व्यवहार वीणादि यंत्रों में मेरु अथवा सारिका के द्वारा होता है। जिन यंत्रों में परदा नहीं है उनमें इन स्थानों का विशेष विचार यदि वादक चित्त में रक्खें तो सहज ही में सब स्वरों को निकाल सकेंगे।

ऊपर लिखी हुई मूर्च्छनाओं में से हर एक के और ८ प्रस्तार नीचे दिये जाते हैं। इनकी साधना अच्छी तरह करनी चाहिए।

१ स र ग म स नं धं पं र ग म स नं धं र ग स नं

२ स र ग म स नं धं पं र ग म स नं धं ग म स नं

३ स र ग म स नं धं पं र ग म नं धं पं ग म धं पं

४ स र ग म स न धं पं र ग म नं धं पं र ग धं पं

५ स र ग म स नं धं पं स र ग नं धं पं स र धं पं

६ स र ग म स नं धं पं स र ग नं धं पं स र नं धं

७ स र ग म स नं धं पं र ग म नं धं पं र ग नं धं

८ स र ग म स नं धं पं र ग म नं धं पं ग म नं धं

षड्ज का एक मूर्च्छना पहले दे चुके हैं इसलिए इन आठों को लेकर ९ मूर्च्छनाएँ हुईं, इसी प्रकार बाक़ी ६ स्वरों में से हर एक की ९ मूर्च्छनाएँ शिक्षार्थी स्वयं बनाकर कुल ६३ मूर्च्छनाओं का अभ्यास कर सकते हैं।

षड्ज ग्राम मूर्च्छना		मध्यम ग्राम मूर्च्छना	
उत्तर मन्द्रा	स र ग म प ध न	सौवीरी	म प ध न स र ग
रजनी	नं स र ग म प ध	हरिणाश्वा	ग म प ध न स र
उत्तरायता	धं नं स र ग म प	कलोपनता	र ग म प ध न स
शुद्ध षड्जा	पं धं नं स र ग म	शुद्ध मध्या	स र ग म प ध न
मत्सरी कृता	मं पं धं नं स र ग	मार्गी	नं स र ग म प ध
अश्वक्रान्ता	गं मं पं धं नं स र	पौरवी	धं नं स र ग म प
अभिरुद्धता	रं गं मं पं धं नं स	हृष्यका	पं धं नं स र ग म

षड्ज ग्राम और मध्यम ग्राम के अन्तर्गत जो मूर्च्छनायें संगीतशास्त्र में दिखाई देती हैं उनमें षड्ज ग्राम में केवल २ स्थान (मध्य और मन्द्र) पाये जाते हैं और मध्यम ग्राम में भी दो स्थान (मध्य और तार) पाये जाते हैं। यह भी देखा जाता है कि षड्ज ग्राम के प्रथम चार मूर्च्छना और मध्यम ग्राम के शेष चार मूर्च्छना एक ही है। मूर्च्छनाप्रस्तार में ३ स्थानों का व्यवहार होना उचित* है। मन्द्र और तार सम्पूर्ण व्यवहार किये जायँ तो अच्छा ही है नहीं तो कम से कम हर एक में ३-४ स्वरों का रहना आवश्यक है। ग्रामों में षड्ज ग्राम ही मुख्य है। और आरोहण अवरोहण क्रमयुक्त सप्तस्वर को मूर्च्छना कहते हैं। इस प्रकार सप्तस्वर के विस्तार द्वारा ऊपर दिखाये हुए सप्त मूर्च्छना और शास्त्रोक्त मध्यम मूर्च्छना एक ही हैं केवल विपरीत भाव के हैं अर्थात् उल्लिखित षड्ज मूर्च्छना मध्यम ग्राम की हृष्यका मूर्च्छना है। किसी किसी ने एक आठवाँ स्वर अर्थात् अन्य स्थान के प्रथम स्वर का भी प्रयोग किया है। क्योंकि इससे कुछ सहायता मिलती है। ये सब बातें साधन-काल में काम में आती हैं।

सप्तस्वर के आरोहण और सप्तस्वर के अवरोहण के क्रम को **मूर्च्छना-प्रस्तार** कहते हैं। इसके शुद्ध व मिश्र दो भाग हैं और फिर शुद्ध के ३ और मिश्र के ९ भाग होते हैं। और ये ही रागों के मूल अथवा हेतु हैं। चाहे कोई भी राग गाया या बजाया जाय उसका परिचय इन १२ प्रस्तारों में किसी न किसी में पाया जायगा।

१	शुद्ध ओड़व १५ } कोमल मिलाने से बहुत होते हैं।	७ मिश्र षाड़वौड़व ९०
२	शुद्ध षाड़व ६ }	८ ” षाड़वषाड़व ३०
३	शुद्ध सम्पूर्ण १; कोमल मिलाने से ३१	९ ” षाड़व सम्पूर्ण ६
४	मिश्र ओड़वौड़व २१०	१० ” सम्पूर्णौड़व १५
५	” ओड़व षाड़व ९०	११ ” सम्पूर्ण षाड़व ६
६	मिश्र ओड़व संपूर्ण १५	१२ ” सम्पूर्ण १; कोमल मिलाने से ३२

विस्तारित विवरण के लिए चित्र ख देखिए।

चित्र ख। मूर्च्छना प्रस्तार अथवा राग-हेतु

शुद्ध			मिश्र		
१	२	३	४	५	६
ओड़व	षाड़व	सम्पूर्ण	ओड़वौड़व	षाड़वौड़व	सम्पूर्णौड़व
१५	६	१	२१०	९०	१५

---

*मध्यसप्तकेन मूर्च्छना निर्देशकार्यो मन्द्रतार सिद्ध्यर्थ (भरतटीका)

†मध्यम स्वरेण वैणवेन मूर्च्छना निर्देशः (संगीतरत्नाकर की मतङ्ग टीका।)

स र ग म प	स र ग म प ध	स र ग म प ध न		
स र ग म ध	स र ग म प न			
स र ग म न	स र ग प ध न			
स र ग प ध	स र म प ध न			
स र ग प न	स ग म प ध न			
स र ग ध न	स र ग म ध न			
स र म प ध				
स र म प न				
स र म ध न				
स र प ध न				
स ग म प ध				
स ग म प न				
स ग म ध न				
स ग प ध न				
स म प ध न				

ओड़व षाड़व	षाड़व षाड़व	सम्पूर्ण षाड़व
९०	३०	६
ओड़व सम्पूर्ण	षाड़व सम्पूर्ण	सम्पूर्ण
१५	६	६

१—१५ ओड़व मेलों में पहला, तीसरा, छठा, दसवाँ और पन्द्रहवाँ मेल के विचार करने से देखा जाता है कि लगातार दो स्वर वर्जित होने के कारण बहुत-सी श्रुतियों का अभाव होता है और इस अवस्था में राग बनाने से कर्ण कटु हो जाता है। कदाचित् मिश्र रागों में इनको व्यवहार में लाने से कर्ण प्रिय हो सकते हैं बाक़ी दस ओड़व रागों में कुछ प्रचलित हैं जैसे चौथा (भूपाल, विभाष,) पाँचवाँ (हंसध्वनि) आठवाँ (सारंग) नवाँ (पुलिन्दिका) बारहवाँ (मालश्री) ग्यारहवाँ (हिंडोल, मालकोष)

२—तीसरा (देशकार) छठा (पुरिया, मारूवा, सोहिनी) चौथा (गौड़, मेघ)

३—देखिए रागमेला

मिश्र रागों में बहुत हो सकते हैं उनमें से कुछ प्रचलित हैं।

जैसे—

ओड़व षाड़व······स र मा प न······ना ध प मा र स (सुरट)
ओडव सम्पूर्ण······स र मा प न······ना ध प मा ग र स (देश)
ओड़व सम्पूर्ण······स र मा प ना······ना धा प मा गा रा स (आसावरी)
षाड़व सम्पूर्ण······स र ग म प न······न ध प म ग र स (श्याम)
ओड़व सम्पूर्ण······स ग मा प न······न ध प मा ग र स (बेहाग)

ओड़व सम्पूर्ण······स गा मा प ना······ना ध प मा गा र स (भीम पलश्री)
ओड़व सम्पूर्ण······स गा म प न······न धा प म गा रा स (मुलतान)
इत्यादि

इस प्रकार के और कुछ रागमेला में दिखाये गये हैं।

ओड़वौड़व (२१०)

आरोही	अवरोही
१ स र ग म प	ध म ग र स
२	न म ग र स
३	ध प ग र स
४	न प ग र स
५	न ध ग र स
६	ध प म र स
७	न प म र स
८	न ध म र स
९	न ध प र स
१०	ध प म ग स
११	न प म ग स
१२	न ध म ग स
१३	न ध प ग स
१४	न ध प म स

इसी प्रकार से आरोही और अवरोही में क्रमशः स्वरों के अदल बदल से १५ × १४ अर्थात् २१० प्रस्तार बन सकते हैं।

ओड़व षाड़व—इसी प्रकार यदि हम आरोह में ५ और अवरोह में ६ स्वरों को क्रम से रक्खें तो देखेंगे कि ओड़व षाड़व के कुल ९० प्रस्तार हो सकते हैं।

ओड़वसम्पूर्ण—इसके १५ प्रस्तार हो सकते हैं।

षाड़वौड़व—इसके ९० प्रस्तार हो सकते हैं।

षाड़व षाड़व—इसके ३० प्रस्तार हो सकते हैं।

षाड़व सम्पूर्ण—इसके ६ प्रस्तार हो सकते हैं।

सम्पूर्णोड़व—इसके १५ प्रस्तार हो सकते हैं।

सम्पूर्ण षाड़व—इसके ६ प्रस्तार होते हैं।

मिश्र सम्पूर्ण—१ प्रस्तार; कोमल मिलाने से ३२। नीचे देखिए।

शुद्ध रागमेला

(आरोह और अवरोह दोनों समान)

संख्या

१ स र ग म प ध न	कल्याण	५ स र ग म प धा न	
२ स रा ग म प ध न	त्रिवन बरारी	६ स र ग म प ध ना	
३ स र गा म प ध न		७ स रा गा म प ध न	
४ स र ग मा प ध न	बेलावल, अलाहिया	८ स रा ग मा प ध न	जयन्ती

९ स	रा	ग	म	प	धा	न	श्री, पुरवी, धानश्री	२१ स	रा	ग	मा	प	ध	ना	
१० स	रा	ग	म	प	ध	ना		२२ स	रा	ग	म	प	धा	ना	
११ स	र	गा	मा	प	ध	न		२३ स	र	गा	मा	प	धा	न	
१२ स	र	गा	म	प	धा	न		२४ स	र	गा	मा	प	ध	ना	काफी, वागेश्री
१३ स	र	गा	म	प	ध	ना		२५ स	र	गा	म	प	धा	ना	
१४ स	र	ग	मा	प	धा	न		२६ स	र	ग	मा	प	धा	ना	
१५ स	र	ग	मा	प	ध	ना	झिंझिट	२७ स	रा	गा	मा	प	धा	न	
१६ स	र	ग	म	प	धा	ना		२८ स	रा	गा	मा	प	ध	ना	
१७ स	रा	गा	मा	प	ध	न		२९ स	रा	गा	म	प	धा	ना	बहादुरी टोड़ी
१८ स	रा	गा	म	प	धा	न	दरबारी टोड़ी	३० स	रा	ग	मा	प	धा	ना	जोगिया
१९ स	रा	गा	म	प	ध	ना		३१ स	र	गा	मा	प	धा	ना	दरबारी कानड़ा
२० स	रा	ग	मा	प	धा	न	भैरव, रामकेलि	३२ स	रा	गा	मा	प	धा	ना	भैरवी

रागमेला मिश्र—आरोह और अवरोह में भिन्न-भिन्न

१ स	रा	र	ग	म	प	ध	न				
२ स	र	गा	ग	म	प	ध	न				
३ स	र	ग	मा	म	प	ध	न				केदारा, हम्बीर
४ स	र	ग	म	प	धा	ध	न				
५ स	र	ग	म	प	ध	ना	न				
६ स	रा	र	गा	ग	म	प	ध	न			
७ स	रा	र	ग	मा	म	प	ध	न			
८ स	रा	र	ग	म	प	धा	ध	न			
९ स	रा	र	ग	म	प	ध	ना	न			
१० स	र	गा	ग	मा	म	प	ध	न			
११ स	र	गा	ग	म	प	धा	ध	न			
१२ स	र	गा	ग	म	प	ध	ना	न			खम्बाजी कानड़ा
१३ स	र	ग	मा	म	प	धा	ध	न			
१४ स	र	ग	मा	म	प	ध	ना	न			
१५ स	र	ग	म	प	धा	ध	ना	न			
१६ स	रा	र	गा	ग	मा	म	प	ध	न		

१७ स रा र गा ग म प धा ध न
१८ स रा र गा ग म प ध ना न
१९ स रा र ग मा म प धा ध न
२० स रा र ग मा म प ध ना न
२१ स रा र ग म प धा ध ना न
२२ स र गा ग मा म प धा ध न
२३ स र गा ग मा म प ध ना न
२४ स र गा ग म प धा ध ना न
२५ स र ग मा म प धा ध ना न
२६ स रा र गा ग मा म प धा ध न
२७ स रा र गा ग मा म प ध ना न
२८ स रा र गा ग म प धा ध ना न
२९ स रा र ग मा म प धा ध ना न
३० स र गा ग मा म प धा ध ना न पंचम, जय जयन्ती
३१ स रा र गा ग मा म प धा ध ना न रागसागर

दृष्टान्त-स्वरूप दो चार रागों के ठाठ नीचे दिये गये हैं—

शुद्धौड़व

मा न हीन, भूपाली स र ग प ध	विभाष स रा ग प धा
र प हीन, हिंडोल स ग म ध न	मालकोष स गा मा धा ना
र ध हीन, मालश्री स ग म प न	पलश्री स गा मा प ना
ग न हीन, सामन्त स र मा प ध	गुणकेली स रा मा प धा
म ध हीन, हंसध्वनि स र गा प ना	दुर्गा स र ग प न
र न हीन, नागध्वनि स गा मा प धा	
ग प हीन, पुलिन्दिका स र मा ध ना	
ग ध हीन, सारङ्ग स र मा प न	

शुद्ध षाड़व

र हीन, टंक स गा म प ध ना
ग हीन, मेघ स र मा प ध ना—इस ठाट में गौड़ भी गाते हैं
म हीन, देशकार स र ग प ध न

धवलश्री स रा ग प धा न

प हीन, ललित स रा ग मा म धा न

पुरिया, मारूवा स रा ग म धा न, स रा ग म ध न

सोहिनी स रा ग मा ध न

ध हीन, तिलक स र ग मा प न

कुमारी स रा ग म प न

न हीन, मेघनाद स र ग मा प ध

मालवी स र गा मा प धा

पूना निवासी अन्ना साहब ने टङ्क, जेतक, कुमारी, मेघनाद, और मालवी राग मुझे सुनाया था। परन्तु समयाभाव के कारण मैं भली भाँति सीख नहीं पाया।

शुद्ध सम्पूर्ण कुल ३१ हैं। उनमें से प्रथम तीव्र स र ग म प ध न यह शुद्ध कल्याण का ठाट है और शेष कोमल स रा गा मा प धा ना यह भैरवी का ठाट है। रा गा मा धा और ना इन पाँचों के योग से पाँच मेल होते हैं। उनमें से दो का नाम मुझे मालूम है। मा के योग से बेलावल और ना के योग से हरशृङ्गार। दो कोमल के योग से १० मेल होते हैं। उनमें रा धा से श्री, पुरवी और धनाश्री और मा ना से झिंझिट हुआ है। तीन कोमल के योग से ६ मेल होते हैं। उनमें रा गा धा से बिलासखानी टोड़ी; गा मा ना से सिन्धु, बागश्री; रा मा धा से भैरव, रामकेली, गौरी हुए हैं। चार कोमल के योग से ५ मेल होते हैं जिनमें रा गा धा ना से बहादुरी टोड़ी; रा मा धा ना से जोगिया (योगिया) गा मा धा ना से दरबारी कानड़ा हुए हैं। शुद्ध सम्पूर्ण रागों के यही ३१ मेल होते हैं। और इन्हीं सम्पूर्णों को षाड़व अथवा ओड़व कर सकते हैं। जैसा कल्याण मेल (स र ग म प ध न) से र प गिरा देने से हिंडोल राग का ठाट (स ग म ध न) होता है; र ध गिरा देने से मालश्री का ठाट (स ग म प न), म न गिरा देने से भूपाली का ठाट (स र ग प ध) होते हैं। भैरव मेल (स रा ग मा प धा न) में से म न निकाल देने से विभाष राग का ठाट होता है। भैरवी मेल (स रा गा मा प धा ना) में से र प निकाल देने से माल-कोष राग का ठाट बन जाता है। इसी प्रकार ग गिरा देने से गौड़, मेघ; प निकाल देने से मारूवा, ललित, पुरिया हो जाते हैं। मिश्र मेल से भी बहुत से रागों का विस्तार हो सकता है। और इसी प्रकार प्रस्तार के द्वारा दिन और रात के रागों का भेद माना गया है।

स र ग मा प ध न (यमन बेलावल) दिन का कल्याण

स र ग म प ध न (शुद्ध कल्याण) रात का कल्याण

स रा ग मा प धा न (दिन का) भैरव

स रा ग म प धा न (सन्ध्या की) श्री

स र गा मा प ध ना (सिन्धु) (दिन का) कानड़ा
स र गा मा प ध ना (रात की) बागश्री

इसी प्रकार दिन में असावरी रात में दरबारी कानड़ा, दिन में गौड़ सारङ्ग रात में विहाग, दिन में सुहा, सुघराई और रात में आड़ाना समझना चाहिए।

(४) स्वर प्रस्तार अथवा तान

सप्तस्वरों को हर एक प्रकार से विस्तार करने से ५०४० सम्पूर्ण तान होते हैं और इसी प्रकार छः स्वरों के ७२० षाड़व तान, पाँच स्वरों के १२० ओड़व तान, चार स्वरों के २४, तीन स्वरों के ६, दो स्वरों के २ और एक स्वर का १ होता है। एक और दो स्वर से तान नहीं होता। तीन और चार स्वर से खण्ड-तान होता है। पाँच, छः और सात स्वर से ओड़व, षाड़व और सम्पूर्ण तान होते हैं। जिस प्रकार राग तीन जाति के होते हैं उसी प्रकार तान भी तीन श्रेणी के होते हैं। तान दो प्रकार होते हैं, शुद्ध तान और कूट तान। शुद्ध तान में कूट तान निहित है। सप्तकोष्ठ में उनको श्रेणीबद्ध करना पड़ता है और एक ही तान दो बार किसी कोष्ठ में न आवे इसका विचार रखना चाहिए, इसी को कूट तान कहते हैं। अन्ना साहब ने मुझे यह उपदेश व संकेत बतलाया है। देखिए चित्र ग।

चित्र ग—स्वर प्रस्तार

आर्चिक अथवा एक स्वर का प्रस्तार नहीं होता।
गाथिक अथवा दो स्वरों के २१ प्रस्तार होते हैं।

१	२	३	४	५	६
स र	स ग	स म	स प	स ध	स न
र स	ग स	म स	प स	ध स	न स

७	८	९	१०	११
र ग	र म	र प	र ध	र न
ग र	म र	प र	ध र	न र

१२	१३	१४	१५
ग म	ग प	ग ध	ग न
म ग	प ग	ध ग	न ग

१६	१७	१८
म प	म ध	म न
प म	ध म	न म

१९	२०
प ध	प न
ध प	न प

२१
ध न
न ध

सामिक अथवा तीन स्वरों के ३५ प्रस्तार होते हैं।

१	२	३	४	५	६	७	८
स र ग	स र म	स र प	स र ध	स र न	स ग म	स ग प	स ग ध
र स ग	र स म	र स प	र स ध	र स न	ग स म	ग स प	ग स ध
स ग र	स म र	स प र	स ध र	स न र	स म ग	स प ग	स ध ग
ग स र	म स र	प स र	ध स र	न स र	म स ग	प स ग	ध स ग
र ग स	र म स	र प स	र ध स	र न स	ग म स	ग प स	ग ध स
ग र स	म र स	प र स	ध र स	न र स	म ग स	प ग स	ध ग स

इसी प्रकार से क्रमानुसार स ग न से आरम्भ करके स्वरों को रखने से और ८ प्रस्तार बनेंगे।

र ग प से आरम्भ करके क्रमानुसार रखने से ७ और र ग न से और ७ अर्थात् कुल मिला कर १४ प्रस्तार बनेंगे फिर ग ध न से आरम्भ करके स्वरों को रखने से ५ प्रस्तार और बनेंगे इस लिए ३ स्वरों के कुल ८+८+१४+५=३५ प्रस्तार होते हैं।

इसी प्रकार से हम ४ स्वरों के ३५ प्रस्तार (इसको स्वरान्तर कहते हैं), ५ स्वरों के १२० ओड़व प्रस्तार और ६ स्वरों के ७२० षाड़व प्रस्तार बना सकते हैं। ग्रन्थ विस्तार के कारण मैंने सबको यहाँ पर नहीं दिखलाया। अभ्यासार्थी को उचित है कि धैर्य के साथ इनको अभ्यास करे। ये सब के सब शुद्ध तान हैं। इनमें कुछ तान ऐसे हैं जिनको कूट तान कहते हैं। कुछ लोगों का विचार है कि कूटतान का अर्थ कोटि तान है परन्तु मेरे विचार में शब्द को बदल कर उसका दूसरा अर्थ करने की कोई आवश्यकता नहीं है। आगे ७ स्वरों के ४९, ६ स्वरों के ३६ और पाँच स्वरों के २५ कूटतान का चित्र दिया जा रहा है।

(संख्याओं का संकेत—१ = स, २ = र, ३ = ग, ४ = म, ५ = प, ६ = ध और ७ = न)

१	४	७	३	६	२	५
३	२	५	१	४	६	७
६	५	३	२	७	४	१
७	१	६	४	२	५	३
४	६	१	७	५	३	२
५	३	२	६	१	७	४
२	७	४	५	३	१	६

२	३	६	४	५	१	७
४	१	७	२	३	५	६
५	७	४	१	६	३	२
६	२	५	३	१	७	४
३	५	२	६	७	४	१
७	४	१	५	२	६	३
१	६	३	७	४	२	५

४	७	१	६	३	५	२
६	५	२	४	७	३	१
३	२	६	५	१	७	४
१	४	३	७	५	२	६
७	३	४	१	२	६	५
२	६	५	३	४	१	७
५	१	७	२	६	४	३

५	३	२	७	१	६	४
७	६	४	५	२	१	३
१	४	७	६	३	२	५
३	५	१	२	६	४	७
२	१	५	३	४	७	६
४	७	६	१	५	३	२
६	२	३	४	७	५	१

७	५	४	१	२	३	६
१	३	६	७	५	२	४
२	६	१	३	४	५	७
४	७	२	५	३	६	१
५	२	७	४	६	१	३
६	१	३	२	७	४	५
३	४	५	६	१	७	२

३	६	२	५	७	४	१
५	४	१	३	६	७	२
७	१	५	४	२	६	३
२	३	७	६	४	१	५
६	७	३	२	१	५	४
१	५	४	७	३	२	६
४	२	६	१	५	३	७

६	१	५	२	४	७	३
२	७	३	६	१	४	५
४	३	२	७	५	१	६
५	६	४	१	७	३	२
१	४	६	५	३	२	७
३	२	७	४	६	५	१
७	५	१	३	२	६	४

किसी प्रकार से बनाया जाय सात स्वरों के कुल ४९ कूटतान होते हैं। इसकी विशेषता यह है कि हर एक तान नया होना चाहिए। इनका व्यवहार सब सम्पूर्ण रागों में हो सकता है।

सम्पूर्ण तानों से षाड़व और ओड़व तान निकाले जा सकते हैं। ये आगे दिये जा रहे हैं।

६ स्वर के ३६ कूटतान

१	३	५	२	४	६		४	६	२	५	१	३
४	२	६	१	५	३		१	५	३	४	२	६
२	६	३	४	१	५		५	३	६	१	४	२
६	४	२	५	३	१		३	१	५	२	६	४
५	१	४	३	६	२		२	४	१	६	३	५
३	५	१	६	२	४		६	२	४	३	५	१

२	६	४	३	५	१		५	१	३	६	२	४
५	३	१	२	६	४		२	६	४	५	३	१
३	१	४	५	२	६		६	४	१	२	५	३
१	५	३	६	४	२		४	२	६	३	१	५
६	२	५	४	१	३		३	५	२	१	४	६
४	६	२	१	३	५		१	३	५	४	६	२

३	५	१	४	६	२		६	२	४	१	३	५
६	४	२	३	१	५		३	१	५	६	४	२
४	२	५	६	३	१		१	५	२	३	६	४
२	६	४	१	५	३		५	३	१	४	२	६
१	३	६	५	२	४		४	६	३	२	५	१
५	१	३	२	४	६		२	४	६	५	१	३

पहले दिखा चुके हैं कि ६ स्वर के ७ प्रस्तार होते हैं। उनमें से हर एक के ऊपर लिखे हुए प्रकार से ३६ कूटतान होते हैं। षाड़व रागों में इन तानों का प्रयोग किया जाता है।

५ स्वर के २५ कूटतान

१	३	४	५	२	१	४	३	५	२	१	५	३	४	२
३	२	५	१	४	२	१	५	३	४	२	४	५	१	३
५	४	३	२	१	३	२	१	४	५	३	१	२	५	४
२	५	१	४	३	५	३	४	२	१	४	३	१	२	५
४	१	२	३	५	४	५	२	१	३	५	२	४	३	१

५	१	३	२	४	५	२	१	४	३
२	३	१	४	५	२	४	३	१	५
४	५	२	३	१	३	१	५	२	४
१	२	४	५	३	१	५	४	३	२
३	४	५	१	२	४	३	२	५	१

५ स्वर के २१ प्रस्तार होते हैं और उनमें से हर एक के उक्त प्रकार से २५ कूटतान होते हैं। ओड़ब रागों में इन तानों का प्रयोग किया जाता है।

ये तीन प्रकार के तान गमकयुक्त होने से "गमकतान" कहलाते हैं। विधि व नियम मानने वाले इन्हीं तानों का प्रयोग करते हैं, यों तो मनमाना तान सभी कोई व्यवहार करते हैं।

(५) मूर्च्छनालंकार व वर्णालंकार

पहले कह चुके हैं कि सप्तस्वरों के उच्चारण से उनका क्रमोच्च भाव समझ में आ जाता है। और इसके विपरीत करने से निम्नक्रम भी समझ में आ सकता है। और इसी को आरोहण व अवरोहण कहते हैं। पहले ही सातों स्वरों का आरोहण न करके यदि स्वर के स्थिति-काल को दीर्घ उच्चारण करें तो उसे स्थायी वर्ण कहते हैं; फिर उसके बाद आरोहण और अवरोहण आना चाहिए। इन दोनों के मेल से संचारी वर्ण होता है। आलाप में यही चार वर्ण प्रयोग किये जाते हैं। मुख्य वर्णालंकार ३६ हैं। इन अलंकारों के व्यवहार से नाना प्रकार के छन्द व ताल बनते हैं। देखिए चित्र घ।

चित्र घ वर्णालङ्कार

गानक्रियोच्यते वर्णः स चतुर्धा निरूपितः ।
स्थाय्यारोह्यवरोही च संचारीत्यथ लच्चणम् ।।
स्थित्वा स्थित्वा प्रयोगः स्यादेकस्यैव स्वरस्य यः ।
स्थायी वर्णः स विज्ञेयः परावन्वर्थ नामकौ ।।
एतत्संमिश्रणाद्वर्णः संचारी परिकीर्तितः ।
विशिष्टवर्णसन्दर्भमलंकारं प्रचच्चते ।।
येषामाद्यन्तयोरेकः स्वरस्ते स्थायी वर्णकाः ।
प्रसन्नादिः प्रसन्नान्तः प्रसन्नाद्यन्तसंज्ञकः ।।
ततः प्रसन्नमध्यः स्यात् पंचमः क्रमरेचितः ।
प्रस्तारोऽथ प्रसादः स्यात् सप्तैता स्थायिनी स्थिता ।।
मन्द्रः प्रकरणोऽत्र स्यान्मूर्च्छना प्रथमस्वरः ।
स एव द्विगुणस्तारः पूर्व्वः पूर्व्वोऽथवा भवेत् ।।
मन्द्रः परः परस्तारः प्रसन्नो मृदुरित्यपि ।
मन्द्रस्तारस्तु दीप्तः स्यान्मन्द्रो विन्दु शिराभवेत् ।।
ऊर्ध्वरेखा शिरास्तारो लिपौ त्रिवचनात्प्लुतः । संगीतस्वाकरः ।।

स्थायी वर्ण ७

१ सां सां सा
　।　।
२ सा सा सां
　　।
३ सां सा सां
　　　।
४ सां सां सा
५ सां रि सां, सां गम सां, सां पधनि सां
६ सां रि सा सां गम सा, सां पधनि सा,
७ सा रि सां, सा गम सां, सा पधनि सां

सङ्गीत पारिजात में उक्त ७ स्थायी वर्णों को भद्र, नन्द, जित, सोम, ग्रीव, भाल और प्रकाश बताये गये हैं और कहीं कहीं इनकी बोल में परिवर्त्तन किया गया है और "आंजनेयने कहा है" यह लिखा गया है। यहाँ दो उदाहरण दिये जा रहे हैं—

भद्र अलंकार—यमारभ्याग्रिमं गत्वा पुनः पूर्वस्वरं वदेत् । भद्रसंज्ञमलंकारमांजनेयो ऽवदत् सुधीः ॥ स र स, र ग र, ग म ग, म प म, प ध प, ध न ध ।

नन्द अलङ्कार—(दीर्घ)

सा री सा, री गा री, गा मा गा, मा पा मा, पा धा पा, धा ना धा ।

संगीतरत्नाकर ग्रन्थ में स्थायी वर्ण का ठीक ठीक अर्थ यह कहा है कि रुक रुककर स्वरों का व्यवहार होगा और मन्द्र, मध्य और तार इनका भी व्यवहार विचार के साथ करना पड़ेगा। पारिजात ग्रन्थोक्त स्थायी वर्ण और रत्नाकर के संचारी वर्ण एक ही मालूम होते हैं क्योंकि स्थायी वर्ण पहले अलंकृत हुए हैं फिर उसके बाद आरोही और अवरोही के (विपरीत) वर्ण और शेष संचारी वर्ण (आरोही और अवरोही के मिश्रण से)। स्थायी वर्ण में आरोहावरोह रीति रहने से उसे संचारी वर्ण कहते हैं। इसी लिए पारिजात के स्थायी वर्ण आरोहावरोह रीतियुक्त होने के कारण यही अनुमान कर सकते हैं कि वह संचारी वर्ण ही हैं।

आरोही वर्ण १२

स्यातां विस्तीर्ण निष्कर्षौ बिन्दु अभ्युच्चयो परः ।
हसित प्रेंखिताक्षिप्त सन्धिप्रच्छादनास्तथा ॥
उद्गीतोद्ग्राहितौ तद्वत् त्रिवर्णो वेणिरीत्यमी ।
द्वादशारोहिवर्णस्थालंकाराः परिकीर्त्तिताः ।

१ सा री गा मा पा धा नी

२ { सस रिरि गग मम पप धध निनि
ससस ससससस रिरिरि रिरिरिरिरि इत्यादि

३ सासासा रि गागागा म पापापा ध निनिनि

४ स ग प नि

५ सा रीरी गागागा मामामामा पापापापापा धाधाधाधाधाधा नीनीनीनीनीनीनी ।

६ सरी रिगा गमा मपा पधा धनी

७ सगा गपा पनी

८ सरिगा गमपा पधनी

९ सससरिगामामामा पधा

१० सरिरिरिगा मपपपधा

११ सरिगगगा मपधधधा

१२ ससस रिरिरि इत्यादि

अवरोही वर्ण १२

उपर्युक्त आरोही वर्णों को अवरोहक्रम से उच्चारण करने से १२ अवरोही वर्ण होंगे।

संचारी वर्ण २५

मन्द्रादिर्मन्द्रमध्यश्च मन्द्रान्तः स्यादतः परम्।
प्रस्तारश्च प्रसादोऽथ व्यावृत्तस्खलितावपि ॥
परिवर्त्ताक्षेप विन्दूद्वाहितोर्मि समासस्तथा।
प्रेङ्खनिष्कजित स्थेन क्रमोद्घाटित रञ्जिताः ॥
स निवृत्तः प्रवृत्तोऽथ वेणुश्चलित स्वरः। हंकारो ह्रादमानश्च ततः स्यादवलोकितः ॥
स्युः सञ्चारिन्यलंकाराः पञ्चविंशतिरित्यमी ॥

१ सगरी रिमगा गपमा मधपा पनिधा
२ गसरि मरिगा पगमा धमपा निपधा
३ रिगसा गमरी मपगा पधमा धनिपा

प्रस्तारानुसार इनके और तीन तीन तान हो सकते हैं अर्थात् तीन स्वरों के छः पूर्ण तान होते हैं। जैसे सरिग, रिसगा, सगरि, गसरि रिगसा, गरिसा।

इसी प्रकार प्रत्येक तीन स्वरों के अर्थात् अपूर्ण ३५ तानों के छः छः पूर्ण तान होते हैं।

४ सगा रिमा गपा मधा पनि
५ सरिसा रिगरी गमगा मपमा पधपा धनिधा
६ सागरिमासा रीमगपारी गापमधागा माधपनीमा
७ सगरिमा मरिगासा। रीमगाप पगमारी। गापमधा धमपागा। माधपनी निपधामा।
८ सगमा रिमपा गपधा मधनी
९ सरिगा रिगमा गमपा मपधा पधनी
१० सासासारिसा रीरीरीगरी गागागामगा मामामापमा पापापाधपा धाधाधानिधा
११ सरिगरि रिगमगा गमापमा मपधपा पधनिधा
१२ समामामासमा रपापापारिपा गधाधाधागधा मनीनीनीमनी
१३ सरिगम मगरिसा, रीगमपा पमगरी, गमपधा धपमगा, मपधनी, निधपम,
१४ सरीरिसा रिगागरी गमामगा मपापमा पधाधपा धनीनिधा
१५ सरिसागसा रिगरीमरी गमगापगा मपमाधमा पधपानिधा
१६ सप रीध गनि मसा
१७ सरि सरिग सरिगम। रिग रिगम रिगमपा। गम गमपा गमपधा। मप मपध मपधनी।

१८ सरिपमगरि रिगधपमगा गमनीधपमा

१९ सगरि सगरि सा। रिमग रिमगरी। गपम गपम गा। मधप मधप मा। पनिध पनिध पा।

२० सपामगरी रिधापमगा गनीधपमा

२१ सासरिमागा रीरीगपामागागमधापा मामपनीधा

२२ सारी मरीसा रीगपगारी गमाधमागा मपनिपमा

२३ सरिसा सरिगरिसा सरिगम गरिसा सरिगम पमगरिसा सरिगमपधपमगरिसा सरिगमप धनिधपमगरिसा

२४ सगरिसा रिमगरि गपमगा मधपमा पनिधपा

२५ सगमामरिसा रिमपापगरि गपधाधमगा मधनीनिपमा

ऐतेसंचार्यलंकारा आरोहेण प्रदर्शिता:।

एतानेवावरोहेण प्राह श्रीकरणाग्रणी: ।।

सप्तालंकार ७

अन्योऽपि सप्तालङ्कारा गीतज्ञै: रूपर्दार्शता:।

तारमन्द्रप्रसन्नश्च मन्द्रतारप्रसन्नक: ।।

आवर्त्तक: सम्प्रदानो विधूतोऽप्युपलोलक:।

उल्लासितश्चेति तेषामधुना लक्ष्य कथ्यते ।।

१ संरिगमपाधनिसासां

२ सांसानिधपमगरिसां

३ ससरिरिससरिसा। रिरिगगरिरिगरि गगममगगमगा ममपपममपमा। पपधधपपधपा। धधनिनिधधनिधा।

४ ससरिरिसस, रिरिगगरिरि, गगममगग, ममपपमम, पपधधपप, धधनिनिधध।

५ सगसगा, रिमरिमा, गपगपा, मधमधा, पनिपनी

६ सरिसरिगरिगरि, रिगरिगमगमग, गमगमपमपमा, मपमपधपधपा, पधपधनिधनिधा।

७ ससगसगा, रीरीमारिमा, गगपगापा, ममधमधा, पपनिपनी

शास्त्रों में इन ६३ वर्णालंकारों के विषय में समझाया गया है परन्तु वास्तव में लोग इनमें से ४ ही ५ का अभ्यास करते हैं। हमने ३६ वर्णालङ्कार सीखा था। विद्यार्थी को उचित है कि इनमें से जितने अलङ्कारों का हो सके कंठ व यंत्र के द्वारा अभ्यास करे।

(६) राग

गुरु के समीप छ: ऋतुओं में छ: रागों के गाने का नियम जो हमने सीखा है वह आगे के चित्र में दिखाया गया है।

राग		राग के अनुसार गाने के ऋतु व समय दिन और रात			ऋतु के अनुसार गाने के राग व समय दिन और रात			शिव पार्वती के मुखनिस्सृत राग		जाति	ठाट
नाम	गुण	ऋतु	मास	समय	काल	ऋतु	समय	पचानन	राग		
मेघ	रज	वर्षा	श्रावण भाद्र	रात्रि तृतीय १० दंड	अपराह्न	वर्षा	दिन के तृतीय १० दंड	ऊर्ध्व	मेघ	शुद्ध षाड़व	स र मा प ध ना
भैरव	सत्व	शरत्	आश्विन कार्त्तिक	दिन के प्रथम १० दंड	प्रदोष	शरत्	रात्रि के प्रथम १० दंड	दक्षिण	भैरव	शुद्ध सम्पूर्ण	सरा गमा प धा न
हिंडोल	तम	हेमन्त	अग्रहायण पौष	रात्रि के प्रथम १० दंड	अर्द्ध-रात्रि	हेमन्त	रात्रि के द्वितीय १० दंड	उत्तर	हिंडोल	शुद्ध ओड़व	स ग म ध न
मालकोष	सत्व	शिशिर	माघ फाल्गुन	दिन के द्वितीय १० दंड	शेष-रात्रि	शिशिर	रात्रि के तृतीय १० दंड	पार्वती	माल-कोष	शुद्ध ओड़व	स गा मा धा ना
दीपक	तम	बसन्त	चैत्र वैशाख	रात्रि के द्वितीय १० दंड	पूर्वाह्न	बसन्त	दिन के प्रथम १० दंड	पूर्व	दीपक	*	अप्रचलित
श्री	रज	ग्रीष्म	ज्येष्ठ आषाढ़	दिन के तृतीय १० दंड	मध्याह्न	ग्रीष्म	दिन के द्वितीय १० दंड	पश्चिम	श्री	शुद्ध सम्पूर्ण	सरा ग म प धा न

* संगीत पारिजात के मत से दीपक "मा न" हीन ओड़व जातीय है। किसी किसी का मत है कि यह मिश्र षाड़व है अर्थात् आरोहण में ऋषभ और अवरोहण में निषाद वर्जित है।

यद्यपि दीपक राग अप्रचलित है तथापि इसके षाड़व होने में कोई सन्देह नहीं है। जिस प्रकार भैरव-श्री का सम्बन्ध है और मालव-हिंडोल का उसी प्रकार दीपक और मेघ का होना ही संभव है। आज-कल दीपक के विषय में कोई विशेष तत्व निकालना कठिन है तथापि उसके आकार और मूर्त्ति के विषय में पर्यालोचना होना अत्यावश्यक है। जिस प्रकार गान्धार ग्राम केवल देवलोक में प्रचलित है और मर्त्यलोक में लुप्त है इस प्रवाद के रहते हुए भी तीनों ग्रामों का व्यवहार सर्वत्र प्रचलित है अर्थात् त्रितंत्री (षड्ज, मध्यम और पंचम) यंत्र पहले भी था, अब भी है और भविष्य में भी रहेगा, उसी प्रकार यदि स्वर प्रस्तार ही रागों का हेतु माना जाय तब उस प्रस्तार में दीपक राग अवश्य ही रहना चाहिए। क्योंकि इन प्रस्तारों के बाहर किसी राग का रहना असम्भव है। भैरव, मालकोष, मेघ, इत्यादि जो छः स्वर राग के नाम से माने जाते हैं वे ओड़व, षाड़व और सम्पूर्ण स्वरों के प्रस्तार को छोड़कर और कुछ भी नहीं हैं। तब क्या कारण है कि ओड़व प्रस्तार में मालकोष और हिंडोल सबसे श्रेष्ठ राग कहे जाते हैं? षाड़व प्रस्तार में दीपक और मेघ राग को सर्वप्रधान क्यों कहते हैं? और इसी प्रकार सम्पूर्ण प्रस्तार में भैरव और श्री को क्यों श्रेष्ठ कहते हैं? वास्तव में मेरे विचार में ओड़व प्रस्तारों में भूपाली, विभाष, मालश्री, सारंग इत्यादि उपर्युक्त ओड़व रागों से कुछ हीन नहीं हैं। षाड़व प्रस्तारों में पुरिया, मारुवा, ललित बसन्त इत्यादि उक्त षाड़व रागों से किसी प्रकार कम नहीं है। सम्पूर्ण प्रस्तारों में भी कानड़ा टोड़ी, जोगिया, कल्याण इत्यादि भैरव और श्री की अपेक्षा कुछ कम नहीं हैं। सच तो यह है कि मैंने, राग-रागिणियों के गुण में कुछ भी प्रभेद नहीं पाया। इसलिए यही अनुमान कर सकते हैं कि ऊपर लिखे हुए छः राग सबसे पहले महादेव और पार्वतीजी के कंठ से गाये गये थे इसी कारण उनको लोग श्रेष्ठ मानते हैं। हमने गुरु से सुना और सीखा है कि ४ प्रकार के भैरव, ५ प्रकार के श्री, ६ प्रकार के बेलावल, ७ प्रकार के सारंग, ८ प्रकार के कल्याण, ९ प्रकार के नट, १० प्रकार के टोड़ी, १२ प्रकार के मल्लार और १८ प्रकार के कानड़ा होते हैं। वे नीचे दिये जाते हैं—

भैरव—४ प्रकार—भैरव, रामकेलि, जोगिया और विभाष।

श्री—५ प्रकार—श्री, गौरी, पुरबी, धानश्री, और मारूंवा।

बेलावल—६ प्रकार—यमन, कोकव, देवशाख, लच्छनशाख, अलहिया और देवगिरि।

सारंग—७ प्रकार—वृन्दावनी, मधुमाधवी, सामन्त इत्यादि।

कल्याण—८ प्रकार—कल्याण, हम्बीर, केदारा, कामोद, पुरिया, भूपाली, हरश्रृंगार और जयन्ती।

नट—९ प्रकार—नट, छायानट इत्यादि।

टोड़ी—१० प्रकार—विलासखानी, आशावरी, गुर्जरी, देशी, गान्धारी, लाचारी, बहादुरी, देव-गान्धार, हुसेनी और जौनपुरी।

मल्लार—१२ प्रकार—मेघ, सुरट, देश, धुरिया, गौर, सुर, जयजयन्ती, मियाँ इत्यादि।

कानड़ा—१८ प्रकार—सिन्धु, आशावरी, सुहा, सुघराई, भीमपलश्री, सहाना, आड़ाना, बहार, बागश्री, नायकी, दरबारी, हंसध्वनि, सिन्धुड़ा; इत्यादि।

बहुत प्राचीन काल में हमारी जातीय भाषाओं में अर्थात् पहले संस्कृत फिर हिन्दी, बँगला आदि भाषाओं में संगीत होता था। मुसलमानों के समय में भाषान्तर होकर "वाणी या घराना" शब्दों का व्यवहार होने लगा अर्थात् उस्ताद (गुरु) के अनुसार उनका घराना ढङ्ग व क़ायदा होने लगा। पठानों के समय में फ़ीरोज़ ख़ाँ नाम के एक वीणाकार थे। बहादुर ख़ाँ, नासिर अहमद ख़ां उनके शिष्य थे और उन्हीं के घराने की वीणा बजाते थे और ध्रुपद भी गाते थे। इस घराने की वाणी का नाम खंडार (कंधार) वाणी है*। उसके बाद मुगलों के समय में तानसेन आदि गुणी और जाफ़र ख़ाँ, प्यार ख़ाँ, बासत ख़ाँ आदि तंत्रकार वीणा व सुरश्रृङ्गार बजाते थे और ध्रुपद भी गाते थे। इस घराने की वाणी का नाम गौरहार (गौड़ीय) वाणी है। उसके बाद साहब ख़ाँ, सदर ख़ाँ आदि कलाविद लोग डागर वाणी और मोहर वाणी के ध्रुपद गाते थे। इन सब उस्तादों ने अपने अपने ढङ्ग स्थिर किये और उसी ढङ्ग पर स्वर लगाने से नया मधुर भाव उत्पन्न होता है इसीलिए उसी प्रकार की वाणी का प्रचलन है। इसी को घराना कहते हैं। आजकल इसके बदले नकल ही का व्यवहार हो चला है और इसका कारण यह है कि संगीत विद्या और रचना के नियम (art of composition) की शिक्षा कोई नहीं करता बल्कि सब कोई नक़ल करते हैं।

उक्त चार वाणियों को छोड़कर दो और घराने हैं जिनके नाम ढाड़ी और कौवाल हैं। चाँद ख़ां, सूरज ख़ाँ, ताज ख़ाँ, इत्यादि ढाड़ी थे। इस ताज ख़ाँ के बाद और ढाड़ी नहीं हुए।

वाणी चाहे कोई भी हो, मेरी राय में केवल शुद्ध वाणी का ही प्रयोग करना चाहिए। यदि शुद्ध शब्दों का व्यवहार किया जाय तो संगीत का अर्थ स्पष्ट समझ सकते हैं और फिर शुद्ध शब्दों के साथ स्वर का ठीक ठीक व्यवहार होने से गायक और श्रोता दोनों के चित्त में हर्ष, विषाद, उल्लास, क्षोभ आदि नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं। अशुद्ध व दुर्बोध, कठोर शब्दों के साथ मधुर स्वर की योजना करने से गायक व श्रोता केवल स्वर ही का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं परन्तु उनके चित्त में भाव की प्रक्रिया ठीक ठीक नहीं हो सकती।

नीचे छः भागों में उक्त छः राग और उनके सम सामयिक और कुछ राग क्रम से दिये जाते हैं—

(१) दिन के प्रथम १० दंड

भैरव, आशावरी, देशकार, विभाष, अलहिया, कोकव, देवगीर, देवशाख, लच्छन शाख, यमन, जोगिया, रामकेलि, शुक्ल बेलावल इत्यादि।

(२) दिन के द्वितीय दण्ड

मालकोष, तिलक, तिलक कामोद, देव गांधार, भैरवी, विलास-खानी टोड़ी, देशी टोड़ी, गौड़ सारंग, वृन्दावनी सारंग, सामन्त, सुहा इत्यादि।

* खंडार वाणी के दो ही तीन ध्रुपद मुझे मालूम हैं। बाक़ी सब गौरहार वाणी के हैं।

(३) दिन के तृतीय १० दण्ड

श्री, गौरा, गौरी, जयतश्री, धनाश्री, पलश्री, पुरवी, बरारी, भीमपलश्री, मालश्री, मुलतान, मारुवा इत्यादि ।

(४) रात्रि के प्रथम १० दण्ड

हिंडोल, कल्याण, यमनकल्याण, कामोद, केदारा, छायानट, पुरिया, भूपाली, वसन्त, सिन्धु, सिन्धुड़ा, हरश्रृङ्गार, हम्वीर इत्यादि ।

(५) रात्रि के द्वितीय १० दण्ड

आड़ाना, आड़ानाबहार, कौशिकी, दरवारी, वागश्री, हंसध्वनि, हुसेनी, पंचम, पुलिन्दिका, बहार, बेहाग, सोहनी, शंकरा इत्यादि ।

(६) रात्रि के तृतीय १० दण्ड

मेघ, खम्वाज, खम्बाजी कानड़ा, जयजयन्ती, परज, भैरव बहार, गौड़मल्लार, देशमल्लार, सुरटमल्लार, नटमल्लार इत्यादि ।

(७) वादी, विवादी, संवादी स्वर

संगीतपारिजात के और संगीतरत्नाकर के निम्न लिखित श्लोकों को अच्छी तरह समझना चाहिए ।

चतुर्धाः स्वरा वादी सम्वादी च विवाद्यपि ।
अनुवादीति वादी तु प्रयोगे बहुल स्वरः ॥
श्रुतयो द्वादशाष्टौ वा ययोरन्तरगोचराः ।
मिथः संवादिनौ तौ स्तो निगावन्यो विवादिनौ ॥
रिधयोरेव वा स्यातां तौ तयोर्वारिधावपि ।
शेषानामनुवादित्वं वादी राजाऽत्र गीयते ॥

—संगीतरत्नाकर ।

प्रयोगो बहुधा यस्य वादिनंतं स्वरं जगुः ।
राजत्वमपि तस्येति मुनयः संगिरन्तिहि ॥
श्रुतयोऽष्टौ द्वादश वा ययोरन्तरगोचराः ।
मिथः संवादिनौ तौ स्तः सपौ स्यातां पसौ तथा ॥
तस्यामात्यस्तु संवादी वादिनो राज संज्ञिनः ।
भृत्यतुल्यानुवादी स्याद् विवादी शत्रुवद्भवेत् ॥

—संगीतपारिजात ।

इन वचनों के अनुसार सप्त-कोष्ठ चक्र में* सम्पूर्ण षाड़व और ओड़व स्वरों को विस्तार से स्थापना करने से देखा जाता है कि 'स' वादी होने से 'मा' अथवा प संवादी होंगे और इसी प्रकार र, ग, म, प, ध और न 'वादी' होने से प ध, ध न, न स, स र, र ग, ग म इनमें से प्रत्येक दोनों का एक स्वर क्रम से संवादी होगा । सप्त स्वरों के प्रथमार्द्ध (स र ग मा) में जिस प्रकार 'स' अचल अथवा अच्युत

* यह चक्र पृ० ॥~)पर दिया गया है ।

है उसी प्रकार द्वितीयार्द्ध (प ध न स) में 'प' अचल अच्युत है । इसलिए 'स र' और 'प ध' आपस में विवादी न होकर सहायक हुए हैं । 'र ग' और 'ध न' परस्पर विवादी हैं । किसी किसी ने विवादी स्वर को 'वर्जित' कहा है । परन्तु इस बात को भूलना उचित नहीं है कि विवादी स्वर को बिलकुल लोप करने से 'सम्पूर्ण' राग का होना असंभव हो जाता है । अथवा जहाँ दो स्वर वर्जित हैं जैसा कि 'ओड़व' रागों में वहाँ उन दोनों को विवादी करना पड़ता है । इससे सांगीतिक तात्पर्य सिद्ध नहीं होता । विवादी का ठीक अर्थ राग नष्टकारी है । जिस स्थान पर 'र' वादी है अर्थात् उसका बहु प्रयोग किया गया है वहाँ 'ग' के बहु प्रयोग करने से 'र' स्वतः ही दुर्बल हो जाता है और उसका वादीत्व नष्ट हो जाता है इसलिए 'ग' स्वर का इस प्रकार थोड़ा सा व्यवहार करना चाहिए जिससे 'र' स्वर का अवस्थान्तर न हो ।

वादी स्वर प्रस्तार के अनुसार ग्रह अंश और न्यास स्वरयुक्त होते हैं । सातों स्वरों के हर एक प्रकार से विस्तार करने से ५०४० तान होते हैं जिनका पहला तान "स र ग म प ध न," बीच में ५०३८ तान और शेष तान "न ध प म ग र स" हैं । इन तीनों को ग्रह अंश और न्यास स्वर कहते हैं । वादी विवादी और संवादी स्वरों के व्यतीत जो स्वर बाकी रहते हैं वे उक्त स्वरों के अनुवादी होंगे । न्यास स्वर में वादी स्वर अंशस्वर से मिलकर सहायता करता है इसलिए उसको विन्यास और सन्यास शब्द से सम्बोधन करते हैं । और इसी प्रकार यदि विवादी स्वर न्यास स्वर में अंशस्वर युक्त हो तो उसे अपन्यास कहते हैं ।

मूर्च्छना और तान दोनों आरोहावरोह क्रमयुक्त हैं । परन्तु दोनों में अन्तर यह है कि मूर्च्छना स्वाभाविक आरोहावरोह क्रमयुक्त होता है (उद्देश्य संक्षेप करना, संख्या ७) और तान हर एक प्रकार से आरोहावरोह क्रमयुक्त होता है (उद्देश्य—विस्तार करना, संख्या ५०४०) चित्र में दिये हुए सम्पूर्ण, षाड़व और ओड़व स्वरों को स्वाभाविक आरोहावरोह क्रमयुक्त करने से मूर्च्छना बनती है और इसका साधन करना पड़ता है ।

यदि किसी वस्तु में ऐसा गुण हो कि उसके देखने सुनने अथवा पढ़ने से हृदय के भाव का परिवर्त्तन हो तो उसको रस कहते हैं । प्रकृति के अनुकरण करने से भी रस का परिचय मिलता है जैसा कि नाना वर्ण (रंग) के द्वारा चित्रकार का कार्य सम्पादित होता है । और नाना वर्ण (वाक्य) के संयोग से कवि का कार्य्य सम्पन्न होता है उसी प्रकार नाना वर्ण (स्वर) के विन्यास से संगीत का कार्य सिद्ध होता है । साधारण प्रकार से जिन वाक्यों का व्यवहार होता है उनमें रस नहीं है । केवल कंठभंगी ही के द्वारा शोक, आनन्द, प्रेम, क्रोध, स्नेह आदि भावों का प्रकाश हो सकता है । इसी प्रकार केवल ताल व स्वर के द्वारा विशेष व्यक्तियों के मानसिक भावों का परिवर्त्तन हो सकता है । व्यावहारिक नियम से देखा गया है कि सप्तस्वरों के आरोहण के उच्चारण से उत्साह, हर्ष, तेज, इत्यादि तीव्र या कठिन भाव व्यक्त होते हैं और अवरोहण के उच्चारण से निराशा, शान्ति, विराम इत्यादि कोमल भाव उत्पन्न होते हैं । पृथ्वी के सब कामों में संगीत की आवश्यकता दिखाई पड़ती है । यदि कोई विशेष

कारण अथवा उद्देश्य न होता तो संगीत का व्यवहार दिखाई न पड़ता। बनारस के स्वर्गीय चिन्तामणि बापुली महाशयजी कभी ज्वर रोगियों को संगीत सुनाकर आराम करते थे। उनसे ये तीन श्लोक मुझे मिले हैं—

आनन्दोत्सवे यज्ञे अन्यमंगलकर्मणि।
चतुर्वर्गफलार्थाय गायेत् रागाः सम्पूर्णकाः॥
संग्रामे वीरतारूपं लालयन् गुणकीर्त्तनम्।
गाने षट् स्वरानाञ्च गदितं पूर्वसूरिभिः॥
व्याधिनाशे शत्रुनाशे भयशोकविनाशने।
पंचस्वराः प्रगातव्या ग्रहशान्त्यर्थकर्मणि॥*

सप्तकोष्ठस्थित स्वरों के मूर्च्छना, तान अथवा अलंकार रूप से साधना करने से भिन्न भिन्न भाव अथवा रसों का संचार होता है।

सप्त कोष्ठचक्र।

सम्पूर्ण

वादी			संवादी			
स	र	ग	म	प	ध	न
र	ग	म	प	ध	न	स
ग	म	प	ध	न	स	र
म	प	ध	न	स	र	ग
प	ध	न	स	र	ग	म
ध	न	स	र	ग	म	प
न	स	र	ग	म	प	ध

औड़व

वादी			संवादी			
स	र	ग	म	—	ध	—
स	र	ग	—	प	ध	—
स	र	ग	—	प	—	न
स	र	—	म	प	ध	—
स	—	ग	म	प	ध	—
स	र	—	म	प	—	न
स	—	ग	म	प	—	न
स	र	—	म	—	ध	न
स	—	ग	म	—	ध	न
स	—	ग	—	प	ध	न

---

* इसी प्रकार के श्लोक मैंने "कोहलीय" ग्रन्थ में पाया है। यथा—

आयुर्धर्मो यशः कीर्त्तिर्बुद्धिसौख्यधनानि च।
राज्याभिवृद्धिः सन्तानः पूर्णरागेषु जायते॥
संग्रामे वीरतारूपं लावण्यगुणकीर्त्तनम्।
गाने षाड़वानां च गदितं पूर्वसूरिभिः॥
व्याधिनाशे शत्रुनाशे भयशोकविनाशने।
औड़वास्तु प्रगातव्या ग्रहशान्त्यर्थकर्मणे॥

वादि — संवादि

षाड़व

स — ग म प ध न
स र — म प ध न
स र ग — प ध न
स र ग म — ध न
स र ग म प — न
स र ग म प ध —

षाड़व

र — म प ध न स
र ग — प ध न स
र ग म — ध न स
र ग म प — न स
र ग म प ध — स

षाड़व

ग — प ध न स र
ग म — ध न स र
ग म प — न स र
ग म प ध — स र
ग म प ध न स —

षाड़व

म — ध न स र ग
म प — न स र ग
म प ध — स र ग
म प ध न स — ग
म प ध न स र —

वादि — संवादि

औड़व

र ग — प ध — स
र ग म — ध — स
र ग — प — न स
र — म प ध — स
र — म प — न स
र — म — ध न स

औड़व

ग म — ध — स र
ग — प ध — स र
ग — प — न स र
ग म प ध — स —
ग म प — न स —
ग म — ध न स —
ग — प ध न स —

औड़व

म — ध — स र ग
म प ध — स र —
म प ध — स — ग
म प — न स र —
म प — न स — ग
म — ध न स र —
म — ध न स — ग

औड़व

प ध — स र ग —
प — न स र ग —
प ध — स र — म
प ध — स — ग म
प — न स र — म
प — न स — ग म
प ध न स — ग —

वादि संवादि

षाडव

प — न स र ग म
प ध — स र ग म
प ध न स — ग म
प ध न स ग — म
प ध न स र ग —

षाडव

ध — स र ग म प
ध न स — ग म प
ध न स र — म प
ध न स र ग — प
ध न स र ग म —

षाडव

न स — ग म प ध
न स र — म प ध
न स र ग — प ध
न स र ग म — ध
न स र ग म प —

वादि संवादि

औडव

ध — स र ग म —
ध — स र ग — प
ध — स र — म प
ध — स — ग म प
ध न स र — म —
ध न स — ग — प
ध न स — ग म —

औडव

न स र ग — प —
न स र — म प —
न स — ग म प —
न स र — म — ध
न स — ग म — ध
न स — ग — प ध

(८) ताल व काल

जिसको ताल कहते हैं उसी को काल भी कहते हैं। संगीतशास्त्र में 'लव' काल उस समय को कहते हैं जिसमें सौ कमलपत्रों को सूची से विद्ध कर सकते हैं। ऐसे

८ लव काल = १ क्षण काल।
८ क्षण " = १ काष्ठ "
८ काष्ठ " = १ निमेष "
८ निमेष " = १ कला।
८ कला " = १ त्रुटि ।

एक अक्षर के उच्चारण करने में जो समय लगता है उसे अनद्रुत कहते हैं।

२ अनद्रुत = १ द्रुत।

२ द्रुत = १ लघु।

२ लघु = १ वक्र।

३ " = १ प्लुत।

गीत रचना के समय इन सब बातों का व्यवहार होता था और होना चाहिए। मात्रा की सहायता से सुर वा गीत रचने का नियम संगीतशास्त्र में नहीं देखा जाता।

जिस प्रकार स्वरलिपि की सहायता से गीत का सीखना प्राय: दु:साध्य है उसी प्रकार मात्रा देखकर ताल सीखना कठिन है। मात्रा से काल का भाग किया जाता है। मात्रा में 'लय' नहीं है, केवल सुर व ताल ही में 'लय' है। संगीतशास्त्र में ताल के १० नाम (प्राण) पाये जाते हैं, यथा—काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति और प्रस्तार। इनके विषय में कुछ जानना आवश्यक है। इनमें जो शब्द 'ग्रह' आया है उसी के प्रस्तार से 'सम,' 'अतीत' और 'अनागत' इन तीनों विषयों की उत्पत्ति हुई है। संगीतरत्नाकर में लिखा है—

समोऽतीतोऽनागतश्च ग्रहस्ताले त्रिधामतः।
गीतादिसमकालस्तु समपाणि समग्रहः॥
सोऽवपाणिरतीतः स्याद् यो गीतादौ प्रवर्त्तते।
अनागतः प्राक् प्रवृत्तः स एव परिपाणिकः॥

ताल देने के तीन नियम हैं,—सम, अतीत और अनागत। गीत, वाद्य और नृत्य एक साथ आरम्भ करने से **समपाणि** (समग्रह) होता है। तालकाल को पार करके उत्तरकाल को ग्रहण करने से, अर्थात् पहिले गीत और उसके बाद ताल (वाद्य) आरम्भ होने से उसको **अवपाणि** (अतीतग्रह) कहते हैं। और पहिले ताल और उसके बाद गीत आरम्भ होने से **परिपाणि** (अनागतग्रह) होता है।

समग्रह से सब कोई साधारणत: गाते हैं। थोड़े ही अभ्यास से अतीतग्रह से गाना साध्य हो सकता है। परन्तु अनागतग्रह से गाना बहुत कठिन है। पेशादार गवैये ऐसा गाना दो चार अभ्यास करके सभाओं में दिखाने के लिए रखते हैं। अनागतग्रह का व्यवहार वीणा आदि यन्त्रों में अच्छी तरह दिखाया जा सकता है।

तीनों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं। शिक्षार्थियों को स्मरण रखना चाहिए कि ग्रह को बदलने से बजानेवाले को कुछ भी कठिनाई नहीं होती है परन्तु गानेवाले के ताल में भूल हो जाने की सम्भावना अधिक है। वे और याद रक्खें कि केवल बजानेवाले ही के लिए दून, चौगून इत्यादि रूप से गीत गाया जाता है, न कि संगीत के लिये। संगीत के नियमानुसार गीत को विलम्ब, मध्य और द्रुत इन्हीं तीन रूपों में दिखाया जाता है।

नीचे के गीतों में मृदंग का बोल भी दे दिया गया है, इससे गाने और बजानेवालों को परस्पर सहायता होगी।

(१) हिण्डोल। चौताल।

गीत।

प्रभातजन पायो नारायण नाम तेरो सुमरो सुमरो हर गज पावत गत ॥ १ ॥
धन्य धन्य बड़ो है भक्त अनुराग हरषे मन बिच करम कर जाकी रत ॥ २ ॥

समपाणि।

(१)

+		०		१		०		२		३	
धा	धा	दिन्	ता	कत्	तग	दिन	ता	तट	कत	गद्	धन
ग	ग	स	स	म	ध	न	न	ध	ध	म	ग
पा	०	यो	ना	०	०	०	०	रा	०	य	ण
म	म	ग म	ग	स	स	स	स	ग	ग	म	ध
ना॰	०	म॰	ते	०	रो	सु	म	रो	०	सु	म
।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
स	स	स	स	स	स	स	स	ग	ग	स	स
रो	०	०	०	ह	र	ग	ज	पा	०	व	त
मीड़ गमक		गमक		गमक							
न न	न न	ध ध	ध ध	म म	ग ग	म	ध	न	ध	म ग	म
ग त	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०;	प्र	ण	त	ज	न ०	०

(२)

		।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
म	ध म	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
ध	न्य ०	ध	०	०	न्य	ब	ड़ो	ह	य	भ	क्त
।		। ।	।	।	।						
स न	ध	म ध स स	स	स	स	न	न	ध	ध	म	ग
अ ०	नु	रा ० ०	०	०	ग	ह	र	षे	०	म	न
				।	।	।	।	।	।	।	।
म	ग	म	ध	स	स	स	स	ग	ग	स	स
बि	च	क	र	म	०	क	र	जा	०	की	०
गमक		गमक		गमक							
न न	न न	ध ध	ध ध	म म	ग ग;	म	ध	न	ध	म ग	म
र त	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	प्र	ण	त	ज	न॰	०

अवपाणि या अतीतग्रह

(पहले गीत फिर ताल।)

१

+		०		१		०		२		३	
धा	दिन्	ता	कत्	तग	दिन	ता	तट	कत	गद	धन	धा
ग	स	स	म	ध	न	न	ध	ध	म	ग	म
०	यो	०	ना	०	०	०	रा	०	य	ण	ना
म	ग म	ग	स	स	स	स	ग	ग	म	ध	।स
०	म ०	ते	०	रो	सु	म	रो	०	सु	म	रो
।स	।स	।स	।स	।स	।स	।स	।ग	।ग	।स	।स	न न
०	०	०	ह	र	ग	ज	पा	०	व	त	ग त
गमक		गमक		गमक							
न न	ध ध	ध ध	म म	ग ग	म	ध	न	ध	म ग	म	ग
० ०	० ०	० ०	० ०	० ० ;	प्र	ण	त	ज	न ०	०	पा

२

ध म	।स	।स	।स	।स	।स	।स	।स	।स	।स	।स	।स न
न्य ०	ध	०	०	न्य	ब	डो	है	०	भ	क्त	श्र ०
ध	म ध ।स	।स	।स	।स	न	न	ध	ध	म	ग	म
नु	रा ० ०	०	०	ग	ह	र	घे	०	म	न	बि
ग	म	ध	।स	।स	।स	।स	।ग	।ग	।स	।स	न न
च	क	र	म	०	क	र	जा	०	की	०	र त
गमक		गमक		गमक							
न न	ध ध	ध ध	म म	ग ग	म	ध	न	ध	म ग	म	ग
० ०	० ०	० ०	० ०	० ० ;	प्र	ण	त	ज	न ०	०	पा

परिपाणि या अनागतग्रह ।

(पहले ताल फिर गीत ।)

१

+		०		१		०		२		३	
घन	धा	धा	दिन्	ता	कत्	तग	दिन्	ता	तट	कत	गद्
म	ग	ग	स	स	म	ध	न	न	ध	ध	म
०	पा	०	यो	०	ना	०	०	०	रा	०	य
ग	म	म	ग म	ग	स	स	स	स	ग	ग	म
ण	ना	०	म ०	ते	०	रो	सु	म	रो	०	सु
ध	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	ग̍	ग̍	स̍
म	रो	०	०	०	ह	र	ग	ज	पा	०	व
गमक		गमक		गमक		गमक					
स	न न	न न	ध ध	ध ध	म म	ग ग	म	ध	न	ध	म ग
त	ग त	० ०	ध ध	० ०	० ०	० ० ;	प्र	ण	त	ज	न ०

२

	म	ध म	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍
	ध	न्य ०	ध	०	०	न्य	ब	ड़ो	ह	य	भ
स̍	स̍ न	ध	म ध स̍	स̍	स̍	स̍	न	न	ध	ध	म
क्त	श्र ०	नु	रा ० ०	०	०	ग	ह	र	षे	०	म
ग	म	ग	म	ध	स̍	स̍	स̍	स̍	ग̍	ग̍	स̍
न	बि	च	क	र	म	०	क	र	जा	०	की
गमक		गमक		गमक		गमक					
स	न न	न न	ध ध	ग ग	म	ध ध	म म	ध	न	ध	म ग
०	र त	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	ण	त	ज	न ०

समपाणि ।

(दूने लय से)

+	०	१	०	२	३
धा धा दिन्ता	कत् तग दिन्ता	तटकत गद घन	धा धा दिन् ता	कत्तग दिन्ता	तटकत गद घन
ग ग स स	म ध न न	ध ध म ग	म म गमग	स स स स	ग ग म ध
पा ० यो ०	ना ० ० ०	रा ० य ण	ना ० म०ते	० रो सु म	रो ० सु म
			गमक	गमक	
। । । ।	। । । ।	। । । ।			
स स स स	स स स स	ग ग स स	ननननधधधध	ममगग मध	न ध मग
रो ० ० ०	ह र ग ज	पा ० व त	ग त ० ० ० ० ० ०	० ० ० ० प्रण	त ज न०

अवपाणि

(दूने लय से)

दिन्ता कत्तग	दिन्ता तटकत	गदघन धाधा	दिन्ता कत्तक	दिन्ता तटकत	गदघन धाधा
					। ।
स स म ध	न न ध ध	म ग म म	गमग स स	स स ग ग	म ध सस
यो ० ना ०	० ० रा ०	य ण ना०	म०ते ० रो	सु म रो ०	सु म रो०
		गमक	गमक		
। । । ।	। । । ।	। ।			
स स स स	स स ग ग	स स नननन	धधधधममगग	म ध न ध	म ग म ग ग
० ० ह र	ग ज पा ०	व त ग त ० ०	० ० ० ० ० ० ० ०	प्र ण त ज	न ० ० पा ०

परिपाणि

(दूने लय से)

गदघन धाधा	दिन्ता कत्तग	दिन्ता तटकत	गदघन धा धा	दिन्ता कत्तग	दिन्ता तटकत
मगम गग	सस मध	न न ध ध	म ग म म	ग म ग स स	स स ग ग
न०० पा०	यो ० ना ०	० ० रा ०	य ण ना ०	म ० ते ० रो	सु म रो ०
			गमक	गमक	
। ।	। । । ।	। । । ।	। ।		
मध सस	सस सस	स स ग ग	स स नननन	धधधध ममगग	म ध न ध
सु म रो ०	० ० ह र	ग ज पा ०	व त ग त ० ०	० ० ० ० ० ० ० ०	प्र ण त ज

नोट—इन उदाहरणों के अनुसार शिक्षार्थी केवल अस्थायी नहीं परन्तु इस गीत के अन्तरा को भी लिखकर भलीभाँति अभ्यास करें। इस स्वरलिपि को चौताल और तेताला दोनों में गा सकते हैं।

(२) इमन-कल्याण । मूलताल ।

शंकर शिव पिनाकी हरहर गंगाधर विषधर बामदेव ईश्वर डमरूकर ॥ १ ॥
भस्म अंग शोभित भुजङ्ग भालचन्द्र शिंगी फूँकत है भोला दिगम्बर ॥ २ ॥
तिलक ललाट गले रुण्डमाला त्रिनयन वरदाता गौरीसन त्रिशूलधर ॥ ३ ॥
पशुपति विश्वनाथ जय मृत्युञ्जय जय वाणीविलास के दारिद्र्य दुखहर ॥ ४ ॥

समपाणि । १

+	०	१	२	०	+	०	१	२	०
धा घण	नग दिन	घण नग	गद दिन	घण नग	धा घण	नग दिन	घण नग	गद दिन	घण नग
नध पम	प प	म प	म म	ग र	ग र	ग मा	ग र	नं र	स स
शं० ००	क र	शि व	पि ना	० की	ह र	ह र	ग ०	गा ०	ध र
ग ग	ग र	स स	नं धंनं	धं पं	प प	प प	न ध	पम ग	म प
वि ष	ध र	बा ०	म दे०	० व	ई ०	श्व र	ड म	रू० ०	क र;

२

प ध	प स	स स	स स	स स	स ग	र ग	मा ग	र स	नधप
भ ०	स्म अं	० ग	शो ०	भि त	भु जं	० ग	भा ०	ल चं	०० द्र
प प	प प	प म	प प	मग र	ग र	ग मा	ग र	स नंर	स स
शिं ०	० गी	फूँ ०	क त	है० ०	भो ०	ला ०	० दि	गं ००	व र;

३

प मग	म प	प पम	प म	प प	ध प	प प	म म	ग ग	ग र
ति ०ल	क ०	० ल०	ला ०	टे ०	ग ले	रुं ड	मा ०	ला ०	० ०
ग र	ग मा	ग ग	नं र	स स	पम ग	म प	प न	ध प	म प
त्रि न	य न	व र	दा ०	ता ०	गौ० री	० स	त्रि न	शू ल	ध र

४

प ध	न स	स स	स स	स स	स ग र	ग ग	मा मा	ग र	ग र स
प पशु	प ति	वि ०	श्व ना	० थ	ज० य	मृ ०	त्युं ०	ज य	ज ० य
प प	ध न	स स	स स	स स	न ध	प प	म ग र	ग र	स स
बा ०	णी ०	० वि	ला स	के ०	दा ०	रि ०	द्र्य० ०	दु ख	ह र

समपाणि (दूने लय से)

नधपम प प	मप मम	गर गर	गमा गर	नंर सस	गग गर	ससनंधंनं	धंपं पप	पप नध	पमग मप
श० ०० क र	शिवपिना	०की हर	हर गं०	गा० ध र	विष ध र	बा ०मदे०	० व ई०	श्वर डम	रू०० कर
पध प सं	ससंससं	सस सग	रग माग	रसनधप	पप प प	पम पप	मगर गर	गमागर	सनंरसस
भ० स्म श्रं	० ग शो०	भि त भुजं	०ग भा०	लचं ००द्र	शि०गी०	फू० कत	है०० भो०	ला००दि	गं००व र
पमग मप	पपम पम	पप धप	पप मम	ग ग गर	गर गमा	गग नंर	सस पमग	मप पन	धप मप
ति०ल क०	०ल०ला०	टे० ग ले	रुंडमा०	ला० ००	त्रिन य न	वर दा०	ता ०गौ०री	०स नत्रि	शूल धर
पधनसं	ससससं	ससंसगर	गगमामा	गरगरस	पप धन	सससस	ससनध	पपमगर	गर सस
पशु पति	वि०श्वना	०थ ज० य	मृ०त्युन्	जयज० य	वा०णी०	०विलास	के०दा०	रि०द्र००	दुख ह रं

परिपाणि

+	०	१	२	०	+	०	१	२	०
नग धा	घन नग	दिन घन	नग गद	दिनघन	नग धा	घन नग	दिन घन	नग गद	दिन घन
प नध	पम प	प म	प म	म ग	र ग	र ग	मा ग	र नं	र स
र शं०	०० क	र शि	व पि	ना ०	की ह	र ह	र ग	० गा	० ध
स ग	ग ग	र स	स स	नंधं धं	पं प	प प	प न	ध पम	ग म
र वि	ष ध	र वा०	म० दे	० ०	व ई	० श्व	र ड	म रू०	० क

२

प; प	ध प	सं सं	सं सं	सं सं	सं सं	गं रं	गं मां	गं रं	संनध
र भ	० स्म	श्रं ०	ग शो	० भि	त भु	ज ०	ग भा	० ल	चं ००
प प	प प	प प	प प	प मग	र ग	र ग	मा ग	र स	नंर स
द्र शि	० गी	० फूँ	क त	त है०	० भो	० ला	० ०	दि गं	०० व

३

प प	मग म	प प	पम प	म प	प ध	प प	प म	म ग	ग ग
रं; ति	ल० क	० ०	ल०ला	० ट	० ग	ले रुं	ड मा	० ला	० ०
र ग	र ग	मा ग	ग नं	र स	सप म	ग म	प प	न ध	प म
० त्रि	न य	न व	र दा	० ता	०गौ ०	री ०	स न	त्रि शू	ल ध

४

स प	ध न	स स	स स	स स	ससग	र ग	ग मा	म ग	र गर
र; प	शु प	ति वि	० श्व	ना ०	थ ज०	य मृ	० त्युं	० ज	य ज०
स प	प ध	न स	स स	स स	स न	ध प	प मग	र ग	र स
य वा	० णी	० ०	वि ला	स के	० दा	० रि	० द्र	० दु०	ख ह

परिपाणि (दूने लय से)।

मपनधपम	पप मप	मम गर	गर गमा	गर नंर	सस गग	गरसस	नंधंनंधंपं	पप पप	नधपमग
कर;शं ०००	कर शिव	पिना०की	हर हर	गं० गा०	ध र विष	धर वा०	मदे ०० व	ई० श्वर	डम रू००

बाक़ी तीन अन्तराओं को शिक्षार्थी लिखकर अभ्यास करें।

अवपाणि (दूने लय से)।

पप मप	मम गर	गर गमा	गर नंर	सस गग	गर सस	नंधंनंधंपं	पप पप	नधपमग	मप नधपम
कर शिव	पिना ०की	ह र ह र	गं० गा०	धर विष	ध र वा०	मदे ० ०व	ई० श्वर	डमरू ००	कर ० शं००

बाक़ी अन्तराओं को शिक्षार्थी उक्त प्रकार से लिखकर अभ्यास करें।

(३) शंकरा। धामार।

बरसान में खेलत होरी श्री बृकभान किशोरी ॥ १ ॥
कोऊ चन्दन बन्दन अतर अरगज अबीर गुलाल लिये भर झोरी ॥ २ ॥
कोऊ गावत कोऊ मृदंग बजावत धूम मचाई नन्दराय के पुरि ॥ ३ ॥
उत ते सखा संग लिये कृष्णप्रभु छोड़त रंग पिचकारिन बोरि ॥ ४ ॥

परिपाणि या अनागतग्रह।

१

+			०		१		०			२		०	
ध	प	प	र	स	न	ध	प	म	प	मन	धन	स	न
०	०	०	ब	र	सा	न	में	०	०	खे०	लत	हो	री
ध	प	म	ग	ग	र	स	ग	म	प	न	न	स	न
०	०	०	श्री	०	०	०	बृ	क	भा	न	कि	शो	री

२

			म प	न नन	स स स	नन ध	मन धन
			को ऊ	चं दन	ब न्द न	अत र	अर गज
न	न	न	गर स	सस स	न ध प	म न	स न
०	०	०	अबी र	गुला ल	लि ये ०	भ र	झो रि

३

			स स	ग गग	म प प	म नन	सन धप
			को ऊ	गा वत	को ऊ ०	मृ दंग	बजा वत
म	ग	ग	र स	न धध	मम न न	ध न	स न
०	०	०	धू म	म चाई	नन्द रा य	के ०	पु रि

४

			म पप	न स	सस स न	म म	ध न
			उ तते	स खा	संग लि ये	कृ ष्ण	प्र भु
ध	प	प	गर स	स स	न न न	म न	स न
०	०	०	छोड़ त	रं ग	पि च का	रि न	बो रि

———

(८) शिक्षार्थियों के लिए उपदेश

ऊपर जो कुछ लिखा गया है उसके अतिरिक्त और कुछ बातें शित्तार्थियों के लिए आगे लिखी जाती हैं। उनको भलीभाँति समझना और उपदेशानुसार अभ्यास करना परमावश्यक है।

स्वर—प्राय: देखा जाता है कि संगीत के शित्तार्थी इसीलिए प्रयत्न करते हैं कि उनका कंठस्वर ऊँचा और मीठा हो और इस उद्देश्य से वे हारमोनियम के साथ अपना कंठ मिलाकर स्वर का अभ्यास करते हैं। इसका परिणाम यही होता है कि कंठस्वर हारमोनियम के स्वर की तरह बन जाता है अर्थात् स्वाभाविक कंठ-स्वर विकृत हो जाता है। केवल यही नहीं किन्तु दो स्वरों के बीच की श्रुति* अप्रकाश रहने के कारण और हारमोनियम का स्वर ऊँचा होने के कारण कर्णगोचर नहीं हो सकते। गुरुओं से सुना है कि जिसका जिस प्रकार कंठस्वर है उसको उसी प्रकार अभ्यास करने से तंत्री के स्वर के समान होता है और **अपने स्वर को पहले कान में प्रतिष्ठित करके** फिर किसी तार के यंत्र के साथ मिला कर स्वर की साधना (कर्तब) करनी चाहिए। इस प्रकार अभ्यास करने से कंठस्वर मार्जित होता है और साधक को भी स्वर का ज्ञान और दृष्टि प्राप्त होते हैं। इसके बाद स्वर सप्तक (स र ग म प ध न) के बोध के लिए तंत्री की सहायता लेनी पड़ती है। मनुष्य-कंठ वातज गुण के कारण रूखा और ऊँचा स्वर उत्पन्न करता है और पित्तज गुण के कारण भारी और गम्भीर और कफज गुण के कारण स्निग्ध और मधुर स्वर को उत्पन्न करता है। यह सम्भव नहीं है कि वातजगुण प्रधान कंठ से मधुर स्वर या पित्तज गुण प्रधान कंठ से उच्च स्वर निकाला जाय। तंत्री की सहायता से कंठस्वर मार्जित और प्रिय हो सकता है। यही प्रथा प्राचीनकाल से चली आ रही है। परन्तु आज-कल हारमोनियम का व्यवहार हो चला है। इस यंत्र में बारह स्वर बँधे हुए हैं। किसी को दबाने से ही स्वर निकलता है और थोड़ी सी चेष्टा से ही कंठस्वर मिला सकते हैं। परन्तु परिणाम यही होता है कि **कर्ण और कंठ यंत्र के दास बन जाते हैं।** तार के यंत्रों में किसी तार पर आघात करने से कम्पन (अनुरणन—युक्त-ध्वनि या स्वर) निकलती है और कुछ काल तक स्थायी रहती है। हारमोनियम यंत्र से इस प्रकार का स्वर नहीं निकल सकता। कारण, दबाने से केवल अनुरणनहीन स्वर निकलता है और अँगुली हटा लेने से स्वर निकलना बन्द हो

---

*स्वरूपमात्रश्रवणान्नादो ऽनुरणनात्मकः।
श्रुतिरित्युच्यते भेदास्तस्य द्वाविंशतिर्मताः॥
नादाच्च श्रुतयो जातास्ततो षड्जादयः स्वराः
तेभ्यश्च मूर्च्छना प्रोक्तास्तानाख्या ग्रामसंभवाः॥

जाता है। सारांश यह है कि इस यंत्र में स्वर असम्पूर्ण रहने के कारण साधना के लिए यह विशेष प्रकार से अनुपयोगी है।

स्वर-परिवर्त्तन के विषय में कुछ कहना आवश्यक है। सप्त-स्वर में षड़ज, मध्यम व पंचम ये तीनों स्वर षड़ज भाव से हैं परन्तु ऋषभ व धैवत पंचम भाव से और गान्धार व निषाद मध्यम भाव से हैं। इस-लिए मध्यम व पंचम को षड़ज बनाने से पूर्व षड़ज से उनका सम्बंध रहता है। परन्तु ऋषभ, गन्धार, धैवत व निषाद इन स्वरों को षड़ज करने से पूर्व षड़ज के साथ उनका सम्बध कठोर हो जाता है। इन बातों को स्मरण रखने से प्रतीत होगा कि यथेच्छा स्वर-परिवर्त्तन करना विज्ञान-सम्मत नहीं हो सकता।

तम्बूरा और स्वर साधना—स्वर-साधना के लिए तंत्रीयुक्त यंत्र विशेष प्रकार से उपयोगी है और तम्बूरा यंत्र का व्यवहार प्राचीन काल से होता आया है। प्रवाद है कि गन्धर्व-पति तम्बुरु ने इस यंत्र का आविष्कार किया था और इसी यंत्र से नारद और अन्यान्य ऋषिगण गीत वाद्य करते थे। आज-कल इस यंत्र का अपव्यवहार प्राय: देखा जाता है। किसी तार का स्वर आघात के बाद लीन होते न होते ही उस पर फिर आघात किया जाता है। गुरुओं से सुना है कि तम्बूरा के तारों में से सप्तक के सब स्वर निकलते हैं और सब मिल कर एक ही स्वर की* उत्पत्ति होती है। तम्बूरा को यत्न अथवा मनोयोग से न बजाने से स्वरों की ठीक ठीक व्युत्पत्ति नहीं होती है। "तम्बूरा छेड़ने" का नियम गुरु से निम्न प्रकार से सीखा है। निम्न सप्तक के षड़ज (१) पर आघात करके एक दो तीन उच्चारण करने में जितनी देर लगती है उतनी देर तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। ध्यान देने से प्रतीत होगा कि इस षड़ज स्वर के लय स्थान पर उसका अन्त:स्वर गान्धार गूँजने लगता है। इसके बाद एक दो उच्चारण करने में जितना समय लगता है उसी निम्नसप्तक के (२) मध्यम (अथवा पंचम, जैसा तार बँधा है) पर आघात करके उतनी देर तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। फिर मध्य सप्तक के दोनों षड़ज (३-४) तारों पर एक एक आघात करके (एक उच्चारण करने में जितनी देर लगती हो उतने समय का अन्तर देकर) फिर निम्न सप्तक के षड़ज तार पर आघात आरम्भ करना चाहिए। आगे के चित्र से यह सब बातें स्पष्ट मालूम होंगी।

किसी किसी तंत्रकार को मैंने तम्बूरा बाँधने के समय मध्य सप्तक के दो षड़ज के बदले एक षड़ज और एक निषाद पर बाँधते हुए देखा है। इससे भी सब स्वर स्पष्ट निकलने लगते हैं।

कंठस्वर के साथ तम्बूरा के तार के स्वर को मिला कर यंत्र को 'छेड़ना' और गाना कर्त्तव्य है। कंठ से जो स्वर निकलता है तम्बूरा के तार के उसी स्वर पर आघात भी पड़ता है। दाहिने हाथ की तर्जनी के अग्रभाग से तारों पर नरम आघात करके निकलते हुए स्वरों को स्थिर चित्त से सुनना चाहिए। बड़े बड़े

---

*श्रुत्यनन्तरभावी यः स्निग्धोऽनुरणनात्मकः।
स्वतो रंजयति श्रोतृचित्तं स स्वर उच्यते॥
श्रुतिभ्यः स्युः स्वराः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः।
पंचमो धैवतश्चाथ निषाद इति सप्त ते॥
(संगीतरत्नाकर)

तंत्रकार वीणादि यंत्र बजाने के समय तम्बूरा छेड़ने के लिए अपना एक विशेष साथी, जो स्वर का ज्ञाता होता था साथ रखते थे और उनको छोड़कर किसी दूसरे आदमी को तम्बूरा छूने नहीं देते थे।

निम्न सप्तक का मध्यम (या पंचम)	४,५	(४)	पमा,
मध्य सप्तक का षड़ज	६	(३)	ध,
मध्य सप्तक का षड़ज	७	(२)	नि,
निम्न सप्तक का षड़ज	१, २, ३	(१)	गरस,

सातों स्वर तम्बूरे में इसी क्रम से व्यक्त होते हैं।

आलाप और गान—हारमोनियम में मध्यवर्ती स्वरों के अभाव होने के कारण मूर्च्छना और गमक नहीं निकल सकते और इसी लिए इस यंत्र की सहायता से स्वर का अभ्यास करने से आलाप अधूरा रह जाता है। प्राचीन तंत्रकार आलाप की चार विशेषताएँ* अर्थात् प्रथम "स्थायी" विलम्ब लय से, द्वितीय और "आरोही" और तृतीय "अवरोही" मध्य लय से और चतुर्थ "संचारी" द्रुत लय से वर्णालङ्कार युक्त करके "सरगम" या "स्वरवर्ण" के द्वारा दिखलाते थे। उसके बाद गान (ध्रुपद) को भी उसी प्रकार चार पद युक्त करके नाना छन्द के अंतर्गत करके उक्त तीन प्रकार के लय के साथ दिखाते थे। आज-कल आलाप का लोप हो गया है। यहाँ तक कि किसी किसी का विचार है कि ध्रुपद जानने से आलाप स्वयं ही आजाता है। आलाप के लक्षण पर कोई ध्यान नहीं देता वरन् केवल "ने ते ते री ने री तुम् तुम्" इत्यादि अपशब्दों के द्वारा कुछ देर तक स्वरों का विस्तार करके गवैये लोग गाना आरम्भ कर देते हैं और दो चार बार स्थायी और अन्तरा गाकर द्विगुण, चतुर्गुण, आड़ि, कुआड़ि इत्यादि कौशल दिखाने लगते हैं। परिणाम यह होता है कि थोड़े ही समय में बहुत से राग गाये जाते हैं परन्तु एक भी राग का रूप ठीक ठीक दिखाई नहीं पड़ता। स्वर की प्रतिष्ठा (क़ायम) करना गवैयों का प्रधान कर्त्तव्य है। आज-कल स्वर की ही प्रतिष्ठा नहीं होती, राग† का स्वरूप दिखाना तो दूर रहा।

हिन्दी में ध्रुपद गान की शिक्षा कंठपरम्परा से होती चली आ रही है। इसी लिए और कोई विशेष ग्रन्थ के न होने के कारण लोग अपना अपना मत चलाते आ रहे हैं। इससे संगीत कहीं कहीं

---

*आलापो गमकालसिरचरैवर्जिता मताः।
ग्रहांशतारमन्द्राणां न्यासाय न्यासयोस्तथा॥
अभिव्यक्तिर्यत्र दृष्टा स रागालाप उच्यते॥

† प्रवेशाक्षेपनिष्कामप्रासादिकमथान्तरम्।
गीतं पञ्चविधं यत्नात् रागैरेभिः प्रयोजयेत्॥

संगीतरत्नाकर।

परिवर्तित, कहीं असम्पूर्ण और कहीं यथेच्छाचार हो गया है। मैंने देखा है कि कहीं तो अर्थहीन शब्दों का प्रयोग किया गया है, कहीं केवल दो तुक (पाद) का व्यवहार हुआ है और कहीं गायक अपनी इच्छानुसार लय वा ताल का सामञ्जस्य करके ध्रुपद गाते हैं। इस प्रकार का अर्थहीन, असम्पूर्ण और अशुद्ध संगीत का लोप हो जाना ही उत्तम है। जिस प्रकार आलाप में चार वर्णों के द्वारा स्वर की योजना होती है उसी प्रकार संगीत* में भी चार पद होते हैं अर्थात् उद्ग्राह, मेलापक, ध्रुव और आभोग। किसी किसी ने चारों पादों के अतिरिक्त भी रचना की है। परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि **ध्रुपद में चारों तुक न होने से वह असम्पूर्ण रह जाता है।**

गीत रचना करने के लिए अनेक विषयों का ज्ञान होना आवश्यक है। गण † का विचार, लघु गुरु भेद, दण्ड, छन्द इत्यादि विषयों का सम्पूर्ण ज्ञान व शिक्षा होनी आवश्यक है। इनका विचार रखते हुए संगीतरचना करने के बाद उसमें स्वर की योजना करने के लिए दस‡ विषयों की आवश्यकता होती है। ये सब सांगीतिक विषय गायकों को जानना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि गाने के समय गायक उत्तेजित हो जाते हैं और नाना प्रकार के मुद्रादोष दिखाई पड़ते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उद्दिष्ट स्वर का प्रकाश अथवा चलित स्वर का सामंजस्य नहीं होता। संगीत (गाना-बजाना)

---

* आदावुद्गृह्यते गीते येनोद्ग्राहस्ततो भवेत्।
मेलापको द्वितीयस्तूद्ग्राहस्तो मेलनात्॥
ध्रुवत्वाद्ध्रुवसंज्ञस्तु तृतीयो भाग उच्यते।
आभोगस्त्वन्तिमो भागो गीतपूर्णत्वसूचकः॥
संगीतरत्नाकर।

†शब्दानुशासनज्ञानमभिधानप्रवीणता।
छन्दप्रभेदवेदित्वमलंकारेषु कौशलम्॥
उद्ग्राहे दकारश्च भकारश्चान्तरे तथा।
आभोगे तु तकारश्च त्रयो लक्ष्मी फलप्रदा॥
नकारो नाशयेल्लक्ष्मी हकारस्तु हरेद्यशः।
मकारः सर्वहृत्तस्माद् गीतादौ तत्परित्यजेत्॥
द्विजवर्णोऽकवर्गाभ्यां चटाभ्यां क्षत्रियो भवेत्।
तपाभ्यां वैश्यवर्णश्च यशाभ्यां शूद्रसंज्ञकः॥
अकचटतपयशवर्गास्तेषामेतास्तु देवताक्रमः।
सोमो भौमः सौम्यो जीवः शुक्रःशनिः राहुः॥

‡क्वचिदंशः क्वचिन्न्यासः षाड्वौडविते क्वचित्।
अल्पत्वञ्च बहुत्वञ्च ग्रहांशन्याससंयुतम्॥
मन्द्रतारौ तथा ज्ञात्वा योजनीया मनीषिभिः।
ग्रामरागप्रयोक्तव्या विधिवद् दशरूपकाः।

स्वर और लययुक्त होना चाहिए और एकांगी भी होना चाहिए अर्थात् जिस लय में गाना हो रहा है उसी लय में वादन भी होना चाहिए।

अनेक गवैये जनसाधारण के समीप रुपये के लिए आते हैं और लोगों को स्वर के बाहरी भावों के विस्तार से चमत्कृत करते हैं। परन्तु इन लोगों में गुणी बहुत कम होते हैं और अपने को उस्ताद के नाम से प्रचार करके लोगों को और अपने को प्रतारित करते हैं। गायक में किन किन विषयों का ज्ञान होना चाहिए वह निम्नलिखित गान में दिखाया गया है। स्वर्गीय वीणाकार महेशचन्द्र सरकार महाशयजी ने यह गाना मुझे सिखाया था।

सामन्त—ढीमा तिताला

आदि सप्तसुर, सप्त प्रकार तीव्रतम, तीव्रतर, तीवर, शुद्ध कोमल, अति कोमल, सुकार ॥ १ ॥
शुद्ध अन्तरीत, काकली, कैशिकी भेद, द्वादश विकृत, ग्रह अंश न्यास दुरत, मध्य, विलम, आलाप चार ॥२॥
श्रुति मुरछन, ग्राम, गमक, खंडमेरु, गिरभंजन, रागलिप्त, समलिप्त, कूटतान, अलंकार ॥३॥
पचीस दोष, त्यागे दशगुन लेवे, गायक होय काव्य में धरे तो रिझावे, शाहजहान गुण अपार ॥४॥

(१०) रागों के भेद।

प्रचलित रागों में एक ही प्रकृति के रागों का भेद और कुछ उपदेश जो मैंने गुरु से सीखा है नीचे दिये जाते हैं। जो लोग कंठ अथवा तार के यंत्र से संगीतचर्चा करते हैं वे इन बातों को सहज में ही समझ सकेंगे। परन्तु **हारमोनियम वालों के लिए ये बातें असाध्य रहेंगी।**

आसावरी—शुद्ध सम्पूर्ण—स रा गा मा प धा ना।

इस राग में "रा गा मा" और "धा ना सं" एक साथ नहीं लगेगा। आरोहण में गान्धार व निषाद लिप्त भाव से लगेगा। परदाहीन यन्त्र में (सुरश्रृंगार, सारंगी, स्वरोद) इसको सूत कहते हैं, पर्दा-युक्त यन्त्र में (वीणा, सितार, एसरार) इसको मीड़ कहते हैं। 'रा गा मा' व 'धा ना सं' स्पष्ट व्यवहार होने से भैरवी व कानड़ा रागों की छाया की आशंका है। तन्त्रकार लोग इस राग में ऋषभ व धैवत अति कोमल व्यवहार करते हैं।

कल्याण—शुद्ध सम्पूर्ण—स र ग म प ध न।

इस राग में ऋषभ, मध्यम, व धैवत्, अति तीव्र व्यवहार होता है। तन्त्रकार लोग मन्द्र सप्तक के निषाद को षड़जवत् करके मध्य सप्तक के गान्धार तक मीड़ देकर कल्याण राग का आरोहण करते हैं अर्थात् नं, र, ग; पुनः पंचम स्वर को तीव्रमध्यम के मीड़ से धैवत् व निषाद का स्वर

दिखाते हैं अर्थात् म, ध, न, इस ठाट में इमन राग भी गाया जाता है; इमन राग में मध्य सप्तक के निषाद से अवरोहण पहले देखा जाता है, पंचम, स्वर से तीव्र मध्यम होकर ऋषभ तक आकर गान्धार सुर में स्थिति, पुनः ऋषभ से षड़ज में न्यास अथवा विश्राम। इमन व कल्याण में तीव्र मध्यम का ही व्यवहार देखा जाता है [कल्याण में अति तीव्र]

कानड़ा (दरबारी) शुद्ध सम्पूर्ण—स र गा मा प धा ना।

इस राग में सातों स्वर आरोहण व अवरोहण में स्वाधीन भाव से लगेंगे। मन्द्र सप्तक के पंचम व धैवत मीड़ युक्त होकर मध्य सप्तक के षड़ज तक जायगा अर्थात् नांसर नांधांपं मांपंधांनांस। इसी प्रकार तार सप्तक के ऋषभ से मध्यसप्तक के निषाद, धैवत, पंचम होकर गान्धार, ऋषभ, व षड़ज स्वर में स्थिति। अवरोहण में धैवत अधिक काल व्यवहार करने से आशावरी राग की स्पर्शाशंका। एक बारगी धैवत स्वर न लगाने से आड़ाना (नाप) राग की आशंका। इस राग में ऋषभ अति तीव्र है।

कानड़ा (आड़ाना)—शुद्ध सम्पूर्ण—स र गा मा प धा ना।

इस राग में ऋषभ के साथ गान्धार और धैवत निषाद के संग तार षड़ज एक संग व्यवहार नहीं होता। "र मा गा" और "धा ना प" इस राग में व्यवहार होता है; अवरोहण में नाप, गामा प र स व्यवहार होता है। धैवत का व्यवहार इस राग में अल्प होता है; "गा र स" व "ना धा प" इस राग में व्यवहार नहीं होगा।

कानड़ा (बागेश्री) शुद्ध सम्पूर्ण। स र गा मा प ध ना।

इस राग में गांधार मध्यम के आश्रय पर चलता है, तन्त्रकार लोग कहते हैं कि बागेश्री का मध्यम गांधार क़रीब क़रीब मालकोष से मिलता है; अर्थात् **मागामारस**। इस राग में पंचम आरोहण अथवा अवरोहण में एकही स्थान में मध्यम के मीड़ के साथ व्यवहार होता है; स्वाधीन भाव में नहीं। स्वाधीन भाव से पंचम लगाने से "सिन्धु" राग की आशंका; ऋषभ व गान्धार एक साथ व्यवहार करने से "दरबारीकानड़ा" राग की आशंका।

कानड़ा (कौशिकी) शुद्ध सम्पूर्ण। स र गा मा प धा ना।

मालकोष व दरबारी कानड़ा के मेल से कौशिकी हुआ। तन्त्रकार लोग कहते हैं कि सम्पूर्ण मालकोष व कौशिकी कानड़ा एक ही है। परन्तु कौशिकी राग में मालकोष की छाया मात्र दिखाकर कानड़ा का रूप प्रकाश करना होगा; सम्पूर्ण मालकोष राग में कानड़ा की छाया-मात्र दिखाकर मालकोष का रूप प्रकाश करना होगा। इन दोनों रागों में यही भेद है।

कानड़ा (नायकी) शुद्ध सम्पूर्ण । स र गा मा प धा ना ।

इस राग में गान्धार व धैवत लिप्त भाव (वक्र) से व्यवहार होता है इसीलिए इसका नाम "नायकी" है। गान्धार व धैवत वर्जित करने से "सारँग" (ओड़व) होगा। स्पष्ट भाव से गान्धार व धैवत लगाने से दरबारी कानड़ा हो जायगा। इसी कारण पूर्वज नायक लोगों ने लिप्त भाव से गान्धार व धैवत लगाकर कानड़ा का रूप प्रकाश किया है।

कानड़ा (मुद्राकी) मिश्र सम्पूर्ण । स र गा ग मा म प धा ध ना न ।

तन्त्रकार लोग कहते हैं कि हिण्डोल व दरबारी कानड़ा के मेल से मुद्राकी बना है।

कानड़ा (बहार) शुद्ध सम्पूर्ण । स र गा मा प धा ना ।

सप्त स्वर के शेषार्द्ध से इस राग का आरम्भ अथवा उत्थान। अर्थात् "मा धा ना सं" यह राग ध्रुपद अंग में चुटकी है। इस राग में आड़ाना, वागेश्री, दरबारी, रागों का कुछ कुछ अंश लेकर बहार किया गया है इसी लिए इसका नाम बहार है।

कामोद । मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा म प ध न ।

इस राग के अवरोहण में गान्धार व निषाद का व्यवहार नहीं है; आरोहण में धैवत का व्यवहार नहीं है; आरोहण में ऋषभ के साथ पंचम मीड़ के साथ व्यवहार होगा; और तीव्र मध्यम के साथ पंचम व निषाद का व्यवहार होगा, अवरोह में कोमल मध्यम के साथ ऋषभ का व्यवहार होगा।

प्रस्तार—र प म प ग म प मा र स म प न सं ध प ग म प मा र स।

केदारा । मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा म प ध न ।

इस राग के आरोहण में ऋषभ व गान्धार स्पष्ट व्यवहार नहीं होता है; लिप्त भाव (वक्र) से व्यवहार होता है। षड़ज स्वर से कोमल मध्यम, अति अल्प गन्धार, तीव्र मध्यम व पंचम होकर कोमल मध्यम, अति अल्प गन्धार ऋषभ होकर षड़ज स्वर में विश्राम; अर्थात् स मा ग् म प मा ग् र स। अन्तरा में पंचम से तार षड़ज तक जाता है अर्थात् प प सं न सं न ध प मा मा ग् म प मा ग् र स। केदारा कल्याण जातीय राग है इसलिए स्वरान्तर में (न ध म मा) कल्याण राग की छाया दिखाई पड़ती है।

कुमारी । शुद्ध षाड़व । स रा ग म प न ।

श्रीराग के ठाट में धैवत वर्जित करने से कुमारी राग होगा।

खम्बाज। षाड़व सम्पूर्ण। स ग मा प ध ना—ना ध प मा ग र स।

ध्रुपद अङ्ग में इस राग का व्यवहार थोड़ा है, ख्याल टप्पा में इस राग का चलन अधिक है। सितार में यह राग और भैरवी, लूम, झिंझौटी, सिंधु, काफी, देश इत्यादि रागों के गीत और धुन बजते हैं। खम्बाज में अति तीव्र गान्धार व धैवत व्यवहार होता है; गान्धार व निषाद का व्यवहार सावधानता से करना चाहिए नहीं तो बेहाग राग की आशंका है।

गौरी। शुद्ध सम्पूर्ण। स रा ग मा प धा न।

यह राग दो प्रकार का है एक चित्र दूसरा ललिता। चित्र गौरी का उक्त ठाट में (भैरव) आलाप व गानक्रिया होता है; ललिता गौरी में दोनों मध्यमों का व्यवहार है परन्तु ललित में दोनों मध्यम का व्यवहार एक साथ है; गौरी में पृथक् भाव से है। चित्रा गौरी का प्रस्तार—स नं धां स रा ग रा धा प मा प मा ग रा स। ललिता गौरी का प्रस्तार—स रा ग मा ग रा म ग रा स; धा प मा ग रा म ग रा स।

छाया। शुद्ध सम्पूर्ण। स र ग मा प ध ना।

प्राचीन गुणी लोग कहते हैं कि इस राग में कल्याण जातीय सब राग (कामोद, केदारा, हम्बीर, अलैया, कल्याण इत्यादि) की छाया है; परन्तु स्पष्ट भाव से इन रागों में से कोई राग भी नहीं प्रकाश होता; इसलिए इस राग का नाम "छाया" है।

छायानट। शुद्ध सम्पूर्ण। स र ग मा प ध न।

इस राग में किसी किसी मत से दोनों निषाद का व्यवहार होता है; मध्यम व धैवत इस राग में सावधानतापूर्वक व्यवहार करना उचित है नहीं तो केदारा, कामोद, हमीर रागों की आशंका है।

[छाया, छायानट, व नट इन तीन रागों के विषय में हमारी अभिज्ञता थोड़ी है]

जोगिया। षाड़व सम्पूर्ण। स रा मा प धा ना—ना धा प मा ग रा स।

यह राग भैरव जातीय है। कोई कोई कहते हैं कि यह योगी लोगों का भैरव है, इस राग में अति कोमल निषाद का व्यवहार होता है; आरोहण में निषाद का व्यवहार तार षड़ज के साथ लिप्त भाव से है, स्वाधीन भाव से नहीं। इस राग में मा प धा, प धा ना विशेष रूप से व्यवहार होता है।

जैत् (जयत्)। शुद्ध षाड़व। स रा ग म ध न।

अलीमहम्मदखाँ रबाबी (वड़कू) कह गये हैं कि जयत्, मारुवा, व पुरिया, तीनों राग सम प्रकृति के हैं; हिण्डोल अंग में जयत्, श्री अंग में मारुवा, कल्याण अंग में पुरिया समप्रकृति के हैं।

जयजयन्ती। मिश्र सम्पूर्ण। स र गा ग मा प ध ना न।

प्राचीन तन्त्रकार लोगों ने इस राग को दो रागों में शामिल किया है; एक मल्लार, दूसरा कानड़ा। जो लोग मल्लार राग के अन्तर्गत करके गाते हैं उनको अवरोहण में गान्धार सावधानता से लगाना चाहिए। जो लोग कानड़ा (वागेश्री) का अन्तर्गत करके गाते हैं उनको तीव्र धैवत व कोमल निषाद का व्यवहार करना उचित है। जो लोग दरबारी कानड़ा के अन्तर्गत करके गावेंगे उनको अवरोहण में कोमल—निषाद व कोमल धैवत व्यवहार करना उचित है। दोनों गन्धार इस राग के आरोहण व अवरोहण में एक साथ व्यवहार होता है।

टोड़ी (आसावरी)। आसावरी व दरबारी टोड़ी के मेल से यह राग उत्पन्न हुआ। भैरवी राग को बचा कर यह राग गाना चाहिए।

टोड़ी (देसी)। भीमपलासी व दरबारी टोड़ी के मेल से यह राग बना है।

टोड़ी लाचारी। मुलतान व दरबारी टोड़ी के मेल से इस राग की उत्पत्ति हुई है।

टोड़ी (गान्धारी) भैरवी के ठाठ में यह राग ्या जाता है, प्राचीन तन्त्रकार लोग कहते हैं कि इस राग में रामकेली राग का मिश्रण है।

टोड़ी (हूसेनी) सम्पूर्ण षाड़व। स रा गा म प धा न—न धा म गा रा स।

टोड़ी (विलासखानी) शुद्ध सम्पूर्ण। स रा गा म प धा न।

पूर्वज गुणी लोगों का कथन है कि तानसेन ने कन्या के विवाह में दामाद (विलासखाँ) को सौ राग व चार सौ ध्रुपद दहेज़ के तौर पर दिये थे (सिखाये थे) तानसेन फिर उन रागों को नहीं गाते थे। तानसेन के मरने के बाद उनका मृतक शरीर विलासखाँ के दरबारी टोड़ी (उन रागों में से एक राग) गाने से हिला रहा। तब से इस राग का नाम विलासखानी टोड़ी हुआ है। दरबारी टोड़ी और विलास-खानी टोड़ी एक ही ठाट में गाया जाता है।

टोड़ी (खट) यह राग भी भैरवी के ठाट में गाया जाता है परन्तु आरोहण में ऋषभ नहीं लगता है; किसी किसी मत से इसमें दो गान्धार का व्यवहार है।

तिलक। शुद्ध षाड़व। स र ग मा प न।

यह राग पंजाब प्रदेश में अधिक प्रचलित है; ध्रुपद अंग में इस राग का व्यवहार थोड़ा है।

तिलक कामोद। तिलक व कामोद के मेल से यह राग उत्पन्न हुआ है; यह राग भी ध्रुपद अंग में थोड़ा व्यवहार होता है; ख्याल अथवा गत में ज्यादातर सुना जाता है।

देव गान्धार। यह राग टोड़ी का अन्तर्गत है; इस राग में दोनों ऋषभों का एक साथ व्यवहार है।

देसकार। शुद्ध षाड़व। स र ग प ध न।

इस राग में कोई कोई तन्त्र कोमल ऋषभ तीव्र मध्यम का व्यवहार करते हैं। जिस मत से

विभास में निषाद का व्यवहार है उसी मत के अनुसार देसकार में तीव्र मध्यम का व्यवहार होता है।

अलीबक्स (धम्मारी) उस्तादजी ने शुद्ध षाड़व कह कर सिखाये हैं; और भी कहे हैं कि इसमें कोमल ऋषभ व्यवहार होने से देसकार का रूप ख़राब नहीं होगा; भूपाल व विभास राग के बीचों-बीच से इसकी उत्पत्ति है।

धनाश्री। शुद्ध सम्पूर्ण। स रा ग म प धा न।

तन्त्रकार लोग इस राग को "दिन का पूरीया" कहते हैं। इस राग में पंचम लिप्त भाव से व्यवहार होता है; धैवत का स्वाधीन व्यवहार नहीं होता है; मीड़ के साथ व्यवहार होता है।

धवलश्री। शुद्ध षाड़व। स रा ग प धा न।

यह राग बहुत कम सुनने में आता है।

पटमँजरी। सम्पूर्ण ओड़व। यह राग भी बहुत कम सुनने में आता है।

धवलश्री व पटमँजरी के विषय में हमारी अभिज्ञता अल्प है।

पंचम। मिश्रषाड़व। स रा गा ग मा म धा ध ना न।

हिण्डोल, मालकोष, बसंत या ललित, यह तीन रागों के मेल से "पंचम" बना है।

पुरवी (पूर्वी) शुद्ध सम्पूर्ण। स रा ग म प धा न

इस राग में धैवत स्वर व मध्यम पञ्चम के मीड़ से व्यवहार होता है, स्वाधीन भाव से धैवत का व्यवहार नहीं है। ललित का धैवत भी इसी प्रकार का है। किसी किसी मत से दोनों मध्यम का व्यवहार होता है, परन्तु बेहाग की आशंका है।

पुरिया। शुद्ध षाड़व। स रा ग म धा न

इस राग का धैवत तीव्र मध्यम के मीड़ से व्यवहार होता है; यह राग कल्याणांग है, अर्थात् इसका गान्धार कल्याण के गान्धार के सदृश है; कोई कोई इस राग में अति कोमल धैवत भी लगाते हैं।

बसंत। ओड़व षाड़व। स ग म ध न—न ध मा ग रा स।

किसी किसी मत से दोनों मध्यमों का व्यवहार एक साथ होता है; परन्तु ललित राग की आशंका होती है। प्राचीन तन्त्रकार लोग इस राग को हिण्डोलांग कहते हैं, आरोही में तीव्र मध्यम लगाते हैं; अवरोही में कोमल व तीव्र मध्यम भिन्न प्रकार से व्यवहार होता है।

बिभास। शुद्ध ओड़व। स र ग म ध।

प्राचीन तन्त्रकार लोग इसको भैरवांग कहते हैं; और ऋषभ धैवत कोमल व्यवहार करते हैं। इस राग में मंद्र सप्तक का व्यवहार नहीं होना चाहिए नहीं तो भूपाली राग की आशंका है।

बेलावल। (अलहिया) शुद्ध सम्पूर्ण। स र ग मा प ध न।

इस राग में धैवत स्वाधीन और कम्पित व्यवहार होता है; छाया नट अथवा हम्मीर के धैवत की तरह नहीं; आरोहण में मध्यम के साथ पंचम रहते हुए भी ऋषभ गान्धार के साथ पंचम का व्यवहार होने से इस राग का रूप प्रकाशित होता है; अर्थात् "र ग प"। ईमन बेलावल के मध्यम से इस राग का मध्यम अल्प है।

बेलावल (ईमन) शुद्ध सम्पूर्ण। स र ग मा प ध न।

रात को जैसे इमन कल्याण है वैसे ही दिन का राग इमन बेलावल है। इस राग में किसी किसी मत से तीव्र मध्यम भी व्यवहार होता है, लेकिन ध्रुपद अंग में कोमल मध्यम ही का व्यवहार होता है, तन्त्रकार लोग इसको दिन का कल्याण कहते हैं।

देवगिरी व देवसाख के विषय में कुछ विशेष शिक्षाप्रद पदार्थ नहीं है, पुस्तक में इन रागों की स्वर-लिपि है, देखने से ज्ञात होगा।

बेहाग। औड़व सम्पूर्ण। स ग मा प न—न ध प मा ग र स।

इस राग को ध्रुपद अंग की चुटकी कहते हैं; ध्रुपदी लोग इस राग के बदले शंकरा गाते हैं।

भैरव। शुद्ध सम्पूर्ण। स रा ग मा प धा न।

इस राग में अति कोमल ऋषभ व धैवत का व्यवहार होता है; रा मा ग प; ग मा न, ग मा ग मा ग रा, इन स्वरों से इस राग का परिचय होता है। किसी किसी मत से यह राग औड़व है; उसकी ठाट "स ग मा धा न" बनारस की सहनाई वालों में से कोई कोई इस राग का आलाप करते हैं। सम्पूर्ण भैरव को वसंत भैरव कहते हैं।

भीम पलासी। औड़व सम्पूर्ण। स गा मा प ना—ना ध प मा गा र स।

इस राग में गान्धार व मध्यम का व्यवहार एक साथ होने पर भी मालकोश व आड़ाने के गान्धार व मध्यम से पृथक् समझना चाहिए; अड़ाना में मध्यम गान्धार व गान्धार में स्थिति; मालकोष में गान्धार मध्यम व मध्यम में स्थिति; भीम पलासी में मध्यम आश्रित गान्धार मध्यम, मध्यम में स्थिति; अर्थात् मध्यम स्वर के साथ गान्धार बोला कर मध्यम में स्थिति।

प्रस्तार—अड़ाना—नां स र मा गा धा ना प, गा मा प र स।

,, —मालकोष—नां स गा मा गा मा, धा ना धा मा ग मा स।

,, —भीमपलासी—नां स मा गा मा प मा गा र स।

भूपाली। शुद्ध औड़व। स र ग प ध।

इस राग में मन्द्र धैवत के साथ मध्य सप्तक के गान्धार का सम्बन्ध है; (विभास में यह बात नहीं है) कोई कोई इस राग में निषाद का व्यवहार करते हैं; तन्त्रकारों के मत से वह विरुद्ध है;।

भैरवी। शुद्ध सम्पूर्ण। स रा गा मा प धा ना।

ध्रुपद अंग में यह राग थोड़ा व्यवहार है, ख्याल, टप्पा, में यह राग ज़्यादा देखा जाता है और इस राग में ख़ूबसूरती पैदा करने के लिए तीव्र मध्यम व तीव्र ऋषभ भी लगाते हैं।

मल्लार। (गौड़) शुद्ध षाड़व। स र मा प ध ना।

इस राग में धैवत का व्यवहार और स्वरों से अधिक है, मेघ राग में धैवत कम लगता है इसलिए वह विवादी है; गौड़ मल्लार में धैवत ज़्यादा लगता है इसलिए वह वादी है; इस राग का उत्थान प्रायः धैवत से देखा जाता है;।

ललित। मिश्र षाड़व। स रा ग मा म धा न।

इस राग में दोनों मध्यमों का व्यवहार एक साथ है; कोमल धैवत का व्यवहार स्वाधीन भाव से नहीं है बल्कि मध्यम के घसीट से या पूर्वी के धैवत के सदृश है। तन्त्रकार लोग ललित, वा पूर्वी के धैवत को विचित्र धैवत कहते हैं।

रामकेली। शुद्ध सम्पूर्ण। स रा ग मा प धा न।

यह राग भैरव जातीय है। भैरव राग में "गमा" संगति व रामकेली में "राग" संगति। रामकेली में धैवत का व्यवहार भैरव से ज़्यादा है; परन्तु रामकेली का धैवत निषाद आश्रित है। प्रस्तार (रामकेली) धा प धा प मा ग रा ग; भैरव का प्रस्तार—ग मा प मा ग मा ग मा रा स।

शंकरा। षाड़व सम्पूर्ण। स ग म प ध न—न ध प म ग र स।

तंत्रकार लोग बेहाग के बदले "शंकरा" को अधिक पसंद करते हैं। शंकरा में निषाद अति तीव्र लगता है।

शुहा। सुघरई। शुद्ध षाड़व। स र गा मा प ना।

इन दोनों रागों को दिन का कानड़ा कहते हैं। तंत्रकार लोग इन दोनों रागों को सारंग मिलित कहते हैं; अर्थात् प्रथम अर्ध (स र गा मा) कानड़ा, द्वितीय अर्ध (मा प ना सं) सारंग; अवरोहण में (ना प मा) सारंग, व (गा र स) कानड़ा देखा जाता है।

सोहिनी। ओड़व-षाड़व। स ग मा ध न—न ध मा ग रा स।

इस राग में तंत्रकार लोग कोमल मध्यम का व्यवहार करते हैं, किसी किसी मत से दोनों मध्यमों का व्यवहार होता है; परन्तु यह युक्ति-विरुद्ध है।

परज में भी दोनों मध्यमों का व्यवहार होता है; परन्तु वह भी युक्ति-विरुद्ध है; तंत्रकार लोग तीव्र मध्यम का व्यवहार करते हैं।

श्री। शुद्ध सम्पूर्ण। स रा ग म प धा न।

इस राग में अति तीव्र मध्यम का व्यवहार होता है। प्रधान स्वर विस्तार आरोहण में षड्ज से धैवत तक, व अवरोहण में धैवत से षड्ज तक घसीट से होगा।

मल्लार (मेघ) शुद्ध षाड़व। स र मा प ध ना।

इस राग में ऋषभ, मध्यम, व पंचम, सारँग राग के समान व्यवहार होता है; धैवत इस राग में थोड़ा व्यवहार होता है; अर्थात् ध ना स व्यवहार नहीं होता है, पधस, पनास, व्यवहार होता है; निषाद, के साथ धैवत का व्यवहार भी थोड़ा है।

मल्लार (धूरिया) मिश्र सम्पूर्ण। स र ग मा प ध ना न।

इस राग में गान्धार के साथ मध्यम, व धैवत के साथ निषाद के व्यवहार होने से मल्लार राग में खूबसूरती पैदा होती है। बरसात के मौसिम में जब पहले पानी बरसता है व आँधी के साथ धूल उड़ती है उस समय यह राग गाया जाता है; इसलिए इस राग को धूरिया मल्लार कहते हैं। काशी के महेश बाबू (वीणाकार) ने यह राग हमें सिखलाया था।

मल्लार (मियाँ)—इस राग में दोनों निषादों का व्यवहार एक साथ है।

कुछ लोग इस राग में कोमल गान्धार, कोमल धैवत, व कोमल निषाद, दरबारी कानड़ा के सदृश व्यवहार करते हैं। परन्तु मियाँ मल्लार की ठाट स र गा मा प ध ना न मन्द्र सप्तक के पंचम, धैवत, व निषाद होकर मध्य सप्तक का ऋषभ होकर षड्ज में स्थिति प्रस्तार—स धं नां धं नां पं मां धं नां नं स; स र गा मा र स; स र गा मा प ध ना ध प न स, वा प ध ना न स।

मालश्री। शुद्ध ओड़व। स ग म प न।

किसी किसी मत से इस राग को चार स्वर (स ग प न) में गाते हैं; हिण्डोल राग के आरोहण में जैसे निषाद लिप्त भाव से लगता है वैसे ही "मालश्री" के अवरोहण में तीव्र मध्यम लगता है।

मुलतान। ओड़व सम्पूर्ण। स ग म प न—न धा प म गा रा स।

कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि "दरबारी टोड़ी" से मुलतान निकला है परन्तु यह भ्रम है। टोड़ी की गान्धार ऋषभ-आश्रित है—रागा रागा। मुलतान की गान्धार स्वाधीन है—नं स गा। दरबारी टोड़ी का पंचम मुलतान के बनिस्बत कम लगता है। दरबारी टोड़ी में पंचम अधिक लगाने से मुलतान का भाव पैदा होगा।

मुलतान का प्रस्तार—नं स गा म प न धा प म गा म प म गा रा स।

दरबारी टोड़ी का प्रस्तार—नं स रा गा रा गा म प धा न धा प म गा रा गा रा गा रा स।

सारंग (वृंदावनी)। शुद्ध ओड़व। स र मा प न।

तन्त्रकार लोग कहते हैं कि "कानड़ा" व "मल्लार" सारंग से उत्पन्न हुआ है; जिन महाशयों को स्वर का पूरा ज्ञान हुआ है उनके लिए एक स्वर से दूसरे स्वर में अथवा एक राग से दूसरे राग में आवागमन करना कुछ कठिन नहीं है। परन्तु एक दूसरे का रचा हुआ गाना दूसरे राग में गाने से उक्त ज्ञान का परिचय कोई नहीं पा सकता। स्वर्गीय गोपालचन्द्र चक्रवर्ती (नुलो गोपाल) महाशय ने किसी समय "हिण्डोल" राग गाकर कामोद, हम्मीर, कल्याण, भूपाली, मालश्री, केदारा, इन रागों की सृष्टि करके फिर हिण्डोल में लय करके हम लोगों को सुनाया था। इसी में से एक रागमाला उक्त चक्रवर्त्ती महाशय ने हमें सिखलाई थी। वह इस पुस्तक में लिखी है।

साँरंग (वड़हंस) षाड़व ओड़व। स र ग मा प ध—न प मा र स।

स्वर्गीय अलीमहम्मदखाँ (वीणाकार) ने हमें इस राग का कुल एक ही ध्रुपद सिखलाया था।

सिंधु। शुद्ध सम्पूर्ण। स र गा मा प ध ना।

इस राग में अति कोमल गान्धार का व्यवहार होता है। ध्रुपद अंग में इस राग को चुटकी कहते हैं।

सिन्दुरा। मिश्र सम्पूर्ण। स र ग मा प ध ना न।

सिंधु व मल्लार के मेल से यह राग बना है, यह राग ज्यादहतर धम्मार में गाया जाता है।

हम्बीर (हम्मीर)। मिश्र सम्पूर्ण। स र ग मा म प ध न।

इस राग के आरोहण में कोमल मध्यम के साथ धैवत का व्यवहार होता है, आरोहण व अवरोहण में तीव्र मध्यम के साथ पंचम व गान्धार का व्यवहार होता है। प्रस्तार—स र ग म प ग मा ध न ध, न ध प म ग म र स। इस राग का धैवत निषाद आश्रित है; व गन्धार केदारे से कुछ अधिक व स्वाधीन है।

हिण्डोल। शुद्ध ओड़व। स ग म ध न।

कुछ लोग इस राग को चार स्वर में गाते हैं (स ग म ध) परन्तु अवरोहण में निषाद का व्यवहार मालश्री के तीव्र मध्यम के सदृश है।

ग्राम—जैसे मनुष्य जिस स्थान पर अपने कुटुम्ब और स्वजन और आवश्यक सामग्री के साथ वास करता है उसको ग्राम कहते हैं उसी प्रकार २२ श्रुति, सप्तस्वर, मूर्च्छनादि को आश्रय करके जिस स्थान पर स्थापित होते हैं उसको भी ग्राम कहते हैं। संगीतशास्त्र में षड़ज, मध्यम और

गांधार केवल इन तीनों ग्राम का उल्लेख है। और उनके भी केवल षड़ज और मध्यम प्रचलित हैं, गांधार ग्राम अप्रचलित है। तीनों ग्रामों में सप्तस्वरों की स्थापना देखने से प्रतीत होता है कि ये केवल तीन भिन्न भिन्न स्वरग्राम अथवा ठाठ हैं। और इनमें सप्तस्वरों के विन्यास से जो राग बनते थे उनके द्वारा ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर के अभ्युदय के लिए हेमन्त, ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओं में तथा पूर्वाह्न मध्याह्न और अपराह्न कालों में गाये जाते थे।* यही देवकाल का संगीत कहा गया है।

उदात्त, अनुदात्त और स्वरित इन तीनों स्वरों से सामगान होता था। गान्धार और निषाद यह दोनों स्वर उदात्त और उच्च; ऋषभ और धैवत स्वर अनुदात्त और निम्न; षड़ज, मध्यम और पंचम ये तीनों स्वर स्वरित और मध्य हैं। उदात्त, अनुदात्त और स्वरित में २२ श्रुति† अन्तर्गत रहने के कारण वैदिक गानों में उनका प्रयोग षष्ठ स्वर विशिष्ट (षाड़व और ओड़व) ध्वनि के द्वारा होता था अनुमान कर सकते हैं। आधुनिक वैदिक गान से इसका कोई सामंजस्य नहीं है। कहते हैं कि उ[illegible] दैव व वैदिक संगीत गन्धर्वलोक में दे दिया गया था।

त्रितंत्री—प्राचीन काल में इस यंत्र का व्यवहार होता था। तम्बूरा भी एक त्रितंत्री है जिसमें षड़ज का एक दूसरा तार भी लगा लिया गया है। प्रवाद है कि मुहम्मद तुगलक के समय में निज़ामुद्दीन औलिया (जैसे बैजू बावरा) के नाम के एक संगीत-सिद्ध महात्मा थे। अमीर ख़ुसरू ने अप[illegible] त्रितंत्री यंत्र में राग आलाप करके उनको सन्तुष्ट किया था और उसी समय से वह सितार (तीन तार) के आविष्कर्त्ता के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। इस यंत्र में सांगीतिक सब विषय अर्थात् वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, मूर्च्छना; तान, गमक, अलंकार इत्यादि गूढ़ भाव से निहित हैं और सप्तस्वरों के आरोहण और अवरोहण के द्वारा निकाले जा सकते हैं।

गमक—पहले कह चुके हैं कि मूर्च्छना का उद्देश्य संक्षेप करना और तान का उद्देश्य विस्तार करना है और मूर्च्छना और तान से अलंकार बनाए है। तान दो प्रकार के होते हैं। [illegible] गमक युक्त (कम्पनयुक्त) दूसरा कम्पनहीन। एक ही स्वर को दो बार उच्चारण करने से [illegible] तीसरे स्वर का आभास मिलता है जो कि आरोही (परवर्ती स्वर) वर्ण अथवा अवरोही (पूर्व[illegible]

---

* क्रमाद् ग्रामत्रये देवा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
हेमन्तग्रीष्मवर्षासु गातव्यास्तु यथाक्रमम् ॥
पूर्वाह्णकाले मध्याह्नेऽपराह्णेऽभ्युदयार्थिभिः ॥
—संगीतरत्नाकर।

† चार श्रुति—स्वरित—स मा प—मध्य—१२ श्रुति
३ श्रुति— अनुदात्त र ध — निम्न—६ श्रुति
२ श्रुति — उदात्त ग न — उच्च — ४ श्रुति
बाईस श्रुतियुक्त सप्तस्वर स र ग मा प ध न।

स्वर) वर्ण होता है। इसी प्रकार से दो तीन बार एक स्वर अथवा दो तीन स्वरों का बार बार उच्चारण करने से कम्पनयुक्त स्वर निकलता है जिसको गमक कहते हैं। तिरिप, स्फुरित, कम्पित, लीन गुम्फित, मुदित आदि अनेक प्रकार के गमक होते हैं। इनमें से कोई तो डमरूध्वनिवत् कोई नाना प्रकार के वक्रयुक्त कोई वेगयुक्त और कोई द्रुत होता है। इन सब विषयों का ज्ञान केवल गुरु के उपदेश ही से हो सकता है। पुस्तक या स्वरलिपि से नहीं हो सकता।

स्वरलिपियों के संकेत

ऊर्ध्वरेखा शिरास्तारो मन्द्रो विन्दुशिरा भवेत्।

इस वाक्य के अनुसार उच्चसप्तक के सुरों के ऊपर एक रेखा और निम्नसप्तक के सुरों के ऊपर एक बिन्दु का व्यवहार इस पुस्तक में किया गया है। और कोमल सुरों के आगे आ-कार (ा) योग कर दिया गया है। यथा—

पृ० ५—भैरव। (स्वरलिपि की दूसरी और तीसरी सतर देखिए)

नं—निम्नसप्तक की तीव्र निषाद।

धां— ,, का कोमल धैवत।

स—उच्चसप्तक का षड़ज।

रा— ,, का कोमल ऋषभ।

तालों के संकेत

इस ग्रन्थ में जिन जिन तालों का व्यवहार हुआ है उनका संक्षेप विवरण नीचे दिया जाता है।

धीमा तेताला ३२ मात्रा—
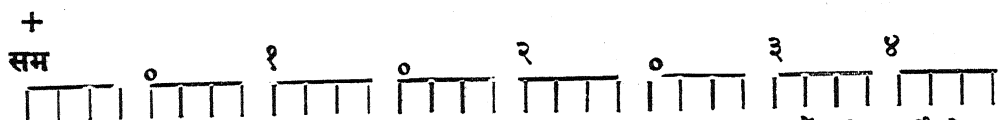
इस ग्रन्थ में कहीं कहीं आठ ताल दो दो मात्रा करके दिखाये गये हैं, शिक्षार्थी लोग चाहें तो उसी को बत्तीस मात्रा भी कर सकते हैं, अथवा आठ मात्रा करके चार ताल में भाग कर सकते हैं।

सवारी ३० मात्रा—

यह ताल भी १५ मात्रा में किया जा सकता है।

आड़ी चौताल—१४ मात्रा—

धम्मार—१४ मात्रा—

सिंह ताल १३—मात्रा—

चौताल—१२ मात्रा—

सूलताल—१० मात्रा—

झाँपताल—१० मात्रा—

महेश ताल (सीर ताल)—९ मात्रा—

रूपक चौताल—७ मात्रा—
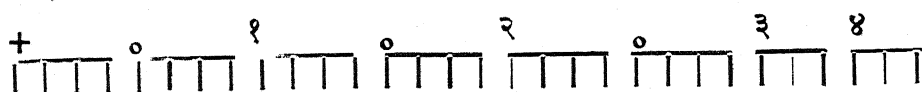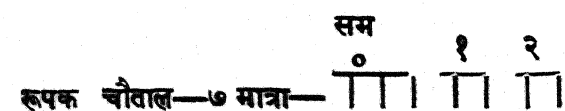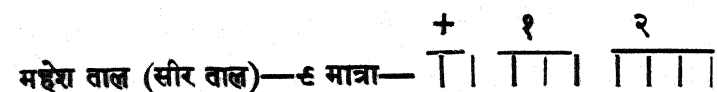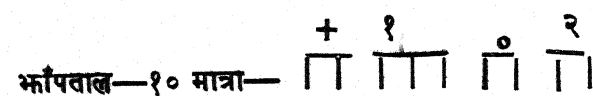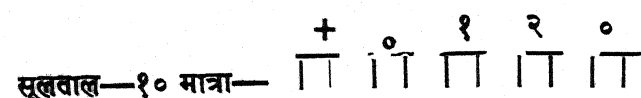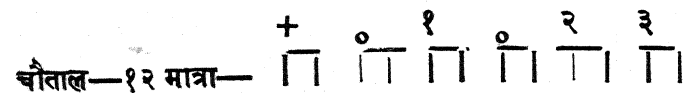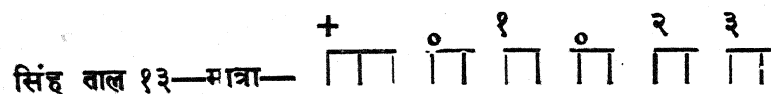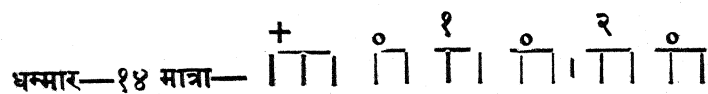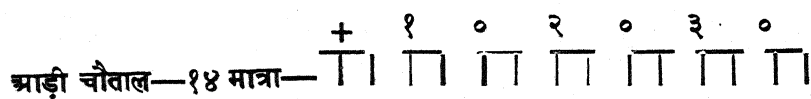
भैरव

दिवा प्रथम दश दण्ड

आश्विन-कार्त्तिक

सूची ।

राग नाम ।		बोल ।		रचयिता ।		ताल ।
भैरव	—	(१) महावाकवादिनी	—	तानसेन	—	चौताल ।
	—	(२) आज मेरे भाग जागे	—	तानसेन	—	धामार ।
	—	(३) ग म प ध नी सप्तसुर	—	बैजूबावरा	—	चौताल ।
	—	(४) अकबर प्राणनाथ	—		—	चौताल ।
रामकेली	—	(५) तुम उठि आई	—	वाणीविलास	—	चौताल ।
	—	(६) नयन रँगाये आये	—		—	धामार ।
	—	(७) सरगम्	—		—	चौताल ।
योगिया	—	(८) जयगंगा जगतारिणी	—	तानसेन	—	चौताल ।
	—	(९) सरगम्	—		—	चौताल और तेताला ।
बेलावल	—	(१०) अलहिया—प्रात उठि आई			—	चौताल ।
	—	(११) सरगम	—	(पन्नालाल)	—	चौताल और तेताला
	—	(१२) इमन—परमानन्दन	—	केवलराम	—	रूपक चौताल ।
	—	(१३) वेमनमोहन सों	—		—	धामार ।
	—	(१४) देवशाख—ज़ालिम अजब एक		सुजानखाँ	—	झाँपताल ।
	—	(१५) शुक्ल—भरन जो गई	—		—	चौताल ।
विभाष	—	(१६) चिड़िया चुचुहानि	—	नन्ददास	—	झाँपताल ।
	—	(१७) रैन गँवाये आये	—	तानतरङ्ग	—	धामार ।
आसावरी	—	(१८) गतमतंगी सब	—	ऊधोदास	—	झाँपताल ।
	—	(१९) भोरहि आये मेरे	—	तानसेन	—	धामार ।
	—	(२०) सरग म	—	(छोटे प्यारखाँ)	—	तेताला ।

भैरव ।

शूलीरससमायुक्तो विरौति सर्वदा स्वयम् ।
भीरवं कुरुते यस्मात् भैरवश्च ततः स्मृतः ॥
नासादेशात्समुद्भूतो भैरवो भैरवः स्वयम् ।
मणिपुरकनामेदं चक्रन्तस्सिद्धिमुक्तिदम् ॥

शास्त्र में उक्त है कि यह राग महादेवजी के दक्षिण-मुख से निःसृत हुआ था। शरत्काल में (आश्विन और कार्त्तिक) सब समय भैरव गाया जा सकता है। दिन के प्रथम दश दंड में भैरव राग और अन्यान्य सामयिक राग जो गाये जाते हैं उनके स्वरलिपि इस भाग में दिये गये हैं। किसी किसी ने प्रदोषकाल (सन्ध्यामुहूर्त्त) को शरत्काल कहा है इसलिए उस समय में भी भैरव गा सकते हैं।

प्राचीन गुणियों का मत है कि इस राग को विशुद्धरूप से गाने से बिना बैल के कोल्हू का चलना, संक्रामक ज्वर का आरोग्य होना, सामान्य शिरःपीड़ा का दूर होना प्रभृति फल पाये जा सकते हैं। बगुले के स्वर (मध्यम) में गान करने से कदाचित् ये फल मिल सकते होंगे।

गंगाधरः शशिकला तिलकस्त्रिनेत्रः ।
सर्पैर्विभूषिततनुर्गजकृत्तिवासाः ।
भास्वत्त्रिशूलकर एव नृमुण्डधारी
शुभ्राम्बरो जयति भैरवरागराजः ॥

सचन्द्रहासं फलकं दधानो निलीमकण्ठः शशिबद्धचूडः ।
त्रिनेत्रधारी बहुधापदातिः प्रचण्डरूपः किल भैरवोऽयम् ॥

—संगीत पारिजात ।

'संगीत पारिजात' के मत से "भैरव" ओड़वजातीय (र, प हीन) राग है। सम्पूर्णजातीय भैरव को 'पारिजात' में "वसन्त भैरव" कहा गया है। 'संगीतरत्नाकर' के मत से शुद्ध भैरव के ये लक्षण हैं–

धैवतांशग्रहन्यासंसंयुक्तः स्यात्समस्वरः ।
तारमन्द्रोऽयमाषड्ज गान्धारशुद्धभैरवः ॥

इस देश में प्रचलित भैरव इसी मत के अनुसार गाया जाता है।

———

(१) भैरव ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग मा प धा न । चौताल ।

इस राग में अति कोमल ऋषभ और धैवत का व्यवहार होता है। "गमा", "रामा", "गप" का व्यवहार संगति (अर्थात् मीड़ या घसीट) में होगा। किसी किसी देश में कोमल निषाद का व्यवहार देखा जाता है परन्तु पश्चिम के यन्त्रकार लोग उसे अशुद्ध कहते हैं। वह कहते हैं कि मध्यम से मीड़ देकर निषाद तक न पहुँचने के कारण ऐसा होता है।

गीत।

महावाकवादिनी सन्मुख होइये आप हो । १ । जाही ते त्रिभुवन मानि जाही ते भवानी जो जाके मन की इच्छा सोई सोई पूजे । २ । हृद सिद्ध तबही पाइये माता जब तुम चरण सूझे (३) तानसेन यही प्रसाद माँगत हैं जहाँ जहाँ तुरट पुरत तहाँ तहाँ कीजिये। ४ ।

स्वरलिपि।

+		०		१		०		२		३	
गमा	गप	मा	मा	ग	रास	स	स	स	स	रा	स
वा ०	००	दि	नी	०	० ०	स	न	मु	ख	हो	इ
नं	धां	धां	नं स	रा	स	स	रा	स	स	स	स
ये	०	आ	प ०	हो	०	म	हा	०	वा	०	क;

२

			।	।	।	।	।	।	।	।	।
प	धा	न	स	स	स	स	स	रा	रा	स	स
जा	ही	ते	०	त्रि	भु	व	न	मा	०	बि	०
	।	।	।	।	।						
धा	नस	स	स	रा	स	न धा	प	धा	धा	प	मा
जा	ही०	०	ते	भ	वा	० ०	नी	जो	०	जा	के
प	माग	राम	गप	मा	गरा	स	स	स	रागमा	गमा	नधाप
म	न ०	की०	० ०	इ	० ०	च्छा	०	सो	ई ० ०	सो ई	० ० ०
माग	प	मा	ग	रा	स	स	रा	स	स	स	स
पू ०	०	०	०	०	जे	म	हा	०	वा	०	क;

३, ४

धांधां धाप	धाप धाधा	पप पमा	पप धाधा	सस सस	नधा पमा
हद ०सि	०द्ध त ब	हीपा इ ये	मा० ता ०	० ० ० ०	ज ब तु म
पमा रामा	गप माग	रारा सस	धाधा नस	सस ससस	रारा सस
चर ण०	०० ० ०	सू ० भे०;	ता न से न	य ही प्रसाद	माँ ० ग त
नधा प	धाधा धस	सनधा नधाप	माग मानधा	पमाप मागरा	सरा सस
हैं ० ०	ज हाँ ज हाँ	तु र ट पु र त	त हाँ त हाँ ०	की० ० जि ये ०	म हा वाक;

इस गीत का तीसरा भाग गाने के बाद "महावाक" कह कर "सम" दिखाया जा सकता है।

---

(२) भैरव । धामार ।

गीत ।

आज मेरे भाग जागे भोरहि सुध लई । १ । मैं इतनो भलो मनावति हूँ बलमा हो तुम पर बल गई । २ । अधरन अंजन महावर भाले मत आत और भई । ३ । तानसेन के प्रभु ठाड़े रहो बलइया लेहौं जहाँ पै तिय नई । ४ ।

स्वरलिपि ।

+			०		।		०			।		०	
क	धे	टे	धे	टे	धा	आ	ग	दि	न	दि	न	ता	आ
रा	स	स	नं	स	नं	स	गमा	ग	रा	रा	मा	ग	प
भा	०	ग	जा	०	०	गे	भो०	०	०	र	हि	०	०
मा	मा	ग	रा	रा	स	स	नं	रा	स	नं	धां	नं	स
सु	ध	०	०	०	ल	ई;	आ	०	ज	मे		रे	०

२

पप	मा	धा	न	सं	सं	सं	सं	न	धा	प	प	प	प
मैं०	इ	त	नो	०	भ	लो	म	ना	०	व	ति	हूँ	०
मा	मा	मा	न	धा	प	प	मा	मा	ग	रामा	गपा	मा	मा
ब	ल	मा	०	०	हो	०	तु	म	०	० ०	० ०	प	र
ग	ग	ग	रा	रा	स	स	नं	रा	स	नं	धा	नं	स
ब	ल	०	०	०	ग	ई;	आ	०	ज	मे	०	रे	०

३, ४

मा	मा	मामा	प	प	प	प	प	धा	धा	प	प	प	प
अ	ध	र न	अं	०	ज	न	म	हा	०	व	र	भा	ले
मा	मा	ग मा	न	धा	प	प	मा	मा	गमाप	प	प	मा	प
म	ति	० ०	०	०	ग	ति	औ	०	० ० र	०	०	भ	ई;
				।	।	।	।	।	।		।		
धा	धा	धा	न	स	स	स	स	स	स	धान	स	नधा	प
ता	०	न	से	न	के	०	प्र	भु	०	ठा ०	ई	र हो	०
मा	मा	प	प	प	प	प	मान	धा	प	प	प	मा	म
ब	ल	इ	या	०	०	०	ले ०	हों	०	ज	हाँ	प	०
प	मा	ग	रा	रा	स	स	नं	रा	स	नं	धां	नं	स
ति	य	०	०	०	न	ई;	आ	०	ज	मे	०	रे	०

---

(३) भैरव । चौताल ।

सा रे रे ग म प ध नी सप्तसुर मो मन में ऐसो ही आवे । १ । आरोही अवरोही और संचारी ले दिखावे नी ध प म ग रे सा नी नी ध ध प प म म ग ग रे रे सा सारे ग म प गमपधनी धनी सारे सा नीध नीधपम पम गम नीध रेगमपम गग रेरे । २ । अलंकार नाद तीन ग्राम मूरछन श्रुति प्रमाण सानिधप सारेगम कंठ बरण बनावे । ३ । कहैं बैजू बावर सुनिये गोपाल नायक संगीत मुद्रा सुध बानी तंत्र मत सो बतावे । ४ ।

१

+		०		१		०		२		३	
ग	मा	प	धा	न	धाधा	पधा	माप	प	प	मा	गरा
ग	म	प	ध	नी	स प्	त ०	० ०	सु	र	मो	० ०
रा	रामा	म प	मा	मग	गरा	ग •	रा	स	स	रा	रा
म	न ०	० ०	में	ऐ०	सो ०	ही	आ	वे	सा	रे	रे

२

प प	धा धा	न सं	सं सं	न सं	सं सं
आ ०	रो ०	ही ०	अ व	रो ०	ही ०
(गमक) सराग मा मा	(गमक) ग मा ग मा	ग रा स	न सन	स न	धा प
औ ० र ० सं	चा ० ० ०	० ० री	ले ० ०	दि खा	० वे
न धा	प मा	ग रा	स नन	धाधा पप	मामा गग
रा रा स	सरा गमा	पग माप	धा नधा	न स	रा स नधा
न धा पमा	पमा गमा	नधा रा	गमा पमा	गग रारा	स रारा

३

(मींड) सधा पप	पप धामाप	पमा पपमा	पमा गरा	गमा पमा	गरा सस
अ लं कार	नाद ती ० न	ग्रा ० ० म ०	मू र ० ०	छन श्रुति	० प्र माण
सस नं धां	धांपं सस	राग गमा	पमा गरा	रारारा मागप	माग रास
सा० नि ध	० प स ०	रे ग ० म	कंठ ० ०	व र ण ० ० ०	ब ना ० वे

४

धाधा धान	सस सरा	नस सस	धाधा नस	सरा सनधा	पधा पप
क हें ० बै	० जू ० बा	० ० व र	सु नि ये ०	गो० पा ० ०	लना यक
ग मा ग मा प	धाप पसा	नधा धाप	(मींड) मामा गमान	धापप मागमा	ग रा स रार
सं गी ० ० त	मु द्रा ० सु	ध ० बानी	तं त्र ० ० ०	म तसो ब ता ०	वे ० सा रे रे

(४) भैरव। चौताल।

अकबर प्राणनाथ और नाथन को नाथ ए जाको अष्टसिद्धी नवनिधि पाये। १। परम दाता विधाता सबहां के मनरंजन हो दुखभंजन कल्पवृच्छ प्रत्यच्छ धाये। २। अन्तर्यामी स्वामी जग काज करवे को रसना एहसान लवलाये। ३। जलालुद्दीन महम्मद ऐसी दाता की यह चहुँ लोक में यश गाये। ४।

+	०	१	०	२	३
रा स	स स	न धां	धांनं स	स स	स स
प्रा ०	ण ०	न थ	औ ० ०	र ना	थ न

रा रा	स स	स स	(मींड) रागमा गमाप	मा ग	रा स
को ०	० ना	० थ	ए ० ० ० ० ०	जा ०	० को
सरा गमा	गमा प	(मींड) मान धाप	धा प	मा पमा	प माग
अ ष्ट ० ०	० ० ०	सि ० द्धि ०	न व	० नि ०	धि ० ०
ग मा	गमाप मा	ग रास	स रा	स स	स स
पा ०	० ० ० ये	० ० ०;	अ क	० ब	० र

२

पप प	धा न	स ससस	न स	स रारा	रा सन
प र म	दा ता	० वि धा	० ता	० स ब	हीं के ०
स नधा	स नधाप	प मा	ग ग	गमा पप	माग रास
म न ०	रं ज न ०	हो ०	दु ख	भं ० ० ०	ज ० ० न
स मा	गमा प	(मींड) मान धाप	धा प	मा पमा	पमा गरा
क ल्प	० ० ०	वृ ० च ०	० प्र	० त्य ०	च ० ० ०
ग मा	गमाप मा	ग रास	स रा	स स	स स
धा ०	० ० ० ये	० ० ०;	अ क	० ०	ब र

३

धा धाप	धाप धाप	पप माधा	धाधा नस	नधा पमा	पमा गग
अं त र	यामी स्वामी	जग ० का	० ज क र	वे ० को०	र स ना०
रारा गमा	पमा ग रा स	धाधा नस	सस सस	धाधा नस	नन धाप
ए ह सा न	ल व ला ० ये	ज ला लुहीं	म हं म द	ऐ सी दाता	की० य ह
धास सस	नधा पमा	पमा गरा	गमा गप	मागरा सरा	सस सस
च हुं ० ०	लो ० क में	य श ० ०	गा ० ० ०	ये ० ०; अ क	० ० ब र

---

(५) रामकेली ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग मा प धा न । चौताल ।

यह राग भैरवजातीय है । इसमें "राग" की संगति (मींड़) है । इसमें भैरव के धैवत की अपेक्षा अधिक धैवत का व्यवहार होता है । भैरव में "गमा गरास" तान का व्यवहार होता है । रामकेली में "प मा ग रा ग" तान लगता है । इस राग में अति तीव्र गान्धार का व्यवहार होता है ।

गीत ।

तुम उठि आँई भोरहि पिया के समीपे जागे अनुरागे रसपागे अँखियाँ खोलत न खुलाई । १ । अत डर जब आवे बातें करत तुतरात पग डगमगात पग डोलत न डुलाई । २ । सकुच से फिरत कहा नहिँ मानत सारी रैन जागत आये बौराने बौराई । ३ । वाणी विलास के प्रभु पीतम कहाँ रहें पूछत बतियाँ बोलत न बुलाई । ४ ।

स्वरलिपि ।

+		०		१		०		२		३	
मा	ग	रा	ग	ग	ग	धान	धा	धा	स̍	स̍	स̍
आ	०	०	०	ई	०	भो ०	०	र	हि	०	०
स	न	धा	प	प	प	प	प	मा	मा	मा	मा
पि	या	०	के	स	मी	०	पे	जा	गे	अ	नु
ग	ग	रा	ग	ग	ग	राग	राग	रा स	स	स	स
रा	०	०	गे	र	स	० ०	० ०	० ०	पा	०	गे
स	स	मा	मा	गमागमा	प	मापमाप	धा	पधापधा	स̍	नधा	प
अँ	खि	याँ	०	० ० ० ०	०	० ० ० ०	०	० ० ० ०	०	० ०	०
धा	प	प	मा	प	माग	राग	ग	धा	प	मा	प
खो	ल	त	न	खु	ला०	० ०	ई	तु	म	उ	ठि ;

२

प	प	धा	धा	न	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍
अ	त	ड	र	ज	ब	०	०	आ	०	वे	०
धा	धा	न	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	रा̍स̍	रा̍स̍	नधा	प
बा	०	त	०	क	र	त	०	तु ०	त ०	रा ०	त

								।			
धा	प	मा	प	मा	ग	रा	ग	स	नधा	प	प
प	ग	ङ	ग	म	गा	०	त	प	ग ०	०	०
धा	प	प	मा	प	माग	राग	ग	धा	प	मा	प
डो	ल	त	न	डु	ला०	० ०	ई	तु	म	उ	ठि;

३, ४

								।			
धाधा	धाधा	पप	पप	मामाग	मामा	पप	पप	धास	न	धाधा	प
स कु	च से	फि०	रत	कहा ०	नहिँ	मा०	नत	सारी	०	रै ०	न
									।	। ।	।
धाधा	प	प	प	मामा	मा	गग	राग	धान	स	सस	स
जा ग	त	आ	ये	बौ रा	ने	बौरा	० ई;	वाणी	०	विला	स
।	। ।		।	। । ।							
स	सस	धा	नस	सरा	सनधा	प	प	गमाग	मामा	पप	प
के	प्र भु	पी	तम	कहाँ	० ० ०	र	हे	पू ० ०	छुत	बति	याँ
			।								
मापमाप	धा	पधापधा	स	न	धाप	माप	मा	ग	राग	धाप	माप
० ००००	०	० ० ० ०	०	बो	लत	न बु	ला	०	० ई	तु म	उठि

तीसरे भाग के बाद "तुम उठि" कह कर "सम" दिखा सकते हैं।

---

(६) रामकेली। धामार।

गीत।

नयन रँगाये आये हो लालन यही होरी के रात। १। सकुच से मेरो हित आपन की कहन न पाई बात। २। कहु कहु लाल गुलाल कपोलन ढीले बोलत हौ जृम्भात। ३। बलिहारी वा मोहिनी पै कैसे आवन पाये जीउ तुम प्रात। ४।

स्वरलिपि।

+			०		।		०			।		०	
न	धा	धा	प	प	प	प	मा	प	मा	ग	राग	राग	रा
न	०	०	य	न	०	०	रं	गा	ये	आ	० ये	हो ०	०
स	स	रा	स	स	स	स	रा	ग	मा	मा	प	प	धा
ला	ल	न	०	०	०	०	य	ही	०	हो	री	के	०
	(गमक।	।											
धा	धा	स	न	न	धा	धा	प	मा	प	मा	ग	रा	ग;
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	रा	०	०	त

२

प	प	मा	धा	धा	न	स̍	स̍	स̍	स̍	न	धा	न	स̍
स	कु	च	से	०	०	०	मे	०	रो	हि	०	त	०
रा̍	स̍	स̍	न	धा	प	प	मा	मा	प	धा	धा	प	प
आ	प	न	की	०	०	०	क	ह	न	न	०	पा	ई
धा	(गमक) धा	स̍	न	न	धा	धा	प	मा	प	मा	ग	रा	ग;
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	बा	०	०	त

३

धा	धा	धा	प	प	प	प	मा	मा	मा	रा	रा	ग	ग
क	डु	०	क	डु	ला	ल	गु	ला	ल	क	पो	ल	न
मा	प	प	न	धा	धा	धा	प	प	प	मा	मा	मा	मा
ढी	ले	०	०	०	०	०	बो	ल	त	है	०	जूम्	०
न	धा	प	न	स̍	न	धा	प	मा	प	मा	ग	रा	ग
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा	०	०	त;

४

धा	धा	न	स̍	स̍	स̍	स̍	रा̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍
ब	लि	हा	०	री	वा	०	मो	हि	नी	पै	०	०	०
धा	धा	स̍	न	धा	धा	धा	प	प	प	मा	मा	प	प
कै	०	से	आ	व	न	०	पा	ये	०	जी	उ	तु	म
धा	धा	स̍	न	न	धा	धा	प	मा	प	मा	ग	रा	ग;
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रा	०	०	त

---

(७) रामकेली । चौताल और ढीमा तेताला ।

सरगम् ।

+		०		१		०		२		३	
धाप	धामा	धाप	माग	माप	धाप	धाधा	पप	धाधा	पमा	पमा	गरा
गमा	पमा	गग	रास	सरा	गमा	पधा	नस̍	रा̍स̍	नधा	पमाग	राग

अन्तरा (१)

धाधा पधा	धान सआ	धाधा आस	राग आमा	पमा गरा	गरा सआ
रारा सन	धान धाप	माप माग	नधा पमा	गअ पमा	गरा रास
सरा गमा	पमा गमा	पधा नस	रास नस	नधा नधा	पधा पमा
पमा गमा	गरा गरास	सरा गमा	पधा नस	रास नधा	पंमाग राग

अन्तरा (२)

सस रास	धांधां सअ	रास रास	नंधां पंमां	गंरां संआं	संरां गंमां
रांगं मांपं	गंमां पंधां	मांपं धांनं	पंधं नंस	नंरा सआ	गमा पमा
गग रास	सनस नधा	नधान धाप	धापधा पमा	पमाप माग	रागमा गरा
सराग रास	सराग माराग	पधान सधान	रासन धामाप	रासन धामगा	रासन धाराग

---

(८) योगिया ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग मा प धा ना । चौताल

गीत ।

जय गंगा जगतारिणी जगजननी पापहारिणी वेदवरणी वैकुण्ठवासिनी ॥ १ ॥

भागीरथी विष्णुपद पवित्रा त्रिपथगा जाह्नवी जगपावनी जगजानी ॥ २ ॥

ईशशीश मध विराजित त्रिलोकपालन किये जीवजन्तु खगमृग सुरनर मुनि मानि ॥ ३ ॥

स्तुत करत तानसेन तुम हो भक्तजनन के भीष्मजननि भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी ॥ ४ ॥

स्वरलिपि ।

+		०		१		०		२		३	
धा	प	प	प	प	पधामा	माप	मापधा	पमागरा	गग	रा	स
ज	ग	ता	०	रि	णी ० ०	ज ग	० ० ०	० ० ० ०	जन	०	नी
						मींड					
रा	रा	स	गरा	स	स	रामा	पप	ना	धा	प	धामा
पा	प	हा	० ०	रि	णी	वे ०	०द	व	र	णी	० ०
								मींड			
मा	प	मापधा	पमाग	ग	रा	स	स	रा मा	प	पधा	पधाना
व	कुं	० ० ०	ठ ० ०	वा	०	सि	नी	ज य	गं	गा०	० ० ०;

अन्तरा

धा प भा गी	धामा प ० ० र	स स थी ०	स स स स वि ष्णु प द	रासगरा स ० ० ० प वि	सना धाप त्रा० ० ०
प पप त्रि पथ	प मागमाप गा ० ० ० ०	प पप जा ह्नवी	पप धापरा जग ० ० ०	स स स स पा ० त्र नी	नानाधापधामा ० ० ० ० ० ०
मा प ज ग	मा पधा ० ० ०	पमा ग ० ० ०	रा स जा नी	रा मा प ज य गं	पधा पधाना गा ० ० ० ०;

संचारी, आभोग।

मामामा पपप ई ० श शी०श	पपना धापप मधवि राजित	ससस नाधाप त्रि ० ० लो ० क	धापप मामा पालन कि ये	गगरा सस जी० व जन्तु	रामा पप ख ग मृग
नानाधा पप सु र ० न र	मामा गमाप मु नि मा०नि	धापधामा पधास स्तु त ० ० क र त	सरासगरासस ता ० ० ० न से न	धाधा स तु म हो	नाना धाधा भ क्त ० ०
पपप पप जनन के०	मामा पपप भीष्म जननी	पधारास नाधाप मु० ० क्ति मु ० क्ति	मापमापधापमाग प्र दा० ० ० ० ० ०	रास रामाप यि नी ज य गं	पधा पधा ना गा ० ० ० ०;

---

(६) योगिआ। चौताल और तेताला।

सरगम।

धाआ आआ ग रा ए स	पधा नाधा रा ए मा प	पआ माप धाप धाना	धाप माग धाप माप	राए सआ धाप माग	सआ राए रास रामाप

अन्तरा (१)

पधा आमा माग रास	पधा आस सगा गरास	पधास राग नाधा आप	रास नाधा माप धाप	पआ माप माग आआ	माप धाप रास रामाप

अन्तरा (२)

रारा माआ पआ पधा	गरा सआ पधा नाधा	रामा पआ पस आआ	माप धाआ नाधा पमा	पमा गरा नाधा पमाग	माप मापधा रास रामाप

अन्तरा (३)

माप मापधा मापधा सराग	पमा गरास रास नाधाप	सरा गरास माप मापधा	रामाप धाआ पधा पधाना	पधा नाधाप धापमा गआ	मापधा सआ रास रामाप

(१०) अलहिया ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स र ग मा प ध न । चौताल ।

इस राग में धैवत स्वाधीन और कम्पित है; निषाद थोड़ा लगने के कारण विवादी है ।

गीत ।

प्रात उठि आई री ललनि लाल संग जागि अनुरागि प्रेम पागि लाजोहि अँखियाँ ॥१॥
बिथुरि अलक झपक पलक डगमगि डिगन सों ललाके तबहुँ मैं लखियाँ ॥२॥
अलसानि नींद की अघानि पिया की प्रीत मैं पहिचानि तब मुसकानि सखियाँ ॥३॥
नई बाला सखी प्रबस जोश करत आवत देख चलि जाति कनखियाँ ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३
स नस	ध ध	प प	ध ध	पमा प	मा गर
आ ००	ई ०	री ०	ल ल	नि० ०	ला ल०
ग माप	प ग	माग र	स र	स स	स स
सं ००	ग जा	० ० गि	अ नु	० रा	गि ०
स स	गमा प	प प	प प	धध न	स नस
प्रे ०	म ० ०	पा ०	गि ०	ला० जो	हि ० ०
धध प	ध ध	पमा प	धध पमा	मींड़ रग पप	धध न;
० ० ०	अँ खि	यां० ०	प्रा० ००	०० ते०	उठि ०;

अन्तरा ।

प प	ध ध	न न	स स	स स	रधनस
बि थु	रि ०	अ ल	क ०	झ प	क ० ० ०
स स	स स	स र	ग मा	गर ग	र स
प ल	क ०	ड ग	० ०	म० गि	० ०
स स	सन धप	धध मा	रग प	धध न	स स स
डि ग	न ० सो०	लला ०	०० के	त ब ०	हुँ मैं ०
धध प	ध ध	पमा प	धध पमा	मींड़ रग पप	धध न
० ० ०	ल खि	यां० ०	प्रा० ० ०	०० ०ते	उ ० ठि;

संचारी ।

स	स	ग	मा	प	प	ध	ध	प	प	मा	प
अ	ल	सा	०	नि	०	नीं	०	द	की	०	०
मा	मा	ग	ग	ध	ध	प	माप	मा	ग	रग	माप
अ	घा	नि	०	पि	या	की	००	प्रीं	त	मैं०	००
										।	।
ग	मा	ग	र	स	स	सरमा	गप	धध	न	स	स
प	हि	चा	०	नि	०	तब०	००	मुस	का	नि	०
								मींड़			
धध	प	ध	ध	पमा	प	धध	पमा	रग	पप	धध	न
००	०	स	खि	याँ०	०	प्रा०	००	००	०ते	उ०	ठि;

आभोग ।

					।	।	।	।	।	।	।
प	प	ध	ध	न	स	स	स	स	र	ग	मा
न	ई	बा	ला	०	०	स	खी	प्र	ब	०	स
।	।	।	।								
ग	र	स	स	ध	ध	ध	ध	प	प	प	प
जो	श	०	०	क	र	त	०	आ	०	व	त
				मींड़						।	।
ध	ध	मा	मा	रग	प	प	प	धध	न	स	स
दे	०	०	०	००	ख	०	०	चलि	०	जा	त
								मींड़			
धध	प	ध	ध	प	माप	धध	पमा	रग	पप	धध	न
क०	०	न	खि	याँ	००	प्रा०	००	००	०ते	उ०	ठि;

शिक्षार्थी इस गीत को धामार ताल में भी गा सकते हैं ।

(११) अलहिया ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स र ग म प ध न । चौताल और तेताला ।

(यह सरगम् भैरव, सिन्धु और श्री राग में भी गाया जा सकता है, केवल ठाट को बदल ना पड़ेगा । भैरव—सरागमापधान । सिन्धु—सरगामापधना । श्री—सरागमपधान । नीचे लहिया का सरगम दिया गया है। इसमें पहले ही सम् है। चौताल में दो और तेताला में तीन वृत्तियाँ हैं ।

शिक्षक—पन्नालाल ।

सरगम्

सआ रस	नध पन	नध नन	धप धध	पमा गर	गमा पध
धग माप	गआ रस	सग माप	धध पमा	गर गमा	पध आन

अन्तरा (१)

सआ सआ	रस नध	पमा गर	गमा पध	आन सआ	रस आर
गमा पमा	गर सन	धआ आप	नन धन	नध आप	धध पमा
गर गमा	पअ नन	धन नध	अप धध	पमा गर	गमा पध
धग माप	गआ रस	सग माप	धध पमा	गर गमा	पध आन

अन्तरा (२)

सस गमा	पआ धध	पमा गर	गमा पअ	नंनं धंनं	नंधं अपं
धध अग	रग माप	धध गमा	नन धध	गर गमा	पअ नन
धध पप	मामा गर	गमा पध	धग माप	धआ आन	सआ आआ
धग माप	गअ रस	सग माप	धध पमा	गर गमा	पध आन

---

(१२) इमन बेलावल ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स र ग मा प ध न । चौताल (रूपक)—सात मात्रा ।

गीत ।

परमानन्दन मधुसूदन बनवारी पद्मनाभ चक्रपाणि जगबन्दन ॥१॥
गरूड़वाहन पंकजपद बंशीधारी नरहर कंशनिकुन्तन ॥२॥
कृष्णमुरारी गोवर्धनधारी गजराज उद्धारि करि न्यारि नगफन्दन ॥३॥
केवल के प्रभु जगतपति राधापति प्राणपति गति कारण ॥४॥

स्वरलिपि ।

+			१		२		+			१		२	
ग	र	सरगमाग	र	स	स	स	स	र	स	र	स	नंधं	नंधं
प	र	मा०००००	०	नं	द	न	म	धु	०	सू	द	न०	००
स	स	स	र	गर	ग	मा	प	प	मा	ग	रग	र	स
ब	न	०	वा	००	री	०	०	प	झ	ना	००	०	भ
प	प	प	प	प	पमा	गर	र	ग	मापधनध	प	मा	गर	गरसग
च	०	क	पा	णि	० ०	००	ज	ग	०००००	वं	द	न०	००००

अन्तरा ।

+			१		२		+			१		२	
				।	।	।	।	।	। ।	।	।	।	।
प	प	ध	न	स	स	स	स	र	ग र	ग	र	स	स
ग	रू	ड़	०	वा	ह	न	पं	०	० ०	क	ज	प	द
।	। ।												
स	रस	नध	न	ध	प	प	र	ग	रगमा	ग	र	सर	स
बं	शी०	००	धा	०	री	०	न	र	०००	ह	०	००	र
प	प	प	प	प	पमा	गर	ग	मा	पधनध	प	मा	गर	गरसग
कं	०	०	श	०	००	००	नि	०	००००	कुं	त	न०	००००

संचारी ।

+			१		२		+			१		२	
ग	ग	गर	ग	ग	र सरगमाग		ग	र	र	स	स	नंधं	नंधं
कृ	०	ष्ण	मु	रा	० ००००रि		गो	व	र	ध	न	धा०	०री
स	स	स	र	गर	ग	ग	मा	मा	मा	ग	ग	र	र
ग	ज	०	रा	००	ज	०	उ	द्धा	०	०	०	रि	०
प	प	प	प	प	पमा	गर	र	गमा	पधनध	प	मा	गर	गरसग
क	रि	०	न्या	रि	००	००	न	ग०	००००	फं	द	न०	०० ००

आभोग ।

+			१		२		+			१		२	
					।	।	।	।	।	।	।	।	।
प	प	प	ध	न	स	स	स	र	ग	र	ग	र	र
के	व	ल	क	०	प्र	भु	ज	ग	त	०	०	०	०
।	।	।											
स	स	स	न	ध	नध	प	र	ग	मा	ग	र	गर	स
प	ति	०	०	०	००	०	रा	धा	०	०	०	प०	ति
प	प	प	प	प	प	प	र	ग	मापधनध	प	मा	गर	सग
प्रा	०	०	ण	०	प	ति	ग	ति	०००००	का	र	ण०	००

(१३) इमन बेलावल । धामार ।

गीत ।

वे मनमोहन सों सजनि बहुत रहे रिझवार ॥ १ ॥
अतमान काहे करत हौ उठ चलो हरि हि निहार ॥ २ ॥
अबीर गुलाल कुमकुम केशर डारत रंग पिचकार ॥ ३ ॥
कृष्णानन्द आनन्द में विहरत सुन्दर रूप बहार ॥ ४ ॥

स्वरलिपि ।

+			०		।		०			।		०	
ग	ग	ग	र	ग	सर	गमा	ग	ग	र	स	स	नंधं	नंधं
वे	०	०	०	०	००	००	म	न	मो	ह	न	सों०	००
स	स	र	ग	ग	र	र	प	प	प	ग	म	ग	ग
स	ज	नि	०	०	०	०	ब	हु	त	०	०	०	०
मा	मा	मा	प	ध	प	प	मा	गर	ग	र	र	स	स
र	हें	०	०	०	०	०	रि	झ०	वा	०	०	०	र;

२

							।	।	।	।	।	।	।
प	प	प	ध	ध	न	न	स	स	स	स	स	स	स
अ	त	०	०	०	०	०	मा	०	न	का	हे	०	०
।	।	।	।	।	।	।	।						
स	र	ग	र	ग	र	र	सन	ध	प	ग	ग	ग	ग
क	र	त	०	०	०	०	हो०	०	०	उ	ठ	च	लो
मा	मा	मा	प	ध	प	प	मा	गर	ग	र	र	स	स
ह	रि	०	०	०	हि	०	नि	हा०	०	०	०	०	र;

३

ग	ग	ग	स	र	ग	मा	ग	ग	ग	र	ग	स	र
अ	बी	र	०	०	०	०	गु	ला	ल	कु	म	कु	म
म	ग	ग	ग	ग	र	स	प	प	प	ग	ग	ग	ग
के	श	र	०	०	०	०	डा	र	त	०	०	०	०
मा	मा	मा	प	ध	प	प	माग	र	स	र	र	स	स
रं	०	ग	०	०	०	०	पिच	का	०	०	०	०	र;

४

प प ध	न स	स स	स स स	स स	स स
कृ ष्णा ०	नं ०	द ०	आ नं ०	द ०	में ०
स र ग	र र	स स	न ध प	ग मा	ग ग
वि ह र	त ०	० ०	सुं ० ०	द ०	र ०
मा मा मा	प ध	प प	माग र ग	र र	स स
रू ० प	० ०	० ०	ब० हा ०	० ०	० र

---

(१४) देवशाख।

ओड़वषाड़व। स ग मा प ना—ना प मा ग र स। झाँपताल।

गीत।

जालिम अजब एक योगी जहर खाय कर्ता कहत हैं गले रुण्डमाला ॥१॥
आस में भस्म लगाय विजय धतूरा खाय जपता रहत दोनों दीन मगन ज्वाला ॥२॥
डमरू लिये हाथ गौरा लिये साथ रहता है मुशताक लोचन विशाला ॥३॥
कहे हैं सुजान खान जिया में निश्चय मान मेरे निगहबान है बैलवाला ॥४॥

स्वरलिपि।

+		०		+		०	
मा ग	मा मा ग	मा मा	प प मा	ना ना	प प मा	ग ग	र र स
जा ०	लि म ०	अ ज	ब ए क	यो ०	गी ० ज	ह र	खा ० य
स स	मा ग मा	प प	स स स	र स	ना प प	मा प	मा ग र स
क र	ता ० क	ह त	हैं ० ०	ग ले	रुं ० ड	मा ०	ला ० ० ०

अन्तरा।

मा प	ना प ना	स स	स स स	स स	र स स	ना स	ना प प
आस में	भ ० स्म	ल गा	० ० य	वि ज	य ० ध	तू रा	खा ० य
मा प	ग माग मा	प प	स स स	र स	ना प प	मा प	माग रस
ज प	ता ०० र	ह त	दो नों ०	दी न	म ग न	ज्वा ०	ला ० ० ०

संचारी ।

मा प ड म	ग मा ग रू ० ०	मा प लि ये	ना प प हा ० थ	प प गौ ०	स स स रा ० ०	स स लि ये	ना प प सा ० थ
मा प र ह	ना प प ता ० ०	ना ना है ०	स स स सु रता क	र स लो ०	ना प प च ० न	मा प वि शा	मा ग र स ला ० ० ०

आभोग ।

मा प क हे	ना प प हैं ० ०	ना ना सु जान्	स स स खा न् ०	स स जि या	र र स में ० ०	ना स स निश्चय	ना प प मा ० न
मा प मे ०	ग मा प रे ० ०	मा प प नि गह	स स स बा ० न	र स हो ०	ना प प बै ० ल	मा प वा ०	मा ग र स ला ० ० ०

इसी स्वरग्राम से यह गीत भी गा सकते हैं—

दुर्गदलनि दुखदारिद्रदाहनि दुष्टविदारण करु शम्भु जाया ॥१॥

असुरसंहारिणी रक्तबीजमारिणी दीन्हों अभय वर सुरनर पाया ॥२॥

संसारतारिणी तारा तरण ते कर कृपा नेक या परमा माया। ३॥

सप्तदीप नवखण्ड त्रैलोक्य व्यापित याते सुयश चारु आनन्द पाया ॥४॥

---

(१५) शुक्ल बेलावल ।

मिश्र सम्पूर्ण। स र ग मा प ध ना न। चौताल ।

गीत।

भरन जो गई जल यमुना तट पानी घट नट नागर को प्रगट दरश भयो ॥१॥

मुकुट मुरली शीश फूल श्रवण कुण्डल की छबि दिखाई और मेरे मनहर ले ही लियो ॥२॥

स्वरलिपि।

+		०		।		०		।		।	
मा ग	ग ई	ग ०	ग ०	पप जल	पप यमु	मा ना	मा ०	ग त	र ट	पमा पा०	गर नी०
स घ	स ट	नं न	नं ट	पं ना	पं ०	नं ग	स र	र को	ग प्र	र ग	स ट
ना द	धप रश	मा भ	ग ये	रग ००	रस; ००	र भ	ग र	र न	स ०	रग जो०	माप ००

२

।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
मा	प	प	न	स	स	र न	स	स	रन	स	स
मु	कु	ट	मु	र	ली	शा०	०	श	फू०	०	ल
।	।	।	।	।	।।	।।	।।	।	।	।	
र	ग	मा	प	मा	गर	ग र	स स	स	स	स	नप
श्र	व	ण	कुं	ड	ल०	की०	छ बि	दि	खा	०	ई
।	।	।	।	।	।						
स	स	स	सन	र	स	ना	ध	प	प	मा	मा
औ	०	र	० ०	मे	०	रे	०	म	न	ह	र
ना	धप	मा	ग	रग	रस	र	ग	र	स	रग	माप
ले	ही०	लि	यो	००	००;	भ	र	न	०	जो०	० ०

---

(१६) विभाष ।

शुद्ध ओड़व । स रा ग प धा । झाँपताल ।

(किसी किसी के मत में इस राग में तीव्र ऋषभ और धैवत का व्यवहार होना चाहिए। इस गीत में दोनों कोमल हैं। शिक्षक,—पन्नालाल ।)

गीत ।

चिड़िया चुचुहानि चकही के सुनि बानि कहत यशोदा रानी जागो मेरे बाला ॥१॥
रवि की किरण जानि कुमुदिनी सकुचानि कमल बिकसन लागि दधि मथे बाला ॥ ॥
सुबल सुबाहु और जेते आगत द्वारे ठाढ़े टेरत हैं लाल गोपाला ॥३॥
नन्ददास बलिहारि उठि बैठो गिरिधारी दरश को आये योगी भिखारी नयन विशाला ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	।	।	।	।	०	।	।	।	।	+	।	।	।	।	०	।	।	।	।
प	प	ग	ग	ग	रा	रा	स	स	स	स	स	रा	रा	ग	प	प	प	प	प
चि	डि	या	०	०	चु	चु	हा	०	नि	च	क	ही	०	के	सु	नि	बा	०	नि
								।	।										
स	रा	ग	प	रा	ग	प	धा	स	स	धा	धा	प	प	प	स	रा	ग	प	प
क	ह	त	०	य	शो	दा	रा	०	नि	जा	गो	मे	०	रे	बा	०	ला	०	०

अन्तरा ।

धा धा	स स स	स स	स स स	धा धा	स स स	धा धा	प प प
र वि	की ० कि	र ण	जा ० नि	कु मु	दि नी ०	स कु	चा ० नि
स रा	ग प रा रा	ग प	धा स स	धा धा	प प प	स रा	ग प प
क म	ल ० बिक	स न	ला ० गि	द धि	म थे ०	वा ०	ला ० ०

संचारी ।

धा धा	प प प	धा धा	प प प	धा धा	धा धा धा	प प	प प प
सु ०	ब ० ल	सु ०	बा ० हु	औ र	जे ते ०	आ ०	ग त ०
धा धा	स स स	धा धा	प प प	स रा	ग प प	स रा	ग प प
द्वा रे	ठा ढ़े ०	टे र	त हैं ०	ला ०	ल ० गो	पा ०	ला ० ०

आभोग ।

धा धा	स स स	स स	स स स	रा रा	ग ग ग	रा रा	स स स
नन् द	दा ० स	ब लि	हा ० रि	उ ठि	बै ० ठो	गि रि	धा ० रि
धा धा	धा धा धा	प प	प प प	स रा	ग प प	स रा	ग प प
दरश को	आ ० ये	यो गी	भि खा री	न य	न ० वि	शा ०	ला ० ०

---

(१७) विभाष । धामार ।

गीत ।

रयन गँवाये आये हो लालन कहाँ जागे सगरि रात बात कहो प्यारे ॥१॥
नवल किशोर नवल तिया संग जागे अंग अंग चिन्ह न्यारे ॥२॥
सब निशि मोहें तड़पत बीती भोर भये आये ललारे ॥३॥
तान तरङ्ग रस रङ्ग भीनी कीन्ही नख चिन्ह भाग जागे हमारे ॥४॥

स्वरलिपि ।

+			०		।		०			।		०	
प	प	प	ध	ध	प	प	ग	र	स	स	र	ग	ग
गँ	वा	ये	आ	ये	हो	०	ला	ल	न	क	हाँ	जा	गे
प	प	प	ग	ग	प	ग	प	प	प	ध	ध	प	प
स	ग	रि	०	०	०	०	रा	०	त	बा	०	०	त
पग	प	प	ग	र	स	स;	ध	ध	ध	प	ध	गप	ग
क०	०	हो	०	०	प्या	रे	र	य	०	न	०	००	०

२

प	प	ध	स̍	स̍	स̍	स̍	ध	ध	ध	प	प	प	प
न	व	ल	कि	शो	०	र	न	व	ल	ति	०	या	०
ग	ग	प	ग	र	स	स	ध	ध	ध	प	प	प	प
सं	ग	०	जा	०	गे	०	अं	ग	०	अं	०	ग	०
ग	प	ग	प	ग	र	स;	ध	ध	ध	प	ध	गप	ग
चि	न्	ह	न्या	०	०	रे;	र	य	०	न	०	००	०

३

स	र	र	ग	ग	र	र	ग	ग	र	ग	ग	र	र
स	ब	०	०	०	०	०	नि	शि	०	मो	०	हे	०
स	र	ग	ग	ग	ग	ग	ध	ध	प	प	प	ग	प
त	ड़	प	त	०	बी	ती	भो	०	र	भ	ये	०	०
ग	ग	ग	र	र	स	स	ध	ध	ध	प	ध	गप	ग
आ	०	ये	ल	ला	०	रै;	र	य	०	न	०	००	०

४

प	ध	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	प	ध	ध	प	प	ग	ग
ता	०	न	त	रं	०	ग	र	स	०	रं	ग	भी	नी
र	ग	ग	ग	प	प	प	ध	ध	ध	प	ध	ग	प
की	न्	ही	०	०	न	ख	चि	न्	ह	भा	०	ग	०
ग	ग	ग	र	र	स	स	ध	ध	ध	प	ध	गप	ग
जा	०	गे	ह	मा	०	रे;	र	य	न	०	०	००	०

तान—सरगम्।

स	र	स	ग	अ	ग	अ	र	ग	र	प	अ	प	अ
ग	प	ग	ध	अ	ध	अ	प	ध	प	स̍	आ	स̍	आ
पध	प	गपग	प	ध	प	स̍	धपध	प	गप	ग	र	सर	ग

———

(१८) आशावरी ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा गा मा प धा ना । झाँपताल ।

[किसी किसी के मत में यह राग मिश्र अर्थात् औड़व-सम्पूर्ण है (सरमापना-ना धा प मा गा र स)। परन्तु प्राचीन तन्त्रकारों ने इसे सम्पूर्ण कहा है । इसमें गान्धार और निषाद लिप्त स्वर हैं अर्थात् ऋषभ से मध्यम और धैवत् से षड्ज तक जाने के समय उनको लिप्तरूप से व्यवहार करना पड़ेगा । इस राग में अति कोमल ऋषभ और निषाद का व्यवहार होता है ।]

गीत।

गत मतंगी सब अंगना सरस मोहन मूरति अनंगी ॥ १ ॥ कदली खम्भ जंघा युगल रूप योवन गुण नयन आगे रमत री कुच उतंगी ॥ २ ॥ चंपक तन भुज मृणाल तरल तरङ्गी अधर विद्रुम दशन दाड़िम नासिका शुकरङ्गी ॥ ३ ॥ अमल कमल नयन कुरङ्गी भङ्गी नव सप्त साज शिङ्गार नव लोध ऊधो रङ्गी ॥ ४ ॥

स्वर लिपि।

+		।			०		।		
रागा	मा	प	प	मा	प	मा	गा	रा	स
ग ०	त	म	तं	०	गी	०	०	०	०
धा	प	मा	प	प	मा	गा	रा	रा	स
स	ब	अं	ग	०	ना	०	०	०	०
सरा	गामा	मा	मा	मा	प	मा	प	प	प
स ०	० र	स	०	०	मो	०	ह	न	०
ना	ना	धा	प	प	मा	प	मा	गा	रास
मू	र	ति	०	०	अ	नं	गी	०	० ०

२

मा	प	नाधा	स̍	स̍	स̍	रा̍	स̍	रा̍	ग̍
क	द	ली ०	०	०	खं	भ	०	०	०
रा̍	रा̍	स̍	स̍	स̍	ना	ना	धा	प	प
जं	घा	यु	ग	ल	रू	प	यो	व	न
मा	मा	गा	रा	स	रागा	मा	पधा	स̍	स̍
गु	ण	न	य	न	आ ०	०	गे ०	०	०
ना	स̍	ना	धा	प प	मा	प	मागा	रा	स;
र	म	त	री	कु च	उ	तं	गी ०	०	०

३

मा	मा	मा	मा	मा	प	प	प	प	प
चम्	प	क	त	न	भु	ज	मृ	णा	ल
गा	गा	रा	स	सना	स	स	स	स	स
त	र	ल	०	त ०	रं	०	गी	०	०
ना	नाना	धा	प	प	मामा	मा	गा	रा	स
श्र	ध र	वि	द्रु	म	द श	न	दा	ड़ि	म
रा	रा	मा	मा	माप	ना	ना	धा	प	प
ना	सि	का	०	शुक	रं	०	गी	०	०

४

मा	प	धाना	धास	स	स	सस	स	स	स
श्र	म	ल ०	० ०	०	क	मल	न	य	न
स	रा	स	रा	गा	रा	रा	स	स	स
कु	रँ	गी	०	०	भं	०	गी	०	०
ना	ना	धा	धा	प	मा	मा	गा	रा	स
न	व	स	प	त	सा	ज	शृं	गा	र
रागा	मा	प	प	प	ना	धाप	मागा	रा	स;
न व	लो	ध	ऊ	धो	रं	० ०	गी ०	०	०

---

(१६) आशावरी । धामार ।

गीत ।

भोरहि आये मेरे आँगन सगरि रयन तुम कहाँ जागे लालन ॥१॥
अधर अंजन भाले महावर डगमगात पग धरत धरन ॥२॥
आवत वदि मोसे अन्ते सिधारेउ कौन रस बस कर लिये ललन ॥३॥
तानसेन के प्रभु वहीं सिधारो जाही के घर रहे बिन कलन ॥४॥

स्वरलिपि।

+	०	।	०	।	०
ना ना धा	प प	मा प	मा गा रास	रा मा	प प
भो ० ०	र हि	० ०	आ ० ० ये	मे ०	रे ०
प प प	प प	प प	ना ना ना	धा धा	प प
आँ ० ०	ग ०	न ०	स ग रि	र ०	य न
मा प मा	प ना	धा प	मापगा रास;	रा मा	प प
तु ० म	क हाँ	० ०	जा० ० ० गं	ला ०	ल न

२

		। ।	। । ।	। ।	। । । ।
मा प प	ना धा	स स	स स स	स रा	सरा गारा
अ ध ०	र ०	० ०	अं ज न	भा ०	० ० ले ०
। ।	। ।	। ।			। ।
स रा ना	स स	स स	मा प प	धा धा	स स
म हा ०	० ०	व र	ड ग म	गा ०	० त
ना धा प	प प	मा प	मा गा गा	रा मा	प प;
प ग ०	० ०	ध र	त ० ०	ध र	न ०

३

गा गा गा	स रा	मा मा	प प पमा	प प	प प
आ व त	० ०	० ०	व दि ० ०	मो ०	से ०
ना ना ना	धा धा	धा धा	प प प	प प	प प
अ नू ते	० ०	० ०	सि धा ०	रे ०	उ ०
। । ।					
रा रा स	ना ना	धा प	मा प गारा	सरा मा	प प;
क व न	र स	ब स	क र लि ये	ल ० ०	ल न

४

		। ।	। । ।	। ।	। ।
मा मा प	ना धा	स स	स स स	स स	स स
ता ० न	से ०	० न	कं ० ०	प्र ०	भु ०
। । ।	। । ।	। ।	।		
स रा रा	सरा गा	रा स	स ना धा	प प	प प
व हीं ०	० ० ०	० ०	सि धा ०	रो ०	० ०
। ।					
प रा स	ना ना	धा प	मापगा रास	रा मा	प प
जा ही कं	ध र	र हे	० ० बि ० न	क ल	न ०

(२०) आसावरी। तेताला। शिक्षक छोटे प्यारख़ाँ। इनके मत में रिषभ तीव्र है।

+		।		०		।	
प प	ना धा	प प	मा गा	र ए	ए ए	माआ	र ए
माआ	आ आ	प आ	ना स	र र	स	ना	धा प
ना ई	धा आ	प आ	ना ना	धा आ	प आ	मा प	ना धा प
स आ	आ	मा प	गा	ना धा प	मा गा	र ए	माआ;
धा धा प	ना धा प	ना स	आ र	मा र	ए मा	गा र स	र र स
ना धा	प	मा प ना	ना धा प	र ए मा	धा प मा	गा र	ए मा;
मा प	ना धा प	मा गा	र	मा प	ना स	ना स र	ना धा प
मा प	र र स	र ना	धा प	मा प	गा र ए	मा गा र	ए मा ;

[ख़ाँ साहब का कथन है कि सावेरी [दक्षिण देश का राग है] से आसावरी निकली है। परन्तु सावेरी में तीव्र निषाद लगता है और गान्धार नहीं है और आसावरी ओड़व सम्पूर्ण है।]

हिन्दोल ।

रात्रि प्रथम दश दराड ।

अग्रहायण—पौष ।

सूची ।

ाग नाम ।	बोल ।	रचयिता ।	ताल ।
हेन्दोल	(१) यशोमति दधिमथन	(सूरदास)	चौताल ।
	(२) पिया माँगत है		धामार ।
	(३) प्रमथाधन मधुसूदन	(बैजूबावरा)	चौताल ।
	(४) सरगम्	(शिक्षक—वजीरखाँ ध्रुपदी)	चौताल व तेताला ।
रिया	(५) सहज जोड़ि प्रगट भई	(श्री हरीदास)	चौताल ।
	(६) सरगम्		चौताल व तेताला ।
	(७) कान मोरि अँगिया		धामार ।
पाली	(८) लालन आज लखि	(युगराजदास)	चौताल ।
	(९) सरगम्		चौताल व तेताला ।
	(१०) लाल पिचकारी मारूँ		धामार ।
	(११) आदिनाद प्रणवरूप	(सुरतसेन)	चौताल ।
	(१२) लालन आज लखि		धामार ।
ायानट	(१३) मेषसम गढ़ार है	(चिरंजीव)	चौताल ।
	(१४) लचकत आवत है		धामार ।
ामोद	(१५) कहेउ न जात		चौताल ।
	(१६) मतवारो ठाड़ो		धामार ।
म्बीर	(१७) सोहत शीशमुकुट	(ऊधोदास)	चौताल ।
	(१८) होरी के दिनन में		धामार ।
	(१९) सरगम्	(शिक्षक--अली-बक्स)	चौताल व तेताला ।
	(२०) सरगम्		धामार ।
	(२१) सरगम्	(क--झाँपताल)	(ख--धामार)
ल्याण	(२२) तुमही भज भज रे मन		चौताल ।
	(२३) आज व्रजधूम		धामार ।

राग नाम।	बोल।	रचयिता।	ताल।
कल्याण	(२४) ताकत हूँ तेहारी आस	—	चौताल।
	(२५) हादी ए अल्ला	—	चौताल।
	(२६) गोरा गणेश सरस्वती	(शिक्षक--रामदास गोस्वामी)	चौताल।
	(२७) ”	(शिक्षक-गोपाल बाबू)	ढीमा तेताला।
	(२८) सरगम्		चौताल व तेताला।
केदारा	(२९) देखत तन मन	(तानसेन)	सूलताल।
	(३०) गुलाल रंग डारी री		धामार।
	(३१) आनन्द भयो मेरे		चौताल।
	(३२) सकल गुण प्रकाश	(शिक्षक-बाबा लालसिंह)	सवारी।
बसन्त	(३३) सुभग वसन्त नवललता	चेतराव	चौताल।
	(३४) भँवरा फूलि फुलवारी		धामार।
	(३५) चलो सखि कुंजधाम	तानसेन	ढीमा तेताला।

हिन्दोल ।

शृंगाररससम्पन्नो हिन्दोलेऽति निगद्यते ।
भुवं प्रदोलयेत् यत्नाद् भूदोलस्तु ततः स्मृतः ॥
हिन्दोलस्तु तृतीयोऽभूत् सुतोविश्वविभूषणः ।
महेश्वरात्ततो जातः चक्रावैवमनाहतात् ॥

शास्त्र में उक्त है कि पंचानन के उत्तर मुख से हिन्दोल राग निकला है। हेमन्त-ऋतु (अग्रहायण-पौष) में सब समय पर हिन्दोल गाया जा सकता है। रात के प्रथम दश दण्ड समय तक हिन्दोल और हिन्दोलांग राग गाये जाते हैं। अर्द्धरात्रि को भी हेमन्त-ऋतु कहते हैं इसलिए आधी रात में भी हिन्दोल गा सकते हैं। शुद्धरूप से यह राग गाने से स्वतः दोलनभाव, शिरःपीड़ा निवारण और शोकमोह का दूर होना आदि फल प्राप्त होता है यही प्राचीन गुणियों का मत है। छाग सुर (अर्थात् ऋषभ सुर) से गाने से कदाचित् ये फल मिल सकते हैं।

धैवतार्षमिकावर्जस्वरनामिकजातिजः ।
हिन्दोलको रि-ध-त्यक्तः षड्जन्यासग्रहांशकः ॥
आरोहिणि प्रसन्नाद्ये शुद्धमध्याख्यमूर्च्छना ।
काकलीकलिता गेयो वीरे रौद्रेऽद्भुते रसे ॥ संगीतरत्नाकर ॥
हिन्दोलेऽथ रिपौ त्यज्यौ कोमलो धैवतो भवेत् ॥ पारिजात ॥
हिन्दोलो रि-पयोगेन मार्गहिन्दोलको भवेत् ॥ पारिजात ॥

प्रचलित हिन्दोल और उक्त हिन्दोल में कोई मेल नहीं है।

राग नाम ।	बोल ।	रचयिता ।	ताल ।
कल्याण	— (२४) ताकत हूँ तेहारी आस —	—	चौताल ।
	— (२५) हादी ए अल्ला —	—	चौताल ।
	— (२६) गोरा गणेश सरस्वती —	(शिक्षक--रामदास गोस्वामी) —	चौताल ।
	— (२७) ” —	(शिक्षक-गोपाल बाबू) —	ढीमा तेताला ।
	— (२८) सरगम् —		चौताल व तेताला ।
केदारा	— (२९) देखत तन मन —	(तानसेन) —	सूलताल ।
	— (३०) गुलाल रंग डारी री	—	धामार ।
	— (३१) आनन्द भयो मेरे —		चौताल ।
	— (३२) सकल गुण प्रकाश —	(शिक्षक-बाबा लालसिंह) —	सवारी ।
बसन्त	— (३३) सुभग वसन्त नवललता —	चेतराव —	चौताल ।
	— (३४) भँवरा फूलि फुलवारी —	—	धामार ।
	— (३५) चलो सखि कुंजधाम —	तानसेन —	ढीमा तेताला ।

हिन्दोल ।

श्रृंगाररससम्पन्नो हिन्दोलेऽति निगद्यते ।
भुवं प्रदोलयेत् यत्नाद् भूदोलस्तु ततः स्मृतः ॥
हिन्दोलस्तु तृतीयोऽभूत् सुतोविश्वविभूषणः ।
महेश्वरात्ततो जातः चक्राद्वैवमनाहतात् ॥

शास्त्र में उक्त है कि पंचानन के उत्तर मुख से हिन्दोल राग निकला है। हेमन्त-ऋतु (अग्रहायण-पौष) में सब समय पर हिन्दोल गाया जा सकता है। रात के प्रथम दश दण्ड समय तक हिन्दोल और हिन्दोलांग राग गाये जाते हैं। अर्द्धरात्रि को भी हेमन्त-ऋतु कहते हैं इसलिए आधी रात में भी हिन्दोल गा सकते हैं। शुद्धरूप से यह राग गाने से स्वतः दोलनभाव, शिरःपीड़ा निवारण और शोकमोह का दूर होना आदि फल प्राप्त होता है यही प्राचीन गुणियों का मत है। छाग सुर (अर्थात् ऋषभ सुर) से गाने से कदाचित् ये फल मिल सकते हैं।

धैवत्यार्षमिकावर्जस्वरनामिकजातिजः ।
हिन्दोलको रि-ध-त्यक्तः षड्जन्यासग्रहांशकः ॥
आरोहिणि प्रसन्नाद्ये शुद्धमध्याख्यमूर्च्छना ।
काकलीकलिता गेयो वीरे रौद्रेऽद्भुते रसे ॥ संगीतरत्नाकर ॥
हिन्दोलेऽथ रिपौ त्यज्यौ कोमलो धैवतो भवेत् ॥ पारिजात ॥
हिन्दोलो रि-पयोगेन मार्गहिन्दोलको भवेत् ॥ पारिजात ॥

प्रचलित हिन्दोल और उक्त हिन्दोल में कोई मेल नहीं है।

---

(१) हिन्दोल ।

शुद्ध ओड़व । स ग म ध न । चौताल ।

(पश्चिम के तन्त्रकार लोग हिन्दोल और मालश्री को कभी कभी चार सुर में आलाप करते हैं । हिन्दोल में निषाद और मालश्री में कड़ी मध्यम का थोड़ा-सा व्यवहार देखा जाता है ।)

गीत ।

यशोमति दधि मथन कर बैठे वीरधाम ओरि ठाड़े हरि यस निहारे सुन्दर छविराजे ॥१॥
चितवन चित रहि लोभाल शोभा कछु कहि न जात मुनिन के मन हर लीनो मोहिनी दलसाजे ॥२॥
जननी कहे नाचो बाला देउँगी नवनीततुत्ता रुनुन् रुनुन् झुनुन् झुनुन् पायनि बाजनि बाजे ॥३॥
गावत गुण सूरदास सुख बढ़त भूम आकाश नाचत त्रिलोकनाथ माखन की काजे ॥ ४ ॥

स्वरलिपि ।

+		०		१		०				३	
		।	।	।	।						
म	ध	स	स	स	स	न	ध	म	म	ग	ग
य	शो	म	ति	द	धि	म	थ	न	क	०	र
म	ग	ग	ग	म	म	गस	ग	स	स	स	स
बै	०	ठे	०	वी	०	र ०	धा	०	म	ओ	रि
स	स	ग	ग	ग	ग	न	न	ध	म	ग	ग
ठा	०	ड़े	०	ह	रि	य	स	नि	हा	०	रे
।	।	।	।	।	।						
ग	ग	स	स	स	स	मध	न	धम	ग	मग	स;
सुन्	०	द	र	छ	वि	रा०	०	० ०	०	० ०	जे

२

		।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
म	ध	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
चि	त	व	न	चि	त	र	ही	०	लो	भा	ल
		।	।	।	।						
म	ध	स	स	स	स	न	ध	म	म	ग	ग
शो	०	भा	०	क	छु	क	हां	न	जा	०	त
स	स	स	ग	ग	ग	न	न	ध	ध	म	ग
मु	नि	न	के	म	न	ह	र	ली	०	०	जो
।	।	।	।	।	।						
ग	ग	स	स	स	स	मध	न	धम	ग	मग	स;
मो	०	हिं	नी	द	ल	सा०	०	० ०	०	००	जे

३, ४

स	स	ग	ग		ग	न		न	न		न	ध	ध	ध	ध	ध	ध
ज	न	नी	क		हे	ना		चो	बा		ला	दे	उं	गी	न	व	नी
म	म	म	म		ग	म	म	म	ग	ग	ग	म	ग	स	स	स	स
त	नु	त्	ता		०	रु	नु	न्	रु	नु	न्	क्षु	नु	न्	क्षु	नु	न्
स	स	स	ग	ग	ग	म	ध	न	ध	म	ग	म	म	ग	स		स;
पा	य	नि	बा	ज	नि	बा	०	०	०	०	०	०	०	०	०		जे
			।	।	।	।		।	।		।						
म	ध	ध	स	स	स	स		स	स		स	न		न	ध	ध	ध
गा	व	त	गु	ण	०	सु्		र	दा		स	सु		ख	ब	ढ़	त
															।		।
म		म	ग	ग	ग	स		स	ग	ग	ग	म		ध	स		स
भू		म	आ	का	श	ना		च	त	त्रि	०	लो		क	ना		थ
।		।	।	।	।												
ग		ग	स	स	स	मध		न	धम		ग	मम		ग	स		स;
मा		०	ख	न	की	का०		०	० ०		०	० ०		०	जे		०

३, ४

सस गगग	नन नन	धधध धधध	ममम मग	ममम गगग	मगस ससस
ज न नीक हे	नाचो बाल	देउंगी नवनी	त नुत् ता०	रुनुन् रुनुन्	रुनुन् रुनुन्
ससस गगग	मधन धमग	ममग सस	मधध ससस	सस सस	नन धधध
पाय निबाजनि	बा०००००	००० जे ०	गावत गुण ०	सूर दास	सुख बढ़त
मम गगग	सस गगग	मध सस	गग ससस	मधन धमग	ममग सस;
भूम आकाश	नाच तत्रि०	लोक नाथ	मा० खनकी	का०० ०००	००० जे ०

---

(२) हिन्दोल। धामार।

पिया माँगत है मोसन ही गुलाल लड़ के मा ॥ १ ॥

ले अबीर आँखन मारत मुठी भर के मा ॥ २ ॥

न ध ध	म ग	ग ग	ग म ध	स स	स स
माँ ० ग	त है	० ०	मो स न	ही ०	० ०
सन स स	नन ध	मग स	स स सन	म ध	स स
गु० ला ल	लड़ के	मा० ०	पि या ००	० ०	० ०

अन्तरा।

म ध स	स न	स स	ग ग स	मध स	नध मग
ले अ बी	र ०	आं ०	ख न ०	मा० ०	र० त०
ग ग स	नन ध	मग स;	स स सन	म ध	स स
मु ० ठी	भर के	मा० ०	पि या ००	० ०	० ०

---

(३) हिंडोल । चौताल ।

प्रमण धन मधुसूदन बनवारी प्रेमानंद जगवंदन ॥१॥
साँचे सुरन जग में गावे मुरलीधरे अधरे आये सुखकरन ॥२॥
जगतपति जगजीवन मदनमोहन मुकुंद मनभावन ॥३॥
जय माधव विष्णु वल्लभ वैकुंठविहारी बैजू के प्राण जियावन ॥४॥

+		०		१		०		२		३	
		।	।	।	।						
म	ध	स	स	स	स	न	ध	म	म	ग	ग
म	धु	सू	०	०	०	द	न	०	०	०	०
म	ग	म	ग	स	स	स	स	ग	ग	ग	ग
ब	न	०	वा	०	री	प्रे	०	मा	नं	द	०
न	न	धन	ध	मग	स	म	ध	न	ध	म	ग
ज	ग	वं०	द	न०	०;	प्र	म	ण	ध	न	०

अन्तरा

			।	।	।	।	।	।	।	।	।
म	ध	म	स	स	स	स	स	स	स	स	स
साँ	चे	०	सु	र	न	ज	ग	नं	गा	०	वे
।	।	।	।	।	।						
स	स	ग	ग	स	स	न	ध	मध	मध	नध	मग
मु	र	ली	०	ध	रे	अ	ध	रे०	आ०	००	ए०
ग	ग	न	ध	मग	स;	म	ध	न	ध	म	ग
सु	ख	क	र	न०	०;	प्र	म	ण	ध	न	०

संचारी आभोग

।	। । । ।	। । ।			
स न ध ध	स स स स	म ध स स स	न न न	ध ध ध	म म म
ज ग त प	ति ० ज न	जि ० ० व न	म द न	मो ह न	मु कुं द
		। । ।	। । । । ।	। । । ।	। ।
न न न	ध म ग म	म ध सा स स	स स स स स	ग ग स स	स स मध
म न ०	भा० व न	ज य मा ध व	वि ष्णु व ल्ल भ	बै ० कुं ठ	वि हा री०
	। । ।				
म म ग	स स स	न न न	ध म ग स	म ध न	ध म ग
बै ० जू	कं ० ०	प्रा ० ण	जि या व न;	प्र म ण	ध न ०

---

(४) हिण्डोल। चौताल व तेताला। शिक्षक वज़ीरख़ाँ ध्रुपदी।

+					
सनं धंमं	धं मं सआ	गआ सआ	नं नं सआ	गग मध	नध गआ
मध सन	धग मध	सन धम	ग न धम	गआ धमग	मग सआ;

२

मध स	स सन	सन धम	गआ नन	धध मम	गग सआ
० नस नध	म ग म ग	सन धम	गआ ननन	धधध ममम	गगग सआ

३, ४

स स स स	स न ध ध	म ध स स	न ध म ग	सग मधन	न न न
ब्रह्मा ० ०	गा त सो ०	प्र ग ट ०	आ० यो ०	सग मधन	हि एडोल
ध ध ध	म म ग	ग ग ग	स स स	म ध स स	न ध मग स
गा य न	गा ० यो	गु नि ०	प गिड त	उ प जा त	न ध मग स;

---

(५) पुरिया।

शुद्ध षाड़व। सा रा ग म धा न। चौताल।

गीत।

सहज जोड़ि प्रगट भई जो रंग कि गौर श्याम घन दामिनी जैसे ॥१॥
प्रथम हूति आज हू अनेह रहे है नटार है कैसे ॥ २ ॥
अंग अंग के उघरई सुघरई सुन्दरता वैसे वैसे ॥ ३ ॥
श्री हरीदास के स्वामी श्याम कुंजविहारी अद्भुत रूप अनेसे ॥ ४ ॥

[किसी किसी का मत है कि इस राग में अति कोमल धैवत का व्यवहार होता है परन्तु स्वाधीनरूप से नहीं, मध्यम के मीड़ में।]

स्वरलिपि ।

+		०		१		०		२		३	
नं	रा	ग	रा	गरा	स	नंनं	धां	मंधांनं	सरा	स	स
स	ह	ज	०	जो०	ड़ि	प्रग	ट	०००	००	भ	ई
स	रा	स	स	स	स	ग	ग	ग	ग	ग	ग
जो	०	र	०	ग	की	गौ	०	र	श्या	०	म
म	म	नधा	म	ग	ग	म	ग	रा	रा	स	स
घ	न	०दा	०	०	०	मि	नी	०	०	ज	से

अन्तरा ।

म	धा	न	न	धा	म	ग	ग	स	स	स	स
प्र	थ	म	०	०	०	०	०	हू	ति	०	०
न	रा	नधा	म	म	ग	न	न	धाम	ग	नं	नंरा
आ	०	ज हू	०	०	०	अ	नं	हू ०	०	र	हे ०
ग	ग	न	नधा	म	ग	म	ग	रा	रा	स	स
है	०	न	टा ०	०	र	हैं	०	०	०	कैं	से

संचारी ।

नन	नन	नन	नन	धाधा	धाधा	मम	गग	मम	मम	गग	गग
अं०	ग०	अं०	ग०	के ०	० ०	००	००	उघ	रई	सुघ	रई
रा	रा	रा	ग	रा	ग	म	ग	रा	रा	स	स
सुं	द	र	ता	०	०	०	०	वै	से	वै	से

आभोग ।

म	धा	नस	सस	स	स	स	स	नरा	ग	म	गरा
श्री	०	हरि	दास	के	०	स्वा	मा	श्या	म	कुँ	ज०
ग	ग	रा	स	नधा	मग	नन	नन	धाम	गरा	सस	स
वि	हा	०	री	० ०	००	अद्	भुत	रू ०	प ०	अने	से

———

(६) पुरिया । चौताल । और तेताला ।

सरगम ।

+	०	१	०	२	३
नंरा गराग	रा स	रारा स	नंधां नं	मंधां नंरास	ग ग
नं रास	नधा मगरा	गग मधा	रास नधा	न मग	रा स;
मधा नस	न रा	स स	नरा ग राग	नरा स	रान मधा
रा ग	मन धाम	गग रास	गग म	धान मग	रा स;
ग ग ग	न न न	रा रा रा	स	नंरा स	नंराग राग
मधा नमधा	नस रानस	रानधामधा	नधा मधाग	राग मधा	मग रास;

---

(७) पुरिया । धामार ।

कान मोरि अँगिया रंग ते भिंगोहि नये हो खेलाड़ ॥१॥
जाने न देउँगी फेंट घेर राखूँगी गारी देउँगी यशोदा केदार ॥२॥

+			०		।		०			।		०	
नस	रा	ग	रा	रा	ग	ग	मम	ग	रा	म	ग	रा	स
अँ०	गि	या	०	०	०	०	र	ङ्ग	ते	भिं	गो	०	हि
नं	स	रा	स	नं	धां	धां	मं	धां	नंस	ग	रास	नं	धां
न	ये	०	हो	०	०	०	खे	ला	०ड़;	का	० न	मो	रि

अन्तरा ।

मधा	म	ग	स	सं	स	स	न	रा	न	धा	म	ग	ग
जा०	ने	न	दे	उँ	गी	०	फें	०	ट	घे	०	०	र
म	म	म	ग	ग	म	ग	म	धा	रा	न	धा	म	ग
रा	०	०	खू	०	गी	०	गा	री	०	दे	उँ	गी	०
म	म	म	ग	ग	रा	रा	स	स	स	गरा	स	नं	धां
य	शो	०	दा	०	के	०	दा	०	र	का०	न	मो	रि

(८) भूपाली ।

शुद्ध ओड़व । स र ग प ध । चौताल ।

गीत ।

लालन आज लखि एक नवल बाल नाचत सकल तियन मन्द गति सुढङ्ग ॥१॥ झलकत तन योवन जिनि शशिमद सुरङ्ग देह वदन दशन हसन दामिनि द्युतिसम भ्रुकुटि धनुष चितवन शरमावत मन कुरङ्ग ॥२॥ घेरदार घूटनलो घाघरो घूँघरूदार चुनरी चटक लसत भूषण सकल अङ्ग ॥३॥ युगराज दास प्यारे ऐसी तिय मैं न देखी बोलनि चालनि चित की हरनि अधर अमृत वचनि कर पद निरद शुनि वचन सरबस ले रस के तरङ्ग ॥४॥

स्वरलिपि ।

+		०		१		०		२		३	
			गमक								
ग	र	सग	सगर	स	स	धं	धं	धं	धं	गर	गर
ला	०	००	०००	ल	न	आ	०	०	ज	ल०	खि०
ग	ग	ग	र	ग	ग	गर	ग	र	ग	सर	ग
ए	०	क	०	न	व	ल०	बा	०	०	००	ल
पग	प	प	प	प	ध	ध	ध	सध	स	ध	पग
ना०	०	च	त	स	क	ल	०	ति०	०	य	न०
				गमक		गमक		गमक			
प	ध	स	स	पधप	ध	गपग	प	रगर	ग	रर	सस
म	न्	०	द	गति०	०	०००	०	०००	०	०सु	ढङ्ग;

२

प	ध	स	स	स	स	र	स	स	स	स	स
झ	ल	क	त	त	न	०	०	यो	०	व	न
सर	ग	ग	ग	ग	र	स	स	सध	ध	प	प
जि०	०	नि	श	शी	०	म	द	सु०	रं	०	ग
ध	र	स	स	स	स	ध	ध	ध	प	प	प
दे	०	ह	व	द	न	द	स	न	ह	श	न
ग	ग	ग	ग	र	ग	सर	ग	र	र	स	सधं
दा	०	मि	नी	०	०	००	०	द्यु	ति	स	म०
प	प	ग	प	प	प	प	प	प	ध	ध	ध
भ्रु	कु	टि	०	ध	नु	ष	०	चि	त	व	न
पध	स	स	स	पधप	ध	गपग	प	रगर	ग	रर	सस
शर	मा	व	त	मन०	०	०००	०	०००	०	०कु	रङ्ग;

३

गग	गग	गग	गग	रग	सरग	गग	गग	रर	सस	सस	सधं
घे र	दार	घूट	नलो	००	००॰	घा०	घरो	००	० ०	घूँघरू	दार
								गमक		गमक	
पप	गप	पप	पप	पध	धध	पध	सस	पधपध	गपगप	रगरग	रस
चून	री०	चट	क०	लस	त ०	भू०	खन	सकल०	००००	००००	अंग;

४

पध	सस	स स	स स	स र	ग ग	र र	सस	सस	सस	सस	धध
युग	राज	दा स	प्या रे	ऐ ०	सी ०	ति य	० ०	मैं ०	न ०	दे ०	खी०
धर	सस	धध	पप	गगग	ररर	ससस	सरग	रर	रर	सस	धंधं
बो०	लनि	चा०	लनि	चितकी	हरनि	अधर	०००	अमृ	त०	ब च	नि ०
								गमक		गमक	
गग	पप	पप	पप	धध	धधधध	पध	स सस	पधपध	गपगप	रगरग	रस
कर	पद	निर	द०	सुनि	वचन	सर	ब सले	रस के०	००००	०००त	रंग;

[इस गीत को धमार ताल में भी गा सकते हैं नं० (१२) देखिये]

---

(६) भूपाली । चौताल और तेताला ।

सरगम ।

+		०		१		०		२		३	
प	ग	रग	रस	पप	ग	रस	र	रधं	ग	रस	रग
पप	ग	ग	पध	रग	पध	स	स	पध	पग	रस	र

२

गप	र	गप	धस	सर	ग	रस	ध	प	ग	रग	प
गप	धग	रस	र	गग	र	स	धं	रग	सरग	प	ग
रग	पधस	धप	गपग	पधप	गपग	धपग	रसर	सरगर	सरग	रगपग	रगप
गपधप	गपध	पधसध	पधस	ग र	स धप	र स	धपग	सध	पगर	धपग	रसर

३

रग	पध	गप	धस	पध	पग	रस	र	रगर	सधं	गपर	गप
रगप	पध	गपध	सस	गरस	ध	रस	धप	सध	पग	धपग	रसर
सर	ग	रगर	गप	गपग	पग	पधप	धस	सधस	धप	धपध	पग
पगप	गर	गरग	रस	सरग	पध	रगप	धस	सधप	गर	धपग	रसर

---

(१०) भूपाली । धामार ।

गीत

लाल पिचकारी मारूँ तुम भाग चले कित जाते हो रङ्ग भरूँगी ॥१॥
देवकी सुत हो न डरूँगी पकड़ मीड़ गुलाल मुख लाल करूँगी ॥२॥

स्वरलिपि ।

+			०		।		०			।		०	
धं	ग	र	ग	र	ग	र	ग	ग	गर	ग	ग	र	र
का	०	०	री	०	०	०	मा	रूँ	००	तु	म	०	०
प	प	प	प	पग	प	प	ध	ध	स	ध	ध	प	ग
भा	०	०	गे	००	०	०	च	ले	०	कि	त	०	०
प	प	प	ध	ध	ध	ध	स	स	स	ध	ध	प	गर
जा	०	०	ते	०	०	०	हो	०	०	रं	०	ग	००
गर	ग	ग	र	र	स	स;	स	र	र	स	स	धं	धं
भ०	रूँ	०	गी	०	०	०	ला	०	ल	पि	च	च	०

२

प	प	ध	स	र	स	स	स	ग	र	ग	ग	र	र
दे	०	व	कि	०	सु	त	हो	०	०	न	०	०	०
ग	र	र	स	स	ध	प	ध	ध	ध	प	प	ग	ग
ड	रूँ	गी	०	०	०	०	प	क	ड़	मीं	०	ड़	०
प	ध	ध	स	स	स	स	ध	ध	पग	प	प	प	गर
गु	०	०	ला	०	ल	०	मु	ख	००	ला	०	ल	००
ग	र	ग	र	र	स	स;	स	र	र	स	स	धं	धं
क	०	रूँ	०	०	गी	०	ला	०	ल	पि	०	च	०

(११) भूपाली । चौताल ।

गीत

आदि नाद प्रनव रूप सम्पूर्ण दिजिए तुम प्रसाद ब्रह्मा विष्णू महेश त्रिविध गुण निदान ॥१॥
आदि भूत अविनाशी अनन्त अगम अपार अति आनन्द अपूर्व भाँति निरञ्जन ॥२॥
सकल रूप कारण सकल दुख निवारन भव बन्धन तारन सुर नर मुनि वन्दन ॥३॥
चतुर्वेद रटे हैं यह वानी तुमरी नाम सुर्तसेन मानी देहु कृपा भिच्छा माँगी सदा रहूँ पास जग जन ॥४॥

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
ग	ग	र	स	र	स	धं	धं	धं	ग	र	ग
आ	०	दि	ना	०	द	प्र	न	व	रू	०	प
पग	पगप	प	प	प प	प	धध	ध	ध	प	ग	गर
सम	पू००	र	न	दिजि	ए	तु म	प्र	सा	०	०	द०
ग	र	ग	ग	र	र	र	र	स	स	र	स
ब्र	०	ह्मा	०	वि	ष्नू	०	०	म	ह	०	श
प	प	प	प	सध	सध	स	स	धसधसपधपध		गपगप	गरसर
त्रि	वि	ध	०	गु ०	न ०	०	वि	हा ०००००००		००००	०००न;

२

प	प	सध	स	स	स	स	स	स	र	स	स
आ	दि	भू०	०	त	०	अ	वि	ना	०	सी	०
ग	ग	र स	र	ग	ग र	ग	र	स	स	ध	ध
अ	न	० ०	०	०	त ०	अ	ग	म	अ	पा	र
प	प	सध	स	स	स	स	स	स	ध	ध	ध
अ	ति	आ०	०	नं	०	द	०	अ	पू	०	र्व
प	प	प	प	सध	सध	स	स	धसधसपधपध		गपगप	गरसर
भाँ	०	ति	०	नि०	रं०	०	०	ज ०००००००		००००	०० ०न;

३

ग	ग	गर	ग	ग	ग	ग	रग	सर	गर	ग	ग
स	क	ल०	रू	०	प	का	००	००	००	र	न
पग	प	प	ध	ध	ध	ध	पध	ध	प	ग	ग
स०	क	ल	दु	०	ख	नि	वा०	०	र	न	०
ग	ग	र	र	स	स	धं	धं	धं	धं	धं	धं
भ	व	बं	०	ध	न	ता	०	०	०	र	न
प	प	प	प	सध	सध	स	स	धसधसपधपध		गपगप	गरसर
सु	र	न	र	मु ०	नि०	०	वं	द ०००००००		००००	०००न;

४

प	प	सध	सस	स	स	स	स	र	र	स	स
च	तु	बें०	० द		टे	है	०	य	ह	वा	नि
ग ग	ग	र ग	स र ग	ग	ग	ग	र र	स	स	स	धप
तु म	री	० ०	० ० ०	ना	म	सु	० तं	से	न	मा	०नि
प	प	सध	स	स	स	स	ध	ध	प	प	प
दे	०	हूँ०	०	कृ	पा	भि	चा	०	माँ	०	गीं
प	प	प	प	सध	स	स	स स	धसधसपधपध		गपगप	गरसर
स	दा	र	हूँ	पा ०	०	स	ज ग	ज० ० ०००००		००००	०००न;

(१२) भूपाली । धामार ।

"लालन आज लखी"

गीत ।

+	।	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	०	।
ग	र	स	गस	ग	र	स	धं	धं	धं	ग	र	ग	र
ला	०	०	००	०	ल	न	आ	०	ज	ल	०	खी	०
ग	ग	गर	ग	ग	ग	र	ग	ग	ग	र	ग	सर	ग
ए	०	क०	न	व	ल	०	बा	०	०	०	०	००	ल
										।	।		
प	ग	प	प	प	प	प	प	ध	ध	सध	स	धप	ग
ना	०	०	च	०	त	०	स	क	ल	ती०	०	यन	०
	।	।											
प	धस	स	पध	पध	गप	गप	ग	र	ग	र	स	स	स
मँ	००	द	गति	००	००	००	०	०	०	०	सु	ढँ	ग;

२

			।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
प	ध	ध	स	स	स	स	स	स	स	र	स	स	स
म	ल	०	क	त	०	०	त	न	०	०	जो	व	न
।	।	।।	।	।	।	।	।	।	।				
स	र	गर	म	ग	म	र	स	स	स	ध	ध	प	प
जी	०	००	नी	स	सी	०	म	द	०	सु	०	रँ	ग
	।	।	।	।	।	।							
ध	र	स	स	स	स	स	ध	ध	ध	प	प	प	प
दे	०	ह	व	द	न	०	ह	स	न	द	स	न	०
ग	ग	ग	र	ग	सर	ग	र	र	र	स	स	धं	धं
दा	मि	नि	०	०	००	०	दु	ति	०	स	म	०	०
पप	ग	प	प	प	प	प	प	ध	ध	ध	ध	ध	ध
भृकु	टि	०	ध	०	जु	स	चि	त	०	व	न	०	०
	।	।।											
पध	स	सस	पध	पध	गप	गप	ग	र	ग	र	स	स	स
सर	मा	वत	मन	००	००	००	०	०	०	०	कू	रं	ग;

३

ग	ग	गर	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	र	ग	सर	ग
घे	०	र०	दा	र	धु	ट	न	लो	०	०	०	००	०
ग	ग	ग	र	र	स	स	स	स	स	स	स	धं	धं
घा	घ	रो	०	०	०	०	घूँ	घू	रु	दा	०	र	०
प	प	प	ग	ग	प	प	प	प	प	ध	ध	ध	ध
चू	न	०	री	०	०	०	च	ट	क	ल	स	त	०
प	ध	स	पध	पध	गप	गप	ग	र	ग	र	स	स	स;
भू	ष	न	सक	ल०	००	००	०	०	०	०	०	अँ	ग

४

प	ध	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
जु	ग	रा	०	ज	दा	स	प्या	०	रे	०	०	०	०
स	र	ग	ग	ग	र	र	स	स	स	स	स	स	ध
ऐ	०	०	सी	०	ति	य	मैं	०	०	न	०	दे	खी
ध	र	सस	ध	ध	ध	ध	प	प	प	ग	ग	र	र
बो	ल	नी०	चा	०	ल	नी	चि	त	की	ह	०	र	नी
ग	ग	ग	र	ग	सर	ग	र	र	र	स	स	धं	धं
अ	ध	र	०	०	००	०	अ	मृ	त	व	च	नी	०
ग	ग	प	प	प	प	प	ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध
क	र	प	द	नी	र	द	सु	नि	०	व	च	न	०
पप	ध	सस	पध	पध	गप	गप	ग	र	ग	र	स	स	स
सर	व	सले	रस	के०	००	००	०	०	०	०	त	रं	ग;

---

(१३) छायानट ।

शुद्ध सम्पूर्ण । सर गमा प ध न । चौताल ।

गीत ।

मेष सम गड़ार है आज हू समझ धन तुला बैठे कंचन में ऐसो प्रभु मैं पायो है ॥ १ ॥
कन्या बृकभानु की गरुड़त है सिंह यम लोयन तेहारो मीन मृग ने लजायो है ॥ २ ॥
मकर करत मोसे मिथुन करत नयन नेत्र कुम्भकारो री चिरञ्जीव गायो है ॥ ३ ॥
वाको है वृचिक के कारण कालहू मिलेंगी वीर पगन करकट कन्दर दान आयो है ॥ ४ ॥

स्वरलिपि ।

+		०		१		०		२		३	
प	प	ध	प	मा	गर	गर	ग	मा	प	मा	गरस
मे	०	ष	स	म	००	ग०	ड़ा	०	०	र	है००
सरगमा	र	स	स	सस	स	ध	धंनं	पं	पं	पं	पं
आ०००	ज	हू	०	स म	झ	ध	न ०	तु	०	ला	०
स	स	र	र	स	स	र	स	स	स	स	स
बै	०	ठे	०	०	०	कं	०	च	न	मैं	०
स	स	र	गर	ग	मा	पप	मागग	स	र	सस	रगमापमा
एं	०	सो	००	प्र	भु	मैं०	पा	यों	०	है०	०००००

अन्तरा ।

प	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	नर̍	स̍	स̍	स̍	स̍
क	न्या	०	०	बृ	क	भा	००	न	०	की	०
र̍	ग̍	र̍	र̍	स̍	सन̍	ध	प	प	प	पप	मा
ग	रू	ड़	त	है	० ०	सिं	ह	०	०	यम	०
प	प	मा	ग	र	र	ग	मा	प	पमा	गर	स
लो	०	य	न	ते	०	हा	रो	०	००	मी०	न
ध	ध	प	प	प	प	प	माग	स	र	सस	रगमापमा
मृ	ग	ने	०	०	०	ल	जा०	यो	०	है०	०००००

संचारी ।

मा	मा	मा	प	प	प	प	प	प	न	न	ध	प	प	प	मा	ग	गर
म	क	र	क	र	त	मो	०	से	मि	थु	न	क	र	त	न	य	न०
ग	ग	मा	प	प	मा	ग	र	स	ग	ग	माप	मा	ग	सर	सस		रगमापमा
ने	०	त्र	कु	म्	भ	का	रो	री	चि	रं	जीव	गा	०	यो०	हैं ०		००० ००

आभोग ।

	।	। ।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।			
प	स	सस	स	स	स	स	स	स	स	र	ग	र	र	सन	ध	ध	प
वा	को	है ०	वृ	चि	के	का	र	ण	का	ल	हू	मि	लें	गी०	वी	०	र
ध	ध	प	प	प	प	ग	मा	मा	प	प	प	माग		सर	सस	रग	मापमा
प	ग	न	क	र्क	ट	कं	द	र	दा	०	न	आ०		यो०	ह ०	००	०००

---

(१४) छायानट । धामार ।

गीत ।

लचकत आवत है वे गोरी अबीर गुलाल भरके प्यारी ॥ १ ॥

तकतक कुमकुम मारत सवन पर और देत गारी प्यारी ॥ २ ॥

+			०		।		०			।		०	
स	र	ना	ध	ध	प	मा	प	प	प	मा	प	मा	ग
ल	च	०	क	०	त	०	आ	व	०	त	०	है	०
र	ग	ग	मा	मा	प	प	मा	ग	ग	स	र	स	स
वे	०	०	०	०	०	०	गो	०	०	०	०	री	०
स	स	नं	धं	भं	पं	पं	स	र	स	र	र	स	स
अ	बी	०	०	०	र	०	गु	०	०	ला	०	ल	०
र	ग	ग	मा	मा	प	प	मा	ग	ग	स	र	स	स;
भ	र	०	के	०	०	०	प्या	०	०	०	०	री	०

अन्तरा।

प	प	प	स	स	स	स	स	स	र	स	स	स	स
त	क	०	त	०	क	०	कु	म	०	कु	०	म	०
ध	स	नर	स	स	स	स	न	ध	प	प	प	प	प
मा	०	००	र	०	त	०	स	व	०	न	०	प	र
ध	ध	ध	प	प	प	प	सध	सन	र	स	र	स	स
औ	०	र	०	०	०	०	दें०	००	०	त	०	०	०
न	ध	ध	प	प	प	प	मा	ग	ग	स	र	स	स
गा	०	०	री	०	०	०	प्या	०	०	०	०	री	०;

---

(१५) कामोद।

मिश्र सम्पूर्ण। स र ग मा म प ध न। चौताल।

गीत।

कहेउ न जात अम्बर बिच चम्पा कुम्हिलात जलज जात संकुच या द्युति छवि ॥१॥

चन्द्र मन्द दीन मलिन क्षीण हीन सकलंकी ताको उपमा कैसे देई चतुर सुकवि ॥२॥

अनगन तेरो मात एक रूप अनेक तुम प्रभा न पावत मणि थिर ना रहत रवि ॥३॥

शोभा मन्दिर मध आनन्द मणि ज्योति उदय रति को न रहेउ रति अनंग गयेउ छवि ॥४॥

स्वरलिपि।

+		०		१		०		२		३	
	(मींड)										
र	मारप	प	ध	म	पप	प	ध	प	ग	म	पप
क	हेउ०	न	जा	०	०त	अं	ब	र	वि	०	च०
प	प	स	स	स	र	न	स	ध	प	ध	प
चं	०	पा	०	कुम्	हि	ला	०	त	ज	ल	ज
मा	र	र	पम	प	मारस	गम	प	मा	र	स	स
जा	०	त	सं०	कु	च००	या०	०	द्यु	ति	छ	वि;

२

प प	प स	स स	स स	र न	स स
चन् ०	द्र मन्	द् ०	दी न	म लि	० न
	(मींड)				
स स	र प	मा र	स स	स स	स स
बी ०	या ही	न ०	स क	लं ०	की ०
ध ध	प पम	प प	म प	नस र	न स
ता ०	को ०ऽ	प मा	कै ०	से ० ०	दे ई
सर न	स ध	प प मारस	गम प	मा र	स स
च तु र	० सु	क वि ० ० ०	या० ०	द्यु ति	छ वि;

३, ४

मप धप	पप मप	मपन सरनस	धधप मारर	गगम पप	मारर सस
अ न गन	तेरो मात	ए०क रू० प ०	अनेक तु ० म	प्रभा० ०न	पावत मनि
(मींड)					(मींड)
मार पपध	पप गमप	मार सस	पप सस	स सस स स	र प मारसस
ाध० ०रन	रह त००	० ० र वि;	शो० भा०	म न्दि र म ध	आ० नन्दमणि
ध ध पपप	पप सपस	ससस स स	स र नसस	धधप मारस	गमप मारसस
ज्योति उदय	रति को ००	न रहे ऽ र त	अ नं ग ० ०	ग यो ऽ वि० ०	या०० द्युति छवि

---

(१६) कामोद । धामार ।

मतवारो ठाड़ो रोके बाट माझ ॥१॥

कठिन भयो जाओरी सजनि जिया काँपत ज्यों ज्यों पड़त साँझ ॥२॥

र र र	मार प	म प	ध ध ध	प प	म प
म त ०	वा० ०	रो ०	ठा ० ०	ड़ो ०	० ०
ग म प	प प	प प	मा र र	स र	स स;
रो ० ०	के ०	० ०	बा ० ट	मा ०	झ ०

अन्तरा ।

प	प	स	स	स	न	स	र	स	स	स	स	स	स
क	ढि	न	भ	ये	०	०	जा	श्रो	री	स	ज	नि	०
प	प	प	मा	रस	गमप	मप	मा	र	र	स	र	स	स
जि	०	या	र्का	पत	ज्यों००	ज्यों०	प	ड़	त	सां	०	ऋ	०

---

(१७) हम्बीर ।

मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा म प ध न । चौताल ।

गीत ।

सोहत शीश मुकुट श्रवण कुण्डल भाल तिलक गुञ्जमाला पीताम्बर कटि काछनि विराजे ॥१॥

शंख चक्रगदा पद्म कर मुरली अधर धर वृन्दावन चन्द्र मध गोपिनी संग राजे ॥२॥

गोपीनाथ मदनमोहन श्रीपति श्रीनारायण अनादि अनन्त ईश्वर स्वरूप साजे ॥३॥

ऊधोदास के प्रभु सप्तसुर छाये रहे मुरली में तीन लोक बस भई मधुर मधुर बाजे ॥४॥

स्वरलिपि ।

+		०		१		०		२		३	
नध	नध	न	स	र	स	नध	नध	प	पम	प	पमा
सो०	००	ह	त	शी	श	मु ०	कु ०	ट	श्र०	व	ण०
नध	नध	पम	पम	गमा	ध	प	प	म	ग	र	र
कुं०	००	ड०	ल०	भा०	०	ल	०	ति	०	ल	क
स	स	र	स	स	स	र	र	ग	ग	म	प
गुं	०	ज	मा	०	ला	पी	०	तां	०	ब	र
नध	नध	नन	स	स	स	स	स	नध	प	मप	गमा
क ०	टि ०	० ०	का	०	छ	नि	०	विरा	०	००	० जे;

२

प	माध	प	स	स	स	स	स	न	स	स	स
शं	००	ख	च	०	क्र	ग	दा	०	प	द्	म
नध	नध	र	र	स	स	न	ध	ध	ध	प	प
क०	र०	मु	र	ली	०	श्र	ध	र	०	ध	र
मप	मप	मप	मप	ग	मा	ध	ध	न	सन	स	स
वृन्	००	दा०	००	व	न	च	न्	द्र	००	म	ध
र	र	स	स	न	स	स	स	नध	प	मप	गमा
गो	०	पि	नी	०	०	स	ग	रा०	०	००	०जे;

३, ४

गमा	धध	पपप	मपप	नध	नस	नध	पप	गमा	धप	पपमग	रस
गोपी	नाथ	मदन	मोहन	श्रोप	तिश्री	नारा	यण	अना	०दि	अनं००	०त
पप	पप	मगम	रर	सर	सस	पमाधप	सस	सस	सस	धनध	नस
ई०	श्वर	स्वरू०	०प	सा०	जे०	ऊ०घो०	दास	के०	प्रभु	स०म	सुर
नध	पप	मप	मप	गमा	धध	नन	सस	ररर	ससस	नधपमपगमा	
छाये	रहे	मुर	लीमें	तीन	लोक	बस	भई	मधुर	मधुर	सा०००००जे;	

---

(१८) हम्बीर । धामार ।

गीत ।

होरी के दिनन में बन ठन आई है सब ब्रज की सुन्दर नारी ॥१॥

एक गावत एक मृदंग बजावत कोऊ देत हँस हँस तारी ॥२॥

स्वरलिपि ।

न	ध	प	प	म	म	प	ध	ध	ध	प	प	प	प
दि	०	०	न	न	में	०	ब	न	०	ठ	०	न	०
ग	मा	ध	प	प	म	ग	स	र	र	स	ध	प	प
आ	०	०	ई	०	है	०	स	०	ब	ब्र	ज	की	०
म	ग	ग	र	र	सर	स	म	प	प	म	प	ग	मा
सु	०	०	द	र	ना०	री;	हो	०	०	री	०	के	०

अन्तरा ।

प	प	स	स	स	स	स	स	स	स	स	र	स	स
ए	क	गा	०	०	व	त	ए	०	क	मृ	दं	ग	०
न	ध	ध	प	प	म	प	ग	मा	मा	नध	ध	प	प
ब	जा	०	व	०	त	०	को	ऊ	०	दे०	त	हँ	स
ग	म	प	म	ग	सर	स;	म	प	प	म	प	ग	मा
हँ	स	०	०	०	ता०	री	हो	०	०	री	०	के	०

---

(१९) हम्बार । चौताल वो तेताला । शिक्षक अलिबक्स ।

+		०		।		०		।		।	
धध	अन	धप	मप	धध	पप	गग	आम	गआ	रस	सर	सआ
धंधं	सआ	रर	गमा	धध	पप	गग	आम	गआ	रस	सर	सआ;

अन्तरा

पप	आमा	धआ	सआ	सर	सआ	धध	सआ	रर	सन	धप	मप
धध	पप	गग	आम	गआ	रस	रर	रन	नन	धध	पप	गमा;

२ अन्तरा

पप	आमा	धआ	सआ	सर	सआ	धध	सआ	रर	सनधप	नध	पन
धप	मप	धधपप		गग	आम	गआमग	रस	ररर	ननन	धधप	गमा

३ अन्तरा

गमाधधपपमप	धधआपधआनस	सआनई धपमप	गगमाधधप	मग सरस	गमाधध पपमप
जोई जोईअपने०	गुर नकोजा०नत	है ० यह जगमें०	ता०न से०न	०० सां०ई	तेंई तेंई होतेहैं०
गगम ररस	पपमाधआसआअ	सआ स रस	मग रस	रेररर ननतन	धधपप मपगमा
गुरु० केज्ञान					

(२०) हम्बीर धम्मार । शिक्षक अलीबक्स ।

+	।	।	०	।	।		०	।	।	।	।	०	।
ध	ध	न	धप	मप	धध	पप	ग	ग	म	गआ	रस	सर	सआ
धं	धं	स	रर	गमा	धध	पप	ग	ग	म	गआ	रस	सर	सआ

अन्तरा

प प प	मध सँआ	सँ रँ सँआ	ध ध सँ	रँरँ सँन	धप मप
ध ध प	गआ गआ	म ग र स	रँ रँ रँ	नन धध	पप गमा

२ अन्तरा

न न न	धप मप	न ध पम	ग ग ग	म प गमा	धध पप
म ग ग	मग रस	धं धं सर	ग मा ध	रँसँ नध	पम गमा
ध आ आ	सँन धप	म प गमा	ध आ आ	नन धध	पप गमा

---

(२१) हम्बीर । (क) झाँपताल ।

+									
ध	आ	न	न	ध	ध	ध	प	प	आ
म	प	गमा	ध	आ	न	ध	प	म	आ
ग	आ	र	स	आ	स	रग	मप	ग	मा

अन्तरा

प	प	प	ध	ध	न	न	ध	ध	ध
पप	धध	नसँ	रँसँ	नध	पम	गर	स	ग	रँ सँ
रँसँ	नध	पम	गर	स	सर	ग	म	प	गमा

(ख) । धमार ।

+			०				०					०	
ध	आ	आ	न	न	ध	ध	ध	प	प	म	प	गमा	धा
न	ध	आ	प	म	ग	आ	र	स	आ	सर	ग	मप	गमा

२

प	प	प	ध	ध	न	न	ध	ध	ध	पप	धध	नसँ	रँसँ
नध	पम	गर	सग	रँसँ	रँसँ	नध	पम	गर	स	सर	ग	मप	ग मा

३

नन ध धध	पप मप	गमा ध	न ध आ	प मग	र स
सर ग मप	गमा ध	सर ग	मप गमा ध	सर ग	मप गमा

———

(२२) कल्याण ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स र ग म प ध न । चौताल ।

गीत ।

तुम ही भज भज रे मन कृष्ण वासुदेव पद्मनाभ परमपुरुष परमेश्वर नारायण ॥ १ ॥ योग याग जप तप कर वामदेव नारद शुक वशिष्ठ शनकादि सिद्ध चारण विद्याधर अष्ट याम पर ही रहत पारायण ॥२॥ मधु दैत्य नाश करि पायो नाम मधुसूदन सुदामा के दारिद्र भंजन ॥३॥ कोउ धरत ध्यान युगल श्रुति पुराण स्तोत्र विमल तेरो ही यश गावत सकल संसार बार बार ताते शनकादि पढ़त रामायण ॥ ४ ॥

स्वरलिपि ।

+		०		१		०		२		३	
स भ	रस ज०	र रे	र ०	ग ०	र ०	ग ०	ग ०	गमप ०००	मग ००	म ०	प ०
न म	धप न०	प ०	मप कृष्	मप ण०	मग ००	नंर वा०	गर सु०	ग दे	र ०	नं ०	रस ०व
स प	स द्	स म	स ना	स ०	स भ	नंधं प०	नं ०	धं ०	पं ०	संपंधंनंसस ००००रम	
स पु	र रु	र ष	र ०	ग प	गर र०	ग मे	ग ०	र ०	र ०	गम स्व०	पप ०र
मप ना०	मगर ०००	ग रा	र ०	नंर ००	सस यण	नंर तुम	गग ही०	र ०	नंर ००	स भ	स; ज

अन्तरा।

प	धप	ध	न	स	स	स	स	र	स	स	स
यो	००	ग	या	०	ग	ज	प	त	प	क	र
न	ध	नध	न	र	स	न	धन	ध	प	प	प
वा	०	म०	दे	०	व	ना	००	र	द	शु	क
प	प	नध	न	प	धन	ध	प	प	म	ग	गर
व	शि	००	ष्ठ:	श	न०	का	०	दि	सि	०	दृध
र	गर	ग	मप	मप	मप	मप	मगर	नं	र	स	स
चा	००	र	ग०	वि०	००	द्या०	०००	०	०	ध	र
मग	मप	प	ध	न	र	सस	नध	न	ध	पम	प
अ०	००	ष्ट	या	०	०	मप	र०	ही	र	हत	०
मप	मगर	ϕग	र	नंर	सस	नंर	गग	र	नंर	स	स;
पा०	०००	रा	०	००	यग	तु०	ही०	०	००	भ	ज

संचारी, आभोग।

पमगमप	पप	पप	पमग	नधन	सस	ननध	नध	मप	मपग	र ग	नधपमगर
म० धु००	दैत्य	नाश	करि०	पा०यो	नाम	मधु ०	सूद	न०	०००	सुदा	मा०क०००
गग	रस	सर	गमप	पमप	मपग	पधप	धनससस	सस	स स स	रनध	रसनध
दा०	रिद्र	भं०	०००	जन०	०००;	कोंड०	ध००रत	ध्यान	यु ग ल	श्रुति०	पुराग०
नध	पपम	गर	पमगर	गग	रसस	सर	गमप	पप	पप	नधम	पमप
स्तोत्र	विमल	ते०	रो०ही०	यश	गावत	सक	लसं०	सा०	र०	बा०र	बा०र
पमगरस		ससनरसनध		नधपमपमगर		ϕगर	नंरसस	नंर	गर	नंरस	सस;
ता० ते० ०		श नका०दि ००		पढ़तरा ००००		मा०	००यग	तु०	ही०	०००	भज

[कल्याग राग में अतितीव्र र,म और ध लगता है।]

इस गीत को लोग इमन कल्याग का कहते हैं। परन्तु कुछ तन्त्रकार केवल तीन स्थानों (ϕ) में कोमल मध्यम का व्यवहार देख कर कहते हैं कि इमन बेलावल और ऐसे इमन कल्याग में कोई भेद नहीं देख पड़ता। कोमल मध्यम के अधिक व्यवहार से इमन बेलावल और थोड़ा व्यवहार से या बिलकुल व्यवहार न करने से कल्याग देख पड़ता है।

---

(२३) कल्याण । धामार ।

गीत ।

आज व्रज धूम सखी सब मिलि खेले होरी ।।१।।
केशर की पिचकारी ले छोड़त अबीर गुलाल बरजोरी ।।२।।

स्वरलिपि ।

ग	र	स	स	स	नं	र	स	नं	धं	पं	पं	ग	ग
धू	०	म	स	खी	०	०	स	ब	०	०	०	मि	लि
र	र	स	नं	र	गर	गर	स	र	ग	म	म	ग	र
खे	ले	०	०	०	हो०	री०;	आ	०	ज	ब्र	०	ज	०

अन्तरा ।

प	प	ध	पध	न	धप	मग	प	ध	ध	न	स	न	स
के	श	र	की०	०	पि०	च०	का	०	०	री	०	ले	०
स	स	स	स	स	ग	ग	र	स	न	ध	ध	म	म
छो	ड़	त	अ	बी	०	०	र	गु	०	ला	०	ल	०
गर	स	नंर	ग	ग	गर	गर	स	र	ग	म	म	ग	र
बर	०	००	०	०	जो०	री०	आ	०	ज	ब्र	०	ज	०

---

(२४) कल्याण । चौताल ।

ताकत हैं तेहारी आसदास जनम जनम की हमारी दु:ख नेहारो साकी हौज़ कौसर के ।।१।।
तुम ऐसो जो कोऊ नहीं है और ऐसो जायको है दौड़ हमको तो नहीं है ठौर बिन पायन परके ।।२।।
तुम जग निस्तारन पाप प्रखालन को हम तनमन वरन पीर सफ़र के ।।३।।
तान बरस जाने की हमारे बह गए नाव कोट जनम दूर छुटे दर के ।।४।।

+		०		१		०		२		३	
पमगर	ग	म	म	गम	प	प	ध	ध	ध	मप	धप
हीं०००	०	ते	हा	००	री	आ	०	स	०	दा०	०स
प	धप	ध	न	सं	नध	न	धप	मप	धप	मग	रग
ज	न०	म	ज	०	न०	म	००	००	०की	००	००
ध	प	मग	र	ग	म	ग	ग	र	र	नंर	स
ह	मा	००	०	री	०	दुः	ख	ने	हा	००	रो
संस	नधन	धपध	पमप	मम	गर	नर	गमप	नधप	मप	प	प
साकी	०००	०००	०००	है०	ज़०	कौ०	सरके;	०००	ता०	क	त

२

प	ध	न	सं	सं	सं	सं	सं	रंरं	संसं	संसं	सं
तु	म	सो	०	जो	०	को	ऊ	नहि	है०	औ०	र
सं	रं	गं	रं	गं	गं	रं	गं	रं	सं	नध	प
ऐ	सो	०	०	जा	य	०	को	है	०	दौ०	ड़
मप	म	ग	ग	म	प	नध	प	प	प	पप	प
हम	०	०	०	को	तो	नहिं	०	है	०	ठौ०	र
पप	धप	नध	नसं	रंसं	नध	रंसंनधपमगमप;		नधप	मप	प	प
बिन	पा०	००	००	यन	००	पर००००००के		०००	ता०	क	त

३

पम	गमप	पन	धप	पप	धन	संसं	नध	पपम	गर	गग	रर
तुम	०जग	बिस्ता	रन	पा०	पप्र	खा०	ळन	को००	हम	तन	मन
सस	सस	सर	गमप	नध	पप	मग	मप	नध	पमप	प	प
ब०	रन	पी०	००र	सफ	र०	के०	००;	००	०ता०	क	त

४

								पप	पध	नसं	संसं
								ता०	न०	बर	स०
सस	सस	रस	नध	नध	पप	धप	मगर	गग	रर	गम	रप
जा०	ने०	की०	००	हमा	०रे	वह	गए०	ना०	ओ०	को०	प०
पपप	पप	पधनसंरं	संन	रंसं	नधप	मग	मप;	नधप	मप	प	प
जनम	दूर	छू००००	टें०	दर	०००	के०	००	०००	ता०	क	त

(२५) कल्याण । चौताल ।

हा दि ए अल्ला ए साहेब साई सत्तार करीम रहीम हलीम हकीम ॥१॥ याक विना अज़याक लतीफ़ याक जांत परदपोशदाना विना हादी अहुअला गुप्त प्रधट हू अल्ला हू आन ताहू अल्ला ॥२॥

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
र अ	र ल्	नं ०	र ०	स ला	स ०	नं ए	र ०	गर ००	ग सा	गग हे ब	रस ००
नं सा	र ०	ग ई	र ०	ग स	रग त्ता	र ०	र ०	नं ०	र ०	स र	स ०
मग क०	मग री०	म ०	प म	म र	मग ही०	ग ०	गर म०	गर ह०	ग ली	र ०	स म
सनं हकी	धंपं ० ०	मंपं ००	धंनं ००	सरग ० ००	मगर म००	ग हा	र ०	स बी	स ०	गमक धंनंनं ए ००	धंनं ० ०

२

पध पा०	प ०	ध क	न वी	स ०	स ना	स अ	स ज़	स पा	स ०	स क	स र ल ०
स ती	स फ़	स पा	र ०	र क	स ज़ा	र ०	ग ०	र ०	स त	ससस प र द	सरन पो०श
र दा	स ना	नध ० ०	न वि	ध ०	प ना	पधन हा००	सर ००	स दी	नध ००	न आ	ध हूं
प अ	मप ला०	मग ००	पप गुप	ध त	सस प्र ध	रस ट ०	रगर ० हु ०	स रस अ ल ०	नध ला०	र हू	र ०
सन आ०	धप ०न	नध ताहू	प ०	म अ	ग र ला०	ग हा	र ०	स दी	स ०	गमक धंनंनं ए ००	धंनं ० ०

---

(२६) कल्याण । चौताल । शिक्षक रामदास बाबू ।

गौरा गणेस सरस्वति असुर सँहारिनि सिंह पर बाहिनी प्रसन्न भई सब दुख गई ऐसो साहेब मैं पायो ॥१॥ साहेब केरान सानी शाहजहान को नन्दन जग बंदन सुलतान औरंगज़ेब चतुर्दस विद्या गुन निधान कृपालन के जहाँन मे नर चाद जीत जस गायो ॥२॥

+		०		१		●		२		३	
मीड				गमक		गमक		गमक		गमक	
पमग	पमग	म	प	नधन	धन	धपध	पध	पमप	मप	मगर	गर
ग००	ने००	०	स	आ००	००	आ००	•०	आ००	००	आ•०	००
गमक											
सरस	रस	र	ग	म	म	ग	र	ग	र	स	स
आ००	० ०	०	०	स	र	•	०	स	०	ती	०
नंधं	नं	धं	धं	पंमं	धं	पं	पं	पम	ग	ग	ग
अ०	सु	र	सं	हा०	०	री	नि	सिंह	०	प	र
स	रस	र	र	स	स	नं	धं	र	र	स	स
बा	•०	हि	नी	प्र	सँ	न	•	०	०	भ	ई
ग	ग	मग	र	गर	स	नंर	गर	ग	ग	मप	पप
स	ब	दुख	०	ग०	ई	ऐ०	सो०	सा	०	हेब	मैं०
म	ग	र	ग	स	र	प	प	म	ग	रग	सर
पा	०	यो	०	०	०;	गो	•	रा	०	०•	००

अन्तरा

प	ध	न	स	स	सस	स	नध	न	न	स	स
सा	हे	ब	०	के	रान	सा	नी•	सा	०	है	०
सस	सस	सन	सस	सस	सस	सर	रर	रर	सस	गर	सस
ज ०	हा न	को०	नं ०	द ०	न •	जग	बं०	दन	सुल	ता०	० न
	गमक	गमक		गमक		गमक		गमक		गमक	
नध	रसर	सस	सस	धन	सर	सस	रर	सस	सस	सस	सस
अ०	ऊ००	रँ०	ग ०	ज़े०	० ०	० ०	ब ०	च तु	र ०	द •	स ०
नध	न	ध	ध	पम	ध	प	प	पध	नध	नध	प
बि•	द्या	गु	ण	निधा	•	०	न	कृपा	०•	लन	को
मम	प	पम	मप	मग	रग	पध	नस	सर	रर	सस	नध
जहा	न	मे०	नर	चा०	०द	जी•	•त	जस	•०	गा ०	० ०
मप	धन	धप	मग	रग	सर	पप	पप	म	ग	रग	सर
००	० ०	० •	• ०	यो•	••;	गो•	••	रा	•	••	००

(२७) कल्याण। ढिमातेताला शिक्षक स्वर्गीय गोपालचन्द्र चक्रवर्ती। (नूलोगोपाल)

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
पम	गग	मप	पप	स	म	मग	र	ग	र	र	स	नंधं	नं	धं	पं
ग०	००	ने०	०स	स	०	र०	०	स	०	ती	०	अ०	सु	र	सं
पंमं	ध	पं	पं	प	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	सर	स	र	र
हा०	०	री	नी	सिं	ह	०	०	प	०	र	०	वा०	०	हि	नी
स	स	नं	धं	र	र	स	स	ग	ग	म	ग	र	स	नं	रग
प्र	सं	न	०	०	०	भ	ई	स	ब	दु	ख	ग	ई	ऐ	सो०
ग	ग	मप	मप	म	ग	रग	सर	प	प	म	ग	र	ग	स	र
सा	०	हेब	मै०	पा	०	००	यो;	गो	०	रा	०	०	०	०	०

२

			।	।	।	।	।	।				।	।	।	।
प	ध	न	स	स	स	स	स	स	न	ध	न	स	स	स	स
सा	हे	ब	०	के	०	रा	न	सा	०	०	नी	सा	०	ह	०
।।	।	।		।	।	।	।	।	।	।।	।	।	।	।।	।
ससस	स	स	न	स	स	स	स	स	र	रर	र	स	स	गर	सन
जहा	न	को	०	नँ	०	द	न	ज	ग	बंद	न	सु	ल	ता०	न०
	।	।	।		।	।	।	।	।।	।	।				
ध	र	स	स	ध	र	स	र	स	सस	स	स	नध	न	ध	ध
अ	ऊ	रँ	ग	ज़े	०	०	ब	च	तुर	द	स	वि०	द्या	गु	न
प	म	ध	प	प	नध	न	ध	प	म	म	प	म	प	म	प
नि	धा	०	न	क्रु	पा०	ल	न	को	ज	हा	न	मे	०	न	र
							।	।	।	।					।
म	ग	र	ग	प	ध	न	स	स	र	स	न	म	ध	न	स
या	०	०	द	जि	०	०	त	ज	स	गा	०	०	०	०	०
न	ध	पम	ग	र	ग	स	र	प	प	म	ग	र	ग	स	र
०	०	००	०	यो	०	०	०	गो	०	रा	०	०	०	०	०

विलम्बितलय।

पमग	मप	मम	गर	गर	सस	नंधंनं	धंपं	पंमं	धंपंपं	पम	गग	गग	गग	सरस	रर
ग००	नेस	स०	र०	स०	ती०	अ०सु	रसं	हा०	रिनि	सिंह	००	प०	र०	वा००	हिनी
सस	नंधं	रर	सस	गग	मपग	रस	नंरग	गम	पमप	मगर	गसर	पपं	मग	रग	सर
प्रसं	न०	००	भई	सब	दुख०	गई	ऐ०सो	साहे	बमै०	पा०यो	०००	गो०	रा०	००	००

अन्तरा।

पध नस	सस सस	सन धन	सस सस	सस सस	सस सस	सरर रर	सस गरस
सा।हे ब ०	के रा ० न	सा० ०नी	सा ० ह ०	जहा नको	न ० द न	ज गर्ब दन	सुल ता०न
धर सस	धर सर	सस सस	नधनधध	प म धप	पनधनध	प प मप	मप मप
अऊ रँ ग	ज़े० ०ब	च तु र्द स	वि०द्यागुन	निधा ० न	कृपा०लन	कोज हान	मे० नर
मग रग	पध नस	सर सन	मध नस	नध पमग	रग सर	प प मग	रग सर
या० ०द	जी० ०त	जस गा०	० ० ० ०	० ० ० ० ०	यो० रा०	गो० रा०	०० ००;

---

(२८) कल्याण। चौताल व तेताला।

प प	प धप	ध नध	न स	धन स	नध न
धप ध	पम प	मगम गर	नंर गरस	नध पम	गम धम;

अन्तरा

पध पध	स सन	स र नस	रस रन	स नर	ग म ग
रस नध	र स नधप	पध धन	नस धनस	नध न	ध प ध
पम प	मगम गर	धन सन	धन धप	धप मप	मगम गर
धनस नधन	धपध पमप	मगम गर	धनसनधन धपधपमप	मगमगर नंरगरस	नधपम गमधम

संचारी व आभोग

नसधरसनध	नध प	पमध नधप	मग गर	र ग र ग	धपम गर
ना० ०० दते०	वर न	वर ० नते०	त्रेब हार	ता० ० ते	भयेसृ ष्ट०
सर गगर	सस सस	नंधंनं धंपं	सस सस	सस र र	सस सस
जग ०००	सं ० सार	पा०यो न०	कोउ ० ०	वा० को०	पा ० ० र
सर ग	नधप मग	मधन सन	सस स स	नध पम	{ गम धम; नधपमगमधम
भ ट क	फिरत वामे	वै ०जु ० ०	बा ० व र;		
				पमर गमप	नधप मगर
गर सस	र सर सनध	नधप मपस	रगम धन	मध पमग	धप मगर
गमध मप	नध पम	नधप मर	गम धमप	नंर गरस	नधपमगमधम;
पमरगमपनध	पमगर गरस	सरस रसनध	नधपम पमरग	मधन मधपम	ग धपमग
र गमधमप	प[1] नधपम	नधपमर	गमधमप प[2]	नंरगरस	नधपमगमधम[3]

इस गीत को हिसाब के साथ ताल भाग करके चौताल व तेताला में गाया जाता है। सबके नीचे की दो आवृत्ति दोनों (सम, अतीत) ग्रह में दिखाया गया है, एक दो तीन अंकों के द्वारा प्रकाशित है; याने र गमधमप एक, नधपमनधपमर गमधमप दो, नरगरसनधपमगमधमप तीन। इस तीन के ऊपर ताल का सम् और "प" के ऊपर अतीत ग्रह या सम् दिखाया गया है।

---

(२६) केदारा।

मिश्र सम्पूर्ण। स र ग मा म प ध न। सूलताल।

देखत तन मन आनन्द भये विलास विरह व्यथा भारी पुन दरशन ॥१॥
आये नन्द घर अधर सुधारे प्रेम बूँद घन लागि बरसन ॥२॥
रोम रोम सुख उपजे क्रम क्रम ज्यों ज्यों लागि पिया के पग परशन ॥३॥
तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक सब शौतन मिलि लागि तरसन ॥४॥

(इसमें गान्धार थोड़ा लगने के कारण विवादी है)

स्वरलिपि।

+	।	०	।	२	।	३	।	०	।
न	ध	प	ध	प	मा	मा	मा	मा	मा
दे	ख	त	त	न	०	०	०	म	न
मा	मा	ध	प	मा	माग	र	र	सर	स
आ	०	नं	द	भ	ये ०	वि	ला	० ०	स
स	स	मा	ग	प	म	ध	प	म	प
वि	र	ह	व्य	था	०	०	०	०	०
प	प	स॑	स॑	मामा	मा	गम	प	प	प;
भा	०	री	०	पु न	द	र०	०	श	न;

अन्तरा ।

प	प	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं
आ	०	ये	०	नं	०	द	घ	०	र
सं	सं	सं	संन	ध	नध	सं	सं	सं	सं
अ	ध	र	सु०	धा	००	रे	०	०	०
मामा	ग	रं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं
प्रे ०	०	म	बूँ	०	०	०	द	घ	न
धन	ध	सं	सं	मा	मा	गम	प	प	प
ला०	०	गि	०	०	ब	र ०	०	स	न;

संचारी ।

मा	मा	मा	गम	प	प	प	ध	प	ध
रे	०	म	रे०	०	म	सु	ख	उ	प
प	प	ध	न	ध	प	मा	मा	मा	मा
जे	०	क्र	म	क्र	म	०	०	०	०
मा	माम	ध	प	मा	माग	र	र	स	स
ज्यों	००	ज्यों	०	ला	००	गि	०	पि	या
मा	मा	मा	मा	मा	मा	गम	प	प	प;
के	०	प	ग	०	प	र ०	०	श	न

आभोग ।

प	प	प	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं
ता	०	न	से	०	न	के	०	प्र	भु
सं	सं	सं	संन	ध	नध	सं	सं	सं	सं
तु	म	ब	हु ०	ना	००	य	०	क	०
मां	मांगं	रं	रं	सं	सं	सं	सं	सं	संन
स	ब ०	शौ	०	त	न	०	०	मि	लि०
धन	ध	सं	सं	मा	मा	गम	प	प	प;
ला०	०	गि	०	०	त	र ०	०	स	न

---

(३०) केदारा । धामार ।

गीत ।

गुलाल रङ्ग डारी री ऐसो सुघर खिलाड़ी भर अबीर कुमकुम मारी ॥१॥
ऐसो खिलाड़ संग होरी न खेलूँगी पकड़ बँहियाँ अँगिया देई फाड़ी ॥२॥
एक हाथ अबीर एक हाथ पिचकारी लिये एक नाचत एक गावत दे दे तारी ॥३॥
अद्‌भुत मची है फाग मोहन घर देखन आये सब ब्रजनारी ॥४॥

स्वरलिपि ।

+			०		।		०			।		०	
क	धे	टे	धे	टे	धा	आ	ग	दि	न	दि	न	ता	आ
ध	ध	प	प	मा	प	प	मा	मा	ग	मा	ग	मा	ग
डा	०	०	री	०	री	०	०	०	०	ऐ	०	सो	०
मा	ध	ध	प	प	प	प	माग	मा	र	नं	र	स	स
सु	घ	०	र	०	०	०	खि०	ला	०	०	०	ड़ी	०
स	स	स	स	मा	गमा	ग	मप	म	प	म	ध	न	स̍र̍
भ	र	०	अ	बी	००	र	कु०	म	०	कु	०	म	००
स̍	न	ध	म	ध	प	मा	मा	मा	माग	म	प	म	प
मा	०	०	०	०	री	०;	गु	ला	ल०	रं	०	ग	०

अन्तरा

प	प	स̍	न	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	न	स̍	स̍	स̍	स̍
ऐ	०	सो	०	०	०	०	खि	ला	ड़ी	सं	०	ग	०
न	न	ध	न	ध	न	र̍	स̍	न	ध	म	ध	प	प
हो	०	०	री	०	०	०	न	खे	०	लूँ	०	गी	०
मा	मा	ग	म	प	प	प	म	प	प	धन	ध	नस̍	र̍
प	क	ड़	बँ	हि	याँ	०	अँ	गि	०	या०	०	देई	०
स̍	न	ध	म	ध	प	मा	मा	मा	माग	म	प	म	प
फा	०	०	०	०	ड़ी	०;	गु	ला	ल०	रं	०	ग	०

संचारी

मा	मामा	मा	ग	म	प	प	मा	मामा	मा	ग	ग	म	प
ए	कहा	थ	अ	बी	०	र	ए	कहा	थ	पि	च	का	री
प	प	प	मा	ग	मामा	ग	म	प	प	प	प	म	प
लि	ये	०	ए	क	गाव	त	ए	०	क	ना	०	च	त
न	धन	स	न	ध	मध	प;	मा	मा	ग	म	प	म	प
दे	०दे	०	०	०	ता०	री	गु	ला	ल	रं	०	ग	०

आभोग

पप	स	स	स	स	स	स	स	स	स	न	ध	न	स
अद्	भु	त	म	ची	है	०	फा	०	ग	मो	०	ह	न
न	ध	प	मा	मा	मा	ग	म	प	प	न	ध	न	ध
घ	र	०	दे	०	ख	न	आ	०	ये	स	०	ब	०
न	स	स	न	ध	मध	प;	मा	मा	ग	म	प	म	प
ब्र	ज	०	०	०	ना०	री	गु	ला	ल	रं	०	ग	०

---

(३१) केदारा । चौताल ।

आनन्द भयो मेरे प्रानन की सुख देखत ही पिया का मुख ॥१॥

जो कछु वेथन मोपै बैठे विरहन पै भूल गई तन मन के दुख ॥२॥

हूँ तो तेहार हो सुख चाहत कीनी न चाहत पग पर सत रोमरोम सोई होत संतोष ॥३॥

पादशाह सुलेमनशाह मनसा की दाता तुम पाई न्यामत ॥४॥

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
पम	प	मा	ग	मा	ग	म	प	ध	प	मा	मा
भयो	०	०	०	मे	०	रे	०	प्रा	०	न	न
मा	ग	र	नंर	स	स	स	मागं	म	प	नध	नध
कि	०	०	००	सु	ख	दे	ख०	त	ही	पी०	या
न	र	स	नध	मध	पमा	स	सन	ध	प	प	म
का	०	सु	० ०	००	ख०;	आ	००	०	नँ	द	०

२

प	धप	स	स	स	स	स	स	न	र	स	स
जो	००	क	छु	०	वे	थ	न	मो	०	प	र
न	ध	न	न	रस	नध	न	ध	प	मा	मा	मा
बै	ठे	०	०	विर	००	०	ह	न	०	प	र
मा	मा ग	र	स	स	स	न	ध	न	ध	न	स
भू	० ०	ल	०	ग	ई	त	न	म	०	न	०
न	ध	म	ध	प	मा	स	सन	ध	प	प	म
के	०	दू	०	ख	०	आ	००	०	नँ	द	०

३

मा	माग	म	प	प	म	प	प	म	ध	प	प
हूँ	तो०	ते	हा	र	ई	सु	ख	चा	०	ह	त
सनध	नस	नध	न	ध	प	मा	मा	म	प	प	प
की००	नी०	न०	चा	ह	त	प	ग	प	र	स	त
मा	ग	र	नं	र	स	स	माग	म	प	प	प
रे	०	म	रे	०	म	सो	ई०	हो	०	०	त
ध	प	म	ध	प	मा	स	सन	ध	प	प	म
सँ	०	तो	०	ष	०	आ	००	नँ	०	द	०

४

प	ध	प	स	स	स	स	स	स	स	स	स
पा	०	द	शा	०	ह	सु	ल	०	०	म	न
स	स	स	स	मा	मा	स	स	स	स	स	स
गा	०	ह	०	म	न	शा	०	की	०	०	०
स	सन	स	स	न	न	ध	ध	र	र	स	स
दा	००	ता	०	तु	म	०	०	०	०	पा	ई
न	ध	म	ध	प	मा	स	सन	ध	प	म	प
न्या	०	म	०	त	०ऽ	आ	००	०	नँ	द	०

(३२) केदारा । सवारी । ८ ताल । ३० मात्रा । स र ग मा म प ध ना न ।

सकल गुण प्रकाश कर ले नाद विस्तारन गुनि जन गर्व हरन प्रघट सारदा विद्या बनाए जय सूर वीन लीनी ॥१॥ दोऊ तूम्बा एक षरज कर सुर योत दाँड़ी दरस थई मिलि भर ढ़िड़ाई कर आसमान गमक कर सुन्दर मोर नार मन्द्र मध तार की तान रस उपजै केत सवार जवार उजार कीनी ॥२॥

शिक्षक बाबा लालसिंह [कठजिह्वास्वामी अमृतसर]

× । । ।	० । । ।	१ । । ।	० । । ।	२ । । ।	० । । ।	३ । ।	४ ।
ससससस	सरस न	स स स स	न धन ध प	पम पम पप	मा मा मा मा	ना ध प	मा म
प्र का ० श	क र ले ०	ना ० ० द	वि स्ता० र न	गुनि ०० जन	ग र व ०	ह र न	प्र घ
मा मा म प	मा ग र र	स स नं र स	स र स स	स मा ग मप	मप धना धपमा	ग ग ग	म म
शा र दा ०	वि ० द्या ०	ब ना ० ० ए	ज य सु र	वी ० ० ०न	ली० ० ० नी० ०,	स क ल	गु न

अन्तरा ।

प प ध प	स स स स	स नर स स	स स स स	स स स स	न न ध ध	न र स	स स
दो ० ऊ ०	तू ० म्बा ०	ए ० ० क ०	ष ० र ज	क ० र ०	सु ० र ०	जो ० त	दाँ ०
स स स स	स स स स	मा ग र स स	स स स स	न स न न	ध ध प प	प ध ना	ध प
द ० र स	चे ० ई ०	मी ० ० ली ०	भ ० र ०	ढ़ि ड़ा ई ०	क ० र ०	आ ० ०	स मा
म प ध ध	म प प प	ना ना ध प	मा मा र र	नं र स स	मां मां मां मां	मा मा मा	मा मा
ग म क ०	क र ० ०	सुं ० द र	मो ० र ०	ना ० र ०	मं ० द्र ०	म ध ०	ता र
स र र र	प ध ध ध	स स स स	स र र र	स स स स	मा मा मा मा	ग र स	स स
ता ० न ०	र स ० ०	उ प जै ०	के त ० ०	रा ० ० ज	के ० त ०	स वा र	ज व
गमक	गमक	गमक	गमक	गमक	मीड़		
मामा मामा	ग र र स	मा मा मा मा	ग म प प	मप ध ध प	माप धना धपमा	ग ग ग	म म
आ ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	उजा ० ० र	की० ० ० नी० ०;	स क ल	गु ०

स्वामीजी के शिष्य-संप्रदाय कहते थे कि संगीत-शिक्षा के लिए स्वामीजी ने अपनी जिह्वा देवी के अ बलिदान कर दी थी । इसी कारण कठजिह्वा स्वामी इनका नाम है ।

---

(३३) वसन्त ।

औड़व षाड़व । सगमधन—न ध मा गरास । चौताल ।

गीत ।

सुभग वसन्त नवल लता पल्लव लागि द्रुमसुमन सुखदाई ॥१॥ शीतल पवन सुगन्ध रुचिर चारु लागि मधुबन झर लाई ॥२॥ तरुणी सिंगार साजे पति सों विहार किये मन्द पवन मन भाँई ॥३॥ कहे चेतराव रंग माल सुगन्ध लोग गावत वसन्त बनाई ॥४॥

स्वरलिपि ।

+		०		१		०		२		३	
रा	स	स	स	न	न	न	नध	न	न	मम	म
व	सं	०	त	न	व	ल	ल०	ता	०	पल्	०
ग	ग	म	म	ग	रा	स	स	मा	मा	मा	ग
ल	व	ला	०	गि	०	द्रु	म	सु	म	न	०
म	ध	न	स	नध	न	म	ग	म	ध	न	स
सु	ख	दा	०	००	०	ई	०	सु	०	भ	ग

२

म	ध	न	स	रा	स	रा	न	स	स	स	स
शी	०	त	ल	प	व	न	सु	गं	०	ध	रु
स	स	ग	रा	स	नध	न	मग	मा	मा	मा	ग
चि	र	चा	०	रु	ला०	गि	००	म	धु	व	न
म	ध	न	स	नध	न	म	ग	म	ध	न	स
झ	र	ला	०	००	०	ई	०	सु	०	भ	ग

३

स	स	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	ग	ग	ग
त	रु	णी	०	सिं	गा	०	र	सा	जे	०	०
म	ध	न	स	स	सरा	रा	स	नधन	मग	म	ग
प	ति	सों	०	वि	हा ०	०	र	किये०	००	मं	द
रा	स	स	मामा	मा	मा	ग	ग	म	ध	न	स
प	व	न	म न	भाँ	०	ई	०	सु	०	भ	ग

४

म	ध	न।स	।रा।स	।स	।स	।स	।स	।स	नध	न	न
क	हे	चे०	०त	रा	व	रं	०	ग	मा०	०	ल
म	ग	ग	ग	मा	मा	मा	मा	मा	मा	ग	ग
सु	गं	०	ध	लो	क	गा	०	व	त	०	०
म	ध	न	।स	नध	न	म	ग	म	ध	न	।स
व	सं	०	त	ब०	ना	ई	०	सु	०	भ	ग

---

(३४) वसन्त । धामार ।

गीत ।

भँवरा फूलि फुलवारी कछु सुधि तोहि के है कि नाहि रे ॥१॥
मधु ऋतु पाये लाज दुरजन त्यजि खेलत नर नारि रे ॥२॥
इत उत कित डोलत भँवरा जाओ जित तित पुहुप की वारि रे ॥३॥
मोरे कहा तू अब मान ले मैं तोहे देखि निपट अनारि रे ॥४॥

स्वरलिपि

+			०		।		०			।		०	
न	ध	न	धम	म	ग	ग	म	ग	ग	मग	रा	स	स
फू	०	०	लि०	०	०	०	फु	ल	०	वा०	०	री	०
स	स	स	मा	मा	ग	ग	म	ध	ध	न	न	।स	।स
क	छु	०	सु	ध	०	०	तो	हि	०	के	०	०	०
।रा	।रा	।स	।स	।स	न	धन	म	म	ग	म	ध	न	।स
है	०	०	कि	०	ना	००	हि	०	रे;	भँ	व	रा	०

अन्तरा

म	ध	ध	न	।स	।स	।स	।रा	।स	।सन	।स	।स	।स	।स
म	धु	०	ऋ	तु	०	०	पा	ये	००	ला	०	ज	०
।रा	।स	।स	।रा	न	।स	।स	।ग	।ग	।ग	।सन धन		म	ग
दु	र	०	ज	न	०	०	त्य	जि	०	खे० ००		ल	त
मा	मा	माग	म	ध	न	धन	म	म	ग	म	ध	न	।स
खे	ल	त०	न	र	ना	००	रि	०	रे;	भँ	व	रा	०

संचारी

स	स	स	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	ग
इ	त	•	ब	त	कि	त	बो	ल	•	त	०	०	•
म	ध	ध	न	सं	सं	संन	ध	म	ग	म	ग	रा	स
भँ	व	•	रा	•	•	००	जा	•	ओ	जि	त	ति	त
मा	मा	मा	ग	ग	म	ध	नधन	म	ग	म	ध	न	सं
पु	हु	प	की	•	बा	•	रि००	रे	०;	भँ	व	रा	०

आभोग

म	ध	ध	न	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं
मे	०	•	रे	•	०	•	क	हा	०	तू	०	अ	ब
गं	गं	सं	नध	न	म	ग	स	स	स	मा	मा	ग	ग
मा	०	न	ले०	०	०	०	मैं	०	०	तो	हे	दे	खि
म	ध	न	सं	सं	नध	न	म	म	ग	म	ध	न	सं
नि	प	ट	०	०	अ०	ना	रि	०	रे;	भँ	व	रा	०

[पश्चिम देश के तन्त्रकारों का मत यह है कि वसन्त हिंडोलांग है और दोनों मध्यमों का एक साथ व्यवहार नहीं होता है क्योंकि ऐसा करने से ललित राग की आशंका है ।]

---

(३५) वसन्त दिमातेताला ।

चलो सखि कुँज धाम खेलत वसंत स्याम संग लिये राधे नाम रूप गुन जागरी ॥१॥

मुक्ताहार रसाल माल केतका के सुक जल और न प्रकटवन फूलवन वागरी ॥२॥

बोलत कोकिल कीर कपोत गुँजत भँवर समीर धीर उड़त मनमोहन आगेरी ॥३॥

तानसेन के प्रभु मिवमिलि केलकरत गावत वसंतराग धन्य इरस भागेरी ॥४॥

+	।	•	।	।	।	•	।	।	।	•	।	।	।	।	।
म	ध	न	सं	रां	सं	न	सं	मधन	संरां	नध	गम	मग	रा	स	स
च	लो	स	खी	कुँ	ज	धा	म	खे••	••	लत	००	वसं	त	स्या	म
स	स	मा	माग	मा	मा	ग	ग	मध	मधं	सं	सं	नध	न	म	ग
सँ	ग	लि	ये•	रा	धे	ना	म	रू०	प•	गु	न	जा०	•	ग	री;

२

मधन	स स	सरा स	न स	नध न	म ग	म ग	रा स
मु०क्ता	हा र	रसा ल	भा ल	के० त	का के	सु क	ज ल
ससमा	मा ग	मा मा	मा ग	ग रा	स स	नध न	म ग
औ० र	न प्र	क ट	व न	फू ल	व न	वा० ०	गे री;

३

मामा	मा ग	मा मा	मामा	ग ग	गमा ग	मध नस	ससस
बो ०	ल त	को ०	कि ल	कि र	कपो त	गुँ० जत	भँव र
स रा	स स	नध नध	म गमा	स स	मामा मा	नध मग	रा स
स मी	० र	धी० ० र	उ ड़त	म न	मोह न	आ० ००	गे री

४

म ध	न स	स स	स स	रा रा	स स	न ध	मग ग
ता न	से न	के ०	प्र भू	ग्री व	मि लि	के ल	कर त
मामा	मा ग	मध ध	न स	ग रा	सस स	नध न	म ग
गा ०	व त	वसं त	रा ग	ध न्य	द र स	भा० ०	गे री

मालकोष

दिवा द्वितीय १० दगड ।

माघ-फाल्गुन ।

सूची।

राग नाम।	बोल।	रचयिता।	ताल।
मालकोष	— (१) डिमिडिमि डमरू —	(वाणीविलास) —	चैताल।
,,	— (२) आहो धुन् धुंकार —	—	धामार।
,,	— (३) सरगम —	—	चैताल व तेताला।
गान्धारी टोड़ी	(४) ए प्यारे आये मेरे —	(इंछावरस) —	चैताल।
दरबारी	— (५) मेरे तो अल्ला नाम —	(विलासखाँ) —	चैताल।
,,	— (६) होरी खेलो सखी —	—	धामार।
,,	— (७) सरगम् —	—	तेताला।
,,	— (८) जो गुनि गुण को —	(विलासखाँ) —	चैताल।
तिलंग	— (९) नयो पवन नयो बादर	(धुन्धी) —	धीमा तेताला।
तिलक	— (१०) ,, —	,,	,,
तिलक कामोद	(११) मुरारे त्रिभुवन पति —	(तानसेन) —	झांपताल
गौड़ सारंग	— (१२) माधवमुकुन्द मधुसूदन	—	चैताल।
,,	— (१३) डफ बाजन लागि री	—	धामार।
,,	— (१४) सरगम —	—	चैताल व तेताला।
शुहा	— (१५) चमत्कार दिदार —	—	झाँपताल।
,,	— (१६) सरगम् —	(शिक्षक—पन्नालाल) —	झाँपताल।
हुसैनी टोड़ी	— (१७) सरसती वाकबानी —	(रसूलवक्श) —	धीमा तेताला।
वृन्दावनी सारंग	(१८) अति सुगन्ध मलयजघन	—	झाँपताल।

मालकोष ।

करुणारससम्पन्नो मलधातुमुपाश्रितः ।
मलं संचालयेत् स्थानात् मालवश्च ततः स्मृतः ॥
द्वितीयो मालकोशश्च कटिदेशान्महायशाः ।
महदंकश्च भूतानां चक्राच्चैव विशुद्धतः ॥ महेशचन्द्र सरकार ॥

शास्त्र में लिखा है कि यह राग महादेवजी के शक्ति (पार्वती) कण्ठ से निकला था। शिशिर-ऋतु (माघ-फाल्गुन) में सब समय इसको गा सकते हैं। दिन के द्वितीय दश दण्ड के समय यह राग और तत्सामयिक अन्य राग गाये जाते हैं। इनके स्वरलिपि आगे दिये गये हैं। शेष रात्रि को किसी किसी ने शिशिर-ऋतु कहा है इसलिए शेष रात्रि के समय में भी मालकोष गा सकते हैं। इस राग को शुद्धरूप से गाने से पत्थर गल जाता है, मूर्च्छागत वायु का दमन होता है और तुरन्त आनन्द-लाभ होता है। कोकिल (पंचम) स्वर में गाने से कदाचित् ये फल पा सकते हैं।

कैशिकी जातिजः षड्जग्रहांशान्तोऽल्पधैवपः ।
सकाकलिकः षड्जादि मूर्च्छनारोहिवर्णवान् ॥
विप्रलम्भे प्रयोक्तव्यः शिशिरे प्रहरेऽन्तिमे ॥ संगीतरत्नाकर ॥

इस मत के अनुसार मालकोष नाम का कोई राग ठीक नहीं होता। पारिजात में "मंगलकोष" राग का ऐसा व्याख्यान है—

धैवतोद्ग्राह धांशान्तो गौरीमेलसमुद्भवः ।
रागो मंगलकोशाख्यो धनी यत्र समन्वितौ ॥

प्रचलित मालकोष राग से इसका कोई मेल नहीं है ॥

मालकोष

(१)

शुद्ध ओड़व। स गा मा धा ना। चौताल व ढीमा तेताला।

डिमि डिमि डमरू बाजत श्रवण कुण्डल कण्ठ योगतिलक माल भाल शोभित शशी शीशकलाधारी ।१।
आडम्वर दिगम्बर वाघम्बर अम्बरवर ब्रह्मरूप ऐसो ध्यान धरत लागि रहत खण्ड परशुतारी ।२।
शोभित जटाजूट गंगा तरङ्ग ऐसो गोरांग अर्धांग विराजित पिया प्यारी । ३ ।
भुजंग फणिधर मणिधर विषधर हर हर हर दुखहर वाणीविलास के आनन्दकारी ।४।

[इस राग में गान्धार और मध्यम का एक साथ व्यवहार होता है। स्वाधीन गान्धार के लगाने से दूसरे रागों की आशङ्का है।]

स्वरलिपि।

+	०	१	०	२	३
गामा गामा डि ० ० ०	सस गामा मि० डि ०	गामा सनां ० ० मि ०	धांनां सगामा ड म रू ० ०	गामा मा बा ० ज	गामा गामा त ० ० ०
मा धा श्र व	ना ना ण कुं	धा मागामा ड ल ० ०	माधाना स̍ कं ० ० ०	स̍ स̍ ठ यो	स̍ स̍ ० ग
स̍ स̍ ति ल	स̍ ना क मा	स̍ स̍ ० ल	नाधामा गामा भा ० ० ० ल	माधानास̍ा धाना शो ० ० ० ० ०	धामा गामा भि ० त ०
गामा गामा श ० शी ०	गा मा शी ०	गा मा ० श	गामा गामा क ० ला ०	गामाधा गामागा ० ० ० ० ० ०	मागामा सा धा ० ० री;

२

मागा मा आ ० ०	नाधा नाधाना डं ० ० ० ०	स̍ स̍स̍ ० ब र	स̍ स̍ना दि गं ०	स̍ स̍ ० ब	स̍ स̍ ० र
स̍ स̍ बा घं	स̍ स̍ना ब र ०	स̍ स̍ अं ब	ना धा र ०	माधानास̍ धाना ० ० ० ० ० ०	धामा गाम ० ० व र
स̍ स̍ ब्र ह्म	स̍ स̍ रू प	गा̍मा̍गा̍मा̍स̍ना ऐ ० ० ० सो ०	स̍ स̍ ध्या ०	नाधा ना न ० ध	धा मागामा र ० त ०
गा माधानास̍ ला गि ० ० ०	नाधा मागामा ० ० र ह त	गामा गामा खं ० ड ०	मामा गामा प र शु ०	गामाधा गामागा ० ० ० ० ० ०	मागामा सा ता ० ० री।

३,४

मागामा गामा शो ० ० भि त	गामा गामा ज टा ० जू	गामा गामा ० ट गं ०	गामा गामागा गा ० ० ० ०	मागा मागा त र ङ्ग ०	मागामा धाधा ऐ ० ० सो ०
नाना नाना गो ० रां ग	सस सस अ र ध ङ्ग	सना धासा वि रा जि त	गामागामामागा पि या ० ० ० ०	माधानास धाना ० ० ० ० ० ०	धामागामा स प्या ० ० ० री
सस सस भुजं ग ०	सस सस फणि ध र	गामा सस म णि ध र	गामागामा सस वि ० ष ० ध र	सस सस ह र ह र	सस नानाधा ह र दु ख ०
मामा गागा ह र ० ०	गामागाधानास वा ० णी ० ० वि	सस सस लास के ०	सस नाधा आ० नं ०	माधानास नाधानाधा द ० ० ० ० ० ० ०	मागामा स का ० ० री;

इसी गीत को दूने लय से चौताल में गाना हो तो नीचे के स्वरलिपि के अनुसार गाना चाहिए। इसको ढीमे तेताले में भी गा सकते हैं, चौताल में सञ्चारी और आभोग को अलग अलग और ढीमे तेताले में एक साथ गाना पड़ेगा।

+		०		१		२	
ामागामा ० ० ०	ससगामा मि०डि ०	गामासनां ० ० मि ०	धांनांसगामा ड म रू ० ०	गामामामा बा ० ० ज	गामागामा त ० ० ०	माधा अ व	नाना ण कुं
ामागा ल ०	माधानास कं ० ० ०	सस ठ यो	सस ० ग	सस तिल	ससना क मा ०	सस ० ल	नाधागामा भा ० ० ल
ाधानासधाना ो ० ० ० ० ०	धामागामा भि ० ० त	गामा श शी	गामागामा शी ० ० श	गामा क ०	गामागामा ला ० ० ०	गामाधागामागा ० ० ० ० ० धा	मास ० री

२

ागामा प्रा० ०	नाधानाधा ड ० ० ०	स स ब र	स सना दि गं ०	स स ० ०	सस ब र	स स बा धं	ससन ब र ०
स स ंब	नाधा र ०	माधानासधाना ० ० ० ० ० ०	धामागामा व र ० ०	स स ब्र ह्म	सस रू प	गामागामासना ऐ ० ० ० सो ०	सस ध्या
नाधाना म ० ध	धामागामा र ० त ०	गामाधानास लागि ० ० ०	धानामागा र ह त ०	मागामा खंड ०	मामामा प र शु	गामाधागामा ० ० ० ० ०	गामा ता ०

मीड़

३, ४

मागामागामा शो०० भि त	गामागामा ज टा ० जू	गामागामा ० ट गं ०	गामागामा गा ० ० ०	गामागामा त रं ० ग	गामाधाधा ऐ ० सो ०	नानानाना गो रां ० ग	ससस स अ र धं ग
			मीड़				
सनाधामा विरा जि त	गामागामा पिया ० ०	माधानासधाना ० ० ० ० ० ०	धामागामास ० प्या० ०री;	ससस स भु जं ० ग	ससस स फ णि ध र	गा मास स म णि ध र	गा मा गा म स वि ष ध र ।०
			मीड़			मीड़	
ससस स ह र ह र	स सनाधा ह र दु ख	मामागागा ह र ० ०	मानाधानास वाणी ० ० वि	ससस स लास के ०	स सनाधा आ ० नं ०	माधानासधानाधा द ० ० ० ० ० ०	मागामास का ० ० री

---

(२) मालकोष ॥ धामार ॥

आहो धुन धुंकार डफमृदंग बाजत है बिच मुरली धुन छोड़ि ॥१॥
चोवा चन्दन अतर अरगजा केशर रंग में बोरि ॥२॥
एक गावत एक बीन बजावत अबीर गुलाल लिये भर झोरि ॥३॥
सदा रंग बरसत गोकुल में खेलत नन्दकिशोरी ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	।	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	०	।
क	ध	ट	ध	ट	धा	आ	ग	दि	न	दि	न	ता	आ
मा धुं	मा का	मा ०	गा ०	मा ०	गा ०	मा र	गामा ड ०	धाना फ ०	धा ०	ना मृ	धा दं	मा ०	गा ग
मा बा	धा ०	ना ०	स ज	स त	स है	स ०	ना वि	धा ०	धा च	नां मु	धां र	स ली	स ०
गा धु	मा न	मा ०	नाधा छो ०	मा ०	गामा ० ०	स ड़ि;	स आ	नांधां हो ०	नां ०	सगा ० ०	मागा ० ०	मा धु	गा न्

२

मा धा ना	धा धा	सं सं	ना सं सं	ना ना	धा धा
चो वा ०	० ०	० ०	चं द न	अ त	र ०
मा गा मा	गा मा	गा मा	गां मां सं	सं सं	सं सं
अ र ०	ग जा	० ०	के ० ०	स र	० ०
ना धा मा	गा मा	स स;	स नांधां नां	सगा मागा	मा गा
रं ग में	बो ०	० रि	आ हो ० ०	० ० ० ०	धु न्

३

स स स	नां धां	नां स	गागा मा गा	मा मा	गा मा
ए ० क	गा ०	व त	एक बी न	ब जा	ब त
ना ना ना	धा धा	मा मा	गा मा मा	गा मा	गा मा
अ बी ०	० ०	र ०	गु ला ल	लि ये	० ०
ना धा मा	गा मा	स स;	स नांधां नां	सगा मागा	मा गा
भ र ०	झो ०	० रि	आ हो ० ०	० ० ० ०	धु न्

४

मा धा ना	धा सं	सं सं	ना ना ना	सं सं	सं सं
स दा ०	० ०	रं ग	ब र ०	० ०	स त
गां मां मां	सं सं	सं सं	(गमक) गामा गामा मा	(गमक) धां नां	स स
गो ० ०	कु ल	में ०	खे ० ल ० त	नं द	० ०
ना धा मा	गा मा	स स;	स नां धां	धांनां सगा	मा गा
कि ० ०	शो ०	० री	आ हो ०	० ० ० ०	धु न्

(३) मालकोश—चौताल और तेताला ।

+								
नाधा	मागा	माधा	नास	सना	धाआ	नाधा	माआ	
गामा	धाआ	नाधा	आआ	धांनां	सगा	आमा	नाधा	
ना	धा	मागा	मास	गागा	सगा	गास	गामा	१
माधा	आना	धा	स	सना	स	गाआ	माआ	
गामा	स	नाना	स	धाधा	ना	मागा	माधा	
गामा	गामा	गामा	स	गागा	सगा	गास	गामा	२
माधा	नाधा	सना	सस	नास	गामा	माआ	नाना	
धाधा	मामा	गागा	माआ	सआ	धांनां	स	गागामा	
नानाना	धाधा	नाधामा	गामा	गामा	गामास	गागास	गामा	३

[जहाँ जहाँ गान्धार है वहाँ वहाँ गामा एक साथ है समझना चाहिये ।]

(४) गान्धारी टोड़ी ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा गा मा प धा ना । चौताल ।

ए प्यारे आये मेरे महल करूँगी हो आज आनन्द बधाई ॥ १ ॥

तन ते तपन गई रोम रोम शीतल भई जो मिलिहँय मोहे सुखदाई ॥ २ ॥

एत सब आयो मङ्गल गायो आँगन लिपायो चौक बनाई ॥ ३ ॥

मोहे इच्छावर सुखी के प्रभु को दरश देखत हैं मैं नई नई आयुबल पाई ॥ ४ ॥

+		०		१		०		२		३	
मा आ	गा रा ० ०	सरा ० ०	गामा ० ०	पमा ० ०	प ये	धा मे	प ०	प रे	प म	धा ह	प ल
धा क	प रुं	प ०	मा गी	प ०	प ०	धाधा हो ०	पप ० ०	मा ०	गा आ	रागा ० ०	रास ० ज
गा आ	गा ०	रागा ० ०	मा प ० ०	मागा ० ०	रास ० ०	रागामापधा ० ० ० ० ०		प ०	प नं	प ०	प मा द ०
प ब	मा धा	गारा ० ०	गागा ० ०	रा ०	स इ	स (मीड़) धा ए ०		प ०	प प्या	मापमा पमागामा ० ० ० रे ० ० ०	

२

प	प	धा	धा	ना	स	स	स	रा ना	स	स	स
त	न	ते	०	त	प	न	०	ग ०	०	ई	०
धा	धा	धा	धानास	स	स	गा	रा	स ना	स	नाधा	प
रे	०	म	रे ० ०	०	म	शी	त	ल ०	भ	ई ०	०
पधा	पधा	रा	स	रा	ना	धा	ना	धा	प	प	प
ज ०	ब ०	मि	लि	है	०	०	०	०	मो	०	हे
रा	स	राना	धा ना	धा	प	स (मींड़)	धा	प	प	मापमापमागामा	
सु	ख	दा ०	० ०	०	ई	ए	०	०	प्या	० ० ० रे ० ० ०	

३,४

धा	धा	प	प	धा	पमा	प	प	प	प	धा	प
ए	त	स	ब	आ	यो ०	मं	०	ग	ल	गा	यो
मा	मा	पमा	प	मा	गा	रागा	रागा	रा	रा	स	स
आड्	ग	न ०	लि	पा	यो	चौ०	क ०	ब	ना	ई	०
मामा	पप	पपप	पप	धा	नासस	सरा	स	गा	रास	सना	धाप
मो हे	इच्छा	बरस	सुखी	के	प्र भुको	द र	स	दे	ख त	हैं ०	० ०
पप	धासना	सना	धाप	पपमा	पमागा	गारा	गारास	स (मींड़)	धा	मापमापमागामा	
मैं०	न ई ०	न ई	० ०	आयु०	बल ०	पा ०	० ई	ए	प्या	० ०० ० रे ० ०	

(५) बिलासखानी टोड़ी ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा गा म प धा न । चौताल ।

गीत ।

मेरे तो अल्ला नाम को आधार जिनने रचो संसार काम क्रोध मद लोभ सब त्यजो यमजाल ॥१॥
जिनने रचो अरस कुरसी मन जमीन आसमान निरंजन निर्विकार साँची क्यों न सेवो पर्वरदगार ॥२॥

काहे को भूलिये एकरार काहे को होइये गुनाहगार साँई सों याद क्यों न कीजिये जाको नाम अज गात ॥३॥ खाँ बिलास कहे पाक साफ हो रहिये तेहारो जनम जित उन्हीं बारबार (मनुष जनम नहीं होत बारबार) ॥४॥

स्वरलिपि।

+		०		१		०		२		३	
रागा	रागा	रा	स	स	स	रा	रा	स	नं	स	स
अ ल्	ला०	०	ना	०	म	को	०	अ	ध	०	र
रारा	स	स	रा	स	नंस	सरा	नं	धां	पं	पं	पं
जिन	ने	०	र	चो	००	सं०	०	०	सा	०	र
मं	धां	नं	स	रागा	रागा	रागा	रागा	म	प	धा	पमगा
का	म	क्रो	ध	म०	द०	लो०	०भ	स	ब	त्य	जो००
रा	गा	रा	गा	रा	स	स	नं	सनं	धां	नं	स
य	म	जा	०	०	ल	मे	०	रे०	०	तो	०;

२

प	पम	धा	धा	न	स	स	ससं	स	स	स	स
जिन्	ने०	र	चो	अ	र	स	कुर	सी	०	म	न
स	स	स	स	नसरा	सरागा	रा	स	न	धा	प	प
ज	मीन	आ	स	मा००	०००	०	न	नि	र	ज	न
म	प	धापम	गारास	नं	स	रा	गा	म	धा	न	धामगा
निर्	वि	का००	००र	साँ	ची	क्यों	०	न	०	से	वो००
रागा	रागा	रा	गा	रा	स	स	नं	सनं	धां	नं	स;
पर	बर	द	गा	०	र	मे	०	रे०	०	तो	०;

३,४

धा	धा	प	मप	प	प	प	मप	प	प	प	प
का	हैं	को	००	भू	लि	ये	००	ए	क	रा	र
म	प	धाप	मगा	रा	गा	रा	गा	रा	स	रा	स
का	हे	को ०	००	हो	इ	ये	गु	ना	ह	गा	र
नंस	स	नं	धांधां	नं	स	रारा	सस	रा	गा	म	धा
सांई	सों	या	० द	क्यों	न	की ०	जिये	जा	को	ना	म
नन	धाम	रा	गा	रा	स;	म	धाधा	न	सस	स	स
ब्र ज	० ०	गा	०	०	त	खा	० न	वि	लास	क	हैं
नसरा	सरागा	रा	सस	न	धाप	धा	धा	न	स	धा	न
पा०क	सा० फ	हो	र हि	ये	० ०	ते	हा	रो	०	०	०
धा	प	प	प	मधा	मगा	रा	स	नंस	रागा	मधान	धामगा
ज	न	म	०	जि०	० ०	०	त	उ न	ही ०	० ० ०	० ० ०
रा	गा	रा	स	स	स	धाधा	नस	धान	धाप	पप	मप
बा	०	०	र	बा	र;	म नु	ष ०	० ०	० ज	न०	म०
मप	धाधा	मम	गागा	रागा	रास;	स	नं	सनं	धां	नं	स
नहीं	हो ०	०त	बा ०	० र	बा र	मे	०	रे ०	०	तो	०

(६) दरबारी टोड़ी । धामार ।

गीत ।

होरी खेलो सखी री साज बाज रङ्गराज सों ॥१॥
ऐसी होरी में फाग मचाओ फगुआ लो रघुराज सों ॥२॥
चन्दन बंदन बुकारोरि अबीर गुलाल समाज सों ॥३॥
कृष्णानन्द सों रंग भर लाओ खोल घुँघट जिउ लाज सों ॥४॥

स्वरलिपि ।

+			०		।		०			।		०	
गा	रा	गा	रा	रा	स	स	नं	धां	धां	नं	स	स	स
खे	लो	०	स	खी	री	०	सा	०	ज	बा	०	०	ज
रागा	रा	गा	रा	रा	स	स	नं	स	स	रा	नं	स	रा
रं ०	ग	०	रा	०	ग	सों	०	०	०;	हो	०	०	री

२

मप म धा	न सं	सं सं	नसं रासं रागा	रा सं	नधा प
ऐ० ० सी	ही री	में ०	फा० ० ० ० ग	म चा	ओ० ०
म प धा	न सं	गा गा	रागा रा स	रा नं	स रा
फ गु आ	लो ०	र घु	रा० ज सों	हो ०	० री

३

गागा रा गा	रा गा	रा गा	रा रा रा	स स	स स
चं० द न	बं ०	द न	बु का ०	रो ०	रि ०
रा गा गा	म गा	म प	धाप मगा रास	रा नं	स रा
अ बी र	गु ०	ला ल	समा ० ० जसों,	हो ०	० री

४

मप म धा	न सं	सं सं	रासं रा गा	रा रा	सं सं
कृष्णा ० ०	नं द	सों ०	र ० ङ्ग ०	झ र	ला ओ
न धा प	म धाधा	रा गा	रागा रा स;	रा नं	स रा
खो ० ल	घुँ घ ट	जि उ	ला० ज सों	हो ०	० री

(७) दरबारी टोड़ी। तेताला।

+								
गाआ	राप	गाआ	रासा	नंस	गागा	रास	रास	
नंधां	पंअ	मंधां	नंस	गागा	रास	रानं	सरा	१
मप	मधा	आन	सआ	नस	गागा	रा स	रास	
नधा	मधा	नन	धाप	मगा	रास	रानं	सरा	२
सरागा	रागा	मपधा	पधा	मधान	धान	धापमगारासरानंसरा		
गाआ	आआ	मधा	नधा	मगा	रास	रानं	सरा	३
धाधा	पअ	मधा	नस	नस	गागा	रास	रास	
नधा	गारागा	मप	नधा	पमगा	रागा	रास	रानंसरा	४
ननधा	नन	धाप	मधाआ	नधाम	गाआ	रागारास	रानंसरा	
गाआ	रा स	ननधा	पमगा	रासरानं	सरागा	मगारास	रानंसरा	
धाप	मगा	नधाप	मगा	रासनधा	पमगा	धामगारा	सरानंसरा	५

(८) बिलसखानी टोड़ी ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा गा म प धा न ।

चौताल

जो गुनि गुन को पावे गाये नीक तानन सो रिझावे जबसुर संगीत पावे अच्छे नीके प्रमाण ॥ १ ॥
सोच समझ तान लेत ध्यान धरत जिया में जब बाजवे जन्त्र तन्त्र सुरन धुरन सों वाको समझान ॥ २ ॥
ध ध प म ग रे ग म ध नि ध प म ध नी स रे ग रे ग रे स रे रे स नि स रे नी ध प म ध नि ध म ग रे
ग नि ध म ग रे ग रे स नि नि नि ध ध ध प प म ग रे ग रे स गवत विलासखान ॥ ३ ॥

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
						मीड़					
रानं	स	रा	सरा	गा	रागा	स	धा	प	प	प	प
गु ०	न	को	० ०	पा	० वे	गा	ओ	छे	०	नि	के
म	प	धाप	मगा	रागा	रागा	रा	स	रा	रा	स	स
ता	०	न न	सों ०	रि ०	झा ०	०	वे	ज	ब	सु	र
नं	धां	नं	स	रा	स	स	धा	प	प	पम	गा
सँ	०	गी	त	पा	वे	अ	०	छे	०	नि०	०
म	प	धाप	मगा	रा	स	रा	गा	रा	स	रा	स
के	०	प्र ०	० मा	०	न;	जो	०	०	०	गु	नि

२

प	म	धा	न	स	स	स	स	स	रान	स	स
सो	०	च	स	म	झ	ता	०	न	ले ०	०	त
रा	न	स	स	रागा	रागा	रा	स	न	धा	प	प
ध्या	०	न	०	ध ०	र त	जि	या	मे	०	०	०
प	धा	प	प	म	गा	गा	गा	रा	रा	स	स
ज	ब	०	ब	जा	वे	०	०	जँ	त्र	तँ	त्र
नंस	रा	गा	म	प	धा	प	प	म	गा	रा	गा
पू०	र	न	धू	र	न	सों	०	वा	०	०	को
रा	रा	स	स	स	स	रा	गा	रा	स	रा	स
स	म	झा	०	०	न;	जो	०	०	०	गु	नि

३

धाधा पम	गा रागा	मधा नधा	पम धानस	रा गा	रा गा
रा स	रारा स	नंस रान	धाप मधा	नधा मगा	रागा
नधा मगा	रागा रास	नन न	धाधा धा	पप मगा	रागा रास
मीड़	मीड़				
स धापम	धा रागा	रा स	रा गा	रा स	रा स
गा व त०	बि ला स	खा न;	जो ०	० ०	गु नि

इस राग में अतिकोमल गंधार व अतितीव्र निषाद का व्यवहार है।

तृतीय अंश का जो सरगम है वह गमक तान से गाया जायगा। याने आ आ आ करके।

(६) तिलंग।

षाड़व--सम्पूर्ण। स ग मा प ध न--ना धा प मा ग र स, ढिमा तेताला।

नयो पवन नयो बादर नयो साजन नइ विरह नइ मेहदि कोमल हाथ नयो रङ्ग सुरङ्गी ॥ १ ॥
नई पिया नई प्यारि पहिने कुसुम सारि कुच कि सुधि भुलि अब लख रहे वेणी चङ्गी ॥ २ ॥
नयो नेह नयो गेह नवल लाल की नई प्रीति प्रघट भई सेज सो अनन्त मानो सङ्गो ॥ ३ ॥
घुँधी के प्रभु तुम बहु नायक श्यामरो सलोनो तो सो रहत उमङ्गी ॥ ४ ॥

स्वरलिपि

१

+			
गग मामा मामा मामा	मामा गप पमा गग	धध धध पप पप	मामा पध मापमा गग
नयो ० ० प व न ०	न यो ०.० बाद र ०	नयो ० ० सा० जन	न इ ०० ० ० बि र ह
सस सस गमा पप	नध नन सस सस	नाना पप मामा मामा	मापध माप मामा गरस
न ई ० ० मे ह दि०	को० मल हाथ ० ०	न ० यो० रँ ० ग ०	सु ० ० ० ० रँ ० गी००

२

मामा पप नन सन	सस सस सस सस	नाना पप पप पप	मामा मापध माप माग
न इ ०० पिया ० ०	नइ ० ० प्यारि ० ०	प हि ने० ०० ००	कुसु मि० ० ० ० सारि
सस गग मामा पप	नध नन सस सस	नाना पप पप पप	मापध माप मामा गरस
कु च कि० सु ० ध०	भु० लि० अब ० ०	ल ० ख० रहे ००	वेणी० ०० चङ्० गी००

३

मामा मामा पप पध	पप पप पप पप	नन नन सस सस	नाप पप मामा गग
नयो ० ० नें० ह०	नयो ०० गे० ह०	नव ल० लाल कि ०	नइ ०० प्री ० त०
गग गग मामा पध	पप पप मामा गग	नाना पप मामा गग	मापध माप मामा गरस
अघ ट० म० इ०	से० ज० सो० ००	आ ० ०० नं ० त०	मानो० ० ० सं ० गी००

४

पप पप नन सस	सस सस सस सस	नाना पप पप पप	माप धमाप मामा गग
धु ० धी० के० ० ०	अ ० भु ० ० ० ० ०	तु ० म० बहु ००	ना० ००० य ० क०
सस सस गमा पप	नन नन सस सस	नाना पप पप मामा	मापध माप मामा गरस
श्या० म० रो० ००	स०लो० नो० ० ०	तो ० सो० ०० र ह	त०० ० ० उमं गी००

[पहले हम "तिलक" और "तिलङ्ग" को एक ही जानते थे, परन्तु किसी समय पञ्जाब के बाबा लालसिंह (कठजिह्वा स्वामी) काशी में आये थे और इसी गीत को "तिलक" राग में गाया था। उन्हीं के पास मैंने इसको सीखा। स्वरलिपि आगे दी गई है।]

(१०) तिलक

शुद्ध षाड़व। स र ग मा प न। ढिमा तेताला।

+	२	०	३
रग मामा मामा मामा	मामा गप पप माग	नन नन पप पप	मामा गमाग गमा गग
नयो ० ० प व न ०	नयो ०० बा० द र	नयो ०० सा० ज न	न इ ००० वि० र ह
सस सस गमा पप	नन नन सस सस	नन पप मामा मामा	गमाप गमा गर गरस
न इ ०० मे ह दि०	को० मल हा ० थ ०	न० यो० रं ० ग ०	सु ०० ० ० रं० गी००

अन्तरा

मामा पप नन रर	सस सस सस सस	नन पप पप पप	मामा गमाप माप माग
न ० इ० पिया ० ०	न इ ० ० प्या० रि ०	पहिं नें० ०० ००	कुसु मि० ० ० ० साड़ि
सर गग मामा पप	नध नन सस सस	नन पप पप मामा	गमाप गमा गर गरस
कुच कि० सु ० ध०	भु० लि० अ ब ० ०	ल० ख० रहे ० ०	बेणी० ० ० चढ़ गी००

संचारी

मामा मामा पप पप	पप पप पप पप	नन नन सस सस	नप पध मामा गग
न ये ० ० नेह ००	नयो ०० गेह ००	न० वल ला० लकि	नइ ०० ग्री० त०
रग गग मामा पप	पप पप मामा गग	नन पप मामा गग	गमाप गमा गर गरस
प्रघ ट० भ० इ०	से० ज० सो० ००	अ० ०० नं० ०त	मानो० ०० सं० गी००

आभोग

पप पप नन सस	सस सस सस सस	नन पप पप पप	माप गमाप मामा गग
धुँ० धी० के० ० ०	प्र० भु० ०० ००	तु० म० बहु ००	ना० ००० ०० थक
सस रर गमा पप	नन नन सस सस	नन पप पप मामा	गमाप गमा गर गरस
श्या० म० रे० ००	स० लो० ने० ००	ते० सो० ०० र इ	त०० ०० उमं गी००

(११) तिलक कामोद

षाड़व षाड़व । स र ग मा प न-न ध प मा ग स । झाँपताल ।

मुरारे त्रिभुवन पति इन्द्र सुरन पति धनेश धनपति शेष नाग फनि पति ॥ १ ॥

क्षीर अब दधि सलिल पति कौस्तुभ मणि रत्नपति दिनकर दिननपति नारायण कमलापति ॥ २ ॥

शशी उर गनपति हनुमन्त बलन पति नारद भक्तनपति बीण मृदङ्ग बाजन पति ॥ ३ ॥

कर मिनति कहे श्रीपति चिरञ्जीव रहो छत्रपति अकबर शाहे नरनपति तानसेनताननपति ॥ ४ ॥

(१)

+	।	०	।	×	।	०	।
ग ग	मा मा मा	प प प प	ध माप माग	स न	प प ध	मा प	ग मा ग
मु रा	रे ० ०	त्रिभु व न	प ति० ००	इन् ०	द्र ० सु	र न	प ति ०
र ग	मा प प	न स	र न स	स स	न प प	ध मा	प गमा गस
ध ने	० ० श	ध न	प ति ०	शे ष	ना ० ग	फ णि	प ति ० ० ०

(२)

मा प	न न न	स सस	स स स	र प	मा ग ग	स न	प प प
त्ती ०	रो द धि	स लिल	प ति ०	कौ स्तु	भ म णि	र ल	प ति ०
र ग	मा प प	नस र	न स स	स स	न प प	धध मा	प गमा गस
दि न	क र ०	दिन न	प ति ०	ना ०	रा य ण	कम ला	प ति० ००

(३)

र र	ग मा प	मामा मामा	ग ग ग	मा मा	प प प	धमा प	ग मा ग
श शी	० ० ०	उ र ग न	प ति ०	ह नु	मं त ०	बल न	प ति ०
ग र	स नं पं	नं स र	नं स ०	र ग	मा प प	धध मा	प गमा गस
ला ०	र द ०	भ क्त न	प ति ०	बी ण	मृ दं ग	बाज न	प ति० ० ०

(४)

मा प	न न न	स स	स सस	र र	पमा ग र स	स न	प प प
क र	मि न ति	क है	श्री पति	चि र	जींव र हो ०	छ त्र	प ति ०
र र ग ग	मा प प	नस र	न स स	स न	प प प	धध मा	प गमा गस
अ क ब र	शा ० हे	न र न	प ति ०	ता न	से ० न	तान न	प ति ० ० ०
+		।		०		।	

[इस गीत को ढीमे तेताले में भी गा सकते हैं। चार आवृत्ति का झांपताल और दो का ढीमा तेताला होता है]

(१२) गौड़ सारङ्ग।

मिश्रसम्पूर्ण। स र ग मा म प ध न। चौताल।

माधव मुकुन्द मधु सूदन मुरारे राधा-पति गोपी मन रञ्जन ॥१॥

पतितपावन दीनबन्धु दीननाथ काटत दुख द्वन्द फन्द सुदामा के दुख दारिद्र भञ्जन ॥२॥

गोवर्धन धारि कृष्ण मुरारि काली को गर्व भञ्जन ॥३॥

रवी शशी को ज्ञान ध्यान गुप्त प्रकट कर राखत कजरौटि के अञ्जन ॥४॥

[इस राग में धैवत विवादी है। कोई कोई इसको दिन का बेहाग कहते हैं।]

मप	मप	मप	मप	ध	प	मा	मा	ग	गगमा	रगरमा	ग
सु०	कु०	द०	००	म	धु	सू	द	न	मुरा ०	००००	रे
गमा	गमागा	मप	प	ध	प	मा	ग	रग	रमा	गर	स
रा ०	धा० ०	प०	ति	गो	पी	म	न	र ०	० ०	००	०
सर	गमा	पमा	गर	गर	स	नं	स	ग	रमा	ग	ग
० ०	० ०	० ०	००	ज०	न	मा	०	०	० ०	ध	व

२

पप	प	सस	सस	रस	स	स	स	नध	नध	न	स
पति	त	पाव	न ०	दी ०	न	बं	धु	दी०	न ०	ना	थ
रस	नध	न	ध	प	प	मा	ग	प	धन	रस	स
का ०	ट त	दु	ख	द्वं	द	फं	द	सु	दा०	० ०	मा
न	नध	न	ध	प	मा	मा	ग	ग	माप	माग	रस
के	० ०	दु	ख	दा	रि	द्र	०	भं	० ०	० ०	० ०
सर	गमा	पमा	गर	गर	स	नं	स	ग	रमा	ग	ग
० ०	० ०	० ०	० ०	ज०	न	मा	०	०	० ०	ध	व

३

पप	मामा	गग	गग	गग	गगमा	रगरमा	ग	पमा	गर	गर	सस
गोव	र्ध न	धारि	००	कृष्ण	मुरा ०	०० ००	रि	काली	को ०	ग र	ब ०
सर	गमा	पमा	गर	गर	सस	नं	स	गर	मा	ग	ग
भं०	० ०	० ०	० ०	ज०	न ०	मा	०	००	००	ध	व

४

पप	ससस	सस	सस	नध	रसस	नध	नधप	मामा	गगमा	रगरमा	गरस
रवि	शशीको	ग्यान	ध्यान	गु स	प्रकट	करि	राखत	क ज	रौटि ०	०००	० ००के
सर	गमा	पमा	गर	गर	सस	नं	स	ग	रमा	ग	ग
भं०	० ०	० ०	० ०	ज०	न ०	मा	०	०	० ०	ध	व

३,४

पप मा़मा	गग गग	ग ग गगमा	रगरमा ग	पमा गर	गर सस
गोव र्ध न	धारि ००	कृष्ण मुरा ०	०० ०० रि	काली को०	गर ब०
सर गमा	पमा गर	गर सस	पप स़स़स़	स़स़ स़स़	नध ऱस़स़
सं० ० ०	० ० ००	ज० न ०	रवी शशीको	ग्यान ध्यान	गु ह प्र घ ट
नध नधप	मामा गगमा	रगरमा गपरस	सरगमापमागर	गरस नंस	गरमा गग
करि राखत	क ज रौटि ०	००० ० ००० के	अं० ०० ०० ००	ज० न मा०	०० ० धव

(१३) गौड़-सारङ्ग । धामार।

डफ बाजन लागि रि बहुर ॥१॥ अब देख धुम कानन फेरे किनि बहुर ॥ २ ॥

आपन रि अपने ढङ्ग सों निकसि सोहे लिनि सुधबुध छिनि बहुर ॥ ३ ॥

क धे टे	धे टे	धा आ	ग दि न	दि न	ता आ
+	०	।	०	।	०
प प मा	प प	मा ग	प प प	मा मा	ग ग
बा ० ०	ज ०	न ०	ला ० ०	गि ०	० ०
र मा ग	प प	प प	म प मा	ग र	स र
रि ० ०	० ०	० ०	ब हु र	० ०,	ड फ

२

पप प प	स़ध स़	नऱ स़	न ध प	मप मप	मा ग
अब दे ख	धु० ०	० ० म	का न न	फे० र०	कि ०
र मा ग	प प	प प	म प मा	ग र	स र
नि ० ०	० ०	० ०	ब हु र	० ०	ड फ

३

प	प	प	प	प	स	स	स	स	स	स	स	स	स
आ	प	०	न	०	रि	०	आ	प	न	०	०	०	०
ध	न	न	स	स	स	स	स	स	स	न	न	ध	प
ढ	ङ्ग	०	सों	०	०	०	नि	क	सि	सो	०	हैं •	०
प	स	ध	स	न	र	स	स	स	सन	ध	प	मा	ग
लि	नि	०	०	०	०	०	सु	ध	००	लु	ध	छि	०
र	मा	ग	प	प	प	प	म	प	मा	ग	र;	स	र
नि	०	०	०	०	०	०	ब	हु	र	०	०	ड	फ

(१४) गौड़-सारङ्ग । चौताल और तेताला ।

+	०	१	०	२	३
मा ग प	नधप मगर	गग रस	गमा पस	रस नधप	मप धन
मप ध गमा	धपम गर	गरस नंस	नधप मगर	नंस गगरस	नंस गर१
ग मा पग	माप नस	रस नस	गमा पप	मा ग अर	गग रस
नस गग	रस नन	सध न	सन धप	म प	नधप मगर
धपम गर	गग रस	गग स	रमा प	गमाप नस	रस नध
म प	नध गमप	ग मा	पमा गर	नंसगग रस	नंस गर २

[चौताल में ६ और तेताले में ८ आवृत्तियाँ हैं ।]

(१५) शुहा

शुद्ध षाड़व । स र गा मा प ना । झाँपताल ।

चमत्कार दिदार रचो पर्वरदगार संसार निस्तार क्यों न करता ।।१।।

चतुर चञ्चल चपल अचल करामत चारु चक्रवर्ती चकता ।।२।।

देवन कोकल करन तू इन्द्रदाता उपजो शाहे देवनता ।।३।।

चारयुग जीवो हुमायून को नन्दन अकबरदाता पृथीपालता ।।४।।

स्वरलिपि।

+	२	०	३	+	२	०	३
मा र र च म त्	स स स का ० र	मा गा दि दा	गागा गा ० ० र	मा मा र क्यो	मा मा मा पर वर द	पमागा गा० र	मा र स सं सा र
मा मा निस् ०	प ना प ता ० र	गामामा क्यों न	र र स क र ता;	मा मा च तु	मा ना प र चं ०	ना ना च ल	स स स च प ल
स स अ च	स र र ल क रा	स स म त	प ना प चा ० रु	मा मा च ०	ना प ना क्र ० व	स स ती ०	ना प र च क ता;
मा गा दे ०	मा मा मा व न को	प प क ल	ना प प क र न	मा प तू ०	स स स इन् ० द्र	ना प दा ०	प ना प ता ० ०
मापगा उ प जो	गा गाना शा ० हे	प मा दे ०	र र स व न ता;	ना ना चा रि	ना स स यु ० ग	रना स जी ० ०	स स स वे ० ०
स स हु मा	मा मा र यु न को	स स नं ०	नाप नाप द ० ० न	मामामामा अ क ब र	प स स दा ता ०	र ० स पृ थी	ना प र पा ल ता

(१६) शुहा (सरगम्) झाँपताल। शिक्षकः—पन्नालाल।

स स	ना ना प	मा प	गा मा प	स स	ना मा प	ना गा	मा प प
गा गा	र र स	मा प	ना स स	मापनास	र गा गा	ना प	मा प स;
मा प	ना गा मा	प मा	गा र स	प प	ना मा प	ना गा	माप नागा
मा प	ना स स	मापनास	पनासरगामा	र स	प ना स	ना प	मा प स;

संपूर्ण-षाड़व। हुसेनी टोड़ी। स रा गा म प धा न। न धा म गा रा स। धिमातेताला

सरसती वाकवानी देवी दयानी चहुँचक जानी चहुँ दिसि मन मानी ॥१॥

सुनेहुँ कैलास आनि बोलत अमृत बानी तेरी छवि देखि मुसकिल आसानी ॥२॥

हंस बाहिनी कमलासनी ब्रह्मानी विश्वजननी जगत अम्बिका महारानी ॥३॥

ब्रह्म प्रिया भारती विद्या दानी दीजिए विद्या माँगत रसूलबक्स अज्ञानी ॥४॥

+ ।	० ।	। ।	० ।	। ।	० ।	। ।	। ।
रा गा	मधा नस	नधा प	मगा रास	स स	धां धां	नं स	रा स
वा क	वा ० नी०	दे ० वी	द या ० नि	च हूँ	च क	जा ०	नी ०
गा गा	मप धा	म गा	रा गा	रा रा	स स	धाप धा	म गा
च हूँ	दि० स	म न	० ०	० ०	मा नी;	स ० र	स ती

म म	धा धा	नस स	रा नस	धा धा	न स	रा गा गा	रा स
सु न	हू ०	कैला स	आ ०नि	बो ०	ल त	अ मृ त	बा नी
नस न	स रा स	न धा	रानधाम	रा गा	रा स	धा प धा	म गा
ते री ०	छ वि ०	दे ख	मुस किल	आ ०	सा नी;	स ० र	स ती

३

धा धा	मगा गा	रा गागा	रा स	धां धां	नं स	रा गा	रागा गा
हं स	वाहि . नी	क मला	स नी	ब्र ह्मा	नि ०	वि श्व	ज न नी
म प	धा धा	न धा	म गा	रा गा	रा स	धा पधा	म गा
ज ग	त ०	अ म्बि	का ०	म हा	रा नी;	स ० र	स ती

४

म धा	न स	स स	स स	रा गा	रा स	धा न	स स
ब्र ह्म	प्रि या	भा ०	र ती	वि द्या	दा नी	दी जि	ये ०
रा स	न धा	रा नधा	म पप	नधा म	गा रास	धा पधा	म गा
वि द्या	० ०	भा ग त	र सूल	ब क स	. अ ज्ञानी;	स ० र	स ती

(१८) शुद्ध ओड़व । वृन्दावनी सारङ्ग । सरमापन । झाँपताल ।

अति सुगन्ध मलयज घन सारँग ले आए कुँज मंडल सँचार कासे सूदीन बैठे मदनमोहन सँग लिये राधा प्यारी रति रँजन ॥१॥ जमुनानीर ओ तीर कुञ्ज पुष्प नानाविध मृग खग केलि करत सोभा निरख त्रिविध पवन सुख परस रोमांचित होत छवि ले अँगन ॥२॥

+	।	।	।	।	०	।	।	।	।	+	।	।	।	।	०	।	।	।	।
।	।																		
र	स	न	प	मा	प	मा	र	र	स	स	स	र	स	स	मा	र	प	मा	र
अ	ति	सु	गं	ध	म	ल	य	ज	०	घ	न	सा	रँ	ग	ले	०	आ	ए	०
																		।	।
मा	र	स	स	स	स	नं	र	र	र	मा	मा	र	प	प	न	प	न	स	स
कुं	ज	मं	ड	ल	सं	०	०	चा	र	का	से	सु	दी	न	बै	ठे	म	द	न
।	।	।																	
स	र	स	न	न	प	प	मा	मा	र	प	प	प	प	प	मा	मा	र	स	स
मो	ह	न	सँ	ग	लि	ए	रा	धा	०	प्या	०	री	०	०	र	ति	र	ञ्ज	न

२

										।	।								
मा	र	प	प	प	प	प	न	न	प	स	स	न	न	न	प	प	न	न	न
ज	मू	ना	०	०	नी	रे	ती	०	र	कुं	ज	पु	ष्प	०	ना	ना	वि	ध	०
।	।	।	।	।	।	।	।	।	।						।	।	।	।	।
स	स	स	स	स	र	मा	र	र	स	मा	मा	प	प	प	मा	मा	र	र	र
मृ	ग	ख	ग	०	के	लि	क	र	त	शो	भा	नि	र	ख	त्रि	विध	प	व	न
		।	।	।						।	।								
न	न	स	स	स	न	न	प	प	प	स	स	न	न	न	प	मा	र	स	स
सु	ख	प	र	स	रो	मां	चि	त	०	हो	त	छ	वी	ले	अँ	०	ग	न	०

यह ध्रुपद चौताला व तेताला में गाया जा सकता है।

स्थायी व अन्तरा में छः आवृत्तियाँ हैं; चौताले में दो आवृत्ति व तेताले में तीन आवृत्तियाँ होंगी।

पञ्चम

रात्रि द्वितीय दश दण्ड

चैत्र-वैशाख ।

सूची।

राग नाम।		बोल।	रचयिता।		ताल।
पंचम	—(१)	अनगनफुलिबेलि —		—	चौताल।
आड़ाना	—(२)	गन अगन विचार —		—	चौताल।
”	—(३)	एक तो योवन —		—	धामार।
”	—(४)	सरगम —		—	चौताल व तेताला।
दरबारी कानड़ा	(५)	अचल विराजे —		—	चौताल।
”	—(६)	आज मधुवन में —		—	धामार।
”	—(७)	प्रसादभयो —		—	चौताल।
”	—(८)	बाजत झाँझ मृदङ्ग —		—	सूलताल।
शङ्करा	—(९)	वंशीनाद सुरसाधके —	(बैजू बावरा)	—	चौताल।
”	—(१०)	बरसान में खेलत होरि		—	धामार।
”	—(११)	सरगम —		—	चौताल व तेताला।
बागश्री	—(१२)	गुण समुद्र तामें तन—	(इछावरस)	—	चौताल।
”	—(१३)	चलो खेलिए होरि —		—	धामार।
शोहनी	—(१४)	अगम निगम नित्य नित्य	(चिन्तामणि)	—	चौताल।
”	—(१५)	भीजी मैं तो —		—	धामार।
”	—(१६)	सरगम —		—	चौताल व तेताला।
बेहाग	—(१७)	परब्रह्म गोविन्द नारायण		—	सूलताल।
”	—(१८)	मोहे पाये अकेलो —		—	धामार।
”	—(१९)	सरगम —		—	तेताला।
”	—(२०)	अँखियन जल भरे —		—	चौताल।

दीपक ।

शास्त्र में लिखा है कि पंचानन के पूर्व मुख से दीपक राग निकला है। वसन्त-ऋतु (चैत्र व वैशाख) में दीपक राग को सब समय गा सकते हैं। रात्रि के द्वितीय दश दण्ड के समय इस राग को और अन्यान्य सामयिक रागों को गा सकते हैं। पूर्वाह्न काल को भी वसन्त-ऋतु कहते हैं इसलिए उस समय में भी दीपक राग को गा सकते हैं।

इस राग को शुद्ध रूप से गाने से स्वतः अग्निपात, संक्रामक पीड़ाओं की निवृत्ति और रस का परिवर्तन होता है। प्राचीन गुणियों ने ऐसा कहा है। दादुर (गान्धार) के स्वर से गाने से कदाचित् ऐसे फल हो सकते होंगे।

यह राग प्रचलित नहीं है। पारिजात ग्रन्थ में यह राग ओड़व-सम्पूर्णजातीय ('म' 'न' हीन) और लुप्त कहा गया है। किसी किसी का मत है कि यह राग मिश्र षाड़व जातीय अर्थात् 'सगमापधन-धपमागरस' है।

आग्नेयरससंयुक्तो कालाग्निर्विषमुत्कटः ।
प्रदीपयेद्वा यो नित्यं दीपकश्च ततः स्मृतः ॥
आधाराच्च महान् षष्ठो दीपकस्य समुद्भवः ।
महेशवल्लभः पुत्रो नीलो विष्णुपराक्रमः ॥

महेशचन्द्र सरकार ।

सम्पूर्णो दीपको जातः भिन्नकैशिकमध्यमात् ।
गपाल्पः सग्रहोमान्तः संकीर्णो दीप्तमध्यमः ॥

रत्नाकर ।

('र' हीन) धन्नाशिकैवोच्चतरा दीपकोऽन्यैर्बुधैः स्मृतः ।

रत्नाकर ।

आरोहे म-नि-वर्ज्जः स्याद्दीपको मालवोत्थितः ।
गान्धारोद् ग्राहसंयुक्तः संन्यासांशविभूषितः ॥

संगीत पारिजात ।

रत्नाकर के मत से दीपक सम्पूर्ण और पारिजात के मत से ओड़व सम्पूर्ण देखा जाता है। जब प्राचीन काल ही में इस प्रकार का मतान्तर देखा जाता है तो आज-कल अन्यान्य रागों का परिवर्तन कुछ अस्वाभाविक नहीं है।

दीपक के स्थान में कभी कामोद, कभी पंचम, कभी पटमञ्जरी और कभी प्रदीपिका शब्दों का व्यवहार देखा जाता है।

(१) पञ्चम ।

मिश्र षाड़व । स रा गा ग मा म धा ध ना न । चौताल ।

अनगन फुलिबेलि कानन की तुम हो चलो क्यों न राधेश्याम सङ्गजोरि ॥१॥
माननी को मान निक लागे बल गई संग चलिवे को वृषभान किशोरि ॥२॥
मधुवन विन्दरावन कुञ्ज कुञ्जन में वंशीवट यमुनातट अत मचि होरि ॥३॥
व्रज की सखि सब खेलन निकसी बनि बनि अति बनि श्यामरि गोरि ॥४॥

(दोनों मध्यम एक साथ ललित में लगते हैं; वसन्त में नहीं लगते । वसन्त में आरोहण में एक मध्यम और अवरोहण में दूसरा लगता है । आगे का नोट देखिए)

+		०		१		०		२		३	
स	स	ग	ग	म	ध	न	ध	गामा	गामा	गामा	स
फु	०	लि	०	बे	०	लि	०	का ०	न ०	न ०	की
											।
स	स	गामा	गामा	मा	मा	ग	ग	म	ध	न	स
तु	म	हो ०	० ०	च	लो	क्यों	न	रा	०	धे	०
		। ।	। ।								
ध	न	सन	रास	नधा	ममा	ग	मा	नध	म	मग	स;
श्या	म	सं०	० ०	ग ०	० ०	जो	रि	अन	०	गन	०

२

		।	।	।	।	।	।	।	।		
मा	धा	स	स	स	स	स	स	स	स	नध	मग
मा	न	नी	०	को	०	मा	न	नि	क	लाग	० ०
मा	मा	गा	मागा	ग	ग	ग	ग	म	ध	न	स
ब	ल	ग	इ ०	स	ङ्ग	च	लि	बे	०	को	०
		।	। ।								
ध	न	सन	रास	नधा	ममा	ग	मा	नध	म	मग	स;
वृ	ष	भा०	० ०	नु ०	कि ०	शो	री	अन	०	गन	०

३

मा	गामा	गामा	गामा	गामा	धा	मा	धाना	धा	मा	गामा	गामा
म	धु ०	व ०	न ०	विं ०	द	रा	० ०	०	०	ब न	० ०
स	ससं	नध	मग	स	स	स	सस	नं	सरा	नं	धं
कु	जकुं	ज न	मे ०	वं	शी	०	ब ट	य	मुना	त	ट
सस	राग	मा	मा	ममा	ममा	ग	मा	नध	म	मग	स;
अ त	० ०	म	चि	० ०	० ०	हो	रि	अ न	०	गन	०

४

म	ध	न	स	स	स	स	स	स	स	स	स
ब्र	ज	की	०	०	०	स	खि	०	०	स	ब
स	स	ग	ग	नध	मग	गामा	गामा	मा	धा	ना	ना
खे	०	ल	न	निक	सि०	ब नि	ब नि	अ	त	ब	नि
ध	न	सन	रास	नधा	ममा	ग	मा	नध	म	मग	स
स्या	म	रि ०	० ०	० ०	० ०	गो	रि	अ न	०	गन	०;

[मालकोष, हिण्डोल और ललित या वसन्त इन तीनों रागों से पञ्चम बना है। इस गीत के हर एक पद के अन्त में ललित का सुर है; उसको वसन्त कर सकते हैं। अर्थात् जो ललित का "न रा स न धा म मा ग मा" है उसको वसन्त का "न रा स न ध म ग मा" कर सकते हैं। यही गुरु का उपदेश है।]

(२) आड़ाना।

शुद्ध सम्पूर्ण। स र गा मा प धा ना। चौताल।

[सम्पूर्ण जाति होने पर भी इसके आरोहण में रिषभ अर्थात् "रगामा" और धैवत् अर्थात् "धानास" और अवरोहण में "नाधाप" और "गारस" का व्यवहार नहीं होगा। इसलिए गुणी लोग कहते हैं कि इसमें सारङ्ग की छाया रहेगी]

गन अगन विचार पाइये गुरुमुख धाइये लघुगुरु शुभ अशुभ वरन को प्रमान ॥१॥
राग तान की धरन शुध मुरछन की मरम तासो आलाप करत धुरपत ताल काल को प्रमान ॥२॥
स्थायी आरोही अवरोही और सञ्चारी प्रथम चारो वरन कहिये मुरछना अलङ्कार को प्रमान ॥३॥
ओड़ोषाड़ो ग्रह अंश न्यास बहुतार मन्द्र अल्प अपन्यास दशविध आलाप को प्रमान ॥४॥

+	०	१	०	२	३
मामा मामा वि० च०	पमाप मागा ० ० ० ० र	माप सस पाइ ये०	धाना पप गु ० र०	मामा पमागा ० ० ० ० ०	मामा मामा सु ० ख ०
धाना पप धा इ ये०	माप गामा ० ० ० ल	पमा पप घु ० गु०	मागा धाना रू० शु०	पप धाना भ० अ ०	पप पप शु० भ०
नापमापमागा व र न ० ० ०	गामा पप को० ००	रस सस प्रमा ० न	मागा मागा ग ० न ०	मागामा रर अ ० ० ग०	सर नांस न० ० ०;

२

मामा पप रा ० ००	पप नाना ग० ता०	सस सस ० न ० ०	रनास स की० ० ०	स स सस ० ० ध र	सस सस ० ० न ०
सस सस शु ध ० ०	रर रर सु० र०	सस सस छ० न०	नास र र की ० ००	धाना पप म ० र०	पप पप म० ००
नाना पप ता ० सो०	गागामा पप आला० प०	रर सस कर त ०	मामा पप धु ० ० र	नाना नाना प ० द ०	सस सस ता ० ० ल
धाना पप का ० ल०	गामा पप को० ००	रस सस प्रमा ० न	मागा मागा ग ० न ०	मागामा रर अ ० ० ग०	सर नांस न० ००;

३, ४

नाना पमा स्था० यी०	पप पप आ० रोही	धाना धाना अ ० ब ०	पप पप रो० ही०	सस सस और सं०	धाना पप चा० रि०
पपपमा पप प्रथम० चा०	मागा मामा रो० वरन	पप मागा कहि ये०	गागागामाप सु ० र ० ०	रर सस छं० न०	नाना नाना अ ० लं ०
पप पप का० र०	गागा माप को० ० ०	रस सस प्रमा ०न;	नाना सस ओड़ो षाडो	सस रस ग्र ह अंश	सस सस न्या० स ०
सस रर ब हु तार	सस धानाप मन्द्र अल्प	पप पप अप न्यास	मामा मार द श ० ०	सस सस बिध ० ०	सस सस आ० ० ०
धाना पप ला ० प०	गामा पप को० ००	रस सस प्रमा ० न	मागा मागा ग ० न ०	मागामा रर अ ० ० ग०	सर नांस न० ० ०;

[तीसरा भाग गाकर "गण अगण" कह कर सम रख सकते हैं। ३,४ भाग को एक साथ गाकर भी "गण अगण" कह कर गीत को शेष कर सकते हैं। ३ भाग को गाकर सम् रखने से चौथे को सम् से आरम्भ कर सकते हैं परन्तु उसको एक आवृत्ति में भाग कर लेना पड़ेगा, जैसे—ओड़ो, खाड़ो, ग्रह, अंश, न्या, स,...]

[३] आड़ाना । धामार ।

एक तो योवन मदमाति दुजे फागुन तिजे उन बिन बचे कौन चतुर सुघर रङ्ग रच्यो ॥१॥
पाँचहि मदन मोहन षटरस भरे सात सखा सङ्ग लिये डोलत आठ जाम होरि रङ्ग मचेओ ॥२॥
नवल हि कुंज में दश दिश रङ्ग भरे ग्यारहि गारि गावत बारह बार तेरे सचेओ ॥३॥
चउदहि भुवन के ठाकुर हैं हरि पनरहि पाछे भक्तन हितकारि सोलह कला सम्पूर्ण रचेओ ॥४॥

+			०		।		०			।		०		
क	धे	टे	धे	टे	धा	आ	ग	दि	न	दि	न	ता	आ	
।	।	।		। ।										
स	स	र	ना	सर	धा	ना	प	प	प	मा	पप	धाना	प	
ए	०	०	०	० ०	क	०	तो	०	०	यो	बन	म ०	द	
			।	।	।	।								
ना	ना	ना	स	स	स	स	गा	मा	प	र	र	स	स	
मा	०	०	ति	०	०	०	दु	जे	०	फा	०	गु	न	
स	र	मा	मा	मा	मा	मा	प	प	मा	प	मा	गा	गा	
ति	०	जे	उ	न	बि	न	ब	चे	०	क	०	औ	न	
मा	ना	प	प	मा	पमा	गा	गा	मा	प	र	र	स	स	१
च	तु	र	सु	०	घ ०	र	र	ङ्ग	०	र	०	चे	ओ	
										।	।	।	।	
मा	प	प	धा	ना	ना	प	ना	ना	ना	स	स	स	स	
पा	च	०	हि	०	०	०	म	द	न	मो	०	ह	न	
।	।	।	।	।	।	।	।	।						
स	स	स	र	स	स	स	र	स	धा	ना	ना	प	प	
ष	ट	०	र	स	०	०	भ	रे	०	०	०	०	०	
ना	ना	प	मा	प	मा	गा	गा	मा	प	र	र	स	स	
सा	०	त	स	खा	सं	ग	लि	ये	०	डो	०	ल	त	
।	।	।	।	।										
मा	मा	र	स	स	धाना	प	गा	मा	प	र	र	स	स	२
आ	०	ठ	या	म	हो ०	रि	र	ङ्ग	०	म	०	चे	ओ	
गा	गा	मा	ना	ना	ना	ना	गा	मा	प	र	र	स	स	
न	व	ल	हि	०	०	०	कुं	ज	०	०	०	मे	०	
	।	।	।	।	।	।		।	।					
ना	स	स	र	स	स	स	ना	स	र	धा	ना	प	प	
द	श	०	दि	श	०	०	र	ङ्ग	०	भ	०	रे	०	

मा	प	प	स	स	स	स	धा	ना	प	गा	गा	मा	प
ग्या	र	०	हि	०	०	०	गा	०	रि	गा	०	व	त
ना	प	प	मा	प	मा	गा	गा	मा	प	र	र	स	स ३
बा	र	ह	बा	०	०	र	ते	रे	०	स	०	चे	ओ
मा	मा	प	धा	ना	प	प	ना	ना	ना	स	स	स	स
च	उ	द	हि	०	०	०	भु	व	न	के	०	०	०
स	स	स	र	र	स	स	ना	स	र	स	स	स	स
ठा	कु	र	हैं	०	ह	रि	प	न	र	हि	०	०	०
धा	ना	प	प	प	प	प	गा	मा	प	र	र	स	स
पा	०	०	छे	०	०	०	भ	क्त	न	हि	त	का	रि
मा	मा	र	स	स	धाना	प	गा	मा	प	र	र	स	स ४
सो	ल	ह	क	ला	स ०	म	पु	र	न	र	०	चे	ओ

(४) अड़ाना । चौताल और तेताला ।

धा नाप	माप गा	मामा पमा	पस नास	धा सधा	आना माप
नास रधा	आना पमा	पगा माप	रस रनां	सर मागा	आप माप;
माप नामा	पना गा	मास आस	ना स र स	धा नामा	पना सर
गा गामा	आना पमा	पगा माप	रस रनां	सर मागा	आप माप;
गामाप मापना	गामाप मापधा	नाप मामाप	सना सधा	नास रधा	नास रगा
गाआ माआ	आना पमा	पगा माप	रस रनां	सर मागा	आप माप;

(५) दरबारी कानड़ा । शुद्ध सम्पूर्ण । स र गा मा प धा ना । चौताल ।

अचल विराजे हो सिंहासन बैठे राजाधिराज राजाराम पृथ्वी पर ॥१॥

तख़त बख्त तुम दिनों करतार निस्तारन करन को आनन्द भयो त्रिपुर घर घर ॥२॥

अनेक अनेक भांतन को नग नग तख्त शोभा देत मानो इन्द्रजीत झलक झरे ॥३॥

शाहे को निशान रच्यौ करतार तुम एक नर स्तुति करत काँपत हृदय थर थर ॥४॥

(इस राग में रिषभ अति तीव्र है और "रसर," "धानाधा," "नाधाप" संगति है। धैवत् को छोड़ कर और सब सुर स्वाधीन भाव से लग सकते हैं; इसी लिए किसी किसी ने धैवत को विवादी कहा है।)

+	०	१	०	२	३
स नांधां	नांधां पं	मां पं	धां नां	स रसर	गा गा
वि रा ०	० ० ०	जे ०	० ०	० ०००	हो ०
रस र	स स	स स	गा गा	मा प	प मापधानाधा
सि० हा	० ०	स न	बै ठे	रा ०	जा ०००००
पमा प	मा गा	र स	स र	स धांनां	स स
धि० रा	० ०	० ज	रा जा	० रा ०	० म
मागा मागा	रस र	स स	मा गा	र स	नांस नांसर;
पृ ० थ्वी ०	० ० प	र ०	अ च	ल ०	० ० ० ० ०

अन्तरा

स स	ना स	स स	रना सना	धाना धा	ना स
त ख	त ब	ख त	तु ० म ०	दि ० ०	नो ०
स नाधा	नाधानाधाप	नाधा नाधाना	धाना धाप	धानाधानाधाप	प मापमागा
क र ०	ता ० ० ० र	बि स ता ० ०	र ० ० न	क ० ० ० ० र	न को ० ० ०
गा गा	मा प	धा नास	मींड आनाधापमा	प मा	गा गार
आ ०	नं द	भ यो०	त्रि ० ० ० ०	पु ०	र ० ०
गा* गा	र स	र स	धां नां	स स	स स
गा गा	रस र	स स	मा गा	र स	नांस नांसर;
ध र	० ० ध	र ०	अ च	ल ०	० ० ० ० ०

संचारी आभोग।

नानानाधधध	नानाधापपप	मामापमागा	गागागा मागार	सस ससस	नांनांनां ससस
अ ने क अ नेक	भाँ० ० तनको	न ग न ग ०	त ख त शोभा०	दे ० त ० ०	मा ० नो ० ० ०
गागागा गागा	रसर सस	नानानानाना	सस्र ससस	नासर सनध	नाना धापप
इं ० द्र जित	झलक झरे;	शाहे को० नि	शान र चेश्रो	क र ० ता० र	तु ० ० म०
मागा मागा	रस ररस	धांधांनांसस	गागा ररस	रस मागागा	रस नांस नांसर;
ए क न र	स्तुत करत	काँ ० ० प त	हृदय थ र०	थ र अ च ०	ल० ० ० ० ० ०

[* अन्तरा की तीसरी आवृत्ति में दो प्रकार के तान हो सकते हैं। नीचे की स्वरलिपि दूसरे प्रकार की है।]

(६) दरबारी कानड़ा । धामार ।

आज मधबन में कानह्रा बन बन खेलत फाग ॥१॥
मेरि चुनरिया बोर गयो रङ्ग में मैं भिङाऊँ वाकी पाग ॥२॥
तत वितत घन सुखिर बाजत गावत कान्हड़ा राग ॥३॥
जिन जिन मुरलि की भनक सुनि है धन्य धन्य वाको भाग ॥४॥

प	मा	गा	मा	मा	प	प	माप	धा	ना	गा	गा	र	स
का	न	ह्रा	ब	न	ब	न	खे०	०	०	ल	०	त	०
र	र	स	नां	नां	स	स	सस		रर	सर	गा	माप	मा
फा	०	ग	आ	०	०	ज	मध		बन	में	०	००	०

अन्तरा ।

मा	प	धा	ना	ना	स	ना	सस	स	स	नास	र	स	ना
मे	०	रि	०	०	०	०	चुन	रि	या	बो०	र	ग	यो
धाना	धाप	प	प	प	मा	मा	पधा	ना	सां	नाधापमा		गार	स
र०	०ङ्ग	में	०	०	मैं	०	भिङा	०	ऊँ	००००		वा०	की
र	र	स;	नां	नां	स	स	सस	र	र	सर	गा	माप	मा
पा	०	ग	आ	०	०	ज	मध	ब	न	में०	०	००	०

सञ्चारी आभोग

मा	मा	प	प	प	धा	धा	ना	धा	प	मा	प	धा	ना
त	त	वि	त	त	ध	न	सु	खि	र	बा	०	ज	त
गा	गा	गा	मा	मा	प	प	मा	गा	र	स	र	स	स
गा	०	०	व	त	०	०	का	०	न	ह	रा	रा	ग
मा	प	धा	ना	ना	सस	ना	स	स	र	स	स	स	र
जि	न	०	०	०	०जि	न	मु	र	लि	की	भ	न	क
स	स	स	ना	धा	प	प	मा	प	प	धा	ना	गागारस	
सु	नि	०	है	०	०	०	ध	न्य	०	ध	न्य	वाको ००	
र	र	स	नां	नां	स	स	सस	र	र	सर	गा	माप	मा
भा	०	ग;	आ	०	०	ज	मध	ब	न	में०	०	००	०

(७) दरबारी कानड़ा । चौताल ।

प्रसाद भयो प्रसिद्ध शाह को अब दीनो दीन मणि दीन दूनि के अचल ॥१॥

दाता विधाता दियो ताहे तुमको प्रसन्न भयो नरपति भूपति छत्रपति जलालउद्दीन को दोनों जल थल ॥२॥

आलमगीर अल्लाह की नूर दीन जगत के प्रति पालक तख़्त बैठे पूरो बख़्त अचल ॥३॥

लाल कहै षट दरसन निवास गुरुन गुरु सांच्यो शाह जो है प्रताप प्रबल ॥४॥

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
धांनांधांनां	धां	पं	पं	मां	पं	धां	नां	स	स	स	स
भ ० ० ०	०	यो	०	प्र	०	सी	०	०	०	धी	०
नां	स	रस	र	गा	गा	र	स	र	स	स	स
शा	०	हे ०	०	को	०	अ	ब	दी	०	नो	०
मागा	मा	प	पमा	प	प	धाना	धानाधा	प	प	मा	प
दी ०	०	०	न ०	म	नी	दी ०	० ० ०	न	०	दु	०
पधानाधापमागा		र	सर	स	स	र	स	रस	नांस	धांनां	सरस
० ० ० ० ० नी ०		की	०अ	च	ल	प्र	सा	० ०	० ०	० ०	० ०द

२

			।	।	।	।	।		।	।	।
स	स	ना	स	स	सना	स	स	ना	स	स	सना
दा	०	ता	०	०	० ०	वि	धा	०	०	ता	० ०
।	।	।	।		।	।	। ।				
स	र	स	स	ना	स	र	र स	नाधा	नाधाप	प	प
दि	यो	ता	०	हे	०	०	० ०	तू ०	म ० ०	को	०
			।	। ।					।	।	।
प	धा	ना	स	सस	नाधा	नाधा	नाधा	ना	स	स	स
प्र	सं	०	न	भयो	० ०	न ०	र ०	०	०	प	ति
।	।	।	।								
र	स	स	स	नाधा	नाधा	प	प	माप	धाना	धाप	मागा
भू	प	ती	०	छ ०	० ०	त्र	प	ति ०	० ०	० ०	० ०
र	सर	स	स	स	स	ना	ना	ना	ना	धाप	मागा
ज	०ला	लू	दी	०	न	को	०	दो	नों	० ०	० ०
गा	गा	र	स	र	स	र	स	र	नांस	धांनां	सरस
ज	ल	०	०	थ	ल	प्र	सा	०	० ०	० ०	० ०द

संचारी

मामा मामामा	पप पपप	धाना धापप	पमाप मागा	रस रर	सस ससस
आल मगीर	अला कीनूर	दी ० ०० न	जगत के ०	प्रति पा०	लक ०००
नासर सरगा	मागा ररस	धांनां सस	रर सस	रस रनांस	धांनांसरस
तखत बै०ठे	पूरो ०००	वक्त ० ०	अ० चल	प्रसा ०००	० ० ००द
				सना सस	सस सस
				लाल ० ०	कहे षट

आभोग

नास सस	नास रनाध	नाधाप पप	मापधापमागा	रस रर	सस सस
दरसन	नि० ०वास	गुरुन गुरु	सा० ०चो० ०	शा० हे०	जो० है ०
स स	नासरसनाधा	धा नाधाप	मापधापमागा	गा र	सनांसधांनांसरस;
० प्र	ता०००० प	० प्र ० ०	ब० ० ००ल	० प्र	सा० ० ० ० ० ०द

(८) दरबारी कानड़ा । सूलताल ।

बाजत झाँझ मृदङ्ग तानधून रवावखटतारी कानन बीन ॥ १ ॥

करत परन भेद तादितथुन्ना तक् थङ्गा तका थुङ्गा तग् दि तक् धिधिकट धुमकिटि गदि घिन् नग् दितूधा किटिगदिघिन् नगदितूधा किटि गदि गेन नगदित् ॥ २ ॥

धरन मुख मुद्रा निरखत सब गुनि जन आहत अनाहत को व्येवरे न पावे गुरु विन ॥ ३ ॥

गीत संगीत धरत धारु धुरपद धूआ करत विचर अति प्रवीन ॥ ४ ॥

+	।	०	।	।	।	।	।	०	।
नां	स	र	स	धांनां धांनांधां		पं	धां	नां	स
बा	०	ज	त	झां० ० ० ०		झ	मृ	द	ङ्ग
मागा	रगा	मा	प	प	प	पधा	नाधा	प	प
ता ०	० ०	न	धू	०	न	रवा	० ०	०	व
पधा	ना	ना	गा	गा	गा	गामागा	रस	र	स
खट	०	०	ता	०	रि	का००	नन	बी	न;

अन्तरा

मा	प	धा	ना	स	स	ना	स	स	स
क	र	त	प	र	न	भे	०	द	०
स	स	र	र	स	स	नास	रस	धाना	धाप
ता	०	दे	०	०	त	धुँ ०	० ०	ना ०	० ०
धाप	पप	ना	धाप	प	पप	प	पप	मामा	पप
त क	धुँ ०	गा	तक्	का	थुं०	गा	तक्	दि त्	तक
माप	माप	मामा	गागा	गागा	गागा	मागा	रर	मागा	रर
धिधि	के टे	धु म	के टे	ग दि	धि न	न ग्	दित	धा ०	किटि
रर	रर	मागा	रर	गागा	रर	गार	सस	रर	सस;
गदि	घिन्	न ग्	दित	धा ०	किटि	गदि	धि न्	नग	दि त्

संचारी

मा	मा	मा	प	मा	पमा	प	मा	धा	धा
ध	र	न	मू	र	न०	मु	द्रा	०	०
ना	ना	स	स	स	स	नास	रस	ना	धा
नि	र	ख	त	स	व	मुनि	० ०	ज	न
ना	धा	प	प	मा	गा	र	र	स	स
आ	०	ह	त	अ	ना	ह	त	को	०
ना	ना	ना	ना	गा	र	र	स	र	स
बे	ओ	रे	ना	पा	वे	गु	र	बि	न;

आभोग

मा	प	धा	ना	स	स	स	स	स	स
गी	०	त	०	०	सं	गी	०	त	०
स	र	गा	गा	गा	गा	धा	ना	स	स
ध	र	त	०	०	०	धा	०	रू	०
ना	धा	प	प	धाना	धाप	मा	प	धा	ना
धु	र	प	द	धू ०	आ०	क	र	त	०
स	स	स	गा	गा	र	र	स	र	स
वि	चा	०	र	०	अ	ति	प्र	वी	न;

शङ्करा

(९) षाड़व सम्पूर्ण। स ग म प ध न—न ध प म ग र स।

चौताल।

वंशी नाद सुर साधके बजाइ प्रवीन कनहाइ सप्त सुर मधुर तान ध्वनि मानि ॥१॥

श्रवण सुनत कछु सुध न रही आलिरि भनक पड़ि मेरो कानन ध्वनि सुनि ॥२॥

तन मन रोम रोम ब्याकुल भइ रि जीत लिये गन्धर्व नारद मुनि गुनि ॥३॥

बैजु कहे प्रभु नर नारी पशु पच्छी मोहे और मोहे सुर नर मुनि ॥४॥

(इस राग में अतितीव्र निषाद का व्यवहार होता है।)

+		०		१		०		२		३	
।	।	।	।								
र	र	स	स	न	ध	प	प	प	नध	न	न
वं	०	शी	०	ना	०	द	०	सु	र ०	सा	ध
म	ग	म	ग	र	स	सस	स	गग	पमग	मप	प
के	०	ब	जा	०	इ	प्र बी	न	कन्	हा००	००	इ
				। ।	।	।					
पप	ध	प	प	सस	स	स	न	ध	न	म नध	पमग
सप्	त	सु	र	म धु	र	ता	न	ध्व	नि	मानि ०	०००

अन्तरा।

		। ।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
मप	न	सस	स	स	स	ग	र	स	स	स	स
श्र व	ण	सु न	त	क	छु	सु	ध	न	०	र	हि
।	।										
स	स	न	ध	नध	प	प	प	मप	ध	म	प
आ	०	लि	०	रि०	०	०	०	भन	क	प	ड़ि
			।	।	।	।				।	
म	प	न	सन	स	स	स	न	ध	न	सनध	पमग
मे	•	रे	० ०	का	०	न	न	ध्व	नि	सुनि०	०००;

सञ्चारी।

स	स	ग	ग	पमग	मप	प	प	मप	ध	प	प
त	न	म	न	रो००	००	०	म	रो०	०	०	म
				। ।	।	।	।	।	।	।	।
प	नध	न	न	स स	स	ग	र	स	स	स	स
ब्या	० ०	कु	ल	भ इ	रि	जी	त	लि	ये	०	०
										।	
न	न	धप	मग	स	स	ग	ग	म	न	गनध	पमग
गं	०	ध०	वैं०	ना	०	र	द	मु	नि	गुनी०	०००;

आभोग।

				।	।	।	।	।	।	।	।
म	प	न	न	स	स	स	स	स	स	स	स
वै	०	जु	०	०	०	क	हे	०	प्र	भु	०
। ।	।	। ।									
ग र	स	स स	नध	म	नध	न	न	ध	प	म	ग
न र	०	ना री	० ०	प	शु०	प	न्छी	०	०	मो	हे
						।	।		।		
सस	स	ग	ग	पमग	मप	स	र	न	र	मनध	पमग
औ०	र	मो	०	हे००	००	सु	र	न	र	मुनि०	०० ०;

(१०) शङ्करा। धामार।

बरसाने में खेलत होरि श्री वृकभान किशोरी ॥१॥

कोउ चन्दन बन्दन अतर अरगज अबीर गुलाल लिये भर भोरि ॥२॥

कोउ गावत कोउ मृदङ्ग-बजावत धुम मचि नन्द राय के पुरि ॥३॥

उतते सखा सङ्ग लिये कृष्ण प्रभु रङ्ग छोड़त पिचकारिन बोरि ॥४॥

र	स	स	न	ध	प	प	म	न	न	ध	न	स	न
ब	र	सा	ने	०	में	०	खे	०	०	ल	त	हो	रि
धप	म	ग	र	स	ग	ग	म	प	प	न	न	सन	धप
श्री०	०	०	०	०	बृ	क	भा	०	०	न	कि	शो०	री० १
म	प	प	न	नन	स	सस	न	ध	प	म	न	ध	न
को	उ	०	च	न्दन	ब	न्दन	अ	त	र	अ	र	ग	ज
ग	र	स	स	स	स	स	न	ध	प	म	न	सन	धप
अ	बी	र	गु	ला	०	ल	लि	ये	०	भ	र	झो०	रि० २
स	स	ग	म	प	प	प	म	न	न	स	न	ध	प
को	उ	गा	व	त	को	उ	मृ	द	ङ्ग	ब	जा	व	त
र	स	स	न	ध	प	प	म	न	न	धध	न	सन	धप
धु	०	म	म	चा	इ	०	न	न्द	०	राय	के	पु०	रि० ३
म	प	न	स	स	स	स	न	न	न	ध	प	म	न
उ	त	ते	स	खा	स	ङ्ग	लि	ये	०	कृ	ष्णा	प्र	भु
ग	र	स	स	स	न	ध	म	न	न	ध	न	सन	धप
छो	ड़	त	र	ङ्ग	०	०	पि	च	का	रि	न	बो०	रि० ४

(११) शङ्करा । चौताल और तेताला ।

+		०		१		०		२		३	
स	नध	मन	धन	मध	मग	मग	रस	गग	म	प	मध
पन	धप	मप	नस	गम	प	ध	प	मन	धप	मग	रस १
मप	नस	रस	नस	ग	म	ग	रस	नस	धन	मपन	मधग
मन	ग	मप	नस	नध	मन	मध	पध	नध	मप	मग	रस २
गम	धप	मन	धन	मप	नस	मध	पम	गम	प	गम	पन
धन	मन	रन	धप	मप	सन	मध	मप	मन	पध	मग	रस ३
नन	धन	मप	नस	नस	ग	मग	रस	पध	नम	नध	पस
मध	न	मध	ग	मध	नग	मप	नग	मधन	मधप	मधम	गरस ४
पप	मप	नधप	मग	मध	पप	म	ग	पम	ग	मध	प
गम	नध	मन	ध	रर	सन	मन	धन	मध	मप	मग	रस ५
धपम	नधप	मधन	मप	नध	मनध	नमप	धग	मप	मगरस	मगरस	मगरस६

(१२) बागश्री ।

चैाताल ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स र गा मा प ध ना ।

गुण समूद्र तामे तन जहाज मन सौदागर ले चलो साँस पवन कि जोर ॥१॥ गमक बादि बानी सप्त सुर लङ्गर पड़े सुर ना खोदा सुरत ऐनक किये चितमन मगर बिबाद कि ओर ॥२॥ चारि तखत चारि कोट में अच्छर मोति नग जवाहिर और सूवर्ण भरे तान सङ्गत गुरुबरकला धरनि निरखि और धोर ॥३॥ ऐसो धुरपद जहाज सों पुरो छत्रपति महम्मद शाह जान के ले आये इच्छा बरस सुनत हि गिन दिये लाख कड़ोर ॥४॥

+	०	१	०	२	३
मीड़					
स मा	मा मा	प मा	गा गा	मागा मागा	मार स
ता ०	मे ०	त न	० ०	ज ० हा ०	० ० ज
सस नां	रस स	नां धं	पंधं नां	स स	स स
म न् ०	०सौ ०	दा ०	०० ०	० ०	ग र
मीड़					
स मा	मामा पमा	प मा गा	गा गा	धध पध	ना धपमा
ले ०	च लो ० ०	साँ ० स	० ०	प व ०न	कि ० ० ०
माधपना	धप मागा	मागामागामारस	मा गा मा प मा	गामा गामा	रस सस
० ० ० ०	० ० ० ०	जो ० ० ० ० ० र;	गु ण ० ० ०	० ० स ०	मुं० द्र ०

अन्तरा ।

नानानाध	पध नास	सस सस	स स	स र स र	मागामा र स
ग म क ०	०० ० ०	बा ० दि ०	वा नि	स स ० ०	सु ० ० र ०
र स	सना स	ना ध प ध	ना ध प मा	गामा गामा गा	मार रर
लं ग	र ० प	ड़े ० ० ०	सु र ० ०	ना ० खोदा ०	सु ० र त
	मीड़				
ससस स	सस मामा	मा मा मा मा	ध ध ध प	धध पध	ना धप मा
ए ० न क	किये ० ०	चि त म न	म ग र ०	विबा ०द	कि ० ० ०
माधपना	धप मागा	मागामागामारस	मागामा पमा	गामा गामा	रस सस
० ० ० ०	० ० ० ०	ओ० ० ० ० ० र;	गु न ० ० ०	० ० स ०	मुं० द्र ०

सञ्चारी-आभोग ।

धधनन न चारत ख त	प धपमागा चारि को ट में	मागा मारर अ न रमोति	सस सस सस न ग जवा हि र	स सस ससनां औ र ० सु वर्ण	सनांधं पंधांनांस भ रे ० ० ० ० ०
ससररर ता नसङ्गत	गागाररसस गु रू ब र क	र स सस ला० ० ०	धधध नानाना ध र नि नि र खि	धधधमाधपनाध और धो० ० ० ०	पमागा मारस ० ० ० ० ० र
नाना नाना ऐ ० सो ०	पध नास ०० ० ०	स स स सना धु र पंद ज ०	सस सस हाज सो०	समा गागा पु रो ० ०	मार रर छ त्र पति
सससससस म ह म् म द	सस नाना शाह ० ०	धध नाध जान के ०	नाध प मागा ले ० आ ० ये	गा मा गामा इं ० छा ०	र र सस ब र स०
मीड़ ससससमा सु न त हि	धधधनाध गिनदि ये ०	धधध ना ला०ख क	माधपनाधपमागामारस ड़ो ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० र	मा गा मा पमा गु न ० ००	गामार सस स ० मुं द्र ०

[इस गीत को भीमपलश्री में भी गा सकते हैं।]

(१३) बागश्री । धामार ।

चलो खेलिये होरि ब्रज में कुँअर कन्हाइ ॥ १ ॥

अनेक भाँतन के बसन पहिर के बनिता बन बन आँइ ॥ २ ॥

ना ध प खे लि ये	मा गा हो ०	र स ० रि	सस नांधं ब्र ज में ०	पंधं नां ० ० ०	स स ० ०
मा मा मा कुँ अ र	धप ध ० ० ०	ना ध ० ०	पमा गामा कन्हा ० इ	समाधमा चलो ० ०	ध ध ० ०

अन्तरा

ना धना स अ ने० क	स स भाँ तन	स स के ०	मागा मार स ब स न० ०	स स प हि	ना धप र के०
मा प स ब नि ता	ना ध ब न	ध ना ब न	धप मा गामा; आँ० ० ० इ	समा धमा च ० लो०	ध ध ० ०

(१४) शोहिनी । चौताल ।

ओड़व षाड़व स ग मा ध न। न ध मा ग रा स।

अगम निगम नित्य नित्य कर गुण गावत गोविन्द कि जो नर गुरन सों सिखे वानि ।।१।। साधु सन्त नाम रटत नारद मुनि ब्रह्मा शिवादि आकाश पवन पानि जीव जन्तु नित्य नारायण के अधर तें उद्धारत अवमानि ।। २ ।। खाड़ो राग गुणी गावत पञ्चम सुर बरज करत शोहनी वा-को कहावत चिन्तामणि बरण बखानि; सनधमा ध ग मा ग रा स मामा ग मा ध ग मा ध न स ग सा रा रा स न ध न ग न ध न ग मा ग न ध न ग मा ध न ग ।। ४ ।।

+		०		१		०		२		३	
			।	।	।	।	।	।	।		
मा	ध	न	सन	स	स	स	रा	स	स	न	धमा
नि	०	त्य	० ०	नि	०	त्य	क	र	०	गु	ण०
।	।										
स	स	नध	न	ध	माग	मा	मा	ग	रा	स	स
गा	०	व ०	त	गो	० ०	वि	न्	०	द	कि	०
स	स	नं धं	नं	धं	मांधंनंस	स	स	स	स	स	स
जो	०	न ०	र	०	० ० ० ०	गु	र	न	सो	०	०
स	स	ग	ग	मा	ग	मा	ध	नध	न	ध	माग
सि	०	खे	बा	०	नि;	अ	ग	म ०	नि	ग	म ०

अन्तरा।

			।	।	।	।	।	।	।	।	।
मा	ध	न	स	स	स	रा	रा	स	स	स	स
सा	०	धु	स	न्	त	ना	०	म	र		त
।	।	।	।	।	।	। ।					
स	स	स	स	स	स	रा स	नध	न	धध	माग	माग
ना	०	र	द	मु	नि	ब्र ह्मा	० ०	शि	वादि	आका	० श
मा	मा	मा	ग	ग	ग	रा	रा	रा	स	स	स
प	व	न	पा	०	नि	जी	०	व	जं	तु	०
स	मा	मा	ग	मा	ध	नध	न	ध	मा	मा	ग
नि	०	त्य	ना	रा	०	य ०	न	के	०	०	०
			।	।	।	। ।					
मा	ध	नं	स	स	सं	रा स	न	ध	धं	मा	ग
अ	ध	र	ते	उ	०	द्धा ०	०	०	०	र	त
।	।										
रा	स	नध	नध	मा	ग	मा	ध	नध	न	ध	माग
अ	व	मा०	० ०	,०	नि;	अ	ग	म ०	नि	ग	० म

सञ्चारी-आभोग

रासससनध खड़ोरा०ग०	माधनससनधमा गुली००गावत	मागग रास पञ्चम सुर	सनंधंनंसस बरजकरत	मामागमामा शोहनीवाको	गग गग कहा वत
मा ध नन चिन्ता मणि	रारारानसस बरणबखानि;	सनध माधग	माग रास	मामागमाधग	माध नस
गमा रारास	नधन ग	नधनगमाग	नधनगमाधनग	भाध नध अग ०म	नध माग निग म०

(१५) शोहिनी, धामार।

भिजि मैं तो रङ्ग में सखिरि आज बनवारि रङ्गिले कानहा के सङ्ग ॥ १ ॥
हो यमुनाजल भरन जात रही सब सखियन के सङ्ग ॥ २ ॥
बहिँया पकड़ि मोहे रङ्ग में भिडोहि अबीर मलेओ अङ्ग ॥ ३ ॥
मिनत शिनत कछु नाहीं मानत ऐसो ब्रजराज कुढङ्ग ॥ ४ ॥

रा स स भि जि ०	स सन मैं ००	स स तो ०	न ध ध र ङ्ग में	मा गमा स खि०	ग ग आ ज
मा ध नन ब न वारि	ध ध र ङ्गि	मा ग ले ०	सर स स का० न हा	न माध के ००	नध माग ०० सङ्ग;
मा ध ध हो ० ०	न स य मु	स स ना ०	रा स स ज ल ०	नन स भर न	रा स जा त
स स स र हि ०	ग मा ग स ब ०	रा रा स खि	स स स य न ०	नमा ध के० ०	नध माग ०० सङ्ग
मा मा ग ब हिँ या	मा मा प क	ग ग ड़ि ०	मा ग ग मो हे ०	मा ध र ङ्ग	न न में ०
स स स भि डो हि	स स ० ०	स स ० ०	ग रा स अ बी र	नमा ध म० ल्यो	नध माग ०० अङ्ग
मा ध न मि न त	स स शि न	स स त ०	रारा सस कछु नहीं	न स मा ०	स स न त
ग ग मा ऐ ० सो	गमा ग ०० ०	रा स ब्र ज	स स स रा ० ज	नमा ध कु० ०	नध माग ०० ढङ्ग

(१६) शोहिन । चौताल और तेताला ।

+		०		१		०		२		३	
सस	रास	न	ध	मा		गमा	धन	रास	नध	माध	नध
नस	नध	मा	ग	माग	रास	ग	ग	माध	नग	माध	नन १
रारा	सन	स	माधन	माध	गमा	धन	रास	नस	गग	माग	रास
माध	नग	माग		रा	स	ग	ग	माध	ग	माधननन २	
मामा	ग	माध	नस	नस	ग	मा	ग	मा ग	रास	नध	मा
गमा	ध	न	गमा	नरा	स	गमा	ध	माध	नग	माध ननन ३	
गग	ग	मा	धन	ग	माध	न	स	नस	गमा	मा	गमा
धन	स	मा	ध	ग	मा	गमा	धन	सन	धग	माधनन्न ४	

(१७) ओड़ब सम्पूर्ण ।

बेहाग। स ग मा प न—न ध प मा ग र स । सुरफाँकताल ।

परब्रह्म गोविन्द नारायण गोपाल जगतगुरू पुरन हरे हरे ॥१॥

या कि लीला कहियन जात दीनदयाल प्रभु पुरन करे करे ॥२॥

करन कारन जगदीश विधाता विधिना कि गति काहु कायशरे ॥३॥

सुखदायक दुखभञ्जन स्वामी दोउ निशदिन ततच्छण लेत सुमिरन करे ॥४॥

+	।	०	।	२	।	३	।	०	।
सनं प ०	धंपं ० ०	पं ०	पं र	नं ब्र	नं ह्मा	स ०	स ०	स ०	स ०
स गो	स विं	स ०	स द	मा ना	मा ०	प रा	प ०	प य	प ण
न गो	न पा	ध ०	प ल	मा ज	मा ग	मा त	ग गु	ग रू	ग ०
मा पु	मा ०	प र	मा न	ग ह	ग रे	र ०	र ०	स ह	स रे;

अन्तरा।

प	प	न	न	ˈस	ˈस	ˈस	ˈस	ˈस	ˈस
या	०	कि	०	ली	०	ला	०	०	०
न	न	ध	प	न	न	ध	ध	प	प
क	हि	य	न	जा	०	०	०	०	त
ˈस	ˈस	ˈस	ˈस	न	ध	प	प	मा	मा
दी	०	न	द	या	०	ल	०	प्र	भु
ग	मा	प	मा	ग	ग	र	र	स	स;
पु	०	र	न	क	रे	०	०	क	रे

सञ्चारी।

स	स	स	स	प	प	प	प	प	प
क	र	न	०	का	०	र	न	०	०
प	प	मा	प	मा	मा	ग	ग	ग	ग
ज	ग	दी	०	श	०	वि	धा	ता	०
ग	ग	ग	गमा	प	प	मा	मा	ग	ग
वि	धि	ना	००	कि	०	ग	ति	०	०
ग	ग	र	स	पं	पं	नं	नं	स	स
का	०	०	हु	का	०	य	श	रे	०;

आभोग

प	प	न	न	ˈस	ˈस	ˈस	ˈस	ˈस	ˈस
सु	ख	दा	०	य	क	दु	ख	०	०
न	न	ध	प	न	न	ध	प	प	प
भं	०	ज	न	स्वा	०	मि	०	०	०
प	प	ˈस	ˈस	ˈस	ˈस	न	न	ध	प
दो	उ	नि	श	दि	न	त	त	ब	ग
मा	प	मा	मा	ग	ग	र	र	स	स
ले	०	त	०	सु	मि	र	न	क	रे;

(१८) बेहाग-धामार।

मोहे पाये अकेली धाम लँगड़वा कुँद पड़ेओ ॥१॥
मानत नहीं काहुके सजनि परोसिन से नहीं डरेओ ॥ २ ॥
हाथ पकड़ के बाहर किन्हों दुआरे आन ठाड़ेओ ।
गारि देइ झकझोर निकस सम्मुख हसत खड़ेओ ।

न	न	ध	प	पम	प	प	गु	मा	प	मा	ग	र	स;
लं	ग	ड़	वा	००	०	०	कुँ	०	द	प	ड़े	ओ	०
नं	नं	स	ग	ग	ग	ग	माप	माप		ग	मा	ग	ग
मो	हे	०	०	०	पा	ये	अके	ली०		०	०	धा	म
प	प	प	न	न	न	न	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍
मा	न	त	०	०	न	हीं	का	हु	कि	स	ज	नि	०
न	न	न	ध	प	प	प	मा	प	प	मा	ग	र	स;
प	रो	०	शि	न	से	०	न	हीं	०	ड	रे	ओ	०
स	स	स	ग	ग	मा	प	न	ध	प	मा	ग	ग	ग
हा	०	थ	प	क	ड़	के	बा	ह	र	कि	न	हो	०
न	न	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	न	ध	प	मा	ग	र	स;
दु	आ	०	रे	०	०	०	आ	०	न	ठा	ड़े	ओ	०
प	न	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	न	स̍	स̍	स̍
गा	रि	०	दे	०	यि	०	झ	क	०	झो	०	र	०
न	न	न	ध	प	प	माप	न	ध	प	मा	ग	र	स
नि	क	स	स	न्	मु	ख०	ह	स	त	ख	ड़े	ओ	०

(१६) बेहाग। तेताला।

गगमापना	ग रसनंस	गगमाप	गमापनस̍	र̍ स̍नधप	स̍नधपमा	नधपमाग	मागरसनंस ;
पपमागग	मापनस̍न̍स̍ग̍	प̍मा̍ग̍र̍स̍	ग̍ग̍र̍स̍नध	पमापनस̍	नधपमाग	धपमागर	पमागरसनंस;
मामा प	ग माप	ग मापन	गमापनस̍	नधपमाग	मापगमाप	नधपमाग	धपमागरसनंस;

(२०) बेहाग। चौताल।

इस गान में दोनों "मध्यम" का व्यवहार है।

अँखियन जलभरे नैन तेरे ही आली मैं लखि आवै प्रकट भयो देखि विरह तूरी क्यों दूरावे ॥ १ ॥
नहिं जानत धीर अबलौ कछु बिछुरन की व्यथा बड़ी मानती को काम जी दहावै ॥ २ ॥
सुनरी सखी साँस निकसत कसकत है अधिक देखि दुकुल गहन सुबरन लागे फलन गहन
सुना सी चूभे कहि ना जावै ॥३॥ दौड़ि दौड़ि देखत हिय से दुःख दे गए लालन अब विकल
बेसुध बेहाल भए है कहो पलपल नहीं आवै ॥ ४ ॥

+		०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
ग	र	स	स	नं	सस	ग	माप	मा	प	न	धप
भ	०	रे	०	न	यन	ते	रे०	रि	०	आ	ली
मप	मप	मा	ग	र	स	नंनं	नं	धं	पं	नं	स
मैं०	००	ल	खे	आ	वै	प्रक	ट	०	०	भ	यो
ग	मा	प	प	प	प	प	प	न	धप	न	स̍
दे	०	०	ख	वि	र	ह	०	तू	००	रि	०
र̍	स̍	न	ध	पमा	गर	ग	मा	प	धप	मा	गर
क्यों	०	दु	रा	००	वे०;	अँ	खि	य	न०	ज	ल

२

प	प	न	न	स̍	न	स̍	स̍	न	न	स̍	स̍
न	हिं	जा	न	त	०	पि	र	अ	ब	लौ	०
स̍	स̍	न	न	न	न	न	स̍	न	ध	प	मा
क	छु	बि	छु	र	न	की	०	वि	था	०	०
न	न	ध	ध	प	प	मा	प	प̍	प̍	मा̍	ग̍
ब	ड़ी	मा	न	ती	०	को	०	का	०	०	म
स̍	स̍	न	ध	पप	मा	ग	मा	प	धप	मा	गर
जो	०	द	हा	०वे	०;	अँ	खि	य	न०	ज	ल०

३

सस	गमा	प	प	प	प	नध	पमा	गग	गग	मा	ग
सु न	री ०	स	खी	साँ	स	निक	सत	कस	कत	है	०
ग	गग	मा	मा	पप	प	मामा	मा	गग	गग	र	स
अ	धिक	दे	ख	दुकु	ल	ग ह	न	सुब	रन	ला	गे
स	सस	नं	नंनं	स	स	गम	प	मा	मा	ग	ग
फ	ल न	ग	हन	सु	ना	सी०	०	चू	भे	०	०
म	प	प	नि	धप	मा	ग	मा	पध	प	मा	गर
क	हि	०	न	जा०	वे;	अँ	खि	यन	०	ज	ल०

४

प	पप	न	नन	स	सस	स	स	स	स	न	न
दौ	०ड़	दौ	०ड़	दे	ख त	हि	य	से	०	दुः	ख
स	स	स	स	प	म प	मा	गर	ग	रस	र	सन
दे	०	ग	ए	ला	लन	अ	ब०	वि	कल	बे	सुध
स	नध	प	मा	ग	ग	मा	प	न	न	स	स
बे	हाल	भ	ए	है	०	क	हो	प	ल	प	ल
न	ध	प	प	मा	गर	ग	मा	पध	प	मा	गर
न	हिं	०	०	आ	वे०;	अँ	खि	यन	०	ज	ल०

श्री ।

दिवा तृतीय १० दगड ।

जेठ । असाढ़ ।

श्री।	(१) वंशीधर पिनाकधर —	तानसेन	—	ढीमा तेताला।
	(२) सरगम		—	तेताला व चौताल।
गौरी।	(३) मूरत मन में लागि —		—	चौताल।
पूरवी —	(४) धर टेढ़ी पाग —		—	चौताल।
	(५) करत सब जग काम—			
	(६) सरगम —		—	चौताल वा तेताला।
	(७) गुजरिया गोरी —		-	धामार।
भीमपलश्री–	(८) कुंजन में रचो रास —	गौरीराव	—	चौताल।
	(९) शामल डा होरी —		—	धामार।
	(१०) सरगम--		—	धामार।
	(११) सोहत बेणी व्याल —			
धनाश्री —	(१२) प्रथम खरज नाद —		—	चौताल।
	(१३) बैरिया होरी मा —		—	धामार।
	(१४) मेरे पति राख लीजिये—			
जैतश्री —	(१५) तुम हो ब्रज के लाल—		—	सूलताल।
	(१६) डफ बाजनि मन्दिर —		—	धामार।
	(१७) सरमग —	तसद्दुख़ हुसैन	—	
	(१८) ,, —	अलीमहम्मदख़ाँ	—	
मुलतान —	(१९) दिल्लीपति नरेन्द्र —	नायक गोपाल	—	ढीमा तेताला।
	(२०) शामल डा होरी —	तानतरंग	—	धामार।
मारूवा —	(२१) सरगम —	अलीमहम्मदख़ाँ		
	(२२) ,, —	(अलीमहम्मदख़ाँ)		
	(२३) सरगम —		—	चौताल व तेताला।

श्री ।

सर्वदा हास्यसंयुक्तो सुरसैर्वापि तिष्ठति ।
ऐश्वर्य्यभूतो लोकेऽस्मिन् श्रीरागश्च ततः स्मृतः ॥ (महेशचन्द्र सरकार)

श्रीरागः प्रथमः पुत्रः ईश्वरस्य विमोहकः ।
आज्ञा चक्रे भ्रुवोर्मध्ये परब्रह्मप्रदायकः ॥

शास्त्र में लिखा है कि पञ्चानन के पश्चिम मुख से यह राग निकला है । ग्रीष्म ऋतु में (जेठ-असाढ़ में) इस राग को सब समय गा सकते हैं । दिवा तृतीय दश दण्ड के समय पर श्रीराग और अन्यान्य सामयिक रागों को गा सकते हैं । किसी किसी ने मध्याह्न काल को ग्रीष्मकाल कहा है इसलिए उस समय भी इस राग को गा सकते हैं । कहा है कि विशुद्ध रूप से इस राग को गाने से स्वतः विश्राम व शान्ति के भाव का उदय होता है और मानसिक विकृति दूर हो जाती है । केकी (धैवत) के सुर से गाने से कदाचित् ये फल प्राप्त हो सकते हैं ।

अष्टादशाब्दः स्मरचारुमूर्त्तिर्धीरोल्लसत्पल्लवकर्णपूरः ।
षड्जादिसेव्योऽरुणवस्त्रधारी श्रीरागराजक्षितिपालमूर्त्तिः ॥
लीलाविहारेण वनान्तराले चिन्वन् प्रसूनानि वधूसहायः ।
विलासवेशो धृतदिव्यमूर्त्तिः श्रीराग एषः प्रथितः पृथिव्याम् ॥
(पारिजात)

षड्जे षाड्जी समुद्भूतम् श्रीरागं स्वल्पपंचमं ।
सन्न्यासांशग्रहमन्द्रगान्धारतारमध्यमं ।
समशेषस्वरं वीरे शान्तिश्रीरयनाग्रणी ॥
(रत्नाकर)

इस श्रीराग के साथ प्रचलित श्रीराग का कोई ऐक्य नहीं दिखाई पड़ता ।

---

(१) श्री ।

शुद्ध सम्पूर्ण। स रा ग म प धा न। ढिमातेताला। अति तीव्र मध्यम।

वंशीधर पिनाकधर गिरिधर गङ्गाधर त्रीशुलधर चक्रधर विराजित हरिहर ॥ १ ॥
सुधाधर विषधर जटाधर मुकुटधर पिताम्बरधर मृगचर्म्मधर मुरहर शिवशङ्कर ॥ २ ॥
चन्दनधर भस्मधर मालाधर शेषधर गोपीवर परमेश्वर गोपीश्वर ईश्वर ॥ ३ ॥
कहें मिँया तानसेन दोउ स्वरूप एक तुम गरुड़ासन वृषभबाहन तिनलोक कर उद्धार ॥ ४ ॥

[इस राग में धैवत निकाल कर उसके स्थान में पंचम के व्यवहार करने से (इस गीत में) कुमारी राग हो जाता है ।]

+	२	०	३
धा प म गरा	गग रा स स	रा रा स स	धां धांरा स स
वं शी ध र०	पिना क ध र	गि रि ध र	गं गा० ध र
	मीड़		(मीड़)
नंस राग ग ग	स धा प प	मप धा न स	पमप मधा पमग रा स
त्रीशु ०ल ध र	च क्र ध र	बि० रा जि त	ह०रि ० ० ० ० ० ह र;

२

पम पधा न स	रा स स स	स रा रा रा	गग रा सनधा प
सु० धा० ध र	वि ष ध र	ज टा ध र	मुकु ट ध० ० र
धाधा ससससससस	नन धा धा प प	म प धा पमग	मम ग रा स;
पी त अम् ब र ध र	मृग च र्म्म ध र	मु र ह र० ०	शिव शं क र

३

(मीड़)			
सरा गमपधा धाधा	प प प प	मप धा न स	न धा प प
चं ० ० ० ०द न ध र	भ स्म ध र	मा० ला ध र	शे ष ध र
म प धाप म ग	मम ग रा स	स धा प प	पमगरा स स स;
गो० पी० व र	प र मे श्व र	यो गी श्व र	ई० ० ० ० श्व र

४

धा धा न स	रारा सस	रारा रासरारा	गरा स स नधाप
क हे मिँ या	ता न से न	दो उ स्व० रू प	ए० क तु म० ०
धाधा नस स स	न नन धा पप	म प धा पमग	मग रा सस
ग रु ड़ा० स न	वृ षभ बा हन	ति न लो ०० क	क र उ द्धा र;

(२) श्र। चाताल और तेताला।

+		०		१		०		२		३	
पप	मधा	पप	मग	राग	मप	धाप	मग	राग	मप	रारा	स
नंस	रास	गग	माप	धाधा	रास	धाधा	पप	मधा	पप	मग	रास;
धाधा	पम	धाधा	नस	रान	स	नस	रारा	स	धारास	गग	रास
धाधा	पप	मधा	रास	रान	धाप	मधा	राग	मधा	पप	मग	रास;
रा स	धाप	नधा	प	मप	धाप	मप	मग	मधा	पन	धा	प
मपनसनधा		रास	नधा	न	स	नधा	नधाप	मधा	पमप	मग	रास;
ग	ग	मप	मधा	पन	रास	धा	रास	नधा	प	मप	नधा
पप	मधा	रा	स	रा	न	धाप	मधाप	म	पप	मग	रास;
मधा	पम	पम	धान	स	नस	रारा	स	नस	नधाप	मप	मधा
प न	स	रारासनधाप		नधाप	मप	मधा	पम	ग	पमग	मग	रास;

(३) गौरी

शुद्ध-सम्पूर्ण। स रा ग मा प धा न। चौताल।

मूरत मन में लागि रहि माई कहाँ लव सहुँ एतनि पीड़ ॥ १ ॥

आवत के दिन गिनत रखना जपत माल दरश बिना नयन फकिर ॥ २ ॥

+		०		।		०		।		।	
रा	रा	स	स	नं	नं	सरा	रा	गरा	ग	रा	स
ला	०	गि	०	र	हे	० ०	०	मा०	०	०	इ
पप	ग	रा	रा	स	स	स(मीड़)धा		प	प	मा	मा
कहाँ	०	ल	व	स	हुँ	ए	त	नि	०	०	०
गमा	प	प	प	गरा	स;	प	ग	रा	स	सस	स
० ०	०	पी	०	००	ड	मू	र	त	०	मन	में

२

धा	धा	धा	न	सं	सं	सं	सं	सं	रां	सं	सं
आ	व	त	के	०	०	द्दि	न	०	गि	न	त
रां	रां	रांमां	गं	रां	सं	सं	सं	सं	न	धा	प
र	स	ना०	०	०	०	ज	प	त	मा	०	ला
धा	धा	न	सं	सं	सं	न	धा	धा	धा	प	धामा
द	र	श	०	बि	ना	०	०	न	य	न	००
प-गमा	प	पप	प	गरा	स;	प	ग	रा	स	सस	स
०००	०	फकि	०	०	र	मू	र	त	०	मन	में

(४) पुरवी ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग म प धा न । चौताल ।

धर टेढ़ि पाग टेढ़ो हि चन्द्रिका और टेढ़ो त्रिभङ्गी लाल

कुण्डल कि छवि मानो कोटि रवि उदय होत और राजत बनमाल ॥२॥

श्यामरो वदन पर पीत पट ओढ़ना मुख मुरलि बाजत मधुर रसाल ॥३॥

श्रीमत वल्लभ वन ते आयो सङ्ग लिये ब्रज गोप बाल ॥४॥

[इस राग में धैवत का व्यवहार मीड़ के साथ होगा क्योंकि स्वाधीन धैवत लगाने से दूसरे रागों की आशंका है। किसी किसी तन्त्रकारों ने दोनों मध्यमों का व्यवहार किया है परन्तु बहुत ही कम क्योंकि ऐसा करने से बेहाग की आशंका है। इस गीत में केवल कड़ी मध्यम का व्यवहार है।]

+		०		१		०		२		३	
ग	ग	रा	स	प	प	प	पप	मप	मप	गम	ग
पा	०	०	ग	टे	ढ़ो	हि	चंद्रि	का०	००	००	०
नं	रा	गरा	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	मप(मीड़)धा	
अ	उ	र०	टे	०	०	ढ़ो	०	त्रि	०	भं०	०
न	सं	नधा	प	मप	मप	गम	ग	नं	रा	गराम	गरा
गी	०	००	०	ला०	००	००	ल	ध	र	टे००	ढ़ि०

२

		मीड़						मीड़			
ग	ग	धामधामपधानस		स	स	सा	सा	सरा	गम	गरा	स
कुं	ड	ल०००कि००		छ	वि	मा	नो	को०	००	टि०	०
								मीड़			
रा	स	नधा	प	मपगमगमग		गग	ग	धापमप	धाधा	न	स
भा	नु	उ द	य	हो०००००त		अउ	र	रा०००	००	ज	त
स	स	नधा	प	मप	मप	गम	ग	नं	रा	गराम	गरा;
व	न	० ०	०	मा०	००	००	ल	ध	र	टे००	ड़ि०

३

								मीड़			
प	प	प	प	प	पप	प	प	पमपधानधा		प	प
श्या	म	रो	०	व	दन	प	र	पी०००० त		प	ट
मप	मग	म	गरा	ग	ग	रा	रा	स	स	स	स
ओ०	ढ़०	ना	००	मु	ख	मु	र	लि	बा	ज	त
मीड़											
सरागमप		प	प	मप	मप	गम	ग	नं	रा	गरा	मगरा
मधु०००		र	०	र०	सा०	००	ल	ध	र	टे	००ड़ि०

४

मपधापमगम		स	स	स	स	स	स	ससरागमग		रा	स
श्री०००००		म	त	ब	ल्	ल	भ	बन००००		०	ते
न	धा	प	प	ग	ग	मपधा	धा	न	स	रा	स
आ	०	यो	०	सं	ग	लि००	०	ये	०	ब्र	ज
न	धा	प	प	मप	मप	गम	ग	मं	रा	गरा	मगरा
गो	०	प	०	बा०	००	००	ल	ध	र	टे०	०ड़ि०

(५) पूरबी चौताल ।

करत सब जग काम शुभ होत तबही जब पहिले कहलेत विसमिला: ॥१॥
जैसो बड़ो है दीनऊ देत पावत ईलम तत् छन को पढ़ो कलमुल्ला ॥२॥
अर्स कुर्सी लोहे कलम कलमा को भेद रटना जानत अल्लाह हो अला ॥३॥
लाईलाह ईल लिल्ला फ़रज़ सुन्नत सो सुद्ध होत शरीर इल्ला विल्ला ॥४॥

१

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
ग	मा	म	म	ग	मा	ग	रा	रा	स	स	स
क	०	र	०	त	०	०	०	०	०	स	व
नंस्स	रा	ग	ग	ग	ग	प	प	प	प	प	प
ज ०	ग	का	०	म	०	सु	भ	हो	०	०	त
प	धान	मप	मप	ग	म	ग	ग	ग	रा	रा	रा
त	ब ०	हि०	० ०	ज	ब	प	हि	ले	०	क	ह
ग	रा	मम	मम	गमा	गरा	गग	गग	रा	रा	स	स
ले	०	० ०	० ०	० ०	त ०	विस	मिल	०	०	ला	०;

२

		मीड़									
				।	।	।	।	।	।	।	।
ग	ग	मपधा	म	स	स	स	स	स	स	स	स
जै	०	सो०८	०	ब	ड़ो	०	०	है	०	दी	न
।		।	।	।	।	।	। ।	। ।	।	।	।
स	स	स	स	स	स	स स	म	म ग	रा	स	स
ऊ	०	दे	त	०	०	पा ०	०	व ०	०	त	०
नधा	प	म	प	प	प	प	प	म प	मप	ग	ग
ई ०	०	ल	म	त	त्	छ	न	को०	० ०	०	०
				। ।		।	।				
ग	ग	म	धा	स रा	नधा	स	स	नधा	प	मपमपगमागरा	
प	०	ढ़ो	०	क ला	० ०	सु	ल्	० ०	०	ला०००० ०००:	

३

पप प	पप प	प पप	पम प	म प प	पधान धाप
अर स	कुर सी	लो ०ह	कल म	क लमा	० ० ० को ०
मग रा	रारा गरा	मग रास	प प प	मम गरा	ग ग
भे० द	र ट ना०	जा० न त	अला ०	हो० अल्	ला ०;

४

म धा स	स स	रास सस	सस स	मग रास	सन धाप
ला ० ए	ला ह	ई ल लिला	फ र ज़	सु० न त	सों० ० ०
पप प प	पमप मग	मधा स	नधा सस	नधा प	मपमपगमागरा
सुध होत	सरीर ईला	० ० ०	वि ल् ० ०	० ० ०	ला०००००००;

(६) पूरबी। चौताल और तेताला ॥

+	०	१	०	२	०
मग रास	प प प	मधान धाप	मप मग	मपधानधापमग	नधा पम
गग रास	नंस रारा	स गग	मधाम स	नधाप मग	नंरागरा;
गग मधा	म स	स स	म ग	रा स	नधा प
म मग	मधा नस	रान धाप	नधा प	म ग	नंरागरा;
प प प	मधा नधा	प मग	राम ग	रा ग	रा स
पधा न धाप	मगम पमप	म ग	मपधा नधा	पम ग	नंरागरा;
रारासरारास	पपप मधाप	नधाप मग	गगगमधास	रान धाप	मधानधाप
म म ग	नंरा गरा	नधाप मग	नंरा गरा	धापममग	नंरागरा;

[पश्चिम के तन्त्रकार लोग ललित और पूर्वी रागों में धैवत का स्वाधीन व्यवहार नहीं करते ।]

(७) पूरबी धामार ॥

गुजरिया गोरि हो हो कर कर खेलत होरि ॥ १ ॥ उधर गयो है खेलन में घुँघट निकवनि मुख ोरि ॥ २ ॥ अरुन वरन अधरन बिच निककर अंजन दृग बहु थोरि ॥ ३ । हसत गाँठ मुख पड़त कपोलन चमकि बयस मति थोड़ि ॥ ४ ॥

+			०		।		०			।		०	
ग	रा	रा	स	स	स	स	प	प	प	प	प	प	प
गो	०	०	रि	०	०	०	हो	हो	०	क	र	क	र
मपधानधा प			मप	ग	म	ग;	नं	रा	ग	रा	म	ग	रा
खे० ०० लत			हो०	रि	०	०	गु	ज	रि	०	०	या	०

अन्तरा ॥

				।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
गगमधामधा			न	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
उधर०००			ग	यो	ह	य	खे	ल	न	मे	०	०	०
।	।	।	।	।	।	।	।।		।।		।	।	।
रा	रा	स	स	स	स	स	मग		रास	न	स	स	स
घुँ	घ	ट	०	०	०	०	नि०		००	०	क	व	नि
न	धा	प	मप	ग	म	ग;	नं	रा	ग	रा	म	ग	रा
मु	ख	०	रो०	०	रि	०	गु	ज	रि	०	०	या	०

सञ्चारी ॥

प	प	प	म	प	प	प	न	धा	प	म	प	म	प
अ	रु	न	ब	र	न	०	अ	ध	०	र	न	बि	च
म	म	ग	रा	रा	स	स	स	स	स	रा	ग	म	प
नि	०	क	क	र	अं	०	ज	न	०	०	०	दृ	ग
मप	मप		मप	ग	म	ग;	नं	रा	ग	रा	म	ग	रा
ब०	हु०		थो०	०	रि	०	गु	ज	रि	०	र	या	०

आभोग ॥

गगमधामधा हसत००० ०			न गाँ	स ठ	स ०	स ०	स मु	स ख	स ०	स प	स ड़	स त	स ०
म क	ग पो	रा ०	स ल	स न	नधा ० ०	प ०	म च	धा म	न कि	स ब	स य	स स	स ०
न म	धा ति	प ०	मप थो०	म ०	म रि	ग ०,	नं गु	रा ज	ग रि	रा ०	म ०	ग या	रा ०

(८) भीमपलश्री

ओड़व सम्पूर्ण। स गा मा प ना-ना ध प मा गा र स, चौताल।

कुञ्जन में रच्यो रास अव्यक्त बुध लिये गोपाल कुण्डल के झलक देत इन्द्रधनुष पटा ॥ १ ॥
अधर तो सुरङ्ग रङ्ग बाँसुरि उपजेओ रङ्ग ऐसि छवि देखि देखि कोटि मदन छटा ॥ २ ॥
नुपुर झङ्कार गाये मधुर मधुर तान लाये सप्त सुर छाये बाँकि सुरत कपटा ॥ ३ ॥
गौरी राओ ऐसे बस होत हैं मोहन मुकुट पर शेष नाग लपटा ॥ ४ ॥

+		० गमक		२		०		३		४	
प कुं	मागा ० ०	माप ज ०	माप न ०	मा मे	गा ०	र र	स चे	र ओ	नां रा	स ०	स स
नां अ	स व्य	मागा क्त ०	मागा ० ०	मा बु	पमा ध ०	प लि	प ये	मा ०	गामा ० गो	मा पा	मा ल
प कुं	मागा ० ०	मा ड	प ल	ना के	स ०	स झ	स ल	स क	रना दे ०	स ०	स त
मीड़ स इं	स ०	ना द्र	ध ध	प नु	प ष	मा प	प टा	मागा ० ०		मा ०	प ०;

अन्तरा ।

प प	पमा गा	मा प	स स	स स	स स
अ ध	र० ०	तो ०	० सु	रं ग	रं ग
ना ना	स मा	गार सना	सस स	ना ध	प प
बा ०	सु रि	०० ००	उप जे	० ०	रं ग
नाना नाध	प नास	स स	रना स	स नास	स स
ऐ • सि०	० ० ०	छ बि	दे० ०	खि ०दे	० खि
(मीड़) स स	ना ध	प प	मा प	मा गा	मा प
को ०	ट म	द न	छ टा	० ०	० ०;

संचारी ।

मा मा मा	पप पप	प प	ना ना ना ध	पनासससस	सनाधपमा
नु पु र	झन कार	गा ये	म धु र ०	०००मधुर	तानलाये०
प मा	गागा रस	नां स गा	मा प प	नाना ना	धपमापमागामा
स ह	सु र छाये	बा ० कि	सु र त	कप टा	०००००००;

आभोग ।

पमा गामा	पस सस	सस सस	ना स	मागा रस	नाध पप
गौ० ० ०	रि० ० ०	राजो ऐसे	ब स	हो० त०	हैं० ००
ना ना ना ध	पना सना	ससस सस	सस ना ध प	प मा प	मागा माप
मो ह न ०	० ० ० ०	मुकुट प र	शे ष ना ० ग	ल प टा	० ० ००;

[इस गीत को मुलतान में भी गा सकते हैं।]

(६) भीमपलश्री । धामार ।

शामल डा होरि खेलन नु नई जान्दा ॥१॥ लगर लगर लगुराई करदा साडा मन परचावन्दा ॥२॥ चोवा चन्दन बुका बन्दन ले मुख सो सानन्दा ॥३॥ ले पिचकारि देनदा गारि आनन्द धन्य नन्द नन्दा ॥४॥

+			०		|		०			|		०	
स	स	स	नां	स	स	स	गा	मा	प	प	प	ना	ना
हो	०	०	०	०	रि	०	खे	०	०	ल	न	न	ई
ध	ध	प	प	माप	मा	गा	मा	गा	गा	र	र	स	स
जां	०	०	दा	० ०	०	०	शा	०	०	म	ल	डा	०

२

प	प	प	मा	गा	मा	प	स̍	स̍	स̍ना	स̍	स̍	स̍	स̍
ल	ग	र	०	०	ल	ग	र	०	० ०	ल	गु	रा	ई
स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	ना स̍	मा̍	मा̍	गा̍	गा̍	र̍	स̍
क	र	दा	०	०	०	०	सा ०	डा	०	०	०	म	न
ना	ना	ना	ध	प	माप	मागा;	मा		गागा	र	र	स	स
प	र	चां	०	०	दा०	० ०	शा		० ०	म	ल	डा	०

३, ४ ।

मा	गा	मा	प	प	प	प	ना	ना	ना	ध	ध	प	प
चो	वा	०	चं	०	द	न	बु	का	०	बं	०	द	न
स̍	स̍	स̍	ना	ना	ध	प	मा	गा	मा	गा	गा	र	स
ले	०	०	मु	ख	सो	०	सा	०	०	नं	०	दा	०
प	मा	गा	मा	प	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	ना	ना	स̍	स̍
ले	०	०	पि	च	का	रि	०	०	०	दें	०	दा	०
मा̍गा̍		र̍स̍	ना	ना	ध	प	ना	ना	ना	ध	प	ना	स̍
गा ०		रि ०	०	०	०	०	आ	नं	०	द	०	ध	न्य
ना	ना	ध	प	प	मा	गा	मा	गा	गा	र	र	स	स
नं	दा	०	नं	०	दा	०;	श	०	०	म	ल	डा	०

(१०) भीमपलश्री धामार।

+	०	।	०	।	
मा आ आ	प मा	गा आ	र स आ	नां स	गा आ
मा प आ	गा मा	प आ	ना ध प	मा प	गा मा
प प प	मा प	ना ध	प प मा	गा आ	मा आ
नां स आ	मा गा	र स	पमा गार स	नां स	गा आ;
प प प	मा प	गा मा	प ना इ	ध प	स आ
ना स आ	मा गा	र स	ना ना इ	स ना	ध प
ना ध प	मा प	गा मा	प स आ	ना ध	प मा
गा आ आ	मा गा	र स	पम गर स	नां स	गा आ;
नां स गा	मा प	गा मा	प प ना	प ना	स ना
ध प मा	प गा	मा प	ना ध प	मा गा	र स
प प मा	गा गा	र स	नां स आ	पमा गार	स नां स
गा मा प	गा मा	प प	ना ध प	नां स	गा आ;
गा मा प	गा मा	गा मा	प ना इ	प ना	स आ
नास मागा रस	नाध पमा	पमा गामा	नां स आ	मागा रस	नांस गा आ
ध प मा	गा मा	प गा	मा प ना	प ना	स आ
ना स आ	मागा रस	धप माप	गामाआ नांस	मागा रस	नां स गा मा
प प प	माप गामा	पना धप	नास नास	मागा रस	नां स गामा

(११) भीम पलश्री । सूलताल ।

सोहत वेणी व्याल भाल चंद्र भौंहें धनुष यौवन श्रवण कोष की ज्योति कपोल लोचन जो हरे ॥१॥
नेत्र पंकज नासा कीर अधर विद्रुम दशन दाडिम चिबुक चारु कंठ चातक शब्द भरे ॥२॥
कपोत ग्रीवा विराजित कुच श्रीफल भुज मृणाल नाभी भँवर कटो केसरि जँघा कदली उलटी धरे ॥३॥
पिडुरी फल नौरंगी चरण कमल सोहत ऐसो तियाँ सुलतान महम्मद बस करे ॥४॥

+ ।	० ।	। ।	। ।	० ।	+ ।	० ।	। ।	। ।	० ।
प प	मा मा	गा गा	र स	स स	मा गा	मा मा	प प	प प	पप
सो ०	ह त	बे ०	णी व्या	० ल	भा ऽ	० ल	चं ०	द्र ०	भौंहे
			। ।	। ।	। ।	।			
ना ना	ना ना	प ना	स स	स स	स स	स ना	ध ध	प प	पप
ध नु	ष यौ	व न	श्र व	ण · न	को ष	की जो	त क	पो ०	ल०
				मीड़					
प मा	प प	प मा	पमा गा	माप ना					
लो ०	च न	जो ०	ह रे ०	० ० ०					

२

			। ।	। ।		। ।	। ।	। ।	। ।
प मा	गा मा	प प	स स	स स	ना ना	स स	मा गा	र स	सस
ने ०	० ०	० त्र	पं ०	क ज	ना ०	सा ०	की ०	र अ	धर
								। ।	। ।
ना ना	ना ध	ध ध	प प	प प	ना ना	ना प	ना ना	स स	सस
वि द्र	म द	श न	दा ०	ड़ि म	चि बु	क चा	० रु	कं ०	ठ०
। ।				मीड़					
स स	ना ना	ध पमा	पमा गा	माप ना					
चा ०	त क	श बद	भ रें ०	० ० ०					

३

							। ।	।	। ।
मा मा	मा मा	प प	प प	ना ना	ना ना	प ना	स स	स ना	सस
क पो	० त	ग्री ०	वा ०	वि रा	जि त	कु च	श्री ०	फ ल	भुज
ना ना	ना ना	ध ध	प प	प प प	प प	मा मा	गा गा	र र	सस
मृ णा	० ल	ना ०	भी ०	भँ व र	क टि	० के	० स	रि ०	जँघा
				मीड़					
नां स	गा मा	प प	ना ना	धपमागामाप					
क द	ली उ	ल टी	ध रे	० ० ० ० ० ०					

४

मा प	गा मा	प ना	प ना	स स	स स	स स	स स	स स	सस
पि डु	री ०	० ०	० ०	० ०	फ ल	न व	रं ०	गी ०	००
ना ना	स मा	गा र	स स	स स	ना ना	नानाध	प प	स स	ना ना
च र	ण क	म ल	सो ०	ह त	ऐ सो	तियां ०	सु ल	ता न	० म
ना ध	प प	प मा	पमागा	मीड़ मा प ना					
ह म्	म द	ब स	क रे ०	० ० ०					

(१२) धानश्री ।

शुद्ध-सम्पूर्ण (दिन का पुरिया) स रा ग म प धा न, चौताल ।

प्रथम खरज नाद उत्तम करिये गुरु बखान साधे कण्ठ सो धारख को गुणि विद्याधर ॥१॥

गमक ग्राम सुर ज्योत ओतपत होत याद बाढ़े साँस दुनि गुणी देत वर ॥२॥

स	स	स	सस	रा	नधाप	म	म	धा	प	प	मप
ना	०	०	द उ	त्त	म ० ०	क	०	०	रि	ये	० ०
म	धान	धा	धाप	म प	प	प	प	म	म	म	धा
गु	रु ०	०	० ब	खा ०	०	०	न	सा	०	धे	०
म	ग	म	रा	गरा	ग	ग	म	धाम	गरा	स	स
कं	ठ	सो	धा	० ०	र	न	को	० ०	० ०	गु	णी
नं	रा	ग	म	रा	ग	म	मधाम	ग	राग	रा	स
वि	०	द्या	०	ध	र	प्र	थ ० ०	म	० ख	र	ज;

अन्तरा।

म	धा	न	स	स	स	स	स	रा	स	स	स
ग	म	क	आ	०	म	सु	र	०	ज्यो	०	त
रा	न	धा	न	रा	न	धा	पप	म	ग	ग	ग
ओ	त	प	त	हो	०	त	या०	०	०	०	द
म	धा	स	स	नरा	ग	न	रा	न	म	म धानसरा	
बा	ढ़े	०	०	साँ०	स	दु	०	नि	गु	णी ००००	
न	धान	म	म	रा	ग	म	मधाम	ग	राग	रा	स
दे	००	त	०	व	र	प्र	थ००	म	०ख	र	ज;

[इस राग में पंचम थोड़ा और मीड़ के साथ लगता है इसलिए पूरबी की आशंका नहीं है और (रात की) पुरिया का रूप भी इसमें देख नहीं पड़ता। तीव्र मध्यम का अधिक व्यवहार होने के कारण वह वादी और कोमल ऋषभ समवादी है। धैवत का स्वाधीन व्यवहार नहीं है। तन्त्रकार लोग धैवत को विवादी कहते हैं।]

(१३) धानश्री धामार।

बाओरिया होरि मा धुम मचाई आलिरि सब बउराई ॥१॥

सोल सौ गोपिन में एक कनहिया सबकी सुरत भुलाई ॥२॥

नंस	रा	ग	मप	प	प	प	धाप	म	प	म	धा	न	सन
हो०	रि	मा	धु०	०	म	०	म०	चा	ई	आ	लि	रि	००
धाप	म	ग	म	ग	रा	स	नंस	रा	ग	रा	रा	स	स
स०	०	ब	बौ	रा	०	ई;	बा०	ओ	रि	या	०	०	०

अन्तरा।

म	धा	न	स	स	स	स	रा	स	स	न	स	रा	स
सो	ल	सौ	०	०	०	०	गो	पि	न	में	०	ए	क
रा	न	स	स	स	स	स	ग	ग	म	रा	रा	स	स
क	न	हि	या	०	०	०	स	ब	कि	सु	०	र	त
न	धा	प	म	प	मग	रास	नंस	रा	ग	रा	रा	स	स
भु	ला	०	०	०	००	ई०;	बा०	ओ	रि	या	०	०	०

(१४) धनाश्री चौताल ।

मेरे पति राख लीजिए हज़रत शेख सुलेम पीर अल्लाह महम्मद के कारन ॥१॥

हों गूलाम अज़िज तेहारो कहावत तुम हो जग के निस्तारन ॥२॥

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	
नं	नं	रा	ग	ग	म	रास	नस	स	नधा	प	प
रा	०	ख	लि	०	जे	ह ०	ज ०	०	० ०	र	त
म	म	ग	ग	म	म	ग	रा	ग	ग	रा	स
शे	०	ख	०	सु	ले	म	०	पी	०	र	०
स	स	ग	ग	ग	ग	ग	म	धान	सस	स	स
अ	ल्ल	ला	०	०	ह	म	ह	म ०	द ०	०	०
न	रा	स	न	धा	पप	म	ग	म	ग	रा	स
के	०	०	का	०	र न;	मे	०	रे	०	प	त

अन्तरा ।

म	धा	न	स	स	स	स	रा	स	स	स	स
हों	०	गु	ला	०	म	आ	०	०	ज़ि	०	ज
स	रा	न	स	स	स	स	रा	स	न	धा	प
ते	हा	०	रो	०	०	क	हा	०	०	व	त
म	ग	म	धा	न	स	स	स	सराग	रास	स	स
तु	म	हो	०	०	०	०	०	ज ग ०	के ०	०	०
स	स	रास	न	धा	प	म	ग	म	ग	रा	स
बि	स	ता ०	०	र	न;	मे	०	रे	०	प	त

(१५) जयत्श्री ।

शुद्ध षाड़व । स रा ग म ध न । सूलताल ।

तुम हो ब्रज कि लाल अब तुम कौन रूप देखावत ॥१॥ तुम निकस्यो गउ चरावन कर धरि मुरलि बजावत ॥२॥ बाट घाट कछु न मानत लङ्गर ढीट कहावत ॥३॥ मन रङ्ग पाये अकेली वंशोलिन गारि गावत ॥४॥

+		०		।		।		०	
स स तु म	ग हो	धन धन ब्र० ज०	ध कि	म ला	ग ०	ग ०	ग ल	रा अ	रा व
ग तु	ग म	ग कौ	ग न	गम रू०	ध प	म दे	ग खा	स व	स त;
न तु	न म	ध ध नि क	म ग से ओ	स̍ स̍ ग उ	स̍ ०	रा̍ च	रा̍ रा	स̍ व	स̍ न
न क	न र	ध ध	म रि	गम मुर	ध लि	म ब	ग जा	स व	स त;
ध बा	ध ट	म घा	म ट	न क	न छु	स̍ न	स̍ मा	स̍ न	स̍ त
ग̍ लं	ग̍ ग	स̍ ०	स̍ र	गम ढी०	ध ट	म क	ग हा	स व	स त;
न न म न	न ०	स̍ स̍ रं ०	स̍ ग	रा̍ रा̍ पा ०	रा̍ ये	स̍ स̍ अ के	स̍ ०	स̍ स̍ लि ०	स̍ ०
ध ध वं ०	ध शी	न न ली ०	न न	गम गा०	ध रि	म गा	ग ०	स ब	स त

(१६) जैत् । धामार ।

डफ बाजनि मन्दिर आई सकल ब्रजनार खेलत धमार नन्दमहाराज कि द्वार ॥१॥ बीन रबाब मृदङ्ग साथ लिये छोड़त पिचकारि बरसत है रङ्ग बाहार ॥२॥

१

ध	ध	न	ध	म	ग	ग	म	म	ग	रा	रा	स	स
ड	फ	०	बा	०	ज	नि	मं	०	०	दि	र	आ	ई
नं	नं	धं	ग	ग	रा	स	ग	ग	रा	ग	ग	स	स
स	क	ल	ब्र	ज	ना	र	खे	ल	त	ध	मा	०	र
ग	ग	ग	ग	म	ध	न	ध	ध	न	ध	म	ग	स
नं	द	०	म	हा	रा	ज	के	०	०	द्व	आ	०	र;

२

न	न	स̍	रा̍	स̍	स̍	स̍	न	न	स̍	ग̍	ग̍	रा̍	रा̍
बी	०	न	र	बा	०	ब	मृ	दं	ग	सा	०	थ	०
स̍	स̍	स̍	न	न	ध	ध	म	म	ग	म	ग	म	ग
लि	ये	०	छो	०	ड़	त	पि	च	०	का	०	रि	०
न	न	स̍	स̍	स̍	न	न	ध	म	ग	म	ग	स	स
ब	र	०	स	त	है	०	रं	ग	०	बा	हा	०	र;

(१७) जयत् ।

शुद्ध षाड़व । चौताल वा तेताला ।

शिक्षक तसदुखहुसेन ।

१

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
धम	गरा	गम	गरा	स	नंधं	मंधं	स	सरा	गम	न	ध
मग	रा	गम	न	धम	नध	मग	राग	न	ध	मग	राग

२

गग	मम	सं	सं	न	सं	नध	मग	राग	नध	नध	मग
रांन	धम	धसं	रांन	धम	धन	सं	नध	म	धग	मग	राग

३

नंरा	गम	गरा	नंधं	नंरा	गम	धन	धन	ध	मग	मध	नरां
गन	रांग	म	ध	रां	न	धम	ग	स	नध	मग	राग

इस स्वर-लीपि में धैवत के स्थान पर पञ्चम लगाने से "कुमारी" राग होगा।

पम	गरा	गम	गरा	स	नंपं	मंपं	स	सरा	गम	न	प
मग	रा	गम	न	पम	नप	मग	राग	न	प	मग	राग

बाक़ी अन्तरा इसी रीति से लिखकर शिक्षार्थी लोग अभ्यास कर लेवें।

ऊपर लिखे जयत् के स्वर-लिपि में "मध्यम" के स्थान "पञ्चम" वो "रिषभ" वो "धैवत" तीव्र करने से "देसकार" राग हो जायगा।

धप	गर	गप	गर	स	पंधं	मंधं	स	सर	गप	न	ध
पग	र	गप	न	धप	नध	पग	रग	न	ध	पग	रग

इसका बाक़ी अन्तरा शिक्षार्थी लोग लिखकर अभ्यास कर लेवें।

(१८) जैत् । तेताला ।

शिक्षक अली महम्मदखाँ (बड़कु) रबाबी।

१

+		१		०		२	
धम	गरा	गम	गरा	स	नंधं	मग	रास
सरा	गम	नध	मग	मन	धम	गरा	सध

२

मध	नस	स	रास	रा	ग	धम	गरा
म	ध	मध	गरा	न	धम	गरा	सध
नन	धम	ग	ग	ग म	ध	मम	गरा
नन	धस	न	मध	धन	धम	गरा	सध;

(१६) मुलतान ।

ओड़वसम्पूर्ण । स गा म प न-न धा प म गा रा स। ढिमातेताला ।

दिल्लीपति नरेन्द्र सिकन्दर शाहे जाको डर से ध्वनि पै हिल हिलायो ॥१॥
दलशाहे महिमा अपार अगाध जहाँ गुणी जन विद्या तहाँ किरत छायो ॥२॥
नाद विद्या गावे सुनि आलम धावे दिन दुनिके तुमहि अवतार आयो ॥३॥
कहत नायक गोपाल चिरञ्जीव रहो पादशाह गहन ते आय मृग धायो ॥४॥

+	२	०	३
रारा सस नंनं सस	नंस गागा मप पप	म प मगा म प गामप	नन नन धाधा पप
न ० रे न् ० ० द र	सिकं ० ० ०० द र	शा० हे ० जा० को ००	ड० र ० से ० ००
मप मगा मगा मप	पप मगा नधा पप	मगा मगा रारा सस	प प मगा मगा रास
ध र ० ० नि० ० ०	पय ० ० हि ० ल०	हिला ० ० ० ० यो ०	दिल् ली० ० ० पति;

२

पप मगा मप नस	सस सस रारा सस	गारा सस सस स स	नधा पप मगा मगा
दल ० ० शा० हे ०	महि मा० अपा ० र	अ गा ० ० ० ० ध ०	जहां ०० गुणी ० ०
मप नन सस सस	नधा नधा पप मप	मगा मगा रारा सस	प प मगा मगा रास
जन ०० ० ० वि द्या	त हां ०० ०० ००	कि र त ० छा० यो ०	दिल ली० ० ० पति;

३

धाधा पप नधा पप	पप मगा मगा मप	प प नन नन धाप	मगा मगा रारा सस
ना ० द० वि ० द्या०	गावै ० ० ० ० ००	सुनि आ० लम धावे	दि० न ० दु ० नि०
सस सस नंस गागा	मप मगा मप पप	नधा पम गागा रास	प प मगा मगा रास
के ० ० ० तुम हि ०	अव ० ० ता० ०र	आ० ०० ० ० यो ०	दिल ली० ० ० पति;

४

पप मगा मगा मप कह त० ०० ००	नन सस गारा सस ना० यक गो० पाल	नन सस रारा स स चिरं ० ० जी ० व ०	नस नधा पप पप र हो ० ० ०० ००
मप मपम गाम पप पाद शाह० आ० ०ज	नन सस स स स स गह न ते आ ० य ०	नधा पम गाम गारास सृ ग ० ० ० ० छाये ०	प प मगा रारा सस दिल ली० ० ० पति;

(२०) मुलतान । धामार ।

शामल दा होरि खेलन नु माडा आवन्दा ॥१॥

बंशी दि दान बजावनदा गावनदा साडा मन ललचावन्दा ॥२॥

चोबा चन्दन अगर कुमकुम अबीर गुलाल उड़ावन्दा ॥३।

तान तरङ्ग प्रभु रस भरि छिड़कत रहस रहस गरेलावन्दा ॥४॥

१

नं स गा हो ० रि	म प खे ०	प प ल न	न धा प नु ० ०	म गा मा डा	म गा ० ०
म प न आ ० ०	धा प व न्	मगा रास दा० ० ०;	पम गा मप शा० ० ००	म गा म ल	रा स दा ०

२

म प प वं ० ०	म म शी ०	म प दि ०	म प न ता ० न	स स ब जा	स स व न्दा
गारा स स गा० ० ०	न धा वं ०	प पम दा ००	गा गा गा सा डा ०	म प म न	प प ० ०
न न न ल ल ०	धा प चा वं	मगा रास दा० ००;	प म गा मप शा० ० ० ०	म गा म ल	रा स दा ०

३, ४

प म गा	म गा	म प	न न न	स स	स स
चो ० बा	चं ०	द न	अ ग र	कु म	कु म
न स स	गारा स	स स	न न न	धा प	म गा
अ बी र	गु ला ०	ल ०	उ ड़ा ०	वं ०	दा ०
म म गा	म प	न न	स स स	गा-रा स	स स
ता ० न	त रं	ग ०	प्र भु ०	र स ०	भ रि
म प प	न न	न न	स स स	न स	रा स
छि ड़ ०	क ०	त ०	र ह स	र ह	स ०
न न धा	प प	मगा रास	पम गा म प	म गा	रा स
ग रे ०	ला वं	दा ० ० ०;	शा० ० ० ०	म ल	दा ०

(२१) मारुवा।

शुद्ध षाड़व स रा ग म ध न, चौताल और तेताला।

+ नध मग	रारा गग	मग रास	नं स	नध मग	रा गरा
म गरा	मग नध	रान ध	रान धमग	नध मगरा	धम गरास;

अन्तरा

गम ध	नध मगरा	गम ध	नस न	रा ग	रा स
नरा गम	गरा स	राराराननन	धधध मग	रान धमग	धमग रास

संचारी

मन धमग	धध म ग	न ध मग	रान धम	नध मगरा	धम ग
शुद्ध ० ० ०	वाणि लिये	आला ० प	गी० तके	प्रमा ० ० न	ना० द
ध ध मग	नसन धमग	सन धम ग	रान मग	नध मरा	धमग रास
सूक्ष्म क र	देखा० ०वे ०	ता० ० ०को	क ० हत	सब वि ध	गा० ० यक;

आभोग

मध	नस	स	स	न	सस	नराग	रास	रान	धम	नध	मग
जो०	कोउ	वा	द्	वि	बाद	अनु ०	बा द	सं ०	वाद	के बे	ओरे
मध	मग	मग	रास	रारा	नन	धध	मग	नधम	गरा	धमग	रास
न्या०	रे ०	क०	रे ०	ज ग	उन्हें	कह	त ०	गुनिज	न के	ना००	य क;

शिक्षक—अली महम्मदखाँ (बड़कू) रबाबी

(२२) मारुवा चौताल और तेताला।

+		०		१		०		२		३	
धम	गरा	गम	गरा	स	स	नध	रा	ग	म	ग	रा
स	स	सरा	गम	न	रा	गम	न	धम	ग	मगरा	न;
गम	ध	नरा	स	ग	म	न	ध	मध	मग	धम	गरा
सरा	गम	गरा	स	न	ध	नन	धध	नध	मग	मगरा	न;

(२३) मारुवा चौताल और तेताला।

शिक्षक अली महम्मदखाँ (बड़कू)

न	ध	राग	म	ग	रास	नध	म	राग	म	न	ध
मग	रास	नंरा	गम	गरा	स	रान	धम	धमग	रास	धमग	रास;
गग	मम	धध	मम	धध	न	स	स	न	रा	गरा	स
नरा	गम	गरा	स	राराा	ननन	धधध	ममम	धमग	रास	सरा	गम;

मेघ

रात्रि तृतीय १० दण्ड

श्रावण-भादों ।

सूची

राग नाम ।	बोल	रचयिता	ताल
मेघ	—(१) श्यामसि घनश्याम	— (तानसेन) —	चौताल ।
”	—(२) रिमझिम बरसे	— (”) —	धामार ।
”	—(३) प्रबल दल साजे	— (”) —	झँपताल ।
ललित	—(४) तुरि मन सुमिरन	— (”) —	ढीमा तेताला ।
”	—(५) होरी का खेलाड़ भये	— —	धामार ।
खम्बाज	—(६) शून्य भवन उन बिन	—(चिन्तामणि) —	चौताल ।
,’	—(७) जाओजी जाओ	— —	धामार ।
”	—(८) सरगम	— —	धामार ।
गौड़मल्लार	—(९) तुम नयन में मानो	— (इच्छावरस) —	चौताल
सुरटमल्लार	—(१०) तिया आँखिया योगन	— —	चौताल
देशमल्लार	—(११) ए दई पिया बिन	— —	झँपताल ।
सुरट	—(१२) सरगम	— —	चौताल व तेताला ।
देश	—(१३) ”	— —	तेताला ।
जयजयन्ती	—(१४) प्रथम मानि अउमकार	(बैजूबावरा) —	चौताल ।
”	—(१५) सखी का पतवा	— —	धामार ।
”	—(१६) ए माई सब कोउ	— —	चौताल ।

मेघ।

भूतानां बीजसंयुक्तो रसपूर्णः सदा शुचिः।
भूतानि मेहयेन्नित्यम् मेहनान्मेघनामकः॥

(महेशचन्द्र सरकार)

पंचाशच्च तथा वर्णा अंका नाम महेश्वराः।
राशयो द्वादश तथा नक्षत्राणि तथैव च॥
स्वाधिष्ठानसमुद्भूतो जगद्बीजसमन्विताः।
क्षणवृद्धिं समायान्ति ततो रेतः प्रवर्त्तते॥
रेतसस्तु जगत् सृष्टं मेघो हि जननेप्रियम्॥

शास्त्र में कहा है कि पंचानन के ऊर्द्ध्व मुख से मेघराग निकला है। वर्षाऋतु (श्रावण-भाद्र) में सब समय इस राग को गा सकते हैं। रात्रि तृतीय दश दण्ड के समय भी इसको और अन्यान्य सामयिक रागों को गा सकते हैं। अपराह्णकाल को किसी किसी ने वर्षाकाल कहा है इसलिए उस समय भी इस राग को गा सकते हैं। शुद्धभाव से इसको गाने से वर्षा, क्षयरोग का नाश, मोह का दूर होना आदि फल हो सकते हैं। हस्ति (निषाद) के सुर से गाने से कदाचित् ये फल प्राप्त हो सकते हैं।

षड्जे धैवतिकोद्भूतः षड्जतारसमस्वरः।
मेघरागो मन्द्रहीनो ग्रहांशन्यासधैवतः॥

(रत्नाकर)

नीलोत्पलाभवपुरिन्दुसमानवक्त्रः
पीताम्बरस्त्रिषितचातकयाच्यमानः।
पीयूषमन्दहसितो घनमध्यवर्त्ती
वीरेषु राजति युवा किल मेघराजः॥

(पारिजात)

षडजादिमूर्च्छनोपेतः षड्जत्रयसमन्वितः।
ग-नि हीनोऽपि मल्लारो वर्षासु सुखदायकः॥
यतो वर्षासु गेयोऽयम् मेघ इत्यपि कीर्त्तितः।
अकालरागगानेन जातदोषं हरत्ययम्॥

(पारिजात)

(१) मेघ ।

शुद्ध षाड़व । स र मा प ध ना । चौताल ।

श्याम सि घनश्याम उमड़ घुमड़ आयो मन्द मन्द मुरलि तान गगन घेर घहर आई ॥१॥
इत जलधर बुन्द उत सुधा बरषत इत चपला उत पीताम्बर पहिर आई ॥२॥
तासो मुक्त माला गले इत बक पान ते देखो उत धुरवार डार गरज सब छाई ॥३॥
यह शोभा निरखत तानसेन प्रभु कौन अरुणवरण बादर ते लाल पाग पहिर आई ॥४॥

[मेघ राग में आरोहण में जैसा धैवत लगता है अवरोहण में वैसा नहीं लगता। इस गीत में ऐसा ही है। दूसरे गानों में धैवत का व्यवहार आरोहण और अवरोहण में थोड़ा होने के कारण धैवत बिवादी है ।]

+	०	१	०	२	३	+	०	१	०	२	३
गमक		गमक									
ना ना	स स	ना ना	ससनाप	मा प	स स	ध ध	प ध	ध प	मा र प	मार प	मा र
श्या ०	म ०	सि ०	० ० ० ०	घ न	श्या म	उ म	ड घु	म ड	आ ० ०	यो० ०	० ०
									गमक	गमक	गमक
मा र	र मा	र र	स स	स र	स स	नां स	र मा	पधमाप	र र र	स स स	नापमारस
मं ०	द मं	० द	मु र	लि ता	० न	ग ग	न घे	० ० ० र	घ ह र	आ ० ०	० ० ० ई ०

२

मा प	ना प	ना ना	स स	ना स	स स	ना स	र र	स स	ना स	ध प	प प
इ त	० ०	ज ल	ध र	बुं ०	० द	उ त	सु धा	० ०	ब र	ष ०	० त
									गमक	गमक	गमक
मा र	र र	मा प	प प	मारनाप	प प	मा मा	र र	स स	र र र	स स स	नापमारस
इ त	० ०	च प	० ०	ला० ००	उ त	पी ०	तां ०	ब र	पहि र	आ० ०	० ० ० ई ०

३

मार मा	प प	धमा प	प प	मा प	प प	मा प	ध स	ध प	प प	ध प	प प
ता० ०	सो ०	मु० ०	क्त मा	० ला	ग ले	इ त	ब क	पा न	ते ०	दे ०	खो ०
									गमक	गमक	गमक
मा र	स स	मा र	र स	र स	स स	नां स	र र	र र	र र र	स स स	नापमारस
उ त	धु र	० वा	० र	डा ०	० र	ग र	ज ०	स ब	छा० ०	० ० ०	० ० ० ई ०

४

मा प	(ना ना	स स	स स)	ना स	(स स	रनास	स स	स स	स स	र र	स स
य ह	शो ०	भा ०	० ०	नि र	ख त	ता० ०	न से	० न	प्र भु	कौ ०	० न
									गमक	गमक	गमक
मा र	स मा	र स	ना स)	स स	स स	ना ना	प स)	स स	र र र	ससस	नापमारस
अ रु	न ब	र न	बा ०	द र	ते ०	ला	ल पा	० ग	प हिर	आ० ०	० ० ० ई ०

(२) मेघ ।

धामार ।

रिमि झिमि बरषे आज बादरवा पिया बिदेश मोरि थरथरात छतिया निशदिन मन भाँवे ॥१॥

नयन हु न नींद आवे दामनि दमकत लागि उन बिन कल ना पड़त नाथ नाथ करि धावे ॥२॥

रहेओ न जाय घड़ि पल छन तन दहे मेरि आये मदन मोसन योझत अवसर पाये ॥३॥

निकसत नहीं प्रान हो रही चित पाखान तापर कर बखान तानसेन गावे ॥४॥

+			०		।		०			।		०	
ना	स	र	र	स	ना	प	मा	प	प	मा	र	मा	र
ब	र	पे	०	०	आ	ज	बा	द	र	वा	०	०	०
मा	मा	र	र	र	र	र	स	र	स	स	स	स	स
पि	या	०	०	०	०	०	बि	दे	श	मो	०	रि	०
मा	प	प	ना	ना	स	स	स	स	स	ना	स	स	स
थ	र	०	थ	रा	०	त	छ	ति	या	०	०	०	०
मा	मा	मा	र	स	ना	प	ना	ना	प;	मा	र	मा	प
नि	श	०	दि	न	म	न	भां	०	वे	रि	मि	झि	मि

२

मा प प	ना ना	ना ना	स स स	ना ना	स स
न य न	हु ०	० न	नि ० द	आ ०	वे ०
ना र र	स स	स स	स रस स	नाध मा	प प
दा म नी	० ०	० ०	द मक त	ला० ०	गि ०
मा र र	मा मा	मा मा	पप धमा प	प प	प प
उ न ०	बि ना	० ०	कल ना० ०	प ड़	त ०
मा मा र	स स	ना ना	ना ना प;	मा र	मा प
ना ० थ	ना थ	क रि	धा ० वे	रि मि	झि मि

३

मा मा र	मा मा	प प	ध धमा प	प प	प प
र हे ओ	न ०	जा त	ध ड़ि० ०	प ल	छ न
प प प	ध ध	स स	ध प प	मा मा	र र
त न ०	द ०	हं ०	मे रि ०	आ ०	ये ०
स स स	स स	स स	र मा मा	प प	प प
म द न	० ०	० ०	मो स न	ये ०	झ त
मा मा मा	र र	स स	ना ना प	मा र	मा प
अ व ०	स ०	र ०	पा ० ये;	रि मि	झि मि

४

मा प प	प प	ना ना	स स स	स स	स स
नि क ०	० ०	स त	न हीं ०	० ०	प्रा न
ना र र	र र	र स	ना ना ना	ना ना	प प
हो ० ०	र हि	० ०	चि त ०	पा ०	खा न
मार मा मा	मा मा	मा मा	प प प	प प ध	मा प प
ता० प र	० ०	० ०	क र ०	ब खा ०	० ० न
मा मा र	स स	स स	ना ना प	मा र	मा प
ता ० न	सं ०	न ०	गा ० वें;	रि मि	झि मि

(३) मेघ ।

शुद्ध षाड़व । स र माप ध ना । झँपताल ।

प्रबल दल साजे झुक झूम या भूम पर उमंड घनघोर झर इन्द्र ले आयो रे ॥१॥

बरसत मुसलधार होत पहर चार कृष्ण गिरिधर गोकुल बचायो रे ॥२॥

बूँदन ते धरणीधर सबन को रच्छा कर पशु पंच्छी जीव जंतु अति सुख पायो रे ॥३॥

कहैं मियाँ तानसेन तेरी गति अव्यक्त सुरपति अधीन होय सीस नवायो रे ॥४॥

१

+ ।	। । ।	० ।	। । ।	+ ।	। । ।	० ।	। । ।
स ना	स ध प	ना मा	प मा र	मा मा	र प प	मा मा	र स स
प्र ब	ल द ल	सा ०	जे झु क	झू ०	म या ०	भू ०	म प र
नां स	र मा प	ध ध	प मा प	ध स	ध प मा	रमा प	ना ना प
उ मं	ड घ न	घो ०	र झ र	इं ०	द्र ले आ	यो० ०	रे ० ०

२

+ ।	। । ।	० ।	। । ।	+ ।	। । ।	० ।	। । ।
मा प	ना ना ना	स स	ना स स	ना स	र मा र	स स	ना ना प
ब र	स त मु	स ल	धा ० र	हो ०	त ० प	ह र	चा ० र
र र	र स स	स स	मा प प	ध स	ध प मा	रमा प	ना ना प
कृ ०	ष्ण गि रि	ध र	गो ० ०	कु ल	ब चा ०	ये० ०	रे ० ०

३

+ ।	। । ।	० ।	। । ।	+ ।	। । ।	० ।	। । ।
मा र	मा मा मा	प मा	प प प	मा प	ध स स	ध प	मा र र
बूँ ०	द न ते	ध र	णी ध र	स ब	न को ०	र च्छा	क र ०
मा मा	र र र	स स	स स स	नां स	र मा प	नाना ना	ना ना प
प शु	पं च्छी ०	जी व	जं ० तु	अ ति	सु ख पा	यो ० ०	रे ० ०

४

+ ।	। । ।	० ।	। । ।	+ ।	। । ।	० ।	। । ।
मा प	ना ना ना	स स	ना स स	ना स	रमा र स	ना स	ना ना प
क हैं	मि ० यां	ता न	से ० न	ते ०	री० ग ति	अ बी	य क्त ०
र र	र मा र	ससस	ना स स	मा पस	ना प मा	रमा प	ना ना प
सु र	प ति ०	अधी न	हो ० य	सी ०स	न वा ०	यो० ०	रे ० ०

(४) ललित ।

मिश्र षाड़व । स रा ग मा म धा न । ढिमा तेताला ।

नुरि मन सुमिरन कर कर निश दिन रहे रहे शाहेन शाह मदारि ॥ १ ॥

हम तो सेवक दरबार के जाचक तुम हो अल्लाह हजुरि ॥ २ ॥

जोइ जोइ धावत सोइ फल पावत न्यामत पावत चोरि ॥ ३ ॥

तानसेन के प्रभु यहि वर माँगत हैं तान राग समपुरि ॥ ४ ॥

+	२	०	३
मामा मामा मामा मामा	ममा ममा ममा मग	मधा मधा मम मामा	ममा ममा ममा मग
सु ० मि ० र ० न ०	क र ० ० क र ० ०	नि श ० ० ०० दि न	र हे ० ० र हे ० ०
म म धाधा नन सस	नसरा नस नधा नधा	ममा मामा माग रास	नंरागमागरासनंरागमा
शा० ० ० हे० न ०	शा० ० ० ० हे ० ० ०	० ० ० ० मदा ० रि;	नु० रि ० ०म न ० ० ० ०

अन्तरा

मम धाधा नन सस	स ससससससस स स	न स न स रा न स स	नधा ममा मामा माग
ह० म ० तो० ० ०	से ० व क द र ० ०	बा र के ० ० ० ० ०	० ० ० ० या च क ०
मम धाधा नन स स	स स स सनस रानस	नधा मम माग रास	नंरागमागरासनंरागमा
तु० म ० हो० ० ०	अ ल् ० ०ला० ० ० ०	० ० ०० ह जु रि ०	नु०रि० ० म न० ० ० ०

सञ्चारी

नंनं रारा गग मामा	मामा मामा ममा मग	मम धाधा नन सस	नस रानसनधाममा
जो० इ ० जो० ई ०	धा ० व त ० ० ००	सो० इ ० फ ० ल ०	पा० ० ० ० ० ० व त
मामा गग रारा सस	नंनं रारा गग मामा	मामा मामा ममा मग	नंरागमाग रासनंरागमा
न्या० ०० म ० त ०	पा० ० ० व ० त ०	चो ० रि ० ० ० ० ०;	नु०रि ० ० मन० ० ० ०

आभोग

मम धाधा नन सस	सस सस सस सस	नस सस रास सस	नस रान सनधाममाग
ता० न ० से ० न ०	के ० ० ० प्र ० भु ०	य हि ० ० व र ० ०	माँ० ० ० ० ० ० ० ग त
मम धाधा नन सस	नस रान सन धाधा	मधा ममा माग रास	नंरागमागरासनंरागमा
ता० न ० रा० ग ०	सम ० ० ० ० ० ०	० ० ० ० पु ० ० रि;	नु० रि० ० म न० ० ० ०

[इस राग में स्वाधीन धैवत नहीं लगेगा परन्तु मध्यम के मीड़ के साथ लगेगा । पश्चिम देश के तन्त्रकार लोग पुरबी और ललित के धैवत को विचित्र कहते हैं ।]

(५) ललित । धामार ।

होरि का खेलाड़ भये आज ब्रज में तुमहि अनुखि लाल ॥ १ ॥

बर जोरि कुच मुख मसलत नाचत दे दे ताल ॥ २ ॥

गारि देत और तारि बजावत छिरकत रङ्ग गुलाल ॥ ३ ॥

कृष्णा जीवन प्रभु कैसे रहेंगी ब्रज में ब्रज बाल ॥ ४ ॥

+	०	।	०	।	०
मा मा मा	म मा	ग ग	मधा म मा	मा मा	मा ग
खे ला ड़	भ यो	० ०	आ० ० ज	ब्र ज	में ०
म धा धा	न स	स स	न स रा	न स	न धा
तु म ०	हि ०	० ०	अ नु ०	० ०	खि ०
मधा म मा	मा ग	रा स;	नं रा रा	ग मा	ग माग
०० ० ०	ला ०	० ल	हो ० ०	रि ०	० का०

म धा धा	न न	स स	स स स	न स रा	न स
ब र ०	जो ०	रि ०	कु च ०	० ० ०	मु ख
न धाम धा	म म	मा मा	मधा न स	न स रान	सन धा
म स० ०	ल ह	त ०	ना० च त	दे ० ००	दे ० ०
मधा म मा	ग ग	माग रास	नं रा रा	ग मा	ग माग
०० ० ०	० ०	ता० ०ल	हो ० ०	रि ०	० का०

नं रा ग	मा मा	मा मा	म म मा	म म	मा माग
गा ० रि	० ०	दे त	अ उ र	० ०	ता रि०
मा मा मा	ग ग	ग ग	म धा धा	म म	मा मा
ब जा ०	व त	० ०	छि र ०	क त	रं ग
मा ग ग	रा रा	स स	नं रा रा	ग मा	गमा ग
गु ला ०	० ०	० ल;	हो ० ०	रि ०	०का ०

म	धा	धा	न	स	स	स	स	स	स	न	सरा	न	स
कृ	०	ष्ण	जी	०	ब	न	प्र	भू	०	कं	० ०	से	०
न	धा	मधा	म	म	मा	ग	म	धा	धा	न	स	स	स
र	हैं	० ०	०	०	गी	०	अ	ज	०	में	०	ब्र	ज
नधा	मधा	म	मा	ग	रा	स;	नं	रा	रा	ग	मा	गमा	ग
० ०	० ०	०	०	०	ग्वा	ल	हो	०	०	रि	०	०का	०

(६) खम्बाज ।

षाड़व सम्पूर्ण। स ग म। प धना—ना ध प मा ग र स। चौताल।

शुन्य भवन उन बिन कैसे रहेउ जाय निकट कारि बरषा ऋतु आँई अब बिरहिन पर मदन दुन ॥१॥

रजनी अँधियारी भारि कारि कारि कजरारि झिलि झिलक भई दादुर मोर शोर शर समान भुन ॥२॥

जुगुनु जगमगात चमके चपला तैसी पवन झक झोर देत दुख दुन ॥३॥

चिन्तामणि ब्रजचन्द्र नन्दन आनन्दकन्द किन हो मेरे नयन चकोर निरखि मुखचन्द्र पुन ॥४॥

+		०		१		०		२		३	
स	ना	र	स	ना	धप	धप	ध	ना	ध	प	प
शु	०	न्य	भ	व	न ०	उ ०	न	बि	न	कैं	से
मा	मा	प	पध	मा	ग	ग	ग	गर	गग	र	स
र	हे	उ	० ०	जा	य	नि	क	ट०	का०	०	रि
स	स	गमा	ग	मा	ध	ना	सना	स	स	स	स
ब	र	षा०	०	ऋ	तु	आ	० ०	ई	०	अ	ब
र	र	स	स	स	सना	स	स	ना	ध	नाप	ध
बि	र	ह	न	प	र ०	म	द	न	दु	० ०	न;

अंतरा

मा	मा	ध	ध	ना	स	स	सना	स	स	ना	स
र	ज	नी	०	अँ	धि	या	० ०	रि	भा	०	रि
ना	स	र स	स	ना	स	ना	ना	ध	ध	प	प
का	रि	का ०	रि	क	ज	रा	०	रि	०	क्षि	लि
प	प	प	ध	ना	सना	स स	स	स	स	स	स
झ	ल	क	०	भ	ई ०	दा ०	०	दु	र	मो	र
र	र	स	स	स	स ना	स	स	ना	ध	नाप	ध
शो	०	र	श	र	स ०	मा	०	न	झु	० ०	न;

सञ्चारी

मामा	पप	पप	पप	धमा	पप	गमा	धना	धना	माप	पप	पप
जु ग	नु०	जग	मगा	० ०	० त	च म	के ०	च प	ला०	तेय	सी०
गग	गग	माध	माप	गग	रस	माधना	माधना	पध	गमा	धना	पध
पव	न ०	० ०	झक	झो०	० र	दे ० ०	त ० ०	० ०	दु ख	० ०	दुन;

आभोग

मामा	धध	नन	स स	सस	सस	सस	सस	रर	सस	सन	धप
चिं ०	ता०	मणि	ब्र ज	चं ०	द्र ०	नं ०	द न	आ०	नं ०	द कं	० द
गग	गग	रर	सस	सना	सस	सस	सर	सस	नाना	धना	पध
किन्	हो०	मेरे	न य	न च	को र	नि र	ख०	मुख	चं ०	द्र पु	न०

(७) खाम्बाज । धामार ।

जाओ जी जाओ अपने द्वार जिन करो हो रार (मोंसे) ॥१॥
जिनके रस बस भये मोहन जहाँ सिधारेओ तहाँ नई बाहार ॥२॥
मेरी प्रीत को कौन भरोसो वहीं जाओ जाहिक एतवार ॥३॥
इच्छा पूजाउ वाहि पिया कि जिन गले लिपटायो भुजा डार ॥४॥

स सना सर	स ना	ध प	मा प ध	स ना	ध प
अ पने ००	द्वा ०	० र	जि न ०	क ०	रो ०
मा प ध	मा ग	र स	ग माप ध	ना ना	स स
हो ० ०	रा र	मों से	जा ओजी ०	जा ०	ओ ०
मामा नाध	ना ना	स स ना	स स स	ना ना	ध प
जिन के ०	र स	ब स ०	भ ये ०	मो ०	ह न
मा ना ध	मा मा	ना ध	नाना स स	स ना	स स
ज हां ०	० ०	० ०	सिधा रे ओ	त हां	० ०
ना स र	स स	ना धप	मा प ध	स ना	ध प
न ई ०	बा हा	० ० र	जि न ०	क ०	रो ०
मा प ध	मा ग	र स;	ग मा प ध	ना ना	स स
हो ० ०	रा र	मों से	जा ओ जी ०	जा ०	ओ ०
मा पप मा	प प	मा प	मा ध ना	ध प	मा प
मे रि० ०	प्री त	को ०	कौ ० न	भ रो	से ०
मा मा ग	र स	स स	स गमा प	मा नाध	मा प
व हीं ०	जा ओ	० ०	या हि ० क	इ त ०	वा र;
माध ना ध	ना ना	स स	नास र स	ना ना	ध प
इच्छा ० ०	पू जा	उ ०	बा ० हि ०	पि या	कि ०
मा प ध	माना ध	ना स	स स स	ना ना	ध ध
जि न ०	० ० ०	ग ले	लि प टा	यो ०	० ०
प प प	मा ना	ध प	मा प ध	स ना	ध प
भु जा ०	० ०	डा र	जि न ०	क ०	रो ०
मा प ध	मा ग	र स;	गमा प ध	ना ना	स स
हो ० ०	रा र	मों से	जाओ जी ०	० ०	जा ओ

(८) खाम्बाज । धामार ।

ना	ध	ञ	मा	प	ञ	ध	ग	मा	प	मा	ग	र	स
ग	ग	स	गसा	धन	सर	सना	ध	ञ	ञ	मा	प	ना	ध
मा	प	ध	ग	मा	प	मा	ग	र	स	ग	मा	प	मा;
ध	ध	मा	ध	ध	माधन	स	नस	गग	रस	नाध	नर	सना	धप
मा	पसना	ध	मापनाध		मा प	ध	गमा	प	मा	गर	स	गमा	पमा;

[किसी किसी तन्त्रकार का मत है कि खाम्बाज में दोनों निषाद लगाना चाहिए। परन्तु जो लोग शुद्ध राग के प्रिय हैं वे केवल कोमल निषाद का व्यवहार करते हैं।]

(९) गौड़मल्लार ।

शुद्ध षाड़व । स र मा प ध ना । चौताल ।

तुम नयन में मानो काम कि घटा सि उमड़ घुमड़ आइ ॥१॥
पलक दुन सोइ गरजत चञ्चल चमकत चपला सि कुन्दत ऐसो आइ ॥ २ ॥
और बरन धुरवासी ताइ बकपान्ति तारन कि ज्योत झिंगन सि डोर मानो इन्द्रवधु सोहाइ ॥ ३ ॥
पानी पड़त बुन्दन सो महम्मद शाह पिया कि इच्छा बरस ऐसो आई ॥ ४ ॥

+		०		१		०		२		३	
मारमा	रमाप	प	पमा	धनाध	ना	सं	सं	ध	ध	ना	सं
मे ० ०	० ० ०	०	मा०	० ० ०	०	०	नो	का	म	०	कि
धध	धध	ना	प	मा	प	मा	र	मामा	र	मामा	र
घ टा	० ०	०	सि	०	०	०	०	उ म	ड़	घु म	ड़
		गमक		गमक		गमक					
स	सनां	सस	सस	रस	रर	मार	मामा	रर	रर	स	स
आ	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	००	००	०	०
र	र	नां	सनां	स	स;	ध	ध	प	प	मा	आर
०	०	०	० ०	०	इ	तु	म	न	य	न	० ०

अन्तरा

नाध	नाध	ना	स	स	स	सना	स	र	रस	र	स
प०	ल०	क	ढु	०	न	सो०	इ	ग	र०	ज	त
मामा	मामा	र	र	सना	र	स	सना	धना	स	र	स
चं०	००	च	ल	च०	म	क	त०	चप	ला	सि	०
								गमक		गमक	
धध	पमाप	मामा	र	स	नाधना	सना	सस	र	सरर	मामारमामारस	
कुँ०	दत०	एय	सो	आ	०००	००	००	०	०००	०००००००	
रर	नास	धना	सर	नास	नास	ध	ध	प	प	मा	मार
००	००	००	००	००	०इ	तु	म	न	य	न	००

सञ्चारी और आभोग

(गमक)											
मामाना	धना	सस	सस	पना	धप	धमा	पप	माप	धध	नास	धध
अउर	०ब	रन	धुर	बा०	०सि	ता०	इ०	बक	पीं०	००	नि०
पप	माप	मार	मार	मामा	रर	स	सस	ध	धना	धना	धप
ता०	रन	कि०	ज्योत	किँ०	गन	सि	डोर	मा	नो०	ईँ०	द्र०
										गमक	
ध	ध	नास	नास	स	स	मानाध	नासस	सस	सस	नासर	ररर
ब	धू	सोहा	०इ	०	०	पानि०	पड़त	बुँद	नसो	महम्मद	शा०ह
गमक		गमक		गमक		गमक		गमक		गमक	
मामार	सस	ससस	नानाना	धना	सर	नास	धप	माप	मार	रधध	नास
पियाकि	इच्छा	बरस	गैसो०	आ०	००	००	००	००	००	०००	००
गमक		गमक		गमक							
सर	सर	मामा	रस	पमा	रस	धना	सरस	धध	पप	मा	मार
००	००	००	००	००	००	००	०इ०;	तुम	नय	न	००

(१०) सुरट ।

ओड़व षाड़व । स र मा प न—ना ध प मा र स ।

चौताल ।

तिया आँखिया योगन कड़मड़ि पलकन दिगवरनि कण्ठ
असुरन रक्त वदन सोइ भिङ्गोइ वसन कण्ठ किनि ॥ १ ॥
श्याम श्वेत अरुन गुदरि बरुनि अञ्जन की शेलि
अवध अँधियारि गहन तड़क छवि बिभुति गुपत त्रिशुल त्रिशुलन
त्रिविध कटाच्छन तक तक निशि पल लागन निद छाड़ि दिनि ॥ २ ॥
सदा अँसुअन नदि स्नान करन विरह अग्नि निद तपन जग दरशन
भोजन त्यजन पिया मन्त्र जपत सोच मान लिनि ॥ ३ ॥
उर्द्ध दृष्टि आस खर्पर पिया भिक्षा करन को
यह तपते जपते पायो मुक्त शाहेन मन मीन लिनि छिनि ॥ ४ ॥

+		०		१		०		२		३	
	।	।		।	।	।	।	। ।	। ।		
न	स	स	न	स	स	स	स	स र	स र	ना	ना
या	०	यो	०	ग	न	क	ड़	म ०	ड़ि ०	०	०
ना	ना	ना धनाधनाध		प	प	ना ना	धप	मापध	प	मा	प
प	ल	क न ० ० ० ०		०	दिग	व र	० ०	० ० ०	नि	०	०
मा	र	प	मार	र	र	स	स	स	स	र	स
कं	ठ	०	न ०	अ	सू	र	न	र	क्त	०	०
								।	।	।	।
स	सस	मा	र	मा	प	ना	पन	स	स	स	स
ब	द न	सो	इ	भिं	गो	०	०हि	०	ब	स	न
।	। ।	। ।									
स	र स	रस	नाधप	माप	धना	धपमा	पमार	मा	र	मा	प
कं	० ०	ठ ०	कि ० ०	० ०	० ०	नि० ०	० ० ०	ति	या	आं	खि,

अन्तरा

				।	।	।	।	।	।	।	।
मा	प	नाप	न	स	स	रन	स	स	स	स	स
श्या	म	० ०	स्वे	त	०	अ०	रू	न	गु	द	रि
				।	।	।	। ।	।	।	।	।
ना	प	प	प	र	र	र	रस	र न	स	स	स
ब	रू	नि	०	आं	ज	न	० ०	कि ०	०	शे	लि
								मीड़			
ना	ना	ना	ना	ना	ना	ना	धप	माना	धप	मा	पमा
अ	व	ध	०	अँ	धि	या	० ०	० ०	रि०	०	० ०
प	मा	र	पप	मा	र	र	र	स	र	स	स
ग	ह	न	तड़	क	०	छ	वि	वि	भू	०	ति
स	र	स	र	मा	प	प	प	धध	माप	प	प
गु	प	त	त्रि	शु	०	ल	त्रि	शु ०	० ०	ल	न
										।	।
नाना	ना	नाधना	धनाध	प	प	मा	प	नाप	न	स	स
त्रि वि	ध	क टा ०	० ० ०	स	न	त	क	० ०	त	०	क
।	।	।	।		।	।	।	।	।	।	।
स	स	स	स	न	स	स	स	स	स	स	स
नि	श	प	ल	ला	०	ग	न	०	नि	०	द
। ।	। ।	। ।		मीड़							
सर	सर	रस	नाधप	मा	ना	धपमा	पमार	मा	र	मा	प
छ०	० ०	ड़ि ०	दि ० ०	०	०	नि० ०	० ० ०	ति	या	आ	खि;

सञ्चारी आभोग

+		०		१		०		२		३	
										मीड़	
मामार	माप	पप	पप	पप	धमाप	पप	पप	नानाना	नाना	मानाध	पपप
स दा ०	अँशु	अन	नदि	अस	ना ०न	कर	न०	वि र ह	अ ग्नि	नि ० द	त पन
माप	मामा	रर	रर	पप	मार	सस	सस	मा मा	रमाप	प प	प प
ज ग	द र	शन	००	भो०	ज न	तज	न ०	पि या	० ० ०	मं ०	त्र ०
		। ।	। ।	।		मीड़				। । । । ।	
मापन	न	सस	र स	रना	ना	मानाधपमापमार		पप	नन	स स स स स	
ज प त	सो	० च	मा ०	० न	लि	० ० ०नि० ० ० ०;		उर्ध	दृष्टि	आ स ख र्प र	
। ।	। । ।	। । ।	।					मीड़			
नरस	ससर	पमार	स	नाधनानाना		नानाना	धप	मानाध	पमा	रमाप	प प
पिया०	० भिक्षा	क र न	को	य ह त प ते		ज प ते	० ०	० ० ०	पायो	० ० ०	मुक्ति
		। ।	। ।	। ।	।						
मापन	न	सस	सस	रस	रना	ध प	मापध	पमाप	मार	मार	माप
शा०हे	न	म न	मी न	ली०	० न	छि ०	० ० ०	नि० ०	० ०	तिया	आंखि

[संचारी के बाद 'तिया आँखि' (मार माप) गा कर सम् रख सकते हैं। संचारी और आभोग को एक साथ भी गा सकते हैं।]

(११) देशमल्लार।

ओड़व सम्पूर्ण। सरमापन—नाधपमागरस। झाँपताल।

ए दइ पिया बिन कैसे रतियाँ बैरन भइ छन ना कटत मोको अचल भई ॥ १ ॥

निश दिन नहीं चैन और सुझे नाहीं नयन उन तो निठुर नेक सुध ना लई ॥ २ ॥

एतनि सन्देश मेरि कहिओ जाय उनसों विरह बितत तन तपत भई ॥ ३ ॥

हे बीर कैसे अब धरूँ धीर नयनन ते मेरि निद गई ॥ ४ ॥

+	।	२	।	।	०	।	३	।	।
ध	ध	प	मा	ध	प	प	मा	ग	र
पि	या	बि	०	न	क	य	से	०	०
र	प मा	प	ध	मा	ग	ग	र	स	स
र	ति ०	याँ	०	बै	र	न	भ	इ	०
स	स	र मा	र	मा	प	प	न	न	स̍
छ	ण	न ०	०	क	ट	त	मो	०	को
स̍	स̍	न	र̍	स̍	र̍ स̍	ना ध	प	ध	स̍ ना
अ	च	ल	०	०	भ ०	इ ०;	ए	द	ई ०

अंतरा

मा	प	न	न	न	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍
नि	श	दि	०	न	न	हीं	चै	०	न
स̍ स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	न	र̍	र̍	र̍	र̍
औ ०	र	सू	०	झे	न	हीं	न	य	न
न	न	न	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍
उ	न	तो	०	नि	ठु	र	ने	०	क
स̍	स̍	न	र̍	स̍	र̍ा स̍	नाध;	प	ध	स̍ ना
सु	ध	न	०	०	ल ०	हँ ०	ए	द	ई ०

सञ्चारी आभोग।

र	र	मा र		प मा	ग	ग	र	र	र
ए	त	नि ०		० सं	दे	स	मे	०	रि
मा	मा मा	ग	ग	ग	र	र	स	स	स
क	हि ओ	जा	०	य	उ	न	सो	०	०
स	स	मा	र	मा	प	प प	ध	स ना	ना
बि	र	ह	०	०	बि	त त	त	न ०	०
ध	ध	प	मा	ध	प	प	प	प	प;
त	प	त	०	०	भ	ई	०	०	०
मा	प	न	न	न	स	स	स	स	स
हे	०	बी	०	र	के	०	से	०	०
स	स	स	सू	न र	र	र	र	र	र
अ	ब	ध	रू	० ०	धी	०	०	०	र
न	न	न	न	न	स	स	स	स	स
न	य	न	न	०	ते	०	मे	०	रि
स	स	न	र	स	र स	ना ध	प ध	स	ना;
नि	०	०	०	द	ग इ	० ०	ए द	ई	०

(१२) सुरट। चौताल और तेताला।

+		०		१		०		२		३	
रर	माप	स	स	नाध	पध	मामा	र	पमा	र	स	नंस
र	मा	प	धमा	नाध	पमा	र		पमा	र	स	
रर	माप	माप न	स	नन	स	र	र	न	स	नाना	धप
माप	नस	मामा	र	रर	सना	रना	धप	माप	धप	मार	सः

अन्तरा ।

माप	नस	सन	स	नस	र	रमा	रस	रर	स	रर	स
नाध	प	नाध	प	माप	पप	नस	नाध	पध	मार	नाध	पमा
धप	मार	प	मा	रनं	सर	पमा	रस	र र	स	नंस	रर
मामा	पप	माप	न स	रना	धप	माप	नाध	पमा	र	गार	स ;

(१३) देश । तेताला ।

+		१		०		२	
स	स	नाध	पध	माग	र	पमा	गर
स	नंस	नंस	रमा	पध	माग	रमाग	रस
माप	नस	न	स	र	नाध	ना ध	प
धमापमाग		र	स	नंनं	स	र र	माप ;
मामा	पस	न	स	नस	र	पमा	गरस
र र	स	नाध	प	माग	र	माप	माप
मा	गर	पमा	ग र स	माप	नस	र ना	धप
माप	धप	मापमा	गर	नं	स	र र	माप ;

(१४) जयजयन्ती—चौताल ।

मिश्र सम्पूर्ण । स र गा ग मा प ध ना न ।

[किसी किसी मत के अनुसार कोमल धैवत भी व्यवहार होता है]

प्रथम मानि अउमकार देवन मानि महादेव ग्याँनिन मानि गोरख नदिन मानि गंगा ॥ १ ॥
गीत की संगीत मानि संगीत की सुर मानि ताल मानि मृदङ्ग नृत्य मानि रम्भा ॥ २ ॥
राजन मानि इन्द्रराज गजन मानि ऐरावत विद्या मानि सरस्वति वेद मानि ब्रह्मा ॥ ३ ॥
कहैं बैजु बावर सुनिये गोपाल लाल दिनन मानि सूरज देव रयन मानि चंद्रमा ॥ ४ ॥

+		०		१		०		२		३	
प	मा	ग गा	र	र	र	र	र	र	र	र	स
प्र	थ	० ०	म	मा	नि	अ	उ	म	का	०	र
स	स	मा	मा	मा	माग	गार	गार	र	स	नांधं	पं
दे	०	व	न	मा	नि ०	म ०	हा ०	०	दे	० ०	व
									।	।	।
स	स	स	स	मार	र	मा	प	न	स	स	स
ग्यां	नि	०	न	मा ०	०	०	नि	गो	०	र	ख
।	।	।	।	। ।	। ।						
स	स	स	स	स र	स र	ना ध	प	मा	प ध	माग	गार
न	द्रि	०	न	मा ०	० ०	नि ०	०	गं	० ०	० ०	०गा

२

				।	।	।	।	।		।	।
मा	प	न	न	स	स	स	स	स	न	स	स
गी	०	त	०	०	कि	सं	गी	त	मा	०	नि
	।	।	।	।	।						
न	स	र	र	स	स	ना	ना	ध	प	मा ध	प
सं	गी	०	त	कि	०	सु	र	०	मा	० ०	नि
										।	।
मा	र	र	मा	प	प	प	प	न	न	स	स
ता	०	ल	मा	०	०	नि	०	मृ	दं	०	ग
।	।	।	।	। ।	। ।						
स	स	स	स	स र	स र	ना	ध प	मा	प ध	मा ग गा र	
नृ	०	त्य	०	मा ०	० ०	नि	० ०	रं	० ०	० ० ० भा	

३

र र र मा	गार र र	र र र र	स स स मा	गा र र र	र र र र
रा ज न मा	० नि इं ०	द्र रा ० ज	ग ज न मा	० नि ऐं ०	रा ० व त
मा मा गा र मा	प प ना ना	ना ना ध प	प मा ध ध	प प प प	मा ग गा र स
बि ० ० ध्यामा	० नि स र	० स्व ति ०	वे ० ० ०	द मा ० नि	ब्र ह ० मा ०

४

	। । । ।	। । ।	। । । । ।		
मा प न न	स स स स	स न स स	न स र गा र स	ना ना ध प	मा प मा ध प
क हे ० ०	ब ई जु ०	बा ० व र	सु नि ये ० ० ०	गो पा ० ल	ला ० ० ० ल
		। । । ।	। । । ।	। । ।	
मा ग गा र र मा	प प न न	स स स स	स स स स	र स र ना मा प ध	मा ग गा र
दि न ० ० न मा	० नि सू ०	र ज दे व	र य न मा	० ० ० नि चं ० ०	द्र ० ० मा

सम् की तिन । तीन दफा गाने से सम में आयेगा ।

ररर मा ग र रा ज न मा ० नि	ररर ररर इन्द्र०रा०ज	ससस मामामा ग ज न मा ० नि	ग ग र र र र ऐ ० रा० ब त	मामागारमाप वि० द्या०मानि	नानानानाधप सर ० स्वति०
प मा ध प प वे ० द मानि	मागगारस ब्र ह मा ० ०;	मा प न ससस क हैं ० ब इ जु	सनस ससस बा० ० व र ०	नसरगा र स सुनिये ० गो ०	नानाधपमाधप पा ० ललाओल
मागगार माप दि न न ० मानि	ननन ससस सूरज दे ० व	ससससरसरना र य नमा० ००नि	मापधमागगार चं० द्र मा०००;	राजन मा०नि	इन्द्र रा ० ज

(१५) जयजयन्ती । धामार ।

सखि का पत वाके ना रहे आयो फागुन मास । १ ।

और मुख मल भँवर अस करे हुँ अब के आवत सइ । २ ।

ब्रज महल पति वही मन मोहन श्याम बन्धु नहीं आये-

एतनी मिनति मेरि कहियो जाय उनसे कुबजा के घर ठाओ । ३ ।

+			०		।		०			।		०	
पंधंनांस्र	र	स	र	र	ग	गर	ग	मा	प	मा	ग	र	स
का०० ०	०	०	प	०	त	००	वा	०	के	ना	०	र	हे
स	स	स	र	गा	र	स	नां	स	र	नां	धंनां	पं	पं
आ	यो	०	फा	०	गु	न	ना	०	०	०	० स	स	खि

अन्तरा ।

मा	प	न	स	स	स	सन	स	स	सन	स	स	स	स
अ	ओ	र	०	०	०	० ०	मु	ख	० ०	म	०	ल	०
र	रगा	र	स	स	स	स	न	स	स	ना	ध	प	प
भँ	वर	०	०	०	अ	स	क	रे	०	०	०	हुँ	०
प	स	न	स	स	स	स	ना	ना	ना	ध	ध	प	प
अ	ब	०	के	०	०	०	आ	०	०	व	०	त	०
ध	ना	ना	ध	प	मा	प	धप	मा	गा	र	स	स	स
स	इ	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	स	खि

सह्यारी।

प स ब्रं ज		स न ० ०	स म	स ह	स ल	सना ० ०	ध प	ना ति	ना ०	ध व	ध ०	ना ही	ना ०
ध म	प न	प ०	मा मो	गा ०	र ह	स न	स श्या	स [illegible]	स ०	र वं	र ०	र धु	गा ०
र न	स हीं	स ०	नं आ	सर ० ०	नांधां ० ०	पं ये	पंधं एन	नंस ००	रर नि०	र मि	र न	र ति	ग ०
मा मे	प ०	प रि	मा क	मा हि	मा आ	मा ०	ग जा	ग ये	ग ०	र इ	र न	स में	स ०
स कु	स ब्	स जा	स ०	सन ० ०	स ०	स ०	नाध के ०		प मा ० ०	प घ	प ०	ध र	ध ०
ना टा	ना ०	ना ओ	ध ०	प ०	मा ०	प ०	धप ० ०	मा ०	गा ०	र ०	स ०	स स	स खि

(१६) जयजयन्ती। चौताल।

ए माई सब कोऊ आसा राखो पिया मिलवे को हम तो निरासा भई वृन्दावन बसी।१।
वेसर विसर डारी कर चूड़ियाँ फोर डारी मोतिहार तोर डारी जमुना बिच धसि।२।
उचे उचे दौड़हारी देखिए तो मेरी आली तनिक धरो धीर चीर बाँधो कसि।३।
कहै रस विनायक छाड़ो मिलवे को आस स्याम को संदेस ऊधो नेक कहो हसि।४।

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
रमागा स० ०	रस ब •	र को	ग ऊ	मा आ	प सा	पध रा०	पध ० ०	मागा ० ०	मागा ० ०	रगा ० ०	रगारस ० ०खो०
र पि	र या	गा ०	गा •	र मि	स लि	नं वे	स ०	र ०	स ०	नांधं ० ०	पं को
स ह	स म	मा तो	गसर ० ०•	मा नि	प रा	प ०	प सा	न ०	स ०	स भ	स ई
स वृ	स न्दा	रस ० •	रना ० ०	ध व	पमा न ०	नाना व सि	धप ए०	धमा ० ०	गर मा०	गर ०•	स ई

२

मा	प	न	न	न	सं	सं	सं	सं	न	सं	सं
बे	०	स	र	०	वि	स	र	डा	०	रो	०
सं	सं	रं	गा	रं	सन	सं	सं	ना	धप	मा	धप
क	र	चू	०	ड़ि	यां०	फो	०	र	डा०	०	०री
मा	र	र	भा	मा	मा	प	प	प	न	सं	सं
मो	०	ति	ह	०	र	तो	०	र	डा	०	रो
सं	सं	सरंसं	रंना	ध	प	नाना	धप	धमा	गर	गर	स
ज	मू	ना००	० ०	वि	च	ध सि	ए०	० ०	मा०	००	ई

३, ४

रमार	मामा	पप	माप	नसं	रंसं	नाधप	माधप	मामामा	रर	स	स
ऊ० चे	ऊ चे	दौड़	हारी	देखि	एतो	मे ०री	श्रा०ली	त नि क	धरो	धी	र
मार	माप	माधप	धप	माप	नन	संसं	संसं	रंरं	गागा	संरं	संना
चिर	बान्धो	० ० ०	कसि	क हैं	र स	विना	य क	छाड़ो	० ०	मिल	वे कि
धप	माधप	मार	मामा	पपप	नसं	संसंसंरंसंरंनाध		नाना	धपमा	गरग	रस
आ०	० ० स	स्याम	को ०	सन्देस	ऊधो	नेक कहो ० ० ० ०		हं सि	ए००	मा००	० ई

विविध राग व रागमाला ।

सूची।

राग नाम।	बोल	रचयिता	ताल
छाया	—(१) कुंजप हेत मोर —	(तानसेन) —	सीर ताल।
पटमंजरी	—(२) विरहभरी सोच में—	(शिक्षक—गोपाल मिश्र)	आड़ी चौताल।
पुलिन्दिका	—(३) प्रथमनाद मूल ते —	(बैजू बावरा) —	आड़ी चौताल।
,,	—(४) फागुन गढ़ जो —	(,,) —	धामार।
,,	—(५) सरगम —	(शिक्षक—अन्नापुरुषोत्तम घारपूरे।) —	आड़ी चौताल।
हिंडोल व मालकोष	(६) सरगम —	(शि०—तसद्दुक़हुसेन।) —	तेताला।
मालश्री व पलश्री	(७) सरगम —	(,,) —	,,
बड़ हंस	—(८) प्रथम राग बोल —	(बड़कू) —	सूलताल।
मुद्राकी	—(९) सुभ घड़ी सुभ लगन	(तानसेन) —	झाँपताल।
कौशिकी	—(१०) मेह की सुर षरज—	(बैजू बावरा) —	चौताल।
,,	—(११) षरज कहाँ से —	(गोपाल नायक) —	चौताल व तेताला।
सर्वरी	—(१२) सुर प्रथम सारिगम	(गोपाल नायक) —	सीर ताल।
कुमारी	—(१३) षरज सुर साधे —	(सुरतसेन) —	ढीमा तेताला।
नट कल्याण	—(१४) श्री गणेश विघ्नहरण	(शिक्षक—चिन्तामणि वापुलि)	ढीमा तेताला
देसी टोड़ी	—(१५) श्री गंगा पातक हरनि	(इच्छावरस) —	ढीमा तेताला।
रागमाला	—(१६) सुंदर अति नवीन—	(बैजू बावरा)।	
रागमाला	—(१७) शंकर हर हर —	(शि०—चिन्तामणि वापुलि)	
रागमाला	—(१८) (शि०—तसद्दुक़हुसेन)		
खटराग	—(१९) नाद समुंदर को पार	(शि०—अन्नापुरुषोत्तम घारपूरे)	सवारी।
सिंदुरा (सिन्धुड़ा)	(२०) अंगना विरह बावरी	(वाणीविलास) —	झाँपताल।

(१) छाया ।

शुद्ध संपूर्ण ।   । स र ग मा प ध ना । ताल सीर (नौ मात्रा)

कुँजप हेत मोर चन्द्र मंजन हेत आप हेत मीन दीप हेत पतँग । १ ।

लोहा पाषान हेत स्वाति चातक हेत जननी बालक हेत कंत हेत अनङ्ग । २ ।

शरीर दुःख हेत संतोष सुख हेत सुर हेत साधन साधू हेत असङ्ग । ३ ।

हेत कहत तानसेन सेवा हेत गुरु जन भुक्ति हेत पदारथ मुक्ति हेत श्रीगङ्ग । ४ ।

+	।	•	।	।	।	।	।	।	+	।	•	।	।	।	।	।	।
ना	ध	प	प	प	मा	मा	ग	गर	ग	ग	मा	पमाग		स	र	स	स
कुँ	ज	प	हे	त	मो	०	र	००	च	न्द्र	मं	जन०		हे	०	त	०
सरगमार		स	स	स	ध̊	ना̊	ध̊	प̊	र	ग	माप	मा	ग	स	र	स	स
आ०००प		हे	०	त	मी	०	०	न	दी	प	हे०	त	०	प	तं	०	ग;

२

प	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	धर̍	स̍	धना	ध	प	प	प		प
लो	हा	पा	षा	न	हे	०	०	त	स्वा०	ती	चा०	त	क	हे	०		०
नाध	ना	ध	प	प	प	प	प	प	र	ग	मा	प	माग	स	र	स	स
जन	नी	बा	ल	क	हे	०	त	०	कं	त	हें	०	त ०	अ	नं	०	ङ्ग०

३

धना	ध	प	प	प	प	प	प	प	र	ग	माप	माग		स	र	स	स
शरी	र	दु	ख	०	हे	०	त	०	स	न्तो	०प	सुख		हे	०	त	०
स	स	ध̊	ना̊	ध̊	प̊	प̊	प̊	प̊	स	र	ग	मा	प	स	र	स	स
सु	र	हे	०	त	सा	०	ध	न	सा	धू	हे	०	त	अ	सं	०	ग;

४

प	प	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	धर̍	स̍	ध	ध	ध	प	प	प	प
हे	त	क	ह	त	ता	न	से	न	सें०	वा	हे	०	त	गु	रु	ज	न
धना	ध	प	प	प	पप	मा	प	प	र	ग	माप	मा	ग	स	र	स	स
मु०	क्ति	हे	०	त	पदा	०	र	थ	मु	क्ति	हे०	त	०	श्री	०	ग	ङ्ग;

(२) पटमंजरी आड़ी चौताल ।

सम्पूर्ण ओड़व । स र ग मा प ध न—न प मा र स ।

विरह भरी सोच में रहत नित कोमल बदन तन छीन भयो री आली रहत सदा निपट मन मलीन ॥१॥ बार बार सिखावन देत सखी री होय गये प्रेम बस सुनत नई भनक गूमान पटमंजरी बियोग भारी चतुर सुघर अति नवीन ॥२॥ शिक्षक—स्वर्गीय गोपालप्रसाद मिश्र ॥

+	।	।	।	०	।	।		०	।	।	।	०	।
ग	मा	पध	नस	न	स	न	प	प	प	मा	मा	र	स
बि	र	ह०	००	भ	रि	सो	च	मे	०	र	०	ह	त
ग	मा	प	प	प	प	ध	न	न	न	र	स	न	प
नि	त	को	म	ल	०	ब	द	न	०	त	न	छी	न
मा	प	मा	र	स	स	प	मा	र	ग	माप	ध	मा	र
भ	ए	ऊ	रि	०	०	आ	०	ली	०	००	र	ह	त
गमा	प	नप	मा	रग	माप	ध	नस	र	स	न	पमा	र	स
सदा	०	००	०	नि०	ध०	ट	००	म	न	०	म०	लि	न

अन्तरा ।

प	ध	न	स	स	स	र	ग	मा	मा	र	ग	र	स
बा	०	र	०	बा	र	सि	खा	व	न	दे	त	स	खि
न	प	मा	मा	स	र	ग	मा	प	ध	न	स	प	ध
हो	य	ग	ये	प्रे	म	ब	स	सु	न	त	०	न	ई
र	स	न	प	र	गमा	र	र	प	मा	र	ग	पध	न
भ	न	क	०	गु	मान	प	ट	मं	ज	रि	०	वियो	ग
पमा	र	गमा	प	धन	स	रर	स	नप	मा	रप	प	मार	स
भा०	०	रि०	०	चतु	०	र०	०	सुघ	र	अति	०	नवी	न

(३) पुलिन्दिका । आड़ी चौताल ।

शुद्ध ओड़व । स र मा ध ना ।

प्रथम नाद मूलते ऊचार ताल बन्धान सो गावे जो आवे सो सम परै । १ ।

सप्त सूर तीन ग्राम एकीस मूरछना बाईस सूरत उनन चास कूट तान तरै । २ ।

उरिप तिरिप लाग डाँट अँस न्यास ग्रह आतक खातक स्वरान्तक ओड़व खाड़व उचरै । ३ ।

कहै बैजू बावरे सुनिए गोपाल लाल शुद्ध ओड़व राग पुलिन्दिका नाम धरै । ४ ।

शिक्षक—अन्नापुरुषोत्तम घारपूरे [वीणाकार]

+	।	।	।	०	।	।	।	०	।	।	।	०	।
स	र	स	मा	मा	मा	मा	मा	मा	र	र	सर	नांर	सर
प्र	थ	म	ना	०	द	मू	ल	ते	ऊ	चा	००	००	•र
ध	ध	ध	ध	ना	धमा	ध	मार	ध	ना	स̍	ना	स̍	स̍
ता	०	ल	बं	ध	न०	सो	०•	गा	०	वे	०	जो	•
ध	ना	स̍	ना	स̍	ना	स̍	ना	ध	धमा	ध	मा	र	स
आ	०	वे	०	सो	०	स	म	०	प०	रे	०	०	•

२

धध	धना	र̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	स̍	ध	ना	स̍
सप	त०	०	सू	०	र	ती	०	न	०	०	ग्रा	०	म
मा̍	र̍	स̍	स̍ना	स̍	ना	ध	माधमा	र	र	स	नांर	स	र
ए	क	ई	स०	मू	र	छ	ना००	बा	ई	स	सु०	र	त
ध	नार̍	स̍	स̍	स̍	स̍	ध	नास̍	स̍	ना	ध	मा	र	स
उ	न०	चा	स	कू	ट	ता	००	न	त	रे	०	०	०

३

ध धध	ना ना ना	ध ध ध	मा मा मा	र र र	स स स	नांर सर
ऊ रिप	ति रि प	ला ० ग	डा ० ट	अँ ० श	न्या • स	ग्र० ०ह
ध धध	ना ना ना	स̍स̍ स̍ स̍	र̍ र̍ र̍	स̍ स̍ स̍	ना ना ध	मा र स
आ तक	खा त क	स रा न्त क	ओ ड़ व	खा ड़ ब	ऊ च रे	० ० •

४

ध ना र	स स स	स स स	ध ना ना	स स स	ना ना ना	ध ध मा
क ह ये	बै ई जू	बा व र	सु नि ०	ए ० गो	पा ० ल	ला ० ल
र र र	सनां र सस	र र र	धध नार स	धना स ना	ध ध मा	र र स
शु ० द्ध	औ० ० ड़ब	रा ० ग	पुलि न्दि का ०	ना० म ०	ध ● रे	० ० ०

(४) पुलिन्दिका । धमार ।

फागुन गढ़ जोवनाई सखियान गोपि ग्वालिन सब जोड़ मिलि आई । १ ।

अबीर गुलाल की बुरुज बनाई तोप धरी जब बम्ब धूराई । २ ।

गेंदा कुमकुम गोला चलत है रँग बूँद कि झोरी लगाई । ३ ।

कहैं बैजू बावर सुनो हो गोपाल लाल घेरि लियो अब जदूराई । ४ ।

+	०	।	०	।	०
ना ना ना	ध माध	ना ध	मा मा मा	र र	स स
फा ० ०	गु ० न	ग ढ़	यो ० ०	ब ना	० ई
स स स	नां र	स र	ध ना र	स स	स स
स खि ०	या ०	० न	गा ० पी	ग वा	लि न
स स सना	स स	ना ना	ध ना स ना	ध मा	र स;
स ब ० ०	जो ड़	० ०	मि लि ० ०	आ ०	० ई

२

ध ध ना	र स	स स	स स स	स स	स स
अ बी ०	० र	० ०	गु ला ०	ल ०	कि ०
ध ना स	ना ना	ना ना	ध ध ध	मा मा	र स
बु रु ज	० ०	० ०	ब ना ई	तो ०	प ०
स स स	नांर स	र र	धना स ना	ध मा	र स;
ज ब ०	० ० ०	ध रि	बँ ० ० व	धू रा	० ई

३

स स स	नां नां	र सर	मा मा मा	रर र	स स
रं दा ०	कु म	० कुम	गो ला ०	चल त	हैं ०
मा मा मा	र र	स स	ध ना स ना	ध मा	र स;
रं ग ०	बूं ०	द ०	झो ० रि ०	ल गा	० ई

४

ध ना र स	स स	ना स स	ध ना स	ना ना ना	ध मा
क हैं ० ०	बै जू	बा व र	सू नां हो	गो पा ल	ला ल
मा मा मा	र र	स स	ध ना स ना	ध मा	र स;
घे ० रि	लि यो	० ०	अ व ० ०	ज दू	रा ई

शिक्षक—अन्नापुरुषोत्तम घारपूरे ॥

(५) पुलिन्दिका । आड़ी चौताल ।

+ ।	। ।	० ।	। ।	० ।	। ।	० ।
नां र	स आ	मा आ	आ र	ए र	स र	नां धं
मा र	ए नं	र स	ध ना	स स	ना ध	मा र
मा ध	ना ई	ना स	मा ध	माध ना	धमा र	स आ;
मा ध	र स	ना स	आ स	मा ध	मा र	मा मा र
र र स	ना ध	मा आ	ना स	मा आ	ना ध	मा र
नं रन	र स	ना मा	ना ध ना	मा आ	ध मा र	स आ;
मा मा स	ना ना स	मा ध ना स	मा मा र	ना ध मा	र ए	र र स
ना ना ध	मा ध ना	ध मा र	नां स र	र ना ध	ना ध मा	ध मा र
नां र स	मा मा र	मा ध ना स	मा मा र स	र स नाध	ना ध मा र	ध मा र स;

शिक्षक—अन्नापुरुषोत्तम घारपूरे ।

(६) हिण्डोल या मालकोष तेताला ।

[शिक्षक—तसद्दुक़हुसेन ।]

+

ध ध	म अ	ग अ	म स	ग ग	म ध	न ध	म ग
म आ	ग आ	म ध	अ अ	म ग	अ म	सआ	गम
ग म	ध अ	म ध	अ स	आ न	स आ	न ध	अ म
ध म	ग अ	म ध	न ग	म ध	म ग	स	आ ;
म ध	न ध	ग म	स आ	न स	ग अ	म ग	स आ
न ध	म ग	ध म	ग म	न ग	म ध	न ध	न ध
म म	ध म	ग म	स आ	म ध	ग	स ध	आ
धं धं	नं	म ध	म ग	न ध	म ग	स आ	;

इस राग में ग, म, ध,व न, कोमल करनेसे मालकोष हो जायगा ॥

(७) मालश्री व पलश्री । तेताला ।

[शिक्षक—तसद्दुक़हुसेन ।]

स न	प अ	म ग	म अ	प प	ग न	स आ	आ आ
ग म	प प	न न	ग ग	म प	म प	न म	प ग
म प	न ग	म प	ग म	प न	प म	ग ग	म ग
स आ	आ आ	नं स	ग म	प प	न म	ग अ	स आ;
प अ	स	म प	न स	ग ग	स	ग म	प
ग अ	स	न स	न स	न प	अ	म प	न स
न प	म ग	म न	म ग	न प	म प	न म	ग प
स ग	प	ग म	प	न प	न म	ग अ	स आ;

इस राग में ग, म, व न, कोमल करने से पलश्री हो जायगा ।

(८) बड़हंस ।

षाडव औडव । स र ग मा प ध—न प मा र स । सूल ताल ।

प्रथम राग बोल गमक अच्छर क्रिया मात्रा लघु गुरु सीखे तब गुणी कहावे ॥ १ ॥

सप्त सुर तीन ग्राम एक्कीस मूरछना बाईस श्रुति के ब्योरे न्यारे कर दिखावे ॥ २ ॥

धैवत रिखब मध्यम पंचम खरज निखाद गंधार रोहे अवरोहे सुर बरज के गावे ॥ ३ ॥

वादी विवादी संवादी अनुवादी संपूरण ओडव खाडव करे नाद को जोगी होवे बडहंस बडकू सुनावे ॥ ४ ॥

+	।	०	।	।	।	।	।	०	।
स	र	स	ध	प	प	ध	मा	प	प
प्र	थ	म	रा	०	ग	बो	०	०	ल
ग	मा	प	प	न	प	न	प	मा	र
ग	म	क	०	अ	०	च्च	र	क्रि	या
ग	ग	मा	मा	र	ग	र	स	मा र	स
मा	०	त्रा	०	ल	घु	गु	रु	सी ०	खे
र	ग	ग	मा	प	प	मा	मा	र	स
त	ब	०	गु	णी	०	क	हा	०	वे ;

२

		।	।	।	।	।	।	।	।
मा	प	स	स	र	ग	ग	मा	र	स
स	प्त	सु	र	ती	॰	न	ग्रा	०	म
ध	र स (। ।)	न	प	ग	मा	प	प	ध	माप
ए	० क	इ	श	मू	र	छ	ना	०	० ०
मा	मा	र	स	स	स	नं	नं	पं	पं
बा	ई	स	श्रु	ति	के	ब्ये	यो	रे	०
स	र	ग	मा	प	प	मा	मा	र	स
न्या	रे	०	०	क	र	दि	खा	०	वे ;

३

ध धै	ध व	प त	र रि	ग ख	ग ब	मा म	मा ०	मा ध	मा म
प पं	प ०	न च	प म	स ख	स र	स ज	न नी	न खा	प द
ग गं	मा ०	प धा	प र	ध रो	ध हे	प अ	प व	मा रो	र हे
स सु	स र	ग ब	मा र	प ज	प के	मा गा	मा ०	र ०	स वे;

४

ध ध बा ०	प दी	स स वि वा	स दी	मा प सं वा	स दी	न न अ नु	प प वा दी	स स	स म
मा पू	मा मा र न	र र ओ ०	स ड व	ध ध खा ०	प डो	ध ध ० ०	प ०	मा र क रे	स ०
र र ना ०	स ०	ग मा ० ०	प द	स को	न प ० ०	मा जो	र गी	स हो	स वे
स ब	र ड	ग मा हं ०	प स	मा ब	मा मा ड कू	र सु	र ना	स ०	स वें;

(६) मुद्राकी । झाँपताल ।

मिश्र-सम्पूर्ण—सरगागमामपधाधनान ।

सुभ घड़ी सुभ लगन बिचार बैठे महम्मदशाह कनक छत्र धरिए । १ ।
रच पच मण्डल बनायो जौहर कड़ा दर्पन रँग मृग तरिए । २ ।
बाजत बाजनि छत्र दण्ड सोभा करे सेवक स्तुति करैं अरु चमर व्यजिए । ३ ।
तानसेन के प्रभु देत असीस दरस परस इन्द्रासन पाइए । ४ ।

+	।	।	।	।	०	।	।	।	।
मा गा सु ०	मा गा भ ०	र घ	र ०	स ड़ी	स सु	स भ	स ल	स ग	नं न
स बि	ग चा	ग ०	ग ०	ग र	म बै	ध ०	स ठे	स ०	स ०

स	स	स	स	स	नाधा	नाधा	प	प	प
म	हम	म	०	द	शा ०	० ०	ह	०	०
मा	मा मा	प	प	प	मा	प धा	माप मा		गा
क	न क	छ	त्र	०	ध	री ०	० ० ए		०

२

मा	प	धा	धा	न	स	स	स	स	स
र	च	प	०	च	मं	०	ड	ल	०
स	स	ना	स	स	न	स	ग	ग	ग
ब	ना	०	यो	०	ज	व	ह	र	०
स	स	नाधा	ना	धा	प	प	मा	गा	गा
क	ड़ा	द र	प	न	०	०	०	०	०
म	ग	प	प	मा	मा	पधा	माप	मा	गा
रँ	ग	सृ	ग	०	त	रि ०	० ०	ए	०

३

गा	गा	मा	मा	मा	प	प	प	प	प
वा	०	ज	त	०	वा	०	ज	नी	०
मा	प	स	स	स	न	ध	म	म	ग
छ	त्र	दं	ड	०	सो	भा	क	र	०
नां	स	र	र	र	गा	गा	मा	प	प
से	०	व	क	०	स्तु	ति	क	र	०
म	ध	न	ध	म ग	मा	पधा	मा	प	मागा
अ	रु	च	वँ	र ०	व्य	जि ०	०	०	ए ०

४

मा ता		प न	धा से	ना ०	स̍ न	स̍ के	स̍ ०	स̍ प्र	स̍ सु	स̍ ०
ना दे		स̍ ०	र̍ त	र̍ ०	र̍ ०	गा̍ आ	गा̍ ०	र̍ सी	र̍ ०	स̍ स
	न न न द र स		-	ध ध ध प र स		मा र	म स	धना रं ०	धा ग	प ०
स̍ ए		न न्द्रा	ध स	म न	ग ०	माप पा ई	धा ०	माप ० ०	मा ए	गा ०

इस राग में हिण्डोल का संगत है।

(१०) कौशिकी। चौताल।

मेह की सुर षरज रिषव सुर छागरी दादुर सुरहैरी गँधार ।१।
मध्यम तमचर सुरपँचम कोकिल सुर केकी सुर धैवत निषाद कुजार ।२।
आरोह हँस सो अवरोह वृषभ सो मुरछना सर्प सो गीत सँगीत की धार ।३।
कहैं बैजू बावर सुनिए गोपाल लाल केते गुनि पिछुड़े काहूँ न पायो नाद की पार ।४।

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
मागा मे ह	रस की०	सस सु ०	सस र ०	संसं ष ०	संसं र ज	रंरं रिष	रंरं व०	रंसं सु०	रंरं र०	रंरं छा०	संरं गरी
गांगां द्दा ०	गांगां दु र	रंरं की०	संसं ० ०	मीड़ संरंगांमांपं सु०० ००	धांनां र ०	नांनां है ०	नांनां रि ०	सस ० ०	सस ० ०	गारस गँ ० ०	रस धार

२

मामा म ध्य	मामा म ०	गागा त म	रस च र	सस सु ०	सस र ०	पमा पं ०	पप चम	नाधा को ०	पप किल	पप सु०	पप र०
धाधा के ०	धाधा की ०	नाधा सु ०	मामा र ०	धाना धै ०	धामा व त	नाना निषा	नाना ० द	धाधा सु ०	पमा र ०	गारस कु ० ०	रस जार

३;४

मीड़ सर गामा पधामा	नानानाना	मीड़ नाधा पमा गारस	रस सस	समापं गाधांरस	नांसरसस
आ० ० ० ० रो हि	हँ स सो ०	अ व ०० रो ही०	वृष भसो	मू ० ० ० र छना	स र पसो०
गामा गामा	नानानाना	गारस रस	सनासंसस	सस सस	गागा रसर
गी ० त ०	सं० गी त	की ०० धार;	कहैं बै जू ०	वा० व र	सु नि ए ०गो
सस सस	नानाधाधा	पप मागा	गागानाना	गामा गामा	गारस रस
पाल लाल	के ते गु नि	पिछु ड़े ०	काहू न ०	पायो ना द	की० ० पार

प्राचीन लोगों का कथन है कि गोपाल नामक एक दक्षिण देशवासी संगीतसिद्ध पुरुष थे। उस समय पश्चिम प्रदेश में भी बैजू नामक एक सिद्ध पुरुष थे यह पागलों की भांति रहा करते, इस कारण लोग इन्हें बैजू बावरा कहा करते थे। सिकंदर शाह की अमलदारी में ये दोनों महाशय साङ्गीतिक विषय को प्रश्नोत्तर-द्वारा कथोपकथन विचार और मीमांसा किया करते थे।

यह ऊपर लिखा हुआ गाना बैजू बावरा का उत्तर है जिसका प्रश्न गोपाल अगले गान में करते हैं। इस राग में मालकोष का मेल है।

(११) शुद्ध संपूर्ण। कौशिकी।

स र ग। मा प धा ना। चौताल वो तेताला।

षरज कहाँ से रिषभ कहाँ से कहाँ से उपजो सुर गंधार। १।
मध्यम कहाँ से पंचम कहाँ से कहाँ से धैवत निषाद नार। २।
आरोहि कहाँ से अवरोही कहाँ से मूर्छना कहाँ से गीत संगीत की धार। ३।
कहैं लाल गोपाल सुनिए बैजू बावर नाद अथाह जाकी गति अगम अपार। ४।

+	०	।	०	।	।
सस सस	गामा गामा	गागा मागा	मामा धाना	नाधा नाधा	पमा गामा
षर ज०	क हां ० ०	ते ० ० ०	रि ० ष भ	क हां ० ०	ते ० ० ०
मामा धाधा	नाना सस	सस सस	सना र स	नाधा पमा	गार सरस
कह हां ०	ते ० ० ०	उ प जे वो	सु ० ० र	गन्धा ० ०	० ० ० ० र;

२

मामा पप म ० ध०	धाना स स म ० ० ०	स स नास क हां ० से	र स र र पं ० च म	गामा गामा क हाँ ० ०	सस स स से ० ० ०
नना नाना कहाँ ० ०	धाना स स ० ० से ०	स स स स धै ० व त	स न र स निषा ० द	नाधा पमा ना ० ० ०	गार सरस ० ० ० ० र

३; ४

गामा गामास आ ० रो हि ०	स सस क हां से	नांधांप धांनांस अ व ० रो हि ०	गामा गामास क हाँ ० ० से	रर गागा सुर छ न	माप नाधा कहां ते ०
धांनां सर गी ० ० त	गागा मागा सं गी ० ०	रस स रस तकी धा र ०	माप धानास क है ० ० ०	स स ससस लाल गोपाल	नास र र सु नि ए ०
सस नाधामा वै जू बा व र	गामा गामास ना ० ० ० द	सस सस अथा ० ह	गामा गामास जाकि ० ग ति	नानानानाधाप अ ग म अ पा ०	मागार सरस ० ० ० ० ० र

(२) मिश्र सम्पूर्ण । सर्वरी ।

स रा र गा ग मा म प धा ध ना न । ताल सीर

सुर प्रथम सारि ग म ना द रे ताहे प्रगट वेद रे ।१।
धारु ध्रुपद संगीत प्रबन्ध छंद गुनि गावत शेष रे ।२।
चतुरंग त्रेवट तेलाना शब्द सुरन को भेद रे ।३।
कहै नायक गोपाल सरेगम अगम सुर देख रे ।४।

+	।	०	।	।	।	।	।	।
गा	गा	र	स	स	स	र	ग	मा
सु	र	प्र	थ	म	स	रि	ग	म
ना	ध	प	प	प	ग	ग	मामा	मा
ना	द	रे	०	०	ता	हे	प्र ग	ट
ग	मा	प	धा	प	मा	ग	ग	ग;
वे	०	०	०	द	रे	०	०	०;

२

धा	प	माप	धना	सस	सस	स	नधा	प
धा	रु	ध्रु०	००	पद	संगी	त	प्र ब	न्ध
प	स	गा	गा	गा	ग	मा	प	प
छ	न्द	गु	नी	०	गा	०	व	त
ग	मा	प	धा	प	मा	ग	ग	ग;
से	०	०	०	स	रे	०	०	०;

३

ग	मा	स	ग	मा	धना	ना	मम	ध
च	तु	रं	०	ग	त्रे व	ट	तिला	ना
नं	र	गा	नां	नं	स	धा	पं	स
श	ब्द	सु	०	०	र	न	को	०
ग	मा	प	धा	प	मा	ग	ग	ग;
भे	०	०	०	द	रे	०	०	०;

४

मा	म	र	स	स	ग	मा	स	स
क	हैं	ना	य	क	गो	०	पा	ल
स	र	ग	मा	प	म	प	ग	मा
स	रि	ग	म	अ	ग	म	सु	र
ग	मा	प	धा	प	मा	ग	ग	ग;
दे	०	०	०	ख	रे	०	०	०;

शिक्षक अन्ना पुरुषोत्तम धारपूरे (वीणाकार)

(१३) कुमारी ।

शुद्ध षाड़व । स रा ग म प न । ढिमा तेताला ।

षरज सुर साधे सोई गुनि जो सुध मुद्रा सुध वानी सुध राग अँग गावै । १ ।
द्रुत मध्य विलंवित करै देखावै आरोहन अवरोहन लाग डाँट सो बतावै । २ ।
करत कंठ प्रकाश उक्त युक्त अनुप्रास तव बढ़त घटत साँस गुरन ते भेद पावै । ३ ।
कहैं मियाँ सुरतसेन सुनिए सब गुनिजन ध्रुपद विद्या कठिन एक जनम नहिं आवै । ४ ।

+	।	।	।	०	।	।	।
स स ष र	स स ज ०	प प सु ०	प प ० र	म म सा ०	म म ० ०	ग ग धे ०	ग ग ० ०
म म सो ०	प प ० ०	न न ई ०	न न ० ०	प प गु ०	प प नि ०	म म जो ०	म ग रा ० ० ०
ग ग सु ०	ग ग ध ०	रा प सु ०	प प द्रा ०	म म सु ०	मग रा ध० ०	ग रा स वा ० ०	स स नि ०
प प सु ०	प प ध ०	म म रा ०	म म ग ०	पमग अँ००	ग रा ग ०	ग रा गा ०	स स वे ०;

२

प प द्रु र	म प त ०	न न म ०	न न ध ०	स रा वि लं	रा स ० ०	स स वि त	स स ० ०
रा रा क र	रा रा ० ०	ग ग ० ०	रा रा ० ०	स स दे खा	स स ० ०	स न ० ०	प प वे ०
न न आ रो	स स ० ०	स स ह ०	स स न ०	न न अ ०	न न व ०	प प रो ह	प प न ०
म प ला ०	प पं ग ०	म प डाँ ०	प प ट ०	मपनप सो०००	म ग व ता	रा स ० ०	स स वै ०;

३

गमक		गमक		गमक		गमक	
स स स	प प प	म प	प प म प	न न न न	प प प प	म प म प	म ग म ग
क र त	कँ ० ट	० ०	प्र का ० श	उक्त ० ०	युक्त ० ०	अनु ० ०	प्रा ० ० स
गमक		गमक		गमक		गमक	
रा रा रा	प प प	म म म	ग ग ग	प प म प	न न न	पम पम	ग रा स
त ब ०	ब ढ़ त	घ ट त	र्सा ० स	गु र न ०	ते ० ०	भेद ० ०	पा ० वैं;

४

प प	न न	स स	स स	रा रा	रा रा	ग ग ग ग	रा स
क हैं	मि यां	सु तैं	से न	सु नि	ए ०	स ब गु नि	ज न
स स स	प प	म प	म ग	प म	ग ग रा	ग ग रा	स स
ध्रु प द	विद्या	क ठि	० न	ए क	ज न म	न हि ०	आ वैं;

(१४) नट कल्यान । धिमा तेताला ।

शुद्ध सम्पूर्ण। स र ग मा प ध न।

श्री गणेश विघ्न हरण मङ्गल सुखकारी आदि मँत्र के स्वरूप नाद विन्दुधारी ।१।
नाग वदन एक रदन सिन्दूर श्रीधारी सिद्ध बुद्ध चँवर करत भँवर गुंज भारी ।२।
बुद्धिनाथ भालचन्द्र सोभित भुज चारी विधि हरिहर रूप प्रघटत छवि न्यारी ।३।
देवदेव आनन धर जीवधरनधारी देवन के मिलन उपर त्रिभुवन बलिहारी ।४।

+ ।	० ।	। ।	० ।	। ।	० ।	। ।	। ।
स ध	प प प	प ध	प मा ग र	ग मा	प मा ग	स र	स स
श्री ०	ग णे श	वि घ्न	ह र न ०	मँ ग	ल सु ख	का ०	री ०
स स	ग मा प	प ध न स	स स स	स स	ध प	ग मा प मा	प प
आ दि	मँ ० त्र	के ० ० ०	स्व रू प	ना द	वि न्दु	धा ० ० ०	री ०;

२

प स	स स स	नस नरस	स स स	स स	स सस	ध न सर	न स ध प
ना ग	व द न	ए ० ० ० क	र द न	सिं न्दु	र सिर	धा ० ० ०	० ० ० री
मा मा	प प	स स न ध	स स स	स सस	ध प	गमा पमा	प प;
सि द्ध	बु द्ध	चँ व र ०	क र त	भँ व र	गुँ ज	भा० ००	री ०

३

मा मा बु द्धि	प प ना थ	प प भा ल	प प च न्द्र	सध नस सो० भित	स स भु ज	ध ध चा ०	प प री ०
ग र वि धि	ग र ह रि	ग मा ह र	प प रू प	ग ग प्र घ	मा र ट त	स र छ वि	स स न्या री;

४

प प दे व	स स दे व	स स स आ न न	स स ध र	स स जी व	स स स ध र न	ध न स र धा ० ० ०	न स ध प ० ० ० री
मा मा दे व	मा प न के	स स न ध मि ल न०	स स स ऊ प र	स स तृ भु	ध प प प व न व लि	ग मा हा ०	प प री ०;

शिक्षक स्वर्गीय चिन्तामणि वापूली ।

(१५) देसी टोड़ी । ढिमा तेताला

मिश्र सम्पूर्ण-स रा र गा मा प धा ना न

श्री गङ्गा पातक हरनि तारिनी दायिनी मुक्त जनन की ।१।
नारदादि वानि बैकुण्ठ की निसानी इच्छा पूजावत है और हार मनन की ।२।
ग्रन्थन बरनि जात उत्तम जल तेरो तन परस जात ताप तनन की ।३।
चरन स्तुति तेरो कहाँ लों बखानों कर दाता असरन सरन की ।४।

+ ।	० ।	१ ।	० ।	। ।	० ।	। ।	। ।
मा मा पा ०	मा मा त क	प प ह र	प प नी ०	ना ना ता ०	ना ना री नि	धा प ० ०	मापमागामा ० ० ० ० ०
गा गा मु ०	गा गा क्त ०	रा रा ज ०	रा स न ०	र नांस न की०;	नां स श्री ०	पमा गा गंगा ०	सर मा ० ० ०

२

मा प ना र	धा नस दा दि०	स स बा नि	नासरसरगा बैकु न ००ठ	र स की ०	ना धाप नी सानी	ना धाप इ च्छा०	नस सस पू ० जा ०
स स व त	ना धाप ह ० ०	ना नाना औ ० र	धा प हा र	गामारस मन नकि;	नां स श्री ०	पमा गा गंगा ०	सर मा ० ० ०

३

मा मा	मा मा	प प प	प प प	ना ना ना	धाप नासं	ना ना	धा प
ग्रं ०	थ न	ब र न	नि जा त	ऊ त म	० ० ० ०	ज ल	ते रो
मा मा	गागा रस	र मा	प प	नाना धाप	मागारस नासं	पप मागा	सर मा
त न	प र सत	जा त	ता प	त न नकी;	०० ०० श्री०	गंगा ० ०	० ० ०

४

मा प	धा न सं	सं सं	ना संस	संरा संरागा	रा सं	ना ना	धा प
च र	न ० ०	स्तु ति	ते रो०	कहां ० ० ०	लौ ०	ब खा	० नो
मा प	धा ना स	स ना	धा पमा	पमा गार	स नासं	प मा गा	सर मा
क र	दा ता ०	अ स	र न०	सर न०;	की श्री०	गं गा ०	०० ०

इस राग में भीम पलासी का संगत है; दोनों "धैवत" का व्यवहार कोई कोई करते हैं।

(१६) रागमाला।

शिक्षक स्वर्गीय गोपालचंद्र चक्रवर्ती [नूलो गोपाल]।

सुन्दर अति नवीन प्रवीन महा चतुरता मृगनैनी मनहरनी चम्पक वरनी नार ॥१॥
केसरी कटि कदली जंघा नाभी सरोज श्रीफल उरोज चन्द्रवदनी सुकनासिका भौंहें धनुष कामढार ॥२॥
अंग अंग सुढङ्ग पद्मिनि भँवर गूँजत सुवास आवनी क्रोध नहीं सतस्वरूप नद वीजत बारन के भार ॥३॥
धन्य धन्य वाको भाग ऐसी तीय जाको जागे बैजू के प्रभू रसवस कर लीन्हो मायाजाल डार ॥४॥

धीमा तेताला।

धा धा। दिं ता	क त्तग् दिन ता	तिटि कत्त् कद ता	तिटि कत गदि घिन
कल्यान	कल्यान	कल्यान	कल्यान
न ध प मप मप मग	ममगमप पपमप	पपमधप धमधन	धपमप मपमग
सुं ० ० ०० द० र०	अ०ति०० नवी०न	प्रवी०न० महा ० ०	चतु०० र०ता०
रगममप पमगर	गगरर नंरसस	ससरग मगमपधमध	नधपम पगमप;
मृगन०य नी०००	मन०० ह ०रनी	चं ० पक व००र नी ००	०००० ०ना०र

(२)

मालश्री		हिण्डोल	
म प प म प ग स	स स न स स	ग स न ध ध	म ध न ध म ग
के ० स रि ० क टि	क द लि जं घा	ना भी स रो ज	श्री ० फ लू रो ज
भूपाली		कल्यान	
ग र ग गग ग	र र स सधं	पम गम प पप	न ध गम प;
चं ० द्र वद नी	शु क ना सिका	भौं० हें० ध नुष	का म ढ़ा० र

(३)

भूपाली		कल्यान	
ग र ग ग र	गग रग ग ग	पपप धधधनधप	म म ग ग
अं ग अं ग ०	सुढं गप झ नि	भंवर गू ज त सु वा स	आ ० व नी
हिण्डोल		मालश्री	
स स स स न ध	म ग ग गग	सस ग ग ग म प प	न न ग मप;
क्रो ० ध ० न हि	स त स्व रूप	न द वी ज त वा र न	के ० भा ० र

(४)

भूपाली		मालश्री	
प ध ध सस	स र स स	ग ग स स न प	मप मप ग ग
ध न्य ० ध न्य	वा को भा ग	अ य सी ० ति य	जा० को० जा गे
हिण्डोल		कल्यान	
स सग ग ग ग	न न धंध मग	गर ग मप पप	नध पमप ग मप
वें इजू के प्र भु	र स बस कर	ली० न्हो ०० माया	जा० ल०० डा ०र;

झाँपताल

+ |	| | |	○ |	| | |	+ |	| | |	○ |	| | |
नध प सुं० ०	मप मग द० र०	म ग अ ति	मप प नवी न	प मध प्र वी०	पधमधन न म हा००	ध प च तु	पम ग र ता ०
र ग मृ ग	म प पम नै ० नी०	ग र म न	नं र स ह र नी	स रग चं पक	मग मप ध व० र० नि	म न ० ०	ग म प; ना० र
म प के स	मप ग स रि० क टि	स स क द	न सस लि जं घा	ग स ना भि	न धध स रो ज	मध नन श्री० फल	धम ग उ रो ज
ग र चं द्र	गग ग व द नी	र र शु क	सस धं ना सि का	पम गम भौं० हें०	प पप ध नुष	न ध का म	गम प ढा० र;
ग र अं ग	गग र अंग सु	ग र ढं ग	गग ग प द्म नी	प पप भं वर	धध ध गूं ज त	नध प सुवा स	मग ग आ व नि
स स क्रो ध	सस स न हिं ०	न ध स त	म ग ग स्व रू प	स स न द	ग ग ग वि ज त	म पप बा रन	न ग म प के भा ० र
प धप ध न्य०	स स स ध ० न्य	स र वा को	स स स भा ० ग	ग ग ऐ सी	स न प ति ० य	म प जा को	मप ग ग जा० गे ०
स स ग बै ० जू	ग ग ग के प्र भु	नन धध र स ब स	म ग ग क ० र	गर ग ली० नो	म प प माया ०	नध प जा० ल	ग म प डा ० र;

———

सूलताल

+	|	०	|	|	|	|	|	०	|	+	|	०	|	|	|	|	|	०	|
नध सुं	प ०	मप द०	म र	म श्र	ग ति	ग ०	म न	प वी	प न	प प्र	ध वी	ध ०	ध न	धम महा	धन ००	ध च	प तु	म र	ग ता
र मृ	ग ग	मप नै०	पम नी०	ग म	र न	नं ह	र ०	स र	स नी	स चं	र प	ग क	म व	प र	ध नी	म ०	न ०	गम ना०	प र;
म के	प स	म रि	प ०	ग क	स टि	सस कद	न ली	स जं	स घा	ग ना	स भि	नध सरो	ध ज	म श्री	ध फ	न ल	ध उ	म रो	ग ज
ग चं	र द्र	ग व	ग द	ग नी	ग ०	र शु	र क	सस नासि	धं का	पम भौं०	गम हें०	प ०	प ०	पप धनु	प ष	न का	ध म	गम ढा०	ग र;
ग श्रं	र ग	ग श्रं	गर ग०	ग सु	गर ढंग	ग प	ग द	ग म	ग नी	प भं	पप वर	धध गूंज	ध त	न सु	धप वास	म श्र	म ०	ग व	ग नि
स क्रो	स ध	स न	स हिं	न स	ध त	म स्व	ग रू	ग प	ग ०	सस नद	ग वि	म ज	प त	म बा	पप रन	न के	न ०	गम भा०	प र;
प ध	धप न्य०	स ध	स न्य	स वा	स ०	र को	र ०	स भा	स ग	ग ऐ	ग ०	स सी	स ०	न ती	प य	म जा	प को	ग जा	प गे
सस बै०	गस जू०	ग के	ग ०	ग प्र	ग भू	नन रस	धध वस	म क	ग र	ग ली	र ०	ग नो	म ०	प मा	प या	नध जा०	प ल	गम डा०	प र;

धमार ।

+ क धे टे	० धे टे	धा आ	० ग दि न	दिन	० ता आ	+ क धे टे	० धे टे	ध आ	० ग दि न	दिन	० ता आ
न ध प	म प	म प	मग मप	प प	प प	प प म	ध ध	धमधन	ध प प	म प	म ग
सुं ० ०	द ०	र ०	अ० ति०	न वी	० न	प्र वी ०	न ०	महा००	च तु ०	र ०	ता ०
र ग ग	म प	पम गर	ग ग गर	नं र	स स	स र ग	मग मप	ध म	नध पमग	म प	ग मप
मृ ग ०	न य	नी०००	म न ००	ह ०	र नी	चं प क	व००र	नी ०	० ० ०००	० ०	ना० र
२											
म प प	म प	ग स	स स न	स स	स स	ग ग स	न ध	ध ध	म ध न	ध म	ग ग
के ० स	री ०	क टि	क द ली	जं ०	घा ०	ना ० भि	स रो	ज ०	श्री फ ल	उ रो	० ज
ग र ग	ग ग	ग ग	र र र	स स	धं धं	मग मप	प प	प प	न ध प	म प	गमप ;
चं ० द्र	व द	नी ०	शु क ०	ना सि	का ०	भौं० हें०	ध नु	ष ०	का ० म	० ०	ढा०र
३											
ग ग र	ग ग	ग र	ग ग गर	ग ग	ग ग	प प प	ध ध	ध ध	न ध प	म म	ग ग
अं ग ०	अं ०	ग ०	सुडं ग०	प द	मनी	भं व र	गूं ०	ज त	सु वा स	आ ०	व नि
स स स	स स	स स	न ध ध	म म	ग ग	स स स	ग ग	ग ग	म प प	न न	गम प;
क्रो ० ध	ना ०	हीं ०	स त ०	स्व ०	रु प	न द ०	वि ०	ज त	बा · र न	के ०	भा० र
४											
प ध प	स स	स स	स र र	स स	स स	ग ग ग	स स	न प	म प प	म प	ग ग
ध न्य ०	ध ०	न्य ०	वा को ०	भा ०	ग ०	अ य सी	० ०	ति य	जा को ०	० ०	जा गे
स स ग	ग ग	ग ग	न न न	ध ध	म ग	ग र ग	म प	प प	न ध प	म प	गमप;
बै ० जू	के ०	प्र भू	र स ०	व स	क र	ली ० न्हो	० ०	मा या	जा ० ल	० ०	डा० र

सम्पूर्ण (कल्यान) मेल से ओड़व (भूपाली, मालश्री, हिण्डोल) मेल निकले हैं।

इन चारों रागों को उत्तम रूप से शिक्षा कर लेने से शिक्षार्थी लोग इस रागमाला को चारों रागों से भिन्न भिन्न गा सकते हैं। निम्नलिखित स्वरलिपि के अनुसार गाना प्रथम कर्तव्य है। फिर भिन्न भिन्न तालों में गा सकते हैं।

१

+ कल्यान	। तेताला	० कल्यान	। तेताला
नध पमप मप मग	मम गमप पपमप	पपमधप धमधन	धपमप मपमग
सुं० ००० द० र०	अ० ति०० नवी०न	प्रवी०न ० महा००	च तु०० रता००
रग मम पम गर	गगरर नंरसस	ससरग मगमपधमध	नधपम पगमप;
मृग नय नी० ००	मन ०० ह० रनी	चमपक व० ०रनि००	०००० ०ना०र

२

मालश्री	झाँपताल	हिण्डोल	झाँपताल
मप मपगस	स स न स स	ग स न ध ध	मधन ध म ग
केस रि०कटि	क द ली जं घा	ना भि स रो ज	श्री फ लू रो ज
भूपाली	**झाँपताल**	**कल्यान**	**झाँपताल**
ग गर ग ग ग	र र स स धं	पसगम प प प	न ध ग म प
चं द्र० व द नी	शु क ना सि का	भौं० हें० ध नु ष	का म ढा ० र;

३

भूपाली	सूलताल	कल्यान	सूलताल
ग र गग र	ग ग र गग गग	पपप धधध निधप	म म ग ग
अं ग अंग ०	सु ढं ग पद मनी	भँवर गूँजत सुवास	आ ० व नि
हिण्डोल	**सूलताल**	**मालश्री**	**सूलताल**
सस सस नध	म ग ग ग	सस गगग मपप	न न ग म प
क्रो ध न हिं स त	स्व रु ० प	न द विजत वारन	के ० भा ० र;

४

भूपाली	धमार	मालश्री	धमार
पधप ससस स	सरर सससस	गगग ससनप	म प प मपगग
धन्य० ध ० न्य ०	वाकी० भा ० ग ०	अ य सी ० ० ति य	जा ० को ० ० जा गे
हिण्डोल	**धमार**	**कल्यान**	**धमार**
ससग गगगग	ननन धधमग	गरग मपपप	नधप मप गमप
बै ० जू के ० प्र भु	र स ० व स क र	ली ० नो ० ० माया	जा ० ल ०० ढा०र;

(१७) रागमाला। भैरवी चौताल व धीमा तेताला।

[शिक्षक स्वर्गीय चिन्तामणि बापूली ॥

शंकर हर हर वरदाता महेश्वर भोला दिगम्बर। गिरिजापति गङ्गा धरन कैलाश सुख करुणा-निधान। १। पंचवदन पंचराग सर्वप्रथम उक्ति किनि ओड़व षाड़व संपूर्न ताल तान सुर प्रमाण। २। प्रथम राग भैरव भाल रूप दरसायो द्वितिय मालकोष सुर नर मुनि मोहे राग हिण्डोल बढ़ायो मेघ उमड़ि घुमड़ि आनन्दि वरषा आयो श्री राग विनायको विदु सो किनि आयो आज आयो अचल भक्ति सुख समृद्धि राज लाज सुख सुदृष्टि दीजै हो वरदान। ३।

+	।	०	।
मा मा गा गा	रा रा स स	धां नां स स	गा गा रा स
शं ० क र	ह र ह र	व र दा ता	म हे श्व र
धा प गामा प	मा गा रा स	धा धा ना स	स स गारा स
भो ला ० ० ०	दि गँ ब र	गि रि जा ०	प ति गँ ० गा
ना ना धा प	मा प मा धा	प प गा मा	गा रा स स
ध र ० न	कै ल ० श	सु ख क रु	णा नि दा न;

अन्तरा

प मा धा ना	स स गा रा	स ना स स	गा गा मा गा
पँ ० च व	द न पँ ०	च रा ० ग	स र्व प्र ०
रा स स स	सनासनारा सनाधाप	गा गा गा रा	स स ना नाधा
थ म ऊ ०	क्तिकि० ० ० ० ० ० नि	ओ ड़ व षा	ड़ व स म ०
ना धा प प	मा प प मा	धा प गा मा	गा रा स स
० पू र न	ता ० ल ता	० न सु र	प्र मा ० ण;

द्वितीय अन्तरा

ग ग मा ग मा प मा	ग ग रा स	स रा ग मा	मा ग प मा ग रा स
प्र थ म रा ० ० ग	भै ० र व	भा ल रु प	द र ० सा ० यो ०
मा मा गा मा	गा मा स स स	धां नां स गा मा	मा मा गा मा स
द्वि ति ० य	मा ० ल को ष	सु र न र ०	मु नि मो ० हे
स स स न ध म ग	म ग स स	ना स ध ध प	ध ध प मा र र
रा ग हिँ डो ० ० ल	ब ढ़ा आ यो	मे घ उ म ड़ि	घु म ड़ि आ न न्दि

मा मा र स स व र षा आ यो	रा रा रा स स स श्री ० ० रा ० ग	स स रा ग म प धा प वि ना ० ० ० ० य कि	म प धा प म ग रा स वि दु सो ० ० ० ० ०;
। । । । गा गा गा गा कि नि आ यो	। । । । रा रा स स आ ज आ यो	ना ना ना धा धा अ च ल भ क्ति	प प प प प सु ख स मृ द्धि
मा प मा ना धा प रा ज ला ० ० ज	धा धा प प प सु ख सु दृ ष्टि	गा मा प मा गा दी जै हो ० ०	रा रा स स व र दा न;

भिन्न भिन्न रागों व तालों की स्वरलिपि नीचे दिखाई जाती हैं।

भैरवी रागमाला के प्रथम दो पद (स्थायी अन्तरा) भैरवी राग में गाना चाहिए। तृतीय पद अथवा द्वितीय अंतरा "प्रथम राग भैरव भालरूप दरशायो" भैरव राग व तेताले के ताल में गाना चाहिए। "द्वितिय मालकोष सुर नर मुनि मोहे" इस अंश को मालकोष राग वो सूल ताल में गाना चाहिए। "राग हिण्डोल बढ़ आयो" यह अंश हिण्डोल राग वो तेवरे के ताल में गाया जाय। "मेघ उमड़ि घुमड़ि अनन्दि वरषा आयो" यह अंश मेघ राग वो झँापताल के ताल में गाया जाय। "श्री राग विनायकि विदुसि" इस अंश को श्री राग वो धमार के ताल में गाया जाय। "किनि" से लेकर "वरदान" तक भैरवी राग वो तेताले अथवा चौताले के ताल में गाय जाय।

मालकोष—सूल ताल।

मा मा गा मा द्वि ति ० य	गा मा स मा ० ल	स स को श	धांनां सगामा सु र न र ०	मामा गामास मु नि मो ० हे

हिण्डोल तेवरा

। । । स स स रा ग हिं	न ध डो ०	म ग ० ल	म ग ग ब ढ़ ०	स स आ ०	स स यो ०

मेघ—झँापताल

नां स मे घ	ध ध प ध ध प उ म ड़ि घु म ड़ि	मा र र आ नन्दि	मामा र सस व र षा आयो

श्री—धमार

रा स स श्री रा ग	स रा वि ना	गमप धा प य ०० ० कि	म प धा वि दु सो	प म ग ० ० ०	रा स ० ०

द्वितीय अन्तरा में

प्रथम राग भैरव भाल रूप दरसायो	...	धीमा तेताला	...	१६ मात्रा
द्वितीय मालकोष सुर नर मुनि मोहे	...	सूल ताल	...	१० मात्रा
राग हिण्डोल बढ़ायो	...	तेवरा	...	१४ मात्रा
मेघ उमड़ि घुमड़ि आनन्दि बरषा आयो	...	झाँपताल	...	१० मात्रा
श्री राग विनायकि विदुसो	...	धमार	...	१४ मात्रा
शेष की दो आवृत्ति	...	धीमा तेताला	...	३२ मात्रा
				९६ मात्रा (२४ ताल)

संपूर्ण रागमाला धीमा तेताला अथवा चौताला में गाया जा सकता है। दूसरा अन्तरा भिन्न भिन्न ताल में भी गाया जा सकता है। इस रागमाला का सुर बहुत अच्छी तरह से याद हो जाने पर भिन्न भिन्न ताल का प्रयोग अथवा प्रवेश तेताला वो चौताले में शिक्षार्थी लोग कर सकते हैं।

यही गुरु का उपदेश है।

(१८) रागमाला चौताल और त्रिताल

शिक्षक तसद्दुकहुसेन

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
सग	माप	धन	पम	पमा	गर	माग	पर	ग म	प र	गनं	रग
रस	नांस	रगा	गाधां	धांनां	मांपं	धांधां	नांर	सनां	सगा	माप	मानां
समा	गार	सप	मगा	मप	धाप	नरा	सस	धाप	मप	गरा	गमा
पमा	रामा	धाधा	नाप	माप	गामा	नाधा	मागा	नास	पमा	पमा	ग०;

२

मम	गमा	धन	रास	नस	गम	गस	नस	धप	धग	माप	धना
धप	माप	मागा	रगा	नध	मग	रामा	धाना	मागा	मग	रानं	राग
माम	धाम	माग	सध	पध	गप	नाध	पर	गमा	पनं	नंस	रप
मप	धप	सर	रर	माप	नस	रस	नाध	पमा	पध	पमा	र०;

३

पम	पग	माध	धस	नस	र प	मा र	समा	माम	पन	धप	माम
पध	पग	रस	रधं	नंस	गमा	धन	गमा	गरा	सनं	सर	गाप
गार	सग	गम	पन	पम	गम	धप	सन	धम	नध	नमा	पध
पमा	रनं	सर	रर	माप	नस	रस	नाध	माप	धप	माग	र०;

पहले दस राग:—

सरपरदा—**सगमाप ध नप;** गौडसारंग—**मपमाग रमागपर;** कल्याण—**गमपरग नरगरस;** दरबारी कानडा—**नासरगा गाधाधा नामा पधा धाना रस;** भीमपलासी—**नासगामा पमा नास मागार स;** मुलतानी—**पम गा मप धाप;** श्री—**नरा सधाप मप गरा;** भैरव—**गमाप मा रा;** बहार—**माधाधा नाप माप गामा;** मालकौंस—**नाधा मागा नास;** विहाग—**पमा पमाग :—**

दूसरा ग्यारह राग :—

वसंत—**ममगमा धनरास;** हिंडोल—**नसागमग स;** अल्हैया—**नस धप धगमाप;** बागेश्री—**धना धप माप मागार गा;** पंचम—**नध मग रामा धाना मागा मगरा;** ललित—**नरा गमा म धाम माग;** विभास—**सधप धगप;** छायानट—**नाधप र गमाप;** कामोद—**नन सर पमप धपसर;** सोरठ—**र रमापन सरस नाधप मा पधप मार;** ।

तीसरा ग्यारह राग:—

हंमीर—**पमप गमा ध धस;** वृंदावनी सारंग—**न स र प मा र स;**

केदारा—**मामा मप न ध प मा मप;** भुपाली—**धपगर स र ध;**

सोहनी—**न सगमाधन गमाग रा स;** हंसध्वनि—**ना स र गा प गा र स;**

मालश्री—**गग मप न प म ग;** शंकरा—**सधपस न ध म न ध न;**

सावेरी—**माप धप मा र न सर;** देश—**र र मापन स र स नाध पमाप धप मागर०** ।

(१६) षटराग । सवारी ।

[शिक्षक अन्नापुरुषोत्तम घारपूरे (वीणाकार) पूना]

नाद समुंदर को पार कोऊ न पायो अनरथ गुनि कहायो । १ ।
आदि ब्रह्मा वेद उचरायो ताको देवन देव प्रथम गायो । २ ।
अनेक सृष्टि रचने विरचने सिद्ध न हारे साँरग बैरायो । ३ ।
सरस्वति डूबन ते डरी तब हिए दोऊ तूम्बा धरि डारेयो । ४ ।
भरत मतंग कल्लिनाथ हनुमत सप्त अध्याय लखायो । ५ ।
गीत छन्द धारु ध्रुपद मार्ग देसी दोऊ विध बनायो । ६ ।
सप्त दाँड़ी गुप्त प्रगट लिए नायक गोपाल नाम धरायो । ७ ।
बैजू के साथ सप्त सुर बाजे बूड़े ताल पाषान पिघलायो । ८ ।
धवल श्रीटंक सावेरी तिलक मोर गंधहीन षाड़व गुनकी पुलिन्दी नागधानी ।
हंसध्वनि गनिगप रिनि मध हीन ओड़व षट राग श्रीपति बनायो । ९ ।

धवल श्री—स रा ग प धा न

+ । । ।	० । । ।	। । । ।	० । । ।	+ । । ।	० । । ।	० । । ।	। । । ।
प ग रा स	नं नं ग ग	धा म धा प	न प ग ग	रा रा स स	न न धा धा	प प न	ग रा स
ना ० ० द	स मु द्र को	पा ० ० र	को ऊ न ०	पा यो ० ०	अ न र थ	गु नि ०	क हा यो

गुनकेली—स रा मा प धा

स रा मा मा	प प मा प	धा प मा प	मा प रा मा प	सं सं सं सं	धा धा प मा	प मा र	मा र स
आ ० दि ०	ब्र म्ह हा ०	वे द ऊ च	रा यो ता ० को	दे व न ०	दे ० व ०	प्र थ म	गा ० यो

टंक—स गा मा प ध ना

नां सगामा	पप धना	धप गामां	पध नासं	माप धमा	धप मागा	प मा गा	मा गा सं
अ ० ने क	सृ० ष्टि ०	र च ने ०	वि र च ने	सि ० द्ध ०	न ० हा रे	सा रं ग	बा रा यो

पुलिन्दिका—स र मा ध ना

सर मामा	रर सस	नांस रमा	धना नाना	धमा मामा	संसं नासं	ध मा र	मा र स
सर स्वति	द्रू ० ब न	ते ० डरी	त ब हि ये	दो ऊ ० ०	तू म्बा ० ०	ध री ०	डा रे यो

सावेरी—स र मा प ध न।

प मा र र	माप माग	नस रमा	रमा समा	पध माप	धन संसं	र मा प	ध न सं
भ र त ०	म तं ० ग	क लि ना थ	ह नु ० ०	म त ० ०	स स ० ०	अ ध्या य	ल खा यो

नागध्वनि—स गा मा प धा।

गांमां गामा	पमा गास	धांधां सस	गामा पप	धाधा पप	धाधा पप	मा प धा	प धा सं
गी ० त ०	छं ० द ०	धा ० रु ०	धु र प द	मा ० र ग	दे ० सी ०	दो वि ध	ब ना यो

तिलक—स र ग मा प न।

नन संसं	नमा गमा	पप नन	गमा पप	मा ग र स	स र ग ग	मा प न	सं न प
स स ० ०	डांड़ी ० ०	गु स ० ०	प्र कट लि ए	ना ० य क	गो ० पा ल	ना ० म	ध रा यो

हंसध्वनि—स र गा प ना।

नां स रस	गागा पप	गागा रस	नाप गागा	पप गागा	पगा नाप	गा प ना	गा र स
बै जू ० ०	के ० साथ	स स ० ०	सु र बा जे	बू ड़े ० ०	ता ० ० ल	पा षान पि	घ ला यो
रागपधान	गामा पधना	धपरमापधन	रंगं नपमा	मारगधसंसं	मारगधसं	राग्मापधा	नाधमार
धवलसरी	टं ० ० क ०	सा ० ० ० ० वेरी	ति ल क ० ०	मो र गं ध ही न	षा ड़ व ० ०	गु न क्री ०	पू लि न्दि ०
गामापधासं	नाप गार	गन गप	रन मध	स स स स	रंसं नध	प ध मा	र ग स
ना ग ध्व नीं ०	हं स ध्वनी	ग नि ग प	रि नि म ध	ही न ओ ड़ व	ष ट रा ग	श्री प ति	ब ना यो

अकबर बादशाह के दरबार में श्रीपति नाम एक गवैया थे, उन्हीं का बनाया हुआ यह गाना है।

(२०) सिंदूरा । झाँपताल ।

मिश्र सम्पूर्ण । स र गा मा प ध ना न ।

अँगना विरह बावरी सी डोले चंचल चकित कैसे दिन न कटत री ॥१॥
और चक उचक ताक झुक लागि हेर पिया के पंथन एक निस न घटत री ॥२॥
अँसुअन जल भरे मीन घर झर लाए पिया बिसरत होत हिया में हटत री ॥३॥
बानी विलास पिया सुरत सुरत बनि पिया पिया जपत पिया पियो रटत री ॥४॥

+ ।	। । ।	० ।	। । ।	+ ।	। । ।	० ।	। । ।
गा गा	र स र	नां स	र मा गा	मा प	स ना ध प	मा प	मा गा र
अँ ०	ग ० ना	वि र	ह ० ०	बा व	री ० ० सी	डो ०	ले ० ०
र र	मा प प	न स	स स न र	स ना	ध प ध ना	ध प	मा गा र
चं ०	च ल च	कि त	कै ० ० से	दि न	ना ० ० ०	क ट	त ० री;

२

मा प	न न स	स स	न स स	स स	स न र	स ना	ध प प
औ र	च क उ	च क	ता ० क	झु क	ला ० गी	हे ०	र ० ०
र र	र गा गा	रस सर	स न स	ना ना	ध पध ना	ध प	मा गा र
पि या	के ० ०	पं० ०थ	न ए क	नि स	न ० ० ०	घ ट	त ० री;

३

मा मा	प प प	प प	प प प	मा ना	ध प प	मा प	मा गा र
अँ सु	अ ० न	ज ल	भ ० रे	मी ०	न घ र	झ र	ला ० ए
ध प	मा प प	मा गा	र स स	मा गार	मा प प	ध प	मा गा र
पि या	बि स ०	र त	हो ० त	हि या०	में ० ०	ह ट	त ० री;

४

मा प	न स स	स स	स स स	र र	गा र स	ना ना	ध प प
वा ०	नि ० वि	ला स	पि या ०	सु र	त ० सु	र त	ब नि ०
गा गा	गा गा गा	र र	स स स	ना ना	ध पध ना	ध प	भा गा र
पि या	पि या ०	ज प	त ० ०	पि या	पि ० ० या	र ट	त ० री;

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	सतर	अशुद्ध	शुद्ध
५	१३	मां	मा
७	८	मा म	मा मा
८	१७	रा र	रा रा
१२	२६	धा ध	धा धा
१३	३	स न	स न
१७	२	म	मा
२५	२३	ग	गा
२६	४	गा ग	गा गा
३८	५	म ग म ग	म ग म ग
४४	३	निदान	निधान
४८	१२	ध धं नं	धं धं नं
४८	१८	न र	न र
४६	२१	मं	नं
५०	१७	छवि	दबि
६०	१६	न	न
६१	४	चाद	याद
६६	१२	न र	न र
७८	२३	गा म	गा मा
७६	१७	माधा ना स	मा धा न स
७६	१७	स स	स स
८०	१	बिलसखनी	बिलासखानी
८०	५	बाजवे	बजावे
८०	७	गवत	गाबत
८८	१०	धा	ध
८६	२४	न ध	न प
६६	१६	न धा	न धा
१०३	१४	स न	सं न
१०३	१६	न स	न स
११०	३	दोनो	दीनो

पृष्ठ	सतर	अशुद्ध	शुद्ध
१११	४	ना स र	नां स र
११६	१९	मा गा मा	मा गा मा
११७	२	धां	ध
११८	६	सा	मा
१२२	६	प म	प मा
१२२	२४	माप न स	मा प न स
१२२	२३	ग ग मा प ना	ग ग मा प मा
१३०	४	मा प	म प
१३७	४	स न	स ना
१३९	१९	ना स ना स	ना स नां स
१५०	१५	ध म ग रा स	स रा ग म
१५७	८	मा मा र	मा मा र
१५९	२५	न स रा न	न स रा न
१६१	२०	स ना	स ना
१८४	१३	मा मा मा र र स	मामामा ररस
१८८	७	नां धां प	नां धां पं